

पवित्र कुरआन

मानव जीवन के लिए सम्पूर्ण मार्ग दर्शन

लेखक

सय्यद मुहम्मद रबे हसनी नदवी

अनुवादक

डा० मुशाहिद अली

प्रकाशक

दार-अल रशीद

हैदर मिर्ज़ा रोड, गोलागंज, लखनऊ

सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित

पहला संस्करण अक्टूबर - 2013

किताब का नाम :	पवित्र कुर आन मानव जीवन के लिए सम्पूर्ण मार्ग दर्शन
लेखक का नाम :	मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अनुवादक का नाम :	
पृष्ठ :	220
संख्या :	1100
मूल्य :	150 रुपये

प्रकाशक

दार-अल इस्लाम

खातून मंज़िल हैदर मिर्जा रोड, गोलागंज लखनऊ

फोन : 09452294097

विषय सूची

विषय सूची	पृ० सं०
लेखक के दो शब्द	8
अपनी बात	10
भूमिका	16
प्रस्तावना	20
अल्लाह का नाम और उसकी रहमत	22
सूरह फातिहा	23
अध्याय एक	24
कुर्आन मजीद और इल्म	24
ज्ञान की विशेषता	24
पवित्र कुर्आन का ऊँचा स्थान	28
हमारी सृष्टि	30
सृष्टि को बनाने वाला	30
सृष्टि को बनाने वाले का हर काम एक उद्देश्य के लिए है	32
अल्लाह का असीमित ज्ञान	32
कुरआन सृष्टि का लेखा-जोखा	33
समस्त सृष्टि अल्लाह के ज्ञान का प्रदर्शन	33
सृष्टि का क्रमबद्ध प्रबन्ध	34

अध्याय दो	35
पवित्र कुर्आन और इन्सान	35
जिन्न एवं इन्सान	35
इन्सान की श्रेष्ठता एवं विशेषता	38
ईशवाणी और आकाशीय किताबें	38
ईश्वर की उपासना	39
इन्सान कुर्आन की रोशनी में	40
इन्सान की विशेषता	46
इन्सान का उच्च स्थान	47
पवित्र कुर्आन की मनुष्य के बारे में कल्पना	48
अध्याय तीन	51
अल्लाह के आदेशों का पालन	51
बीच का रास्ता	54
एकता और विस्तार	55
अध्याय चार	57
नबियों को भेजना	57
हजरत० नूह अलै०	59
अन्य सन्देश	61
ह० इब्राहीम अलै०	67
ह० मूसा अलै०	68
मरियम के पुत्र ईसा अलै०	70
सय्यदना ह० मुहम्मद स०	75

पवित्र कुर्आन का शिक्षा-दीक्षा का तरीका	83
अध्याय पाँच	87
पवित्र कुर्आन अन्तिम किताब और मार्ग दर्शक	87
पवित्र कुर्आन का अवतरण एवं संरक्षण	88
पवित्र कुर्आन के विभिन्न नाम	88
ईशवाणी एवं उसका अवतरण	89
ईशवाणी के अवतरण के विभिन्न प्रकार	91
पवित्र कुर्आन की प्रथम व अन्तिम आयतें	93
मक्की और मदनी सूरतें	93
सूरतों और आयतों का क्रम	94
पवित्र कुर्आन को किताब का रूप देना	94
पवित्र कुर्आन को एकत्र करना	95
अध्याय छः	98
पवित्र कुर्आन की प्रतिष्ठा	98
अन्य ईशग्रन्थों में पवित्र कुर्आन का स्थान	99
पवित्र कुर्आन के बारे में अन्य धर्म के विद्वानों के विचार	100
पवित्र कुर्आन पिछली किताबों का संरक्षक और ईशवाणी के अवतरण की श्रेष्ठ व उच्चतम कड़ी है।	101
पवित्र कुर्आन और अरबी भाषा	103
कुरआन की श्रेष्ठा एवं विशेषता	114
सहज किताब और समस्त ब्रह्माण के लिए मार्गदर्शक	114
महानता और पवित्रता	115
महान और दार्शनिक वाणी	116
चमत्कारी एवं प्रकाशमान वाणी	119

एक प्रभावी और सम्पूर्ण वाणी	121
कुर्आन में इकना (सतुष्टि) का गुण	121
अध्याय सात	122
ज्ञान और गोष्ठी	122
पवित्र कुर्आन के आदेश	122
धार्मिक मतों का ज्ञान	122
अल्लाह की नेमतों का जिक्र	122
अल्लाह की तरफ से सर्वनाश(अज़ाब) का जिक्र	122
मौत का जिक्र	123
पवित्र कुर्आन की प्राथमिकता	123
पवित्र कुर्आन की गोष्ठी की विभिन्नता	124
सपनों की व्याख्या	125
लोकोक्त विज्ञान	125
नैतिक विज्ञान	125
मनोविज्ञान	125
पर्यटन एवं यात्राएं	125
आकाशीय शोध	126
ऐतिहासिक ज्ञान	126
आर्थिक पहलू	126
शोध का रूप	126
मनुष्य वृक्ष	126
खाद्यान्त	126
धातु उद्योग	126
पवित्र कुर्आन में जीवन और सृष्टि से सम्बन्धित वास्तविकताएं	127

अध्याय आठ	128
पवित्र कुर्आन की चमत्कारी विशेषता	128
पवित्र कुर्आन के चमत्कारी पहलु	130
पवित्र कुर्आन में ठहरने की जगहों का एक विशेष अन्दाज़	131
पवित्र कुर्आन का चकित करने वाला संख्यात्मक चमत्कार	132
अध्याय नौ	135
पवित्र कुर्आन की शिक्षायें	135
शिष्याचार के निर्देश	135
सूरह फ़ातिहा	
सबसे पहले अवतरित हुयी सूरत में ज्ञान प्राप्त करने के निर्देश	137
सूरह बकरः और अन्य सूरते	138
पवित्र कुर्आन की मूल शिक्षायें	140
एकेश्वरवाद का मत	140
एकेश्वरवाद में आने वाली दूसरी सच्चाईयाँ	144
ईमान	154
नमाज़	156
अल्लाह और इन्सान के बीच सम्बन्ध	157
सारी सृष्टि अल्लाह के सामने नतमस्तक और प्रार्थना में है	157
सृष्टि में इन्सान के महत्व और विशेषता दूसरों पर उसके श्रेष्ठता का रहस्य	159
इन्सान के लिए निर्धारित उपासना नमाज़	160
नमाज़ इन्सान के व्यक्तित्व का वस्त्र	160
ज़कात और सद्के का महत्व	161
सूद-लेने देने के नुकसान	161

रोज़ा (व्रत)	164
ईद	168
हज	169
ईदुल अज़हा (कुर्बानी की ईद)	177
पवित्र कुर्आन में जिहाद की कल्पना	178
<i>अध्याय दस</i>	181
अन्तिम नबी का महत्व व कार्य	181
अच्छे आचरण का महत्व	183
नेक नियती	183
हर जगह अल्लाह की उपस्थिति का ध्यान	184
सहनशीलता और क्षमा-	184
अल्लाह को हर जगह मानना-	184
अल्लाह का डर	184
विश्वास	184
दृढ़ता	184
पवित्र कुर्आन और ह० मुहम्मद स० की बातों को दृढ़ता से थामना	184
अल्लाह और उसके नबी की मुहब्बत	185
तकवा और नेकी के कामों में मदद	185
इस्लामी भाईचारा	185
नम्रता और आदर सत्कार	185
अल्लाह के नबी के आदर्शों का पालन	185
अल्लाह से उम्मीद और उसका डर	185
बलिदान और त्याग	186
घमण्ड, अभिमान और दंगे की बुराई	186

सुन्दर आचरण और इच्छाओं पर नियन्त्रण रखना	186
नेक लोगों की संगत	186
मुसलमान के मुसलमान पर हक	187
सदाचार और मन की पवित्रता	188
<i>अध्याय ग्यारह</i>	192
आचरण व चरित्र की सुन्दरता के लिए पवित्र कुर्आन की शिक्षाएँ	192
शर्म व हया (लज्जा)	193
न्याय व समानता	193
दरगुज़र (क्षमा)	193
पवित्र कुर्आन में दिल के महत्व का वर्णन	195
भावनाओं का दिल से सम्बन्ध	195
दिल और दिमाग का कार्य क्षेत्र	196
कुर्आन में हृदय के लिए कल्ब और फुआद शब्दों का प्रयोग	196
कर्मों का आधार मन की दशा	197
आत्मा मन के अधीन	200
दिल और दिमाग का कार्य	203
पवित्र कुर्आन में बीती बातों को बताने की शैली	204
बीती बातों में साहित्य और उद्देश्य	204
पवित्र कुर्आन में बीती बातों को बताने का उद्देश्य	205
ह० यूसुफ अलै० की कथा	205
अवसर और हालात का लिहाज़	206
तकरार की शैली	207
ह० मूसा अलै० की कहानी की शैली	207
प्रचार-प्रसार पवित्र कुर्आन की रोशनी में	211

प्रचार के लाभ	211
एक उद्देश्य पूर्ण प्रचार	211
व्यक्तिगत कार्य का उदाहरण	212
सामाजिक कार्यों का उदाहरण	212
कौमों के सबक सिखाने वाले किस्से प्रचार के सकारात्मक नियमों के उदाहरण हैं	213
अल्लाह की उपासना और प्रार्थना कुरआन की रोशनी में	214

लेखक के दो शब्द

पवित्र कुर्आन अल्लाह का कलाम है, यह मानवता के लिए मार्गदर्शक और सुधारक है। अल्लाह ने इन्सानों को लाभ पहुंचाने, उनके जीवन को संवारने, सत्यमार्ग और सदाचार को चुनने के लिए इसको कयामत तक सुरक्षित रखने का प्रबन्ध भी किया है। इसको पढ़ने से अल्लाह की इबादत होती है। इसके अर्थ और विषयों पर विचार करने से सत्य मार्ग प्राप्त होता है। इस सत्य मार्ग को पाने के लिए और इससे पूर्ण रूप से लाभ उठाने के लिए इसमें बताये गये निर्देशों और आदेशों का पालन करना चाहिए।

पवित्र कुर्आन में इन्सानों की मानसिकता उनके स्वभाव और कमियों को सामने रखकर मार्ग दर्शन दिया गया है। यह सर्वशक्तिमान अल्लाह का कलाम है। इसमें विभिन्न पहलुओं और पक्षों को समायोजित कर दिया है जिनका ज्ञान होने पर इसका लाभ बढ़ जाता है। पवित्र कुर्आन की इन विशेषताओं की ओर ध्यान दिलाने के लिए इस किताब का संकलन किया गया है। ऊर्दु में होने के कारण इसका लाभ केवल ऊर्दु जानने वालों तक सीमित था। इस बात की आवश्यकता थी कि अन्य प्रचलित भाषाओं में भी इसका प्रकाशन हो। हमारे अनेक सम्बन्ध रखने वालों ने इस कार्य को करने का निश्चय किया लेकिन प्रिय डा० मुशाहिद अली (मुरादाबाद) ने इसमें पहल की और बहुत सुन्दर रूप से इस कार्य को किया। उनको ऊर्दु और इस किताब की मूल भाषा हिन्दा दोनों का ज्ञान है, इसके कारण वह इस कार्य को अच्छी तरह कर सकते थे। अल-हम्दुलिल्लाह उन्होंने इस कार्य को अंजाम दिया और आशा है कि उनको इस सद्कार्य का पूर्ण फल प्राप्त होगा। इस अनुवाद से किताब की लाभान्वित करने की क्षमता में और अधिक विस्तार होगा। मैं उनके इस कार्य की कद्र करता हूँ और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति की दुआ करता हूँ। प्रिय भतीजे स्वर्गीय अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) के लिए भी दुआ करता हूँ कि उन्होंने इस हिन्दी अनुवाद में विशेष रूची ली थी और अनुवादक को इस पर तत्पर किया था। अल्लाह पाक इस किताब को उनके लिए सद्का-ए-ज़ारिया बनाए और इसके लाभ क्षेत्र का विस्तार करके इसको स्वीकार करे।

मोहम्मद राबे हसनी नदवी

नदवतुल उलमा लखनऊ

21-92013

अपनी बात

कुर्आन पाक अल्लाह की भेजी हुई किताबों में से अन्तिम किताब है। इसको उस ज़माने के आरम्भ में भेजा गया जिसमें मानव जीवन में नये-नये अविष्कार होने वाले थे और ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए बेहतर चीज़ें उपलब्ध होने वाली थी। ये दौर इन्सान के ज्ञान और तरक्की का गवाह बनने वाला था। ये दौर इन्सान के सामाजिक जीवन, तरक्की, ज्ञान से लाभ उठाने की योग्यता और अनुभव से सीखने का गवाह बनने वाला था।

बड़ी संख्या में लोग अपने ज्ञान और अनुभव से लाभ उठाने वाले थे। ये सब अल्लाह की ओर से प्रदान की गयी बुद्धि और योग्यता का परिणाम था। इसलिये कुर्आन में सबसे पहले इल्म (ज्ञान) की विशेषता बताई गयी और इसको अल्लाह की ओर से दिया विशेष पुरस्कार कहा गया। इसलिए पवित्र कुर्आन को पहले भेजी गई किताबों की तुलना में ज्यादा मजबूत और इन्सानों की हर ज़रूरत में रास्ता दिखाने वाली किताब का स्थान दिया गया है।

विशेष बात ये है कि इसको ऐसे नबी पर उतारा गया जो इन्सानों की प्रत्येक आवश्यकता, उन्नति और परिस्थिति में रास्ता दिखाने वाला था। जिसको अल्लाह ने ऐसा जीवन विधान देकर भेजा जो कयामत तक आने वाले इन्सानों के लिए जीवन से जुड़ी प्रत्येक आवश्यकता में मार्ग दर्शन करे। इस प्रकार दोनों को अपनी-अपनी जगह बृह एवं सम्पूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। पवित्र कुर्आन को आसमानी किताबों में से अन्तिम और सम्पूर्ण ग्रन्थ का स्थान दिया गया और ह० मुहम्मद स० को शरीयत (ईश्वरीय संविधान) को पूरा करने वाला और नबियों में अन्तिम नबी का स्थान दिया गया। पवित्र कुर्आन को अल्लाह ने इन्सानों को जीवन में सत्य मार्ग दिखाने के लिये उतारा और इसको ऐसा बनाया कि अब कयामत तक इसमें किसी भी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। पवित्र कुर्आन अपने अवतरण के समय से लेकर कयामत तक सत्य मार्ग पर चलने और आसमान से मिलने वाले मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त है। जब तक पृथ्वी पर जीवन रहेगा हमें कुर्आन और अन्तिम नबी के माध्यम से सही बात पता चलती रहेगी। पवित्र कुर्आन को सत्य मार्ग बनाकर और मुहम्मद स० को सत्य मार्ग पर चलने

वाला बनाकर भेजा गया। अब जो कोई इनको अपना मार्गदर्शक मानेगा उसको अल्लाह के आदेशों का ज्ञान हो जायेगा।

इन्सान जिसको अपने ज्ञान और बुद्धि से लाभ उठाने की और अपनी इच्छा से प्रभावित होने की विशेषता मिली है। ये कभी-कभी अपनी इच्छा और कामनाओं के कारण सत्य को समझने में गलती कर देता है। पवित्र कुर्आन और मुहम्मद स० के माध्यम से इन्सान सत्य मार्ग से भटकने, जीवन में गलती करने और अल्लाह के द्वारा दी हुई सुविधाओं का गलत प्रयोग करने से बच जायेगा।

इन्ही विशेष बातों के कारण मुहम्मद स० को रास्ता बताने वाला, डराने वाला और शुभ संदेश देने वाला कहा गया है और पवित्र कुर्आन को जलता चिराग, डराने वाली, हिदायत देने वाली, शिफा देने वाली, सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने वाली किताब कहा गया है। पवित्र कुर्आन की इन विशेषताओं का उसको सच्चे मन से पढ़ने वाले पर प्रभाव होते देखा गया है। मुहम्मद स० के साथियों पर पवित्र कुर्आन ने जिस प्रकार प्रभाव डाला उसको सारी दुनिया ने देखा और ये आज भी किताबों में सुरक्षित है।

पवित्र कुर्आन ईशवाणी है इसलिये सृष्टि से इसका स्थान बहुत ऊँचा है। यह बहुत प्रभावशाली और आसमान से भेजा हुआ है। आसमान की तुलना में दुनिया बहुत दुर्बल और तुच्छ है, इसकी सामर्थ्य और शक्ति बहुत कम है। आसमानी शक्ति वाली वस्तु यदि अपनी शक्ति और सामर्थ्य के साथ ज़मीन पर आ जाए तो ज़मीन इसको सहन नहीं कर पायेगी। कुर्आन ईशवाणी है और ईश्वरीय शक्ति रखता है। इसकी शक्ति की ओर संकेत इस प्रकार किया गया—*"अगर हम इस कुर्आन को (इसकी वास्तविक अवस्था में) पहाड़ पर उतार देते तो तुम देखते की पहाड़ लरज़ जाता और अल्लाह के खीफ से फट जाता और टुकड़े-टुकड़े हो जाता"*।

किन्तु इसके साथ यह भी कहा है कि हमने इसको (पवित्र कुर्आन को) इन्सानों के फायदे के लिए इस तरह उतारा कि इन्सान इसको उठा सके और बर्दाश्त कर सके ताकि इन्सान को ग़ौर करने से हकीकत को समझने में और हिदायत का नूर पाने में मदद मिले।

इसलिये इसको इन्सानों की भाषा में और नूरानी मखलूक फरिश्ते के द्वारा भेजा गया। फरिश्ता मखलूक तो है पर वह नूरानी मखलूक है। इस प्रकार इतनी विशाल और बहुमुल्य वाणी जिसको पहाड़ भी नहीं उठा सकता। अल्लाह ने इसको इन्सानों के फायदे के लिए दो माध्यमों से (1) फरिश्ता और (2) उच्च कोटि के इन्सान पर उसी की भाषा में इस भार को उठाने योग्य बनाकर उतारा।

इन्सानों की आवश्यकताओं को उनके पैदा करने और पालने वाले से अधिक कौन जान सकता है? इसलिए कुर्आन में सिर्फ इबादत करने को ही नहीं कहा गया है। इन्सानों का अपने मालिक से जो सम्बन्ध होना चाहिए उसे बताया गया है। इसके लिए इन्सानों की कार्य क्षमता और परिस्थितियों के अनुसार कर्म करने का ऐसा मार्ग बताया गया है जिसमें जीवन का हर पहलू आ गया है। इन्सान का स्वभाव अकेले रहकर जीवन व्यतीत करने का नहीं है, वो तो आपस में सम्बन्ध जोड़कर और साथ रहकर जीवन व्यतीत करता है। इसी प्रकार पुरुष और स्त्री के मध्य जो सभ्य और उचित सम्बन्ध हो सकते हैं, उनको बताया गया है। इसी प्रकार असभ्य एवं अनुचित सम्बन्धों से बचने का भी ध्यान रखा गया है। किस प्रकार पुरुष और स्त्री सभ्य रूप में मिल सकते हैं और कौन सा असभ्य रूप है। इसी प्रकार सम्बन्धियों, पैड़ोसियों और दुश्मनों से भी नम्रता पूर्ण व्यवहार करने को आवश्यक बताया गया है। इसके अतिरिक्त आपसी मेल-मिलाप से सम्बन्धों को ठीक रखने को ऐसे अन्दाज़ में कहा गया है, जो दिल को आकर्षित करता है। मानव स्वभाव को ध्यान में रखकर एक दूसरे से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने का स्पष्ट मार्ग बताया गया है। सामाजिक जीवन को सभ्य और साफ-सुथरे ढंग से चलाने के लिए जो उचित है उसको आवश्यक कहा गया है। यदि सामाजिक जीवन में कोई समस्या या टकराव उत्पन्न हो जाये, तो पवित्र कुर्आन में उसे दूर करने का सबसे अच्छा रास्ता बताया गया है। जिससे प्रसन्नता के साथ इसके परिणाम सामने आये। इन्सानियत के नाते औरतो को आदमियों के बराबर बताया गया है। इसके साथ ही शारीरिक क्षमता, कार्यक्षमता और इच्छाशक्ति में जो अन्तर है उसको भी बताया है। धन को खर्च करने के भी नियम बताये हैं। ऐसी आय से रोका गया है जो बिना किसी परिश्रम और सदबुद्धि का प्रयोग किये मिले। इसी प्रकार सूद और जुए को गलत बताया गया है। जिस आय में मेहनत और सदबुद्धि का प्रयोग हो उसे उचित बताया गया है। जैसे- व्यापार एवं मजदूरी।

किसी अमीर आदमी के मरने पर ऐसा नहीं कि उसकी सम्पत्ति पर कोई भी बल पूर्वक कब्जा कर ले। बल्कि उसकी सम्पत्ति को वारिसों में निकट और दूर के सम्बन्धानुसार बाँटा गया है। जिनमें बेटा-बेटी, माँ-बाप, भाई-बहन, और कभी-कभी दादा-दादी या नाना-नानी और ऐसे किसी निकट सम्बन्धी के न होने पर पिता के परिवार वाले वारिस होते हैं। माँ-बाप के मिलने से बच्चा जन्म लेता है। पवित्र कुर्आन में बहुत जोर देकर माँ-बाप के अधिकारों को बताया गया है और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने को कहा गया है। पवित्र कुर्आन में कई स्थानों पर अल्लाह ने अपने अधिकार के बाद माँ-बाप के अधिकार को बताया

है। पवित्र कुआँन में जो बातें बताई गई हैं, उनको हदीसों में और अधिक स्पष्ट कर दिया गया है। हदीसे ह० मुहम्मद स० की कही बातें हैं जो उनको अल्लाह के द्वारा बताई गई हैं।

पवित्र कुआँन में सूरह 'निसा' में यह बताया गया है कि जो कमाई नहीं कर सकता और उसके पास कोई दूसरा साधन भी नहीं है, उसे गरीब या मुफलिस कहते हैं। अल्लाह पाक ने अमीरों की कमाई में गरीबों का भी अधिकार रखा है। जो गरीबों को उनका हक देगा उसको अल्लाह की नेमतें प्राप्त होगी, पवित्र कुआँन में बार-बार इस बात को कहा गया है और इसको बहुत महत्व दिया गया है। अल्लाह ने अपनी इबादत की ओर ध्यान दिलाने के साथ ही गरीबों की मदद करने को बार-बार कहा है। जिससे समाज में पैदा होने वाली ऊँच-नीच को कम किया जा सके। परन्तु ये बात भी साफ है कि मेहनत और समझ से काम लेने वाला और कामचोर व नासमझ कभी बराबर नहीं हो सकते। मेहनत करने वाले का हक बनता है कि वो अपनी मेहनत का फल पाये। परन्तु इसके साथ ही समाज में पैदा होने वाली अमीरी-गरीबी व ऊँच-नीच को आपस में बाँट कर कम किया जाये। इसीलिए गरीबों की मदद को भी इबादत बताया गया है। लेकिन इतना बोझ भी नहीं डाला गया कि मेहनत करने वाला और न करने वाला बराबर हो जाये। पवित्र कुआँन में इसी प्रकार सद्गुण, अच्छे व्यवहार और चरित्र को पवित्र रखने को कहा गया है। अत्याचार और अपवित्र चरित्र को कड़े शब्दों से मना किया गया है। कई स्थानों पर सद्गुण और अच्छे व्यवहार के विभिन्न पहलुओं को बताया गया है। ये बातें सूरह बनी इसराईल, लुकमान और हुजरात में विस्तार से मिलती हैं।

पिछली कौमों के किस्सों में भी सभ्य जीवन व्यतीत करने की जो हिदायत कि गयी हैं वो भी जगह-जगह देखी जा सकती है। मुख्य रूप से सूरह युसुफ में युसुफ अलै० का किस्सा और सूरह 'किसस' में मूसा अलै० का किस्सा विस्तार से दिया है और इनमें बड़ी हिदायत और मार्गदर्शन है।

पवित्र कुआँन में इस बात पर सबसे अधिक जोर दिया गया है कि अल्लाह ने इस कायनात (सृष्टि) को और इसमें रहने वाले इन्सानों को बहुत ऊँचे उद्देश्य से पैदा किया है। इन्सान को इस धरती पर अपना प्रतिनिधि बनाया और प्रबन्ध करने वाला बनाया। जमीन पर इन्सानों की जरूरत की सभी चीजें और उनके साधन भी रख दिये हैं और इन सब को पैदा करने का एक उद्देश्य है जो कोई खेल नहीं है। इन्सान को ये बात साफ-साफ बता दी है कि उसको यँ ही बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया गया है। उसको एक निर्धारित उद्देश्य के लिए पैदा किया गया है। न सिर्फ इन्सान, अल्लाह ने कोई भी चीज बिना उद्देश्य के पैदा

नहीं की है। इन्सानों की जरूरतें और उनके फायदे को उनका पैदा करने वाला भली-भाँति जानता है। इन्सान अपनी जरूरत के लिए बनाई गई चीजों को हर जगह देख सकता है। उनको देखकर उनके बनाने का उद्देश्य समझने का उपदेश दिया गया है। ज़मीन में और उसके ऊपर इन्सानों के लिए जो बहुत सी लाभदायक चीज़ें हैं, उनको समझकर जीवन को सफल एवं सुन्दर बनाने की और ध्यान-दिलाया गया है। जैसे- पहाड़, खेतियाँ, बागान जिनसे इन्सान फायदा उठाता है और दूर तक फैली नदियाँ, रेगिस्तान, समुद्र और इनके ऊपर सूरज, चाँद और तारे। इन सबको देखकर इनको पैदा करने वाले के उपकारों का धन्यवाद करने की प्रेरणा मिलती है।

जैसे अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में बताया है उसकी बनाई सब चीज़ें किस प्रकार उसकी बड़ाई और प्रशंसा करती हैं।

दुनिया में जो भी चीज़ें हैं उस अल्लाह का जाप करती हैं।

इन सबको बताने का उद्देश्य यह है कि इन्सान अल्लाह का शुक्र अदा करे और उसकी प्रशंसा करे। अल्लाह ने इन्सान को पैदा किया और दुनिया की सारी चीज़ों को उसके लिए पैदा किया। यहाँ तक कि फरिश्तो से उसको सज्दा कराया। इन्सान को यह एहसास दिलाया कि वह अल्लाह के सिवाय किसी और के सामने न झुके। यह बात इस सच्चाई की ओर संकेत करती है कि सारे संसार का पालनहार एक है, जैसे पवित्र कुर्आन में कहा गया है।

पवित्र कुर्आन का मुख्य विषय ऐकेश्वरवाद (तौहीद) है। दूसरी सभी बातों से इसका महत्व अधिक है। उसी एक अल्लाह के आदेशों को मानना है। इसीलिए उसके द्वारा भेजे गये नबियों पर ईमान लाना है और उनकी बातों पर विश्वास रखना है की वो अल्लाह के आदेशों को इन्सानों तक पहुँचाते थे। वो अल्लाह के आदेश से कुछ ऐसे कार्य भी करते थे, जो कोई और इन्सान नहीं कर पाता था, जिससे लोगों का उन पर विश्वास पक्का हो जाये। ह० मुहम्मद स० पर अल्लाह ने पवित्र कुर्आन अवतरित किया और ये ऐसा चमत्कार है जिसकी एक आयत भी बनाना इन्सानों की क्षमता से परे है। इसमें इन्सानों के मार्गदर्शन की बहुत सारी बातें बताई गई हैं। जो आज 1400 साल से अधिक समय बीत जाने के बाद भी इन्सानों को सही रास्ता दिखा रही है। पवित्र कुर्आन का उद्देश्य ही इन्सानों का मार्गदर्शन है। इसमें इन्सानों के स्वभाव और प्रकृति को देखते हुए उनके मार्ग दर्शन के लिए दिशा-निर्देश दिये गये हैं। पवित्र कुर्आन ने भिन्न-भिन्न स्वभाव के लोगो को उनकी प्रकृति के अनुसार ही दिशा-निर्देश दिये गये हैं, जो सुनने वालों के दिल और दिमाग पर बहुत प्रभाव डालते हैं। इन्सानों के धार्मिक इतिहास में समय के साथ-साथ जो परिस्थितियाँ और परिवर्तन आये हैं, उनका आभास पवित्र

कुर्आन की आयतों को पढ़ने से होता है। पवित्र कुर्आन में जगह-जगह ऐसी बातें मिलती हैं जो इन्सानों के धार्मिक जीवन एवं व्यवहार पर बहुत प्रभाव डालती हैं।

इन बातों से ईशवाणी की श्रेष्ठता और लाभों का ज्ञान होता है। आशा है कि इन चीजों से पढ़ने वालों को फायदा होगा और अल्लाह के कलाम की समझने में मदद मिलेगी और उन पर इसका प्रभाव पड़ेगा। अल्लाह से दुआ है कि वो इस कोशिश को कुबूल करे और पवित्र कुर्आन की महानता और उसकी प्रेरणा हमारे दिल में उत्पन्न करें।

इस किताब को लिखने में मुझे बहुत से ऐसे साथियों की मदद मिली जो दीन की अच्छी समझ रखते हैं। इनमें खास तौर पर मौलाना बिलाल हसनी नदवी, सहबान और साकिब नदवी हैं। इसके अलावा जिनकी मदद का हिस्सा ज्यादा है वो मुहम्मद वसीक नदवी हैं। इन्होंने इस किताब को तरतीब देने में बहुत मदद की है। अल्लाह इन सब को नेक बदला अता करे।

सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मस्जिद नबवी, मदीना मुनव्वरा

26-6-2102

भूमिका

मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

पवित्र कुर्आन आसमानी किताबों में अपनी विशेषताओं के साथ एक अनोखी किताब है। इसका सबसे बड़ा गुण इसका किसी भी प्रकार के परिवर्तन से पवित्र रहना है। ये अपने शब्दों और क्रम में हर प्रकार के परिवर्तन से सुरक्षित है। खुद पवित्र कुर्आन में अल्लाह ने कहा है, जो इस विशेषता की ओर संकेत करता है। “बेशक हम ने कुर्आन अवतरित किया और हम ही इसकी सुरक्षा करने वाले हैं”। इससे यह पता चलता है कि पवित्र कुर्आन कयामत तक अपनी विशेषताओं के साथ सुरक्षित और लाभदायक है।

इस्लाम के महान विद्वान मौलाना अली मियाँ ने अपनी किताब “मुताला कुर्आन के उसूलो मुबादी” में लिखा है कि पवित्र कुर्आन ‘फुरकान’ है अर्थात् धर्म और अधर्म में अन्तर बताने वाली किताब है और यह इसका ऐसा विशेष गुण है, जो इसके नाम के साथ जुड़ गया है। इसलिए पवित्र कुर्आन को ‘फुरकान’ भी कहा जाता है। “वो सर्वश्रेष्ठ है, जिसने यह फैसले की किताब अपने खास (विशेष) बन्दे पर अवतरित की, ताकि वो सारी दुनिया वालों के लिए डराने वाला हो”।

पवित्र कुर्आन ने हिदायत और गुमराही में, ईमान व कुफ्र में, इस्लाम व जिहालत में, अल्लाह की रज़ा और नाराज़गी में, यकीन व शक में, हलाल व हराम में कयामत तक के लिए जो अन्तर और सम्मान पैदा कर दिया है, उसकी मिसाल से दूसरी धार्मिक शिक्षाएँ और अन्य दूसरी किताबों का इतिहास खाली है। पवित्र कुर्आन अपनी भाषा शैली और विषयों में हर युग में अनुसंधान (खोज) का विषय रहा है। इसलिए कि वो अरबी भाषा में अवतरित होने के बाद भी प्रत्येक काल और प्रत्येक समाज को एक साथ सम्बोधित करता है। अल्लाह ने कहा है, “हमने तुम्हारी ओर ऐसी किताब अवतरित की है, जिसमें तुम्हारा वर्णन है, क्या तुम नहीं समझते?”। दूसरे स्थान पर कहा है- “और हमने उनके पास किताब पहुँचा दी है, जिसमें ज्ञान और बुद्धि के साथ खोल-खोल कर बयान कर दिया गया है और मोमिन (आस्थावान) लोगों के लिए, हिदायत व रहमत है”। एक दूसरी विशेषता की ओर इस प्रकार संकेत दिया गया है- “ये रोशन किताब की आयतें

हैं, हमने इस कुर्आन को अरबी में अवतरित किया, ताकि तुम समझ सको"। क्योंकि अरबों को अपनी भाषा शैली के श्रेष्ठ होने का दावा था और उनको इस बात पर धमण्ड था। वो दूसरी कौमों को अजमी (बेजुबान) समझते थे। पवित्र कुर्आन ने सबसे पहले उनको ही सम्बोधित किया। इसलिए पवित्र कुर्आन ने उनको ललकारा और कहा कि वो इससे श्रेष्ठ वाणी लाकर दिखाएँ। वो इसमें असफल रहे बल्कि उनके अन्तःकरण ने इसके मौजिज़ा (चमत्कार) होने को स्वीकार किया। वलीद के पुत्र मुगीरा जो ह० मुहम्मद स० का दुश्मन था, उसने जब ह० मुहम्मद स० को पवित्र कुर्आन पढ़ते हुए सुना तो इतने प्रभावित हुआ कि भागते हुए कुरैश के सरदारों के पास गया और कहा कि "खुदा की कसम मैंने मुहम्मद स० को ऐसा कलाम (वाणी) पढ़ते हुए सुना है कि जो न तो किसी इन्सान का कलाम हो सकता है और न ही किसी ज़िन्न का। उसमें तो बड़ी मिठास और मधुरता है, ये मन मोहक है और इसका ऊपरी हिस्सा बहुत फलदार (शब्दों में बहुत सुसज्जित) है और अर्थ के प्रति बहुत गहरा है। इस प्रकार से पवित्र कुर्आन को शब्दों के आधार पर एक चमत्कारी एवं गुणकारी किताब कहा गया है। पवित्र कुर्आन अपनी शब्द शैली के अनुसार एक चमत्कारी किताब है, सत्य मार्ग दिखाने वाली है, ज्ञान, सच्चाई, परोक्ष ज्ञान और पहले आने वाली कौमों के बारे में बताती है, बुरे विचारों से बचाने वाली और ईश्वर की आस्था से भरपूर है। इन्सान के जन्म, इस संसार के भेदों, ईश्वर के द्वारा पैदा की हुई चीज़ों की विशेषता, मानव चरित्र और उसके गुणों, भावनाओं, उसके कर्मों के अच्छे या बुरे परिणाम और इस संसार पर उसके प्रभाव, इसके अतिरिक्त मानव जीवन के हर मोड़ पर सत्य मार्ग दिखाने वाली किताब है।

पवित्र कुर्आन की इन विशेषताओं के अनुसार और इसके गुणों के अनुकूल हर दौर में ज्ञानी गणों ने अपने-अपने ज्ञान के अनुसार इस पर कार्य किया है। सबसे पहले पवित्र कुर्आन पर अरबों के ज़माने में उसके चमत्कारी होने पर कार्य किया गया और इस पर बहुत सारी किताबें लिखी गयीं जैसे- एज़ाज़ुल कुर्आन के नाम से अलग-अलग ज्ञानियों ने कई किताबें लिखी। उस ज़माने में पवित्र कुर्आन के मूल शब्द और अर्थ दोनों विशेषताओं के साथ चमत्कारी होने पर कार्य किया गया। किसी ने पवित्र कुर्आन को एक चमत्कारी किताब बताया, तो किसी ने इसकी दूसरी विशेषताओं पर प्रकाश डाला, इस सम्बन्ध में ज्ञान का एक भण्डार एकत्र हो गया और किताबों से पुस्तकालय भर गये।

इस प्रकार से पवित्र कुर्आन हर ज़माने में अध्ययन का विषय रहा और हर तरह के ज्ञानी इसके संसारिक और धार्मिक गुणों में रुची लेते रहे। इस प्रकार अरबी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषाओं में भी पवित्र कुर्आन के अलग-अलग विषयों

और विशेषताओं पर किताबें लिखी गयी। इसीलिए पवित्र कुर्आन से प्रभावित होकर हर दौर में बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और आज तक इसके उदाहरण दिन-प्रतिदिन सामने आ रहे हैं। एक इस्लामी विद्वान मौलाना अली मियाँ नदवी अपनी किताब में पवित्र कुर्आन की इन विशेषताओं और गुणों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि "पवित्र कुर्आन अपने शब्द और अर्थ दोनों में एक चमत्कारी किताब है और साथ ही साथ अपने विषयों में ज्ञान का एक समुद्र भी है। इसके अन्दर धार्मिक तथ्यों, आचरण और उसके प्रभाव, क्रान्ति, और दूसरी विशेषताओं का भरपूर वर्णन है। इसकी हर विशेषता ऐसी है कि इसकी तुलना किसी अन्य धार्मिक किताब से नहीं की जा सकता"।

आगे लिखते हैं- "पवित्र कुर्आन ने आधुनिक विज्ञान के साथ नयी-नयी खोजों में आधुनिक ज्ञानियों का मार्ग दर्शन भी किया है"।

इस दौर में पवित्र कुर्आन के विरुद्ध कुछ संस्थाओं के ज्ञानी ये दावा कर रहे हैं कि पवित्र कुर्आन युद्ध और क्रूरता की ओर ले जाने वाली किताब है। इसलिए पवित्र कुर्आन में अमन और शान्ति का सन्देश देने वाली आयतों का प्रचार किया गया, जो इन विषयों को विस्तार से बताती हैं। इसमें दुश्मन के जुल्म और कठोरता के विरुद्ध अपने बचाव कार्य का आदेश दिया गया है, न कि किसी दूसरे इन्सान पर जुल्म और अत्याचार करने का। पवित्र कुर्आन अमन और शान्ति के साथ हर तरह के हालात को नियन्त्रित करने का सन्देश देता है। इसलिए इस समय आवश्यकता इस बात की है कि पवित्र कुर्आन में इन्सानों की सफलता, उनके व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के जो नियम बताए गये हैं उनको ज्ञान के प्रकाश में लोगों के सामने लाया जाए। ये पवित्र कुर्आन का मुख्य विषय है। पवित्र कुर्आन को अल्लाह ने खुद हिदायत का स्रोत, दिलों की ठण्डक और जीवन का नियम कहा है। आवश्यकता थी कि पवित्र कुर्आन के इन विषयों पर प्रकाश डाला जाए जो मानव जीवन और उसके आचरण से सम्बन्धित हैं। पवित्र कुर्आन ने दूसरे धर्मों और उनके ज्ञानियों का आदर करने को कहा है। इन्सान के व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के जो नियम बताए हैं उनका अनुसरण किया जाए। कठोरता और जुल्म की हालात में भी धैर्य और उचित कार्यवाही का जो आदेश दिया है, इन्साफ का दामन थामने का जो उपदेश दिया है उसको बताया जाए। इन विषयों से दूसरी धार्मिक किताबें खाली हैं।

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी को 'मानवता का सन्देश फोरम' के द्वारा कुछ गैर मुस्लिम भाईयों से इस विषय पर बात करने का अवसर मिला और कुर्आन के बारे में गलतफहमियों का अन्दाज़ा हुआ। तो उन्हें इस बात की आवश्यकता महसूस हुई कि कुर्आन के वो विषय जो अल्लाह, अल्लाह पर ईमान, मानव

जीवन और उसका उद्देश्य, उसके संसारिक और परलौकिक जीवन, अल्लाह के आदेशों, आपसी मेल-मिलाप और आचरण से सम्बन्धित है उनको विस्तार पूर्वक बताया जाए। जिससे पता चले कि ये नियम केवल मुसलमानों के लिए नहीं बल्कि हर इन्सान के जीवन के सुधार के लिए आवश्यक हैं। इन नियमों पर चलकर एक सभ्य समाज का गठन होता है और मन को शान्ति मिलती है। मौलाना का पवित्र कुर्आन के अर्थ के सम्बोधन के समय इन विषयों की ओर ध्यान गया और इस बात कि आवश्यकता महसूस हुई कि पवित्र कुर्आन के इन विषयों को पहले उर्दू का ज्ञान रखने वाले लोगों तक पहुँचाए और फिर दूसरी भाषाओं में भी उसका अनुवाद हो जिससे दूसरे धर्मों के लोगों तक भी पवित्र कुर्आन के इस लाभदायक सन्देश को पहुँचाया जा सके। बहुत से लोग पवित्र कुर्आन की इस विशेषता को मानते हैं और जिनको पवित्र कुर्आन के अध्ययन और उसके अर्थ को समझने का अवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने पवित्र कुर्आन के एक चमत्कारी ज्ञान होने के साथ-साथ आचरण और स्वभाव पर प्रभावी होने को माना है। इसलिए मौलाना ने इन विषयों पर एक विस्तृत किताब लिखी। किताब के कुछ विषयों से किताब की विशेषता को जाना जा सकता है। जिनमें विशेष रूप से अल्लाह की महानता, उसकी कुदरत, सारे संसार पर कृपा, पवित्र कुर्आन का विशेष स्थान, ज्ञान की विशेषता और उसका विस्तार, इस सृष्टि की एक क्रमबद्ध व्यवस्था, नबियों के आने का उद्देश्य, पवित्र कुर्आन की शिक्षाएँ और अन्तिम नबी का विशेष स्थान व कार्य आदि हैं।

पवित्र कुर्आन के विषय पर ये किताब “कुर्आन मजीद इन्सानी ज़िन्दगी का रहबरे कामिल” लोगों के सामने पेश की गयी, जिससे पवित्र कुर्आन का ज्ञान लोगों तक पहुँच जाए और सारे संसार में व्याकुलता, व्यस्तता और घृणा की जो आग जल रही है उसको इसके ज्ञान से ठण्डा किया जा सके और लोगों के दिलों में प्रेम, शान्ति और भाई-चारे के दीप जलाए जा सके और जीवन को बिगाड़ से भलाई की ओर लाया जा सके। ये किताब इस उद्देश्य में एक महत्वपूर्ण योगदान है, जिससे यह सिद्ध होता है कि पवित्र कुर्आन हमें दया, कृपा और मेल-मिलाप के निर्देश देता है न कि क्रूरता और निर्दयता की ओर बुलाता है जैसा कि पवित्र कुर्आन में अल्लाह का आदेश है- *अपने आप को रोके रखो उस चीज़ से जो तुमको (बुराई या पीड़ा) पहुँची है, निसन्देह ये तो बड़े संयम का कार्य है।*

आशा है कि ये किताब आम जनता और ज्ञानियों के लिए लाभदायक होगी और पवित्र कुर्आन से सम्बन्धित ज्ञान के भण्डार में एक विशेष और महत्वपूर्ण योगदान होगी।

मौलाना मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
संरक्षक शिक्षा, नदवातुल उलामा, लखनऊ उ० प्र०

9 ज़िलकादा 1433 हि०
26 सितम्बर 2012

प्रस्तावना

बिस्मिल्ला हिरहमाननिरहीम

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

अल्लाह की यह पवित्र किताब कुर्आन जो अल्लाह के द्वारा भेजी गई किताबों में अन्तिम किताब है, इन्सानों की आवश्यकताओं के अनुसार सम्पूर्ण किताब है। यह किताब अन्तिम नबी मुहम्मद स० पर अवतरित हुई है। ये किताब अपने अवतरण के समय से लेकर दुनिया के अन्त तक समस्त इन्सानों के लिए पवित्र चरित्र और सभ्य आचरण का रास्ता बताने वाली और उनकी संरक्षक बना कर भेजी गई है।

उस अल्लाह ने आप पर किताब उतारी (पवित्र कुर्आन) जो बिल्कुल सच्ची है और जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक (पुष्टि) करती है, उसी ने इससे पहले तौरात और इंजील को उतारा था, इससे पहले लोगों की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिए और फुरकान (सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने वाली किताब) भी उसी ने उतारा है। (आले इमरान 2-3)

"वास्तव में ये कुर्आन वो मार्ग दिखाता है जो बहुत ही सीधा है"। (असरा 9)

"और हमने आप की ओर यह किताब हक (सच्चाई) के साथ उतारी है जो अपने से पहले आई किताबों की पुष्टि करने वाली है और उनकी मुहाफिज़ (रक्षा करने वाली) है"। (मायदा 48)

"ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुली दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारी ओर खुला हुआ नूर उतार दिया है"। (निसा 174)

"वह बड़ी ही बरकत वाला है जिसने फुरकान (सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने वाली किताब) अपने बन्दे पर उतारी जिससे वह सारे संसार के लिए चेतावनी देने वाला बन जाये"। (फुरकान 1)

"और यह कुर्आन सारे संसार के लिए नसीहत है"। (कलम 52)

"और यह कुर्आन किसी थिक्कारे हुए शैतान का कलाम (बातें) नहीं है, फिर तुम किधर जा रहे हो, यह (कुर्आन) तो सारे संसार वालों के लिए एक

नसीहत है, तुममें से हर उस व्यक्ति के लिए जो सीधा रास्ता अपनाना चाहे”।
(तकवीर 25-27)

मानव जीवन के हर हिस्से में कुर्आन से मार्गदर्शन मिलता है। इन्सान के व्यवहार और चरित्र का कोई अंश इससे बाहर नहीं है। जब तक मानव जीवन इससे जुड़ा रहेगा अल्लाह की मदद मिलती रहेगी। क्योंकि सारी सृष्टि एक उसी सर्वशक्तिमान की देख-रेख में है। ये सम्बन्ध जिस समय भी टूट जायेगा यह दुनिया बिखर जायेगी और नष्ट हो जायेगी। इसलिए इस संसार के बचे रहने के लिए इन्सान और खुदा के बीच वो सम्बन्ध रहना बहुत आवश्यक है जिसको पवित्र कुर्आन ने बताया है। अल्लाह का सहारा सबके लिए आवश्यक है, इस बात का पवित्र कुर्आन में शुरू से ही ध्यान दिलाया गया है और हर सूरह के आरम्भ में अल्लाह का नाम लिया जाता है।

“तो जब आप कुर्आन पढ़ने लगें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग लिया करें”। (नहल 98)

ये अल्लाह का करम और रहमत (कृपा और दया) है कि उसने अपने समस्त गुणों में अपनी रहमत को सबसे ऊपर रखा है। अल्लाह ने कहा भी है कि मेरी रहमत मेरे गुस्से से बढ़कर है। ये भी बताया कि रहमत को जब बनाया गया तो उसके 100 भाग किये, एक भाग को सारी दुनिया और इसमें बनाये गये जीवों में बाँट दिया गया। इसी एक अंश के कारण हर माँ अपने बच्चों पर दया करती है और एक इन्सान दूसरे पर दया करता है। बचे हुए 99 भाग को अल्लाह ने अपने लिये रखा है, जिससे वह सारी दुनिया पर रहम करता है और करता रहेगा। इसके साथ ही अल्लाह बहुत न्याय करने वाला है और वो मनुष्यों द्वारा किये गये कर्मों और चरित्र में जो अन्तर है, उसका भी ध्यान रखता है। इसलिए जो जितने अच्छे कर्म करेगा, वो उतनी अधिक रहमत पायेगा और जो इसमें कमी करेगा, उसको कम हिस्सा मिलेगा। वरना अच्छे और बुरे के बीच कोई अन्तर नहीं रहेगा और अच्छे कर्म करने वालों के साथ न्याय न हो सकेगा। सांसारिक जीवन में ईनाम और सज़ा नहीं है। ये जीवन तो कर्मों के लिए है परन्तु मृत्यु के बाद कर्मों का फल मिलना तय है। कर्म इसी जीवन में करना है और फल मृत्यु के बाद परलोक में मिलेगा। इसलिए कुर्आन के आरम्भ में ही इन बातों को जोर देकर बताया गया है। इस सूरह को सूरह ‘फ़ातिहा’ कहते हैं। इसको अल्लाह की मुख्य उपासना नमाज़ के हर हिस्से में पढ़ना अनिवार्य किया गया है। अल्लाह का कलाम हर हाल में इन्सानों के अच्छे व्यवहार और चरित्र की बुनियाद है। पवित्र कुर्आन अल्लाह के नाम और उसकी रहमत से आरम्भ हुआ है। इससे अल्लाह की कृपा और उसके सारी सृष्टि के मालिक होने का पता चलता है।

इन्सान को इस बात के भी निर्देश दिये गये हैं कि वह अपना हर काम अल्लाह के नाम के साथ आरम्भ करे। उससे मदद माँगे और उसकी रहमत की उम्मीद करे। उसकी रहमत को पाने के लिए पवित्र कुआँन में बताये गये रास्तो को अपनाये। दया करना जो कि एक उच्च गुण है, इसलिए आवश्यक है क्योंकि हमारे पैदा करने वाले अल्लाह ने इसका आदेश दिया है। हर इन्सान इसको अपनाये और दूसरो पर दया करे।

अल्लाह का नाम और उसकी रहमत

इस सृष्टि को बनाने वाले और सबके मालिक के पवित्र कुआँन की हर सूरह के आरम्भ में पढ़ी जाने वाली आयत *"बिस्मिल्लाह हिररहमान हिररहीम"* की खास बात यह है कि इसमें सारी दुनिया के मालिक के बुनियादी नाम 'अल्लाह' के सहारे बात शुरू की गई है। इस संसार को बनाने वाला बहुत ऊँचा और सर्वश्रेष्ठ है। इसी प्रकार उसका नाम भी बहुत ऊँचा है और सारे संसार को अपने वश में किये हुए है।

उसके बुनियादी नाम अल्लाह के अतिरिक्त कुछ गुणवाचक नाम भी हैं (जो उसके विशेष गुणों को दर्शाते हैं) जो 99 बताये जाते हैं। जैसे-

रहमान- रहम करने वाला (अति कृपालु)

रहीम- खास दया करने वाला (महादयावान)

मालिक- सबका मालिक

राज़िक- रोजी देने वाला

खालिक- पैदा करने वाला (सृष्टा)

नासिर- मदद करने वाला

कादिर- कुदरत रखने वाला

इसी प्रकार और भी बहुत से गुण हैं जिनके नाम भी भिन्न हैं। इस सृष्टि को सबसे अधिक उसकी रहमत की आवश्यकता है। ये गुण खास तौर से बिस्मिल्लाह में उसके बुनियादी नाम अल्लाह के साथ रखा गया है। उसके द्वारा बनाई गई चीजों में उसकी रहमत नज़र आती है। इसलिए कोई काम तब तक अच्छा नहीं हो सकता जब तक उसके नाम का सहारा न लिया जाये। हर सूरह के शुरू में पढ़ी जाने वाली इस आयत में अल्लाह की रहमत दो रूप में आई है। एक रहमान और दूसरा रहीम। इस प्रकार अल्लाह की रहमत पूरी तरह उसके बन्दो पर छाई हुई है। अल्लाह की रहमत से सारी दुनिया का सबसे अधिक सामना होता है। इसीलिए बन्दा जब अपने रब का नाम लेता है, तो उसकी रहमत का भी जिक्र करता है। इसलिए इस आयत में बुनियादी नाम 'अल्लाह' के साथ ये दोनों नाम 'रहमान' और 'रहीम' जुड़े हुए आते हैं।

सूरह फातिहा

पवित्र कुर्आन में सबसे पहले सिर्फ 7 आयतों की एक छोटी सी सूरह आती है। जो अल्लाह और उसके बन्दों के बीच श्रद्धा और सम्बन्ध को बताती है। क्योंकि पवित्र कुर्आन का आरम्भ इस मुख्य और छोटी सूरत से किया गया है, इसलिए इसका नाम सूरह 'फातिहा' है।

"हर प्रकार की तारीफ अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम आलमों (सम्पूर्ण सृष्टि) का रब (पालने वाला) है, बड़ा मेहरबान (दयावान), निहायत रहम वाला (कृपालु) है, न्याय के दिन का मालिक है (हे हमारे रब) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं, हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनआम फरमाया, न कि उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ, और न उनके रास्ते पर जो राह से भटके हुए हैं।" (सूरह-फातिहा)

इस दुनिया को पैदा करने वाले मालिक का पाक कलाम अपने आदेशों, मार्गदर्शन और उदाहरणों से एक चमकती हुई रोशनी के समान है। जो इन्सानों को जीवन के अन्धेरो में सही रास्ता दिखाती है और ठोकरों से बचाती है। ये ठोकरे किसी पत्थर से लगने वाली नहीं है, ये तो व्यवहारिक जीवन में आने वाली ठोकरें हैं। अल्लाह के द्वारा दिये पवित्र कुर्आन की ये रोशनी न हो, तो जीवन में ऐसा अन्धेरा छा जायेगा, जो मानव जीवन के उद्देश्य को नष्ट कर देगा। इसी से वचने के लिए पवित्र कुर्आन अल्लाह की ओर से दी हुई अन्तिम और सम्पूर्ण किताब है। पवित्र कुर्आन इस संसार को बनाने वाले की ओर से इन्सानों के लिए मार्गदर्शन है।

पवित्र कुर्आन इंसानों के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में समस्त कार्यों में मार्गदर्शन करता है। जो इसके प्रकाश में चलेगा वह सफल होगा और जो इससे बचेगा वो असफल होकर बर्बाद हो जायेगा। पवित्र कुर्आन के द्वारा जीवन के अन्धेरो में रोशनी मिलने के कारण इसको 'नूर' (प्रकाश) भी कहा जाता है।

"ऐ लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुली दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारी ओर खुला और साफ नूर उतार दिया है।" (निसा 174)

तो जो लोग उस नबी (मुहम्मद स०) पर ईमान लाए, और उसका साथ दिया और उसकी सहायता की और उस नूर (पवित्र कुर्आन) की पैरवी (अनुसरण) की, जो उसके साथ उतारा गया है वही लोग (पूरी तरह) कामयाब होने वाले हैं।" (आराफ 157)

"तो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और नूर (कुर्आन) पर जो हमने नाज़िल (अवतरित) किया है।" (तगाबुन 8)

अध्याय एक

कुर्आन मजीद और इल्म

ज्ञान की विशेषता

उस सर्वशक्तिमान अल्लाह के द्वारा प्रदान किये गये पवित्र कुर्आन, जो इन्सानि दुनिया को उजाला देने वाला है। इसका आरम्भ जिन आयतों से किया गया उनमें ज्ञान के महत्व को सबसे पहले बताया गया है। इसी के साथ ज्ञान को अल्लाह के नाम के साथ जोड़ने का आदेश दिया गया है, जिससे ज्ञान का सही लाभ और अल्लाह की कृपा प्राप्त हो। ज्ञान वो इनाम (उपहार) है जिसके कारण इन्सान सृष्टि की दूसरी वस्तुओं से श्रेष्ठ है। ये विशेषता किसी और जीवित प्राणी को नहीं मिली है। इसलिए इन्सान को पैदा करने का वर्णन करने के साथ ही अल्लाह ने ज्ञान के महत्व का भी वर्णन किया है।

आयत:- और याद करो उस वक्त को जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा, "मैं ज़मीन में अपना नायब (प्रतिनिधि) बनाने वाला हूँ"। तो उन्होंने (फरिश्तों ने) कहा "क्या आप ज़मीन में ऐसे व्यक्ति को (नायब) बनायेंगे जो इस ज़मीन में फसाद करेगा और खून बहायेगा। जबकि हम तो आप की प्रशंसा और पवित्रता बयान करते ही रहते हैं"। (अल्लाह ने) कहा वास्तव में जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते और अल्लाह ने आदम को सारे नाम सिखाए, फिर उन्हें फरिश्तों के सामने प्रस्तुत किया और कहा, "अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ"। उन सबने कहा, (ऐ अल्लाह) "तू पाक है" तूने जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई ज्ञान नहीं, बेशक तू ज्ञान वाला, हिकमत वाला है"। तब अल्लाह ने आदम से कहा, ऐ आदम इन फरिश्तों को वो नाम बता दो, जब उन्होंने (आदम ने) नाम बता दिये तो फरमाया, क्या मैंने तुम से (पहले ही) नहीं कहा था, कि ज़मीन और आसमानों की छिपी बातों को मैं ही जानता हूँ और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम दिखाते हो और जो कुछ छिपाते हो। (अल-बकर 30-33)

पवित्र कुर्आन के अवतरण के समय में पहली आयत में ही ज्ञान और ज्ञान को सीखने का वर्णन है।

अपने रब का नाम लेकर पढ़िए, जिसने (सृष्टि को) पैदा किया, उसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया। पढ़िए और (याद रखिए कि) आपका रब बड़ा करीम (दयावान) है, जिसने कलम के द्वारा ज्ञान सिखाया और इन्सानों को वो ज्ञान सिखाया जो वो नहीं जानता था। (अलक 5)

इसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि पढ़ो और ज्ञान प्राप्त करो, जो कलम के द्वारा तुमको दिया गया है। ज्ञान अल्लाह का इन्सानों को दिया बड़ा उपहार है। इस संसार में धार्मिक और सामाजिक जीवन में जो विकास दिखाई देता है, वो इन्सान के ज्ञान की प्राप्ति के कारण ही हैं। इस प्रकार पवित्र कुर्आन की पहली आयत में इसी को बताया गया है। इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि अल्लाह के नाम से पढ़ो, जो सबका पैदा करने वाला है। यहीं से इन्सानों के दो समूह हो जाते हैं। एक अल्लाह के नाम से पढ़ने वाला और दूसरा अल्लाह के नाम को छोड़कर पढ़ने वाला। यानी एक जीवन के अन्धेरो में अल्लाह के नाम की रोशनी लेकर चलने वाला और दूसरा घोर अन्धेरो में हाथ-पैर मारने वाला। पवित्र कुर्आन में इस प्रकार कहा गया है-

या उनके कर्म ऐसे हैं, जैसे बड़े गहरे समुद्र के अन्धेरे और फिर उसको एक बड़ी लहर ने ढाक लिया हो, उस लहर के ऊपर दूसरी लहर हो और उसके ऊपर बादल हो, (यानी) ऊपर-नीचे अन्धेरा ही अन्धेरा हो, कि अगर कोई ऐसी हालत में अपना हाथ निकाले और देखना चाहे तो उसे दिखाई न दे, और जिसको अल्लाह ही नूर (हिदायत) न दे उसको (कभी भी) नूर नहीं मिल सकता। (नूर-40)

जीवन के अन्धेरो में सिर्फ अपने देखने, सुनने और अन्दाजे से समझने का रास्ता भी है। इससे दुनिया की चीजों को समझने और उनसे लाभ उठाने की क्षमता भी अल्लाह ने इन्सान को दी है। इससे जीवन में तो लाभ मिल सकता है, पर इस जीवन के बाद जब दोबारा जीवन मिलेगा, तो उसमें कोई लाभ नहीं होगा। इसलिए कि अल्लाह के नाम से मिलने वाले लाभ से ऐसे लोग वंचित रहेंगे। मृत्यु के बाद सदा के लिए जो जीवन मिलेगा, उसमें सिर्फ अल्लाह के नाम से मिलने वाला लाभ ही काम आयेगा।

सो कुछ लोग (जो नास्तिक हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि हमारे खुदा, हमें जो कुछ देना है, वो दुनिया में दे दीजिए और ऐसे इन्सान को आखिरत में कोई हिस्सा नहीं मिलेगा, और कुछ लोग जो मोमिन (आस्तिक) हैं, ऐसे हैं जो कहते हैं कि हमारे खुदा हमको दुनिया में भी भलाई दीजिए और आखिरत में भी भलाई दीजिए, और नरक के अज़ाब से बचाईये। ऐसे लोगों को दोनों लोकों में बड़ा हिस्सा (भलाई का) मिलेगा। उनके कर्मों की वजह से, और अल्लाह जल्द ही हिसाब लेने वाला है। (अल-बकर 200-202)

इस संसार में इन्सान को जो भी मिल रहा है, वो अल्लाह के नाम से ही मिल रहा है। सिर्फ दुनिया चाहने वालों को दुनिया मिल रही है और परलोक का लाभ चाहने वालों को परलोक में भी लाभ मिलेगा। अल्लाह ने इन्सान को भू-लोक और परलोक में लाभ देने वाला ज्ञान देने के लिए पवित्र कुर्आन को उनका मार्गदर्शक बना कर भेजा है। ये अल्लाह का अपने फरिश्ते के द्वारा उतारा गया, मार्गदर्शन करने वाला और सफलता दिलाने वाला कलाम है। इसकी महत्वपूर्णता पवित्र कुर्आन की पहली आयत में बता दी गई है। *"ये वो नेमत है जिसकी मदद से इन्सान हमेशा-हमेशा की कामयाबी पा सकता है। इससे मिलने वाला ज्ञान ऐसा ज्ञान है की जो इससे वंचित रहा वो हमेशा के लिए असफल हो गया"*।

अल्लाह ने इन्सानों को ज्ञान से लाभ उठाने की विशेषता देकर उसे अपनी बनाई सृष्टि में श्रेष्ठ बना दिया। विशेषकर इन्सान को ज्ञान प्राप्त करने और उसे बढ़ाने की क्षमता दी। ज्ञान वो रास्ता है जिससे इन्सान एक-दूसरे के हालात और अनुभव को जानता है और लाभ-हानि की बातों को समझता है। अपनी बुद्धि का प्रयोग कर इन्सान अपने जीवन में इन बातों से लाभ उठाता है और नुकसान देने वाली चीज़ों से बचता है। इस प्रकार इन्सान बुद्धि का प्रयोग करके ज्ञान को सीखता है और उसे बढ़ाता है। ज्ञान और बुद्धि दो ऐसी चीज़ें हैं जो अल्लाह ने मुख्य रूप से इन्सानों को दी है। इसके द्वारा ही इन्सान श्रेष्ठ सिद्ध होता है। इस प्रकार कलम इन्सानों को अल्लाह की ओर से दिया तीसरा उपहार है। जिसके द्वारा एक इन्सान का ज्ञान दूसरे इन्सान तक पहुँचता है। वो अपने बारे में दूसरों को बताता है। ये बात जानवरों में नहीं है, वो सिर्फ एक दूसरों को देखकर ही सीख सकते हैं और यह बहुत कम होता है उनका ज्ञान बस उन तक ही रहता है। इन्सान अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाता है और वो दूसरों तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार ज्ञान के द्वारा अपनी जानकारी को दूसरों तक पहुँचाता है। ये कलम ही है जो सदियों से मिली जानकारी को दूसरों तक सही रूप में पहुँचाता है और लोग इससे लाभ उठाते हैं।

अल्लाह ने अपनी इस नेमत की ओर ध्यान दिलाते हुये कहा है-

"जिसने इन्सान को कलम से सिखाया और इन्सान को वो चीज़ें सिखाई जो वो नहीं जानता था" (कलम)।

इस सिलसिले में ये बातें जानना आवश्यक है कि अल्लाह ने इन्सान को ये नेमतें कलम, ज्ञान और बुद्धि बिना किसी मकसद के नहीं दी है। इन्सानों को दुनिया में एक साथ मिलकर सामाजिक जीवन जीने की मुख्य ज़िम्मेदारी देनी थी। ये बात और किसी को नहीं दी गई है। इसलिए इन्सान को बेहतर सुविधायें दी। जिस समय पवित्र कुर्आन उतरा, वो दौर इन्सानों के छोटे-छोटे कबीलों से

निकलकर बड़े दायरे में आने का दौर था। इसके लिए नयी-नयी खोजे और उपलब्धियों को प्राप्त करने का दौर शुरू होने वाला था। इससे पहले इन्सान छोटे-छोटे कबीलों में रहता था और अपनी पसन्द और ताकत के अनुसार काम करता था, उसके ज्ञान का प्रयोग केवल संसारिक लाभ के लिए होता था। इन्सान उस ज्ञान को, जो उसको नबियों के द्वारा दिया गया था अन्देखा कर देता था।

अल्लाह की ओर से भेजे गये अन्तिम नबी के द्वारा इन्सानों का मार्गदर्शन उस ओर किया जाने वाला था जो संसारिक जीवन से निकलकर इन्सानों के कर्म व महत्व के अनुकूल हो। उसके वास्तविक उद्देश्य और सत्यमार्ग को पाने का माध्यम बने। उसको इसके लिए ऐसा ज्ञान दिया जाने वाला था, जिसमें मानव जीवन का हर पहलु आ जाये और उसकी हर आवश्यकता में इससे मार्गदर्शन मिले। अल्लाह इससे पहले भी नबियों को ये ज्ञान देता रहा था, जो उस युग के अनुसार होता था। किन्तु अब अन्तिम वाणी को पवित्र कुर्आन के रूप में अधिक दृढ़ और सम्पूर्ण बना कर भेजा गया था। ये ज्ञान जो हमें पवित्र कुर्आन से मिला है, इसमें इन्सानों के स्वभाव, उनकी आवश्यकताएँ, सामाजिक जीवन का रास्ता, उसमें आने वाली समस्याएँ और उनके समाधान को अच्छी तरह बताया गया है। अच्छे और बुरे में अन्तर बताया गया है और ऐसी बातें बताई गई हैं, जिनको इन्सान अपनी कोशिशों से नहीं जान पाता। इन्सान को उसके जीवन में सफलता का मार्ग बताने के लिये पवित्र कुर्आन में बहुत आकर्षक शैली का प्रयोग किया गया है। कहीं पर पिछली कौमों के किस्से बताये गये हैं तो कहीं पर उनमें पाई जाने वाली बुराईयों से बचने के लिए आसमानी हिदायत के रास्ते बताये गये हैं। अल्लाह की बड़ाई, उसकी निगरानी और उसके लिए आवश्यक ज्ञान को इस प्रकार बताया गया है कि साधारण बुद्धि वाला इन्सान भी इस बात को समझ ले कि ये सब व्यवस्था उस एक अल्लाह से जुड़ी हुयी है।

अल्लाह ने इन्सानों को योग्यताएँ इसलिए दी है कि वह इस व्यवस्था को अल्लाह की इच्छा के अनुसार चलाये। इसमें कहीं ज़मीन पर मिलने वाली नेमतों का आसान शब्दों में जिक्र किया गया है, तो कहीं इन्सान का उसकी क्षमता से सभ्य कर्म करने की ओर ध्यान दिलाया है। कहीं इन्सान के स्वभाव की उन बातों को बताया है, जिनको वो अपनी बुद्धि व अनुभव से पूरी तरह नहीं समझ सकता। इस प्रकार वो बातें जो जीवन को लाभकारी बना सकती हैं और इसकी वास्तविक सफलता के भेदों को अच्छी तरह बताया गया है। ये सब ज्ञान की वो बातें हैं, जो ईशवाणी के प्रकाश में मुख्य उद्देश्य तक पहुँचती हैं। वास्तविक खतरों से बचाती हैं और वास्तविक सफलता की ओर ले जाती हैं। इसलिए कहा गया है की अल्लाह की नाराज़गी से सच में डरने वाले वो हैं जो उसकी इच्छा के अनुसार कर्म करते हैं।

अल्लाह से उसके वो बन्दे ही डरते हैं जो जानने वाले हैं, बेशक अल्लाह गालिब है और गुनाहों को बहुत माफ करने वाला है। (फ़ातिर 28)

यह ज्ञान पवित्र कुर्आन की रोशनी में वह ज्ञान है जिसमें इन्सानों की वास्तविक सफलता रखी गयी है। वो ज्ञान जिसको आदमी अपनी सोच और अनुमान से प्राप्त करता है, उसको पवित्र कुर्आन में मत/धारणा कहा गया है। वो ज्ञान जो इन्सान के जीवन के अच्छे या बुरे परिणाम पर आधारित है, उससे बचना किस प्रकार सही हो सकता है। इसको जानकर ही आदमी अपने पैदा करने वाले के द्वारा दिये जाने वाले अच्छे परिणाम और दण्ड के बारे में जानेगा। इस प्रकार अपने पैदा करने वाले के डर से अपने जीवन को उसके आदेशों के अनुसार व्यतीत करेगा। दुनिया का यह आधुनिक युग जिसमें ज्ञान का प्रकाश फैल रहा है इसमें इन्सानों को वास्तविक सफलता दिलाने वाले ज्ञान को प्राप्त करने की ओर ध्यान देना चाहिए। जो पवित्र कुर्आन के रूप में अन्तिम नबी को दिया गया है।

पवित्र कुर्आन का ऊँचा स्थान

सारी सृष्टि और समस्त जीवों को बनाने वाले और पालने वाले ने ज्ञान को प्राप्त करने की क्षमता और अपनी वाणी पवित्र कुर्आन के द्वारा उच्चतम ज्ञान देकर इन्सानों को सारी सृष्टि में श्रेष्ठ बना दिया। किन्तु ये उच्च स्थान तभी प्राप्त हो सकता है जब इन्सान अल्लाह के दिये ज्ञान से लाभ उठाये। ज्ञान को अल्लाह के नाम के साथ पाने से दोनों लोकों में सफलता मिलती है। इसको अल्लाह के नाम के बिना पाने से सिर्फ कुछ साल सांसारिक जीवन में खाने-पीने की वस्तुओं का लाभ होता है। इसके बाद सदा रहने वाली असफलता और निराशा रहती है। इस वास्तविकता को ठुकराने वाली और अल्लाह के नाम से लाभ न उठाने वालों को काफिर कहा गया है, जिसका अर्थ है इन्कार करने वाला। दूसरे लोग जो अल्लाह के नाम के साथ ज्ञान प्राप्त करते हैं और पवित्र कुर्आन से मिलने वाले प्रकाश से अपने जीवन को सवारते हैं। उन्हें मोमिन कहते हैं। क्योंकि वो अपने रब की बातों को मानने वाले हैं। उनको मुसलमान कहा गया है कि उन्होंने अपनी मर्जी को अपने रब को सौंप दिया है। अल्लाह के दिये आदेशों का पालन करते हैं। अल्लाह का पवित्र कुर्आन अरबी भाषा में अवतरित हुआ है जिससे की वहाँ रहने वाले (अरब वासी) इसको समझ सकें। अल्लाह के द्वारा भेजे गये अन्तिम नबी अरब वासी थे और वहाँ की भाषा बोलते थे। उन्हें जिन लोगों को सत्य मार्ग की शिक्षा देनी थी, वो अरबी भाषा को बोलते और समझते थे। पवित्र कुर्आन के उतरने के समय पर अरबी भाषा अपनी व्यापकता के उच्चतम शिखर पर पहुँच चुकी थी। इस प्रकार बात को समझाने और दिल में उतारने के जो बुद्धितापूर्ण और मन-मस्तिष्क पर प्रभाव डालने वाले रास्ते हो सकते हैं, वो इस पवित्र ग्रन्थ में अपनाये गये हैं।

अतः पवित्र कुर्आन की खुली हुई और प्रभाव डालने वाली बातें इसकी विशेषता बनी। इनमें कुछ तो बहुत साधारण थी जिनको सरलता से उस भाषा का ज्ञानी समझ लेता था। इस विशेषता का बहुत सी आयतों में उल्लेख किया गया है।

और ये कुर्आन सारे संसार के रब का नाज़िल किया हुआ है, इसको अमानतदार फरिश्ता लेकर आया है, आप के दिल पर, साफ अरबी भाषा में जिससे आप भी सारे डराने वालों के समान हो जाए। (शोअरा, 192-195)

बहुत सी विशेषतायें हैं जो विचार करने से धीरे-धीरे समझ आती हैं। इसका निर्देश इन आयतों में मिलता है।

और हमने लोगों की हिदायत के लिए इस कुर्आन में हर प्रकार के महत्वपूर्ण और उत्तम मिसाले बयान कर दी हैं, ताकी लोग नसीहत हासिल करें। एक अरबी कुर्आन के रूप में जिसमें कोई त्रुटि नहीं, ताकि लोग परहेजगारी अपनाए। (जुमर 27-28)

यह (किताब) रहमान (दयालु) और रहीम (कृपालु) की ओर से नाज़िल की गयी है। ये एक ऐसी किताब है जिसकी आयतें साफ-साफ बयान की गयी हैं। यानि ऐसा कुर्आन है जो अरबी भाषा में है, ऐसे लोगों के लिए नाफे (लाभकारी) है जो बुद्धिमान हैं। खुश खबरी देने वाला है और न मानने वालों को डराने वाला है। (हामीम सजदा)

यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं और हमने इस कुर्आन को अरबी भाषा में उतारा है ताकि तुम समझो। (यूसुफ 1-2)

स्पष्ट किताब की कसम, कि हमने इस कुर्आन को अरबी भाषा में बनाया ताकि तुम आसानी से समझो। और हमारे पास लौह महफूज़ में बड़े ऊँचे दर्जे की हिकमत वाली है। (जुखरुफ 2-4)

इस किताब कुर्आन में कोई सन्देह नहीं, रहनुमा है परहेजगारों के लिए। जो गैब (परोक्ष) पर ईमान (आस्था) लाते हैं और नमाज़ कायम करते और जो कुछ हमने दे रखा है उसमें से खर्च करते हैं। (अल-बकर 1-3)

और खुलने का सिलसिला बराबर चल रहा है जितनी चीज़ें खुल चुकी हैं, उनमें से कुछ के उदाहरण आगे आने वाले अध्यायों में आयेंगे। इसके अतिरिक्त कर्म के द्वारा जीवन में मिलने वाले सत्य मार्ग और जिन बातों का विश्वास दिलाया जाता है और अल्लाह की इच्छा के अनुसार बनाने के दिशा-निर्देश हैं। इनका भी आगे आने वाले अध्यायों में उल्लेख है। इसमें इन्सानों की भावनाओं, क्षमता और आवश्यकताओं की ऐसी सच्चाई और जीवन के ऐसे भेद बताये गये हैं कि इन्सान उनको जानकर और समझकर चकित हो जाता है। इसको अपने जीवन की लाभकारी और सम्पूर्ण पद्धती मानने पर विवश हो जाता है।

हमारी सृष्टि

ये सृष्टि जिसके एक छोटे से टुकड़े में हम रहते हैं इसको अल्लाह ने बहुत विशाल बनाया है। पवित्र कुर्आन में इसको स्पष्ट बताया गया है और वैज्ञानिकों ने जहाँ तक समझा है, इसकी विशालता को माना है। इसके जितने भाग का पता चल सका है उसकी भी गणना नहीं की जा सकती। इसको बताने के लिए प्रकाश की तेजी को जो 1,87,000 मील/से० है मानकर इसकी दूरी को बताया जाता है। जैसे प्रकाश एक सैकण्ड में कितनी दूरी तय करेगा, फिर एक मिनट, एक घण्टे, एक दिन, और एक साल में जो दूरी तय करता है उसे एक प्रकाश वर्ष कहते हैं। इस प्रकार 1 प्रकाश वर्ष 60 खरब मील का होता है। वैज्ञानिकों ने जहाँ तक खोज की है, उसके अनुसार एक प्रकाश वर्ष की दूरी 60 अरब प्रकाश वर्ष बताई जाती है। इस ब्रह्माण्ड में अरबों आकाश गंगाएँ हैं, जिनमें असंख्य सितारें हैं। प्रत्येक आकाशगंगा में खरबों सितारें हैं। हमारा सितारा सूरज है जिसके चारों ओर चक्कर लगाने वाले सितारों में हमारी पृथ्वी एक बहुत छोटा टुकड़ा है। ऐसे टुकड़े को ग्रह कहते हैं, जो किसी सितारे का चक्कर लगाता है। हमारे सूरज के सबसे पास जो सूरज है वो चार प्रकाशवर्ष की दूरी पर है।

सृष्टि को बनाने वाला

हमारी सृष्टि को अल्लाह ने ऐसा बनाया है कि वो बहुत क्रमबद्ध और सुनियोजित रूप में चल रही है। इसके लिए जो समय और भलाई इस दुनिया को बनाने वाले ने रखी है, इस संसार में उस समय और भलाई का पूरा सम्मान और पाबन्दी दिखाई देती है। इन्सानों की हज़ारों कोशिशों और अनुभव से सिद्ध हुआ है कि इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ। इससे ये पता चलता है कि इस सारी व्यवस्था को किसी बहुत सामर्थ्य वाले ने किसी उद्देश्य के लिए बनाया है। ये ऐसी विशाल और सुनियोजित व्यवस्था है कि ये सब किसी खेल में नहीं हो सकता। ये अवश्य ही किसी उद्देश्य के लिए है। इस प्रकार से बात सिद्ध हो जाती है कि इस व्यवस्था को किसी ने बनाया है और वो ही इसको चलाता है। तो जब हम इस सृष्टि और इसमें बनाई अनगिनत चीज़ों और बहुत सारे जीवों जिनको हम देख भी नहीं सकते, तो इनको बनाने वाले को कैसे देख सकते हैं। परन्तु सृष्टि की ये सुनियोजित

कहानी उसके होने को सिद्ध करती है। सृष्टि की इस व्यवस्था को सुनियोजित ढंग से चलता देखकर ये बात सिद्ध हो जाती है कि इसको बनाने वाला एक है। वह हमेशा से है, बहुत शक्ति और सामर्थ्य वाला है। उसके जैसा कोई दूसरा नहीं है। अन्यथा मतभेद होता और सृष्टि की व्यवस्था में खराबी पैदा हो जाती।

अगर (आसमान और ज़मीन) इन दोनों में अल्लाह के सिवा और माबूद होते तो (ज़मीन और आसमान) फसाद से भर जाते। (अंबिया 22)

सारी सृष्टि जब उसकी बनाई हुई है, तो सब कुछ उसके ज्ञान और सीमा में है। उसका कोई उदाहरण नहीं, उसका कोई साझी नहीं, सब उसके बन्दे है और उसके अधीन है।

उस जैसा कोई नहीं वो (सब चीज़ों का) सुनने वाला और देखने वाला है। आसमानों और ज़मीन की चाबियाँ उसी के पास हैं। वो जिसको चाहे रोज़ी दे और जिसको चाहे नाप-तोल कर दे। निसन्देह वो हर चीज़ को जानने वाला है। (शोअरा 11-12)

इसलिए उपासना योग्य मात्र वो ही है और सारी सृष्टि की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला है। बीमारों को शिफा देता है, सारी सृष्टि को रोज़ी देता है और सबकी पीड़ा को वो ही दूर करता है और कर सकता है।

ऐ (नबी) आप कह दीजिए की वो अल्लाह एक है। अल्लाह निराधार है (उसको किसी की जरूरत नहीं) न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान है और उसके बराबर का कोई नहीं। (इख़लास)

ऐसी परिस्थिति में उस एक अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को पूज्य बनाना, उसके सामने सर झुकाना और आस्था रखना, प्रार्थना करना और ऐसी चीज़ें माँगना जो सिर्फ अल्लाह ही दे सकता है, उस खुदा को बहुत नापसन्द है। जैसे- सन्तान, किस्मत अच्छी या बुरी करना, हर बात का सुन लेना, दिल की बातों और छिपी बातों को जान लेना, किसी को खुदा का साझी समझना।

अपनी आसमानी किताबों में अल्लाह ने ये बता दिया है कि उसको ये सबसे ज्यादा नापसन्द है और ये बहुत बड़ा गुनाह है। अल्लाह ने साफ कह दिया है-

बेशक शिर्क बहुत बड़ा गुनाह है।

अपनी किताब पवित्र कुर्आन में उसने अपना सामर्थ्य को बताते हुए कहा है।

और जब वो किसी काम को करने का फैसला कर लेता है तो मात्र कह देता है (कुन) हो जा तो वह हो जाता है। (अल-बकर 999)

अल्लाह ने अपने पवित्र कुर्आन के द्वारा ये भी बता दिया है कि वो न किसी के शरीर में प्रवेश करता है और न किसी का रूप धारण करता है। वो किसी विशेष दिशा या स्थान पर सीमित नहीं है। वह जो चाहता है, वो ही होता है और जो नहीं चाहता वो नहीं होता। वो 'गुनी' और 'बेनियाज़' है। वो किसी

भी चीज़ पर निर्भर नहीं है और ना ही उस पर किसी का आदेश चलता है। उससे पूछा नहीं जा सकता कि वो क्या कर रहा है? आदेश देना उसका एक विशेष गुण है। उसका हर काम एक आदेश है और अच्छाई के लिए है। उसके अतिरिक्त कोई वास्तविक राजा नहीं है।

अच्छी और बुरी किस्मत अल्लाह की ओर से है और वो आने वाली हर चीज़ को जानता है और उसको बनाता है।

सृष्टि को बनाने वाले का हर काम एक उद्देश्य के लिए है

इसीलिए उसने ये भी बता दिया है कि उसका कोई भी काम खेल या बिना उद्देश्य के नहीं है। उसने इस धरती पर बहुत सारे जीवों को जन्म दिया। इनमें से इन्सानों को ये विशेषता दी है कि वो एक सीमा तक अपनी इच्छा से कर्म कर सकते हैं। इन्सान को ये विशेषता इसलिए दी गई है कि वो अल्लाह की इच्छा के अनुसार कर्म करे। इन्सान के अतिरिक्त अन्य चीज़ों को इन्सानों की मदद के लिए पैदा किया। सृष्टि की समस्त वस्तुएँ यहाँ तक की सूर्य और चाँद का घूमना इन्सानों के इस धरती पर रहने के लिए आने वाली आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए है और इसमें आने वाली बाधाओं को पार करने के लिए है। इसी बात को अल्लाह ने अपने पवित्र क़ुरआन में बताया:-

उसने (कुल) तुम्हारे ही लिये पैदा किया है जो कुछ इस पृथ्वी में है।
(अल-बकर 29)

अल्लाह का असीमित ज्ञान

सर्वशक्तिमान और इस संसार के मालिक अल्लाह ने इस अनन्त ब्रह्माण्ड को बनाकर यह बात सिद्ध कर दी है कि उसका ज्ञान इससे भी अधिक है। जो ज्ञान इन्सानों के पास है वो अल्लाह के असीमित ज्ञान का सीमित भाग मात्र है। इन्सानों की तुलना में उनके बनाने वाले का ज्ञान इतना विशाल है कि वो सम्पूर्ण सृष्टि को अपने में समाए हुए है। वो कहता है "और वो (अल्लाह) हर चीज़ को जानने वाला है" (अनआम: 101)। इसी ज्ञान के अनुसार ही अल्लाह ने इस सृष्टि की रचना की और इसको यूँ ही नहीं बनाया, इसके कण-कण के विस्तार एवं विशेषताओं को निर्धारित किया। इस कण-कण का ज्ञान और उनका प्रभाव उसको हर समय पता होता है। उसने जो गुण और विशेषता कण-कण में रखी है उसमें वो जब चाहे परिवर्तन करने की पूरी ताकत रखता है। और कभी-कभी वो ऐसा कर भी देता है। ये सब अल्लाह को पता है और वो हर चीज़ को शुरू से जानता है। ये सब उसके असीमित ज्ञान में है। वो हर चीज़ को उसके होने से पहले और होने के बाद ऐसे जानता है जैसे वो वर्तमान में हो रही है। ये उसके ज्ञान का विशेष गुण है।

कुरआन सृष्टि का लेखा-जोखा

अपने इस लेख-जोख को उसने कभी 'अल-किताब' तो कभी 'अमल किताब' कहा है। किताब का अर्थ है लिखा हुआ यानी निर्धारित। सृष्टि के कण-कण में जो कुछ है उसको वो सर्व शक्तिमान पहले से जानता है और ये सब कुछ उसके पास सुरक्षित है। उसके इसी ज्ञान के अनुसार सृष्टि में सब कुछ हो रहा है। सृष्टि में जो कुछ भी है वो अपने पैदा करने वाले और पालने वाले अल्लाह के नियन्त्रण में है। सम्पूर्ण सृष्टि और इसमें रहने वाले समस्त प्राणियों में जो गुण है वो अल्लाह ही के दिये हुए है। इसलिए पृथ्वी पर ही नहीं ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है अल्लाह उसको जानता है।

और आसमान और ज़मीन में कोई छुपी हुयी चीज़ नहीं है मगर वो खुली हुयी किताब में है। (नम्र 74)

उस सर्वशक्तिमान अल्लाह के ज्ञान और सामर्थ्य का जो विस्तार हो सकता है उसको यदि लिखा जाये तो वह इतना अधिक होगा कि यदि सारे संसार के पेड़ों के कलम बनाये जाये और सागरो को स्याही बनाया जाये, तो लिखते-लिखते स्याही खत्म हो जायेगी और कलम घिस कर बेकार हो जायेंगे परन्तु उसकी महिमा समाप्त नहीं होगी, क्योंकि इस सृष्टि के कण-कण, ज़मीन और आसमान में जो विषेशतायें अल्लाह ने रखी है, हर एक के बारे में लिखने के लिए कई-कई पन्ने चाहिए होंगे। तो समस्त जानकारी को लिखने के लिए कितना समय चाहिए होगा, ये बताया नहीं जा सकता। पवित्र कुरआन में इस बात का संदेश इस प्रकार दिया गया है।

अगर ऐसा हो कि ज़मीन में जितने पेड़ है (सबको) कलम बना जाये और समुद्र (का पानी) स्याही हो जाये और इसके बाद सात समुद्र और (स्याही बन जाए) तो अल्लाह की तारीफ़ खत्म न हो। बेशक अल्लाह गालिब और हिकमत वाला है। (लुक़मान 27)

और उसी (अल्लाह) के पास गैब (परोक्ष) की कुँजियाँ है, जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता और जँगलो और नदियों में जो कुछ है, उसे वो जानता है, जो पत्ता भी गिरता है, वो उसको भी जानता है और ज़मीन के अन्वेषों में कोई दाना, कोई हरी या सूखी चीज़ हो, मगर वो सब रोशन किताब में मौजूद है। (अनआम 59)

समस्त सृष्टि अल्लाह के ज्ञान का प्रदर्शन

हमारी यह दुनिया और इसके बाहर जो कुछ भी है वह वास्तव में अल्लाह का पैदा किया हुआ है। इस सबको अल्लाह ने सिर्फ अपनी इच्छा और ज्ञान से पैदा किया है। उसकी सिर्फ इच्छा मात्र से सब कुछ बन गया, उसको

और कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उसके आदेश ही से सब कुछ हो जाता है।

"जब हम किसी काम का इरादा कर लेते हैं तो बस हमारा उससे इतना ही कहना होता है कुन (हो जा) बस वो हो जाता है"। (नहल 40)

और उसका आरम्भ और अन्त और कर्म सब अल्लाह को पता होता है। अल्लाह ने कहा है

हर हुक्म किताब में लिखा है, खुदा जिसको चाहता है मिटा देता है और (जिसको चाहता है) बाकि रखता है, और उसी के पास (अस्ल) किताब है (राद 39)

सृष्टि का क्रमबद्ध प्रबन्ध

उस सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने ज्ञान के अनुसार जिन चीजों को बनाया है उनके विभिन्न प्रकारों, गुणों, कार्यपद्धति, कार्यकाल एवं समय को निर्धारित किया। इन वस्तुओं में जड़ प्रकार की वस्तुयें भी हैं जैसे-लोहा, पत्थर आदि और बढ़ने वाली चीजें भी हैं जैसे पैड़-पौधे आदि और जीव जन्तु भी हैं जैसे चरने वाले जानवर? पशु-पक्षी कीट-पतंगे आदि ये सब अपने सीमित क्षेत्र में रहते हुए कार्य करते हैं।

इसके अतिरिक्त संसार में इच्छा शक्ति से परिपूर्ण जातियाँ भी हैं जैसे जिन्न और मनुष्य। इनके अतिरिक्त एक आकाशीय जाति भी है, जो अपने रब के आदेशों को पृथ्वी तक लाती है। इन सब का क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित प्रबन्ध है।

विभिन्न प्राणियों में इन्सानों और जिन्नो को इच्छा शक्ति का गुण भी दिया है और सही कर्म करने का भार भी उन पर डाला है। इनको जड़ प्रकार या मात्र वृद्धि करने वाली वस्तुओं के समान नहीं रखा। इन दोनों में इन्सान को श्रेष्ठ स्थान दिया। इन्सानों को अधिकार दिया है कि वो एक सीमा तक अपनी इच्छा से कार्य कर सकता है। इस कार्य के लिए पृथ्वी पर बहुत सी वस्तुओं को उसका सहायक बना दिया है। इन्सानों और जिन्नो को जो ये सुविधा दी गई है, तो उनको ये आदेश भी दिया गया है, कि वो अपने रब की आज्ञा का पालन करें और उसके बताये हुए मार्ग पर चलकर अपने आज्ञाकारी होने का प्रमाण दें। जिसका मूल ये है कि अपने पैदा करने वाले अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पूज्य न समझे और न उसके साथ किसी को साझी करें और न उसके अतिरिक्त किसी और की उपासना करें।

और मैंने जिन्नो और इन्सानों को इसलिए पैदा किया जिससे वो मेरी इबादत करें। मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता, और न ये चाहता हूँ कि वो मुझे खिलायें, बेशक खुदा ही रोज़ी देने वाला और जबरदस्त ताकत वाला और मज़बूत है। (ज़ारियात 56-57)

अध्याय दो

पवित्र कुर्आन और इन्सान

इन्सानों को मिलने वाला मार्गदर्शन, इन्सानों के लिए तो नया होता है पर इस संसार को बनाने वाले अल्लाह के लिए वो नया नहीं है। ये तो उसके अनन्त ज्ञान का एक कण मात्र है। क्योंकि उसका असीमित और अनन्त ज्ञान सर्वव्यापी है। उसके ज्ञान के इसी अथाह सागर में इन्सानों और जिन्यों के मार्गदर्शन के लिए जो बातें थीं, वो कुछ चुने हुए ईश्वरों को फरिश्ते के माध्यम से बताई जाती रही। जिनको नबी और रसूल की उपाधि दी जाती थी। इन बातों का सम्बन्ध अल्लाह के ज्ञान से होने के कारण इनको 'अल-किताब' भी कहा जाता है। क्योंकि अल्लाह के ज्ञान सागर का नाम भी 'अल किताब' के नाम पर है, जो स्वयं अल्लाह के शब्दों में अवतरित हुआ है। यह ज्ञान विभिन्न नबियों पर अवतरित किया जाता रहा और 'अल किताब' कहलाया। इन ईशग्रन्थों में पूर्व नबियों पर ज़बूर, तौरत और इन्जील अवतरित हुई और अन्तिम नबी पर पवित्र कुर्आन अवतरित हुआ। इनमें से पवित्र कुर्आन को अधिक महत्व के साथ आवश्यक जानकारीयों से परिपूर्ण करके अन्तिम नबी मुहम्मद स० की उम्मत को प्रदान किया गया। जिससे ये इन्सानों के उच्च एवं उत्तम जीवन के लिए जीवन विधान बने और उनकी सफलता में मार्गदर्शन करे।

जिन्न एवं इन्सान

अल्लाह ने पृथ्वी के प्राणियों में बुद्धि से परिपूर्ण जाति जिन्न और इन्सान को बनाया है। इनमें से जिन्नों को इन्सान से पहले बनाया गया। जिन्नों में से एक इब्लीस नामक जिन्न को उसकी उपासना में अधिकता के कारण ऐसी उन्नती दी कि उसको जन्नत में आने जाने और फरिश्तों से मेल-मिलाप का अवसर प्रदान किया। इसके बाद अल्लाह ने इन्सान को बनाने का निर्णय लिया और अपनी इस इच्छा को फरिश्तों से बताया। फरिश्ते आकाशीय प्राणी है और अल्लाह की आज्ञा का पालन ही उनका स्वभाव है। वो कभी इसके विरुद्ध कर ही नहीं सकते, वो उत्तम प्राणी है। फरिश्तों ने प्रश्न किया, कि ऐ हमारे रब खून बहाना और मारकाट करना इस प्राणी का स्वभाव है, तो इस प्राणी की क्या

उपयोगिता है? जबकि हम तो हर समय तेरी प्रशंसा के लिए उपस्थित रहते हैं और तेरी पवित्रता का गुणगान करते रहते हैं। अल्लाह ने कहा कि तुम नहीं जाने हो जो मैं जानता हूँ। पवित्र कुर्आन में है-

और जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा, मैं ज़मीन में अपना नायब (प्रतिनिधि) बनाने वाला हूँ, तो फरिश्ते बोले! क्या आप ज़मीन में ऐसे (इन्सान) को नायब बनायेंगे जो उसमें फसाद करेगा और खून खराबा करेगा, जबकि हम तो आपका जिफ़ और पवित्रता ब्यान करते ही रहते हैं। अल्लाह ने कहा बेशक जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते और अल्लाह ने आदम को दो नाम सिखाये, फिर उन्हें फरिश्तों के सामने प्रस्तुत किया और कहा, अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ, उन सबने कहा (ऐ अल्लाह) तू पाक है, तूने जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई इल्म (ज्ञान) नहीं, बेशक तू ही इल्म वाला हिकमत वाला है। तब अल्लाह ने आदम से कहा, ऐ आदम इन फरिश्तों को इनके (इन चीज़ों के) नाम बता दो, जब आदम ने उनके नाम बता दिये तो फरमाया क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि ज़मीन और आसमान की छुपी बातों (परोक्ष ज्ञान) को मैं ही जानता हूँ, और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम दिखाते हो और जो कुछ छिपाते हो। (अल-बकर 30-33)

अल्लाह की ओर से इन्सानों को ज्ञान की विशेषता दी जानी थी। इसी कारण इस पृथ्वी में एक ऐसे प्राणी को बनाने का निर्णय लिया गया जो अपने रब की आज्ञा का पालन करने के साथ-साथ पृथ्वी के कार्यकलापो का भी ज्ञान रख सके तथा उनको अन्त तक पहुँचा सके। इस संसार के रहस्यों को समझकर अपने रब की इच्छा एवं आदेश के अनुसार कार्य करे। इसी कारण अल्लाह ने प्रथम मानव आदम अलै० (पिता मनु) को पैदा करके उनका जोड़ा बनाया, जिससे उनका वंश चले। उनको ये आदेश दिया कि तुम अपने पैदा करने वाले और अपने मालिक की श्रेष्ठता का ध्यान रखते हुए उसकी आज्ञा व इच्छानुसार चलोगे तो तुमको पूरा सम्मान मिलेगा। तुमसे वह कार्य पूर्ण होगा जो इस प्राणी जगत में तुम्हारे लिए निर्धारित किया गया है। फरिश्तों और इब्लीस को इन्सान के सामने झुकने का आदेश दिया गया। फरिश्तों ने तो तुरन्त आज्ञा का पालन किया और आदम अलै० के सामने सर झुका दिया परन्तु जिनो का प्रतिनिधि इब्लीस अकेला खड़ा रहा। उससे अल्लाह ने प्रश्न किया, “तूने आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया?” उसके कहा कि हम तो इस मनुष्य से श्रेष्ठ हैं क्योंकि हमको आग से बनाया गया है और इसको मिट्टी से, आग को मिट्टी पर श्रेष्ठता प्राप्त है। अल्लाह इब्लीस के धमण्ड और इन्कार पर नाराज़ हो गया और उसको जन्नत से निकल जाने का आदेश दिया। क्योंकि जन्नत नाफरमानों के लिए नहीं है।

और वो वक्त याद करो जब हमने फरिश्तों से कहा, आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस (शैतान) के सिवा सबने सज्दा किया, उसने इन्कार किया और घमण्ड में आ गया और वो काफिर (अवाज्ञाकारी) हो गया (अल-बकर 34)

इस प्रकार आदेश का पालन न करने के कारण इब्लीस को जन्नत से नीचे तुच्छ लोक में फेंक दिया गया। इब्लीस अपमानित होकर गुस्से और ईर्ष्या में आदम अलै० का दुश्मन बन गया और कहने लगा “अब मैं आदम की औलाद को बर्बाद करके रहूँगा”। उसने कहा! हम को जन्नत से तो निकाल दिया, पर हमको कयामत तक के लिए छूट दी जाये। अल्लाह ने कहा! जा तू जो चाहे कर, आदम की औलादों में से जो तेरा कहना मानेगा, वो भी तेरे साथ नरक में सज़ा पायेगा। आदम से कहा! सावधान रहना और इसके चक्कर में न आना और उस पेड़ के पास न जाना वरना तुम दोषी होगे।

और हमने कहा! ऐ आदम तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो तुम दोनों जी भर कर खाओ, और इस पेड़ के पास मत जाना, अन्यथा ज़ालिमों में से हो जाओगे। (अल-बकर 35)

इसके अतिरिक्त स्वर्ग की सारी चीज़ें तुम्हारे लिए उपलब्ध हैं और उनका प्रयोग करना उपयुक्त हैं। कुछ दिनों बाद शैतान ने सोचा कि किसी प्रकार आदम अलै० से आज्ञा का उल्लंघन कराया जाये। उधर आदम अलै० भूल गये कि उनको उस पेड़ के पास जाने से मना किया गया है। शैतान ने छल किया और उस पेड़ के लाभ बताने लगा और उकसाने लगा और कहा यदि तुम थोड़ा सा चख लो तो तुम्हें ये लाभ होगा की तुमको सदा के लिए स्वर्ग में रहने का अवसर मिलेगा। अल्लाह ने कहा है-

फिर शैतान ने दोनों को बहकाया, फिर दोनों को वहाँ से निकलवा दिया जहाँ वो थे। (अल-बकर 36)

इस प्रकार आदम अलै० और उनकी बीवी ‘हव्वा’ ने उस पेड़ को चख लिया। इस पर अल्लाह ने उनकी पकड़ की और कहा- क्या तुमको इससे मना नहीं किया गया था? सुन लो नाफरमानों का स्थान ये बाग और बहार जन्नत नहीं हैं, तुम मिट्टी से बनाये गये हो अब भूलोक पर जाओ, दोनों की यही सज़ा है। इस बात पर वो दोनों रोने लगे और माफी माँगने लगे। अल्लाह ने देखा कि वास्तव में ये गलती भूल के कारण हुई है और ये माफी भी माँग रहे हैं। तो कहा! तुम्हारी गलती को माफ किया जाता है लेकिन अब तुमको और तुम्हारे वंश को परीक्षा देनी होगी। अब तुम और तुम्हारे वंशज पृथ्वी पर जाकर रहो और अपने आज्ञाकारी होने का प्रमाण दो। अब ये देखा जायेगा कि तुम जिस कार्य के लिए पैदा किये गये हो, उसको कहाँ तक पूरा करते हो। कहाँ तक आज्ञा का

पालन करते हो और अपने पैदा करने वाले और पालने वाले के आदेशों को मानते हो। इसके लिए तुमको एक सीमित समय तक के लिए पृथ्वी पर रहना होगा और इस स्वर्ग में तुम आज्ञापालन को सिद्ध करके ही आ सकोगे। इसके साथ-साथ शैतान से भी सावधान कर दिया गया कि वह भी तुम्हारे साथ पृथ्वी पर रहेगा। देखो वो तुमको धोके में डालकर बर्बाद न कर दे और इस प्रकार इन्सानों और जिन्नों को इस ज़मीन पर ठहरा दिया गया।

ज़मीन पर जीवन व्यतीत करने के लिए इन्सानों को जिन चीज़ों की आवश्यकता हो सकती थी, उनका ज्ञान और उसको समझकर उनसे लाभ उठाने की क्षमता भी दी गयी। जिससे इन्सान पृथ्वी पर रहे, तो जीवन यापन की जो वस्तुएँ हैं, उनसे लाभ उठा सके। जो ज़मीन में उसके पैदा करने वाले और पालने वाले ने रखी हैं। उन चीज़ों को पता करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। इस प्रकार ज़मीन पर रहकर अपने ईश्वर की आज्ञा का पालन करे और उसके द्वारा दी व्यवस्था को चलाये।

इन्सान की श्रेष्ठता एवं विशेषता

इस प्रकार इन्सान को ज्ञान देकर ये बता दिया गया की तुमको इससे काम लेना है। ज्ञान और बुद्धि दोनों का प्रयोग कर अच्छे और बुरें में अन्तर करना है और अल्लाह की दया और कृपा का धन्यवाद करना है। ये धन्यवाद उसकी आज्ञा का पालन और उपासना के द्वारा होगा।

और मैंने जिन्नों और इन्सानों को इसलिए पैदा किया जिससे वो मेरी इबादत करें। मैं उनसे रोज़ी नहीं माँगता, और न ये चाहता हूँ कि वो मुझे खिलायें, बेशक खुदा ही रोज़ी देने वाला और जबरदस्त ताकत वाला और मज़बूत है। (ज़ारियात 56-57)

उसी ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममे से कौन अच्छे कर्म करता है। (मुल्क 2)

पढ़ उस खुदा के नाम से जिसने कायनात (सृष्टि) को पैदा किया। जिसने इन्सान को माँस के लोथड़े से पैदा किया। तेरा खुदा करीम है। जिसने इन्सान को कलम के द्वारा ज्ञान दिया। वो जिसने इन्सान को वह ज्ञान दिया जो उसे नहीं मालूम था। (अलक 1-5)

खुदा से तो उसके बन्दों में वही डरते हैं और इल्म रखते हैं। (फ़ातिर: 28)

ईशवाणी और आकाशीय किताबें

सारे संसार के मलिक अल्लाह ने अपने असीमित ज्ञान का एक छोटा सा कण अपनी किताबों के माध्यम से दिया, जो उसके नबियों ह० दाऊद अलै०, ह० मूसा अलै०, ह० ईसा अलै० के माध्यम से दी गयी और अन्त में ह० मुहम्मद स० को पवित्र कुआन के रूप में दिया गया। इस अतिरिक्त नबियों को फ़रिश्ते के

माध्यम से भी ज्ञान और भलाई की बातें बताई गईं। इस प्रकार इन्सानों को अच्छे और बुरे का अन्तर बताया गया। आवश्यक मार्गदर्शन मिल जाने के बाद इन्सानों पर अच्छे और बुरे कर्मों और कार्यक्षमता के सम्बन्ध में बात स्पष्ट हो गयी एवं संदेह के लिए कोई स्थान न रहा। अब जब इन्सानों को मृत्यु के बाद पुनः जीवित किया जायेगा तो उनसे प्रश्न किया जायेगा कि तुमको कर्म करने की क्षमता दी गई थी और अच्छे और बुरे का अन्तर भी बता दिया गया था, तो तुमने बुराई का रास्ता क्यों चुना? जिन लोगों ने सत्य मार्ग को चुना और अपनी कामनाओं से अधिक अपने रब की इच्छाओं और आदेशों का पालन किया, तो उनको इसका अच्छा परिणाम मिलेगा। जिन लोगों ने मनमाना जीवन व्यतीत किया और अपने रब के आदेशों का पालन नहीं किया, उनको दण्ड मिलेगा। वो जो जन्म देने वाला भी है और पालने वाला भी और हर चीज़ पर पूर्ण नियन्त्रण रखता है। उसने इन्सानों के सुख, सुविधा एवं आवश्यकताओं के समस्त साधन उपलब्ध कराये। अपने आदेशों का पालन करने का दायित्व इन्सानों पर उनकी क्षमता के अनुरूप डाला। उसकी आज्ञा का पालन न करने पर दण्ड मिलेगा। इस प्रकार इन्सानों को सत्य मार्ग पर चलने का रास्ता बता दिया गया है। ये दो माध्यमों से इन्सानों को ज्ञात होता है, एक तो अल्लाह की भेजी किताब और दूसरा नबियों के द्वारा बताये गये उपदेश। इस प्रकार अल्लाह की इच्छा जानने के ये दो रास्ते हैं।

अल्लाह ने ये जो सृष्टि बनाई है तो इसकी कार्यक्षमता, विशेषता और परिस्थितियों को भी निर्धारित किया। इसमें पैदा किये जीवों की कार्यक्षमता, विशेषता और गुणों को निर्धारित किया। इनसे इन्सानों को जो लाभ हो सकता है, उसका ज्ञान प्राप्त करने और उसको समझने की क्षमता इन्सानों को दी। जिसको इन्सान अपनी आवश्यकता के अनुसार ज्ञात करता है और उससे लाभ उठाता है।

ईश्वर की उपासना

अल्लाह ने ये सृष्टि ऐसी बनाई है कि अपने पैदा करने वाले और पालने वाले की आज्ञा का पालन और उसकी प्रशंसा करना उसका स्वभाव है। वह अपने स्वभाव ही से अपने पालने वाले की प्रशंसा करती है।

और (अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों में) कोई चीज़ नहीं मगर, उसकी तारीफ के साथ तस्बीह ब्यान करती है लेकिन तुम उसकी तस्बीह को नहीं समझते। (इसरा:-44)

पर इन्सानों और जिन्यों को ऐसा बनाया है कि एक सीमा तक आज्ञा पालन करना उनकी इच्छा पर निर्भर है। जिससे ये पता चल सके कि आत्मनिर्भर होने पर ये उसकी उपासना करते हैं या नहीं। उसके द्वारा दी बुद्धि और ज्ञान का प्रयोग कर, उसके महान उपकारों पर उसके सामने सर झुकाते हैं या नहीं।

इन्सान कुर्आन की रोशनी में

पवित्र कुर्आन में इन्सानों के विषय में दो लोको का वर्णन है एक तो 'भू लोक' जिसमें हम रहते हैं, और दूसरा परलोक जो इन्सानों की बुद्धि और ज्ञान से परे है। परलोक का सम्बन्ध इन्सानों के कर्मों के अच्छे या बुरे होने से है। भूलोकिय व्यवहार का प्रभाव हमारी दिनचर्या में स्पष्ट होता है। आत्मिक एवं परोक्ष परिस्थितियों का प्रभाव परलोक में दूसरे जीवन मिलने पर प्रकट होगा, जो इस संसार के नष्ट किये जाने के बाद अल्लाह की ओर से दिया जायेगा। जो सदा रहने वाला होगा। जिसको धर्मिक परिभाषा के अनुसार 'आखिरत' कहा जाता है। इसमें संसार में किये गये कर्मों का बदला मिलेगा और अच्छे कर्मों पर ईनाम और बुरे कर्मों पर सज़ा मिलेगी। यदि कर्म अच्छे होंगे तो सुख और आराम मिलेगा और यदि कर्म बुरे हुये तो सज़ा मिलेगी।

यह आखिरत का घर तो मैंने उन लोगों के लिए खास कर दिया है जो ज़मीन पर न बड़ा बनना चाहते हैं, न आतंक करना, और नेक अंजाम तो परहेज़गारों ही का है। जो कोई नेकी लेकर आयेगा उसको उसका बेहतर बदला मिलेगा, और जो कोई बुरा काम करके आयेगा, तो ऐसे लोगों को जो बुरा काम करते हैं बस उतना ही मिलेगा जितना वो करते थे। (कसस: ८३-८४)

आकाशीय लोक (परलोक) अत्यन्त ही व्यापक सीमाओं में फैला हुआ बनाया गया है। वो ज़मीन से उच्च एवं परमधाम के पास है। उसकी इसी विशेषता के कारण वहाँ फरिश्ते निवास करते हैं। जिनका कार्यकलाप अत्यन्त उच्च एवं अल्लाह की आज्ञा का पालन है। वो परमेश्वर की इच्छा के सम्मुख पूर्णतः समर्पित है। केवल उसी के आदेश के अनुसार कार्य करते हैं। उनके स्वभाव में कोई भी वस्तु उनकी इच्छा के अनुसार प्रिय या अप्रिय नहीं है। वो केवल अल्लाह की इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं।

और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीज़े आसमान में हैं और जितनी ज़मीन में चलने वाली हैं। और फरिश्ते वो अपनी बड़ाई नहीं करते और डरते रहते हैं, अपने रब से, जो उन पर कुदरत रखता है। और वो वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता रहता है। (नहल 49-50)

भूलोकिये जीवन में अल्लाह ने इन्सानों और अन्य जीव-जन्तुओं के अतिरिक्त एक और प्राणी जिन्नों को बनाया है। इनमें पृथ्वी के गुणों के अनुरूप इच्छायें और भावनायें रखी गयी हैं। पृथ्वी वासी होने के कारण उनमें भी इच्छायें पृथ्वी के स्वभाव के अनुसार हैं। इसी कारण उनको भी अच्छाई और बुराई में से किसी एक को चुनने का अवसर दिया गया। जिसके कारण उनमें भी अच्छाई और मन की इच्छाओं के बीच संघर्ष के अवसर आते रहते हैं। जिन्नों को पहले बनाया गया था। उन्हीं में ये एक इब्लीस ने उपासना में बहुत प्रगति की इस कारण उसको आकाशों में जाने, स्वर्ग में जाने और वहाँ रहने का अवसर मिला। सारे संसार के रब अल्लाह की जब ये इच्छा हुई कि सृष्टि में जिन्नों के अतिरिक्त एक और ऐसा प्राणी बनाया जाये जो जिन्नों से कुछ अधिक शक्तिशाली और भिन्न हो और अच्छे और बुरे कर्मों को करने का सामर्थ्य रखता हो। जिन्नों की सृष्टि में आग को आधार बनाया गया था। इस नये प्राणी की सृष्टि में ज़मीन को आधार बनाया गया। जिन्नों के स्वभाव में अपने मूल आग के समान तेजी और उग्रता आई और इन्सान के स्वभाव में मिट्टी के समान नम्रता और विभिन्न गुण आये। आग की तुलना में ज़मीन के तुच्छ होने के कारण इन्सान के स्वभाव में तुच्छता और नमी आई।

और यकीनन (निसंदेह) हमने इन्सान को मिट्टी (के तत्व) से पैदा किया है। (मोमिनुन 12)

बहुत बरकत वाला है वो अल्लाह जिसके हाथ में बादशाही है और जो हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है और जिसने मृत्यु और जीवन को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुमसे कौन अच्छे कर्म करता है और वो ग़ालिब (सर्वशक्तिमान) और माफ करने वाला है। (मुल्क 1-2)

इस नये प्राणी की उत्पत्ति मिट्टी से होने के बाद भी जिन्नों और फरिश्तों को इसके सम्मान का आदेश दिया गया। इस बात को इब्लीस ने ईर्ष्या की दृष्टि से देखा और अपनी उपासना एवं भक्ति की अधिकता होने के कारण अपने को इन्सान से श्रेष्ठ समझा। इसके कारण इन्सान की तुलना में अपने स्तर को कम समझे जाने को नापसंद किया और इस बात को अल्लाह के सामने छिपा न सका। इस प्रकार अल्लाह के आदेश को न मानने के कारण दण्ड का भोगी हुआ। उसको ज़मीन पर भेज दिया गया और उस पर अल्लाह का गुस्सा भड़का।

जब आपके रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाने वाला हूँ तो जब मैं उसको ठीक-ठाक कर लूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ, तो तुम सब उसके आगे सज्दा करना, तो तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने न किया। उसने तकबुर (धमण्ड) किया और वो काफ़िरों में से हो गया, अल्लाह ने

फरमाया ऐ इक्कीस जिस इन्सान को मैंने अपने हाथों से बनाया उसके आगे सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने रोका क्या तू धमण्डी हो गया, या तू बड़े दर्जे वालो में ये है। उसने जवाब दिया कि मैं इससे बेहतर हूँ, तूने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया है। इरशाद हुआ कि तू यहाँ ये निकल जा तू मरदूद हुआ और तुझ पर कयामत के दिन तक मेरी लानत और फटकार है। (साद 71-78)

सारे संसार के मालिक अल्लाह ने इन्सान को ईश्वरीय व्यवस्था को स्थापित करने के लिए चुना। इसके लिए उसको कुछ ऐसे गुण दिये जो इस व्यवस्था में सहायक हों। इसमें विशेष रूप से ज्ञान से लाभ उठाने की क्षमता है। अल्लाह ने अपनी इस इच्छा को फरिश्तो के सामने रखा। फरिश्तो ने इन्सान के पृथ्वी वासी होने के कारण उसके मन की इच्छाओं के प्रभाव से परस्पर झगड़ो एवं संघर्षों के होने की आशंका को भाँपते हुए ये प्रश्न किया कि ये प्राणी पृथ्वी पर दुर्व्यवस्था एवं उपद्रव फैला सकता है। इस पर अल्लाह ने उनको ज्ञान की विशेषता और सार्थकता बताई जो अल्लाह ने इन्सान को मिट्टी से बनाते समय उसमें डाली थी। अल्लाह ने मिट्टी में विभिन्न गुणों को रखा। कठोरता का गुण लोहे और पत्थर में रखा, नर्म का गुण पेड़-पौधों और अन्य भागों में रखा। उसके कुछ भागों में अग्नि का गुण और पानी में शीतलता का गुण इसी प्रकार अन्य वस्तुओं में नम्रता और आज्ञापालन का गुण रखा। इन सबक गुणों को इन्सान में रख दिया। इस पृथ्वी पर अल्लाह के द्वारा दिये कार्यों और दायित्व को पूरा करने की विशेषता इन्सान में रख दी। इन्सान की इसी विशेषता और प्रतिभा को इस प्रकार बताया।

यकीनन हमने इन्सान को बेहतरीन सूरत में पैदा किया

ये विशेषता जिनमें में नहीं है क्योंकि वह आग से पैदा किये गये है और आग का गुण तीव्रता और उग्रता है। अल्लाह ने जब इन्सान को पृथ्वी पर अपना प्रतिनिधि बनाने का फैसला किया तो उसको ऐसी चीज़ से पैदा किया जिसमें बहुत सी विशेषताएँ थी। इन्सान को इस ज़िम्मेदारी को उठाने के लिए ज्ञान की शक्ति दी। फरिश्तो के पूछने पर इन्सानों की ये विशेषता बताई और पवित्र कुर्आन में कहा-

और जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा, मैं ज़मीन में अपना नायब (प्रतिनिधि) बनाने वाला हूँ, तो फरिश्ते बोले! क्या आप ज़मीन में ऐसे (इन्सान) को नायब बनायेंगे जो उसमें फसाद करेगा और खून खराबा करेगा, जबकि हम तो आपका जिक्र और पवित्रता ब्यान करते ही रहते हैं। अल्लाह ने कहा बेशक जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते और अल्लाह ने आदम को वो नाम सिखाये, फिर उन्हें फरिश्तों के सामने प्रस्तुत किया और कहा, अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ, उन सबने कहा (ऐ अल्लाह) तू पाक है, तूने जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई इल्म (ज्ञान) नहीं, बेशक तू ही इल्म वाला

हिकमत वाला है। तब अल्लाह ने आदम से कहा, ऐ आदम इन फरिश्तों को इनके (इन चीज़ों के) नाम बता दो, जब आदम ने उनके नाम बता दिये तो फरमाया क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि ज़मीन और आसमान की छुपी बातों (परोक्ष ज्ञान) को मैं ही जानता हूँ और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम दिखाते हो और जो कुछ छिपाते हो। (अल-बकर 30-33)

इन्सान में उपरोक्त विशेषतायें रखने के साथ-साथ जिनों के समान इच्छायें और कामना भी रखी। जिससे इन दोनों की परीक्षा हो सके। ये स्पष्ट हो सके कि ये अपने कर्म को अपनी इच्छा के अनुसार करते हैं या अपने रब की इच्छा के अनुसार। जिससे पुनः जीवित करने पर इन्हें आदेशों का पालन करने पर स्वर्ग अथवा उसके विरुद्ध करने पर नरक दिया जा सके।

और ये आखिरत की (भलाई को) हम उन ही लोगों के लिए चुन लिया है जो ज़मीन पर न बड़ा बनना चाहते हैं और न फसाद करना और नेक अंजाम तो परहेज़गारों का ही है। जो कोई नेकी लेकर के आयेगा, उसको उसका बेहतर बदला मिलेगा और जो कोई बुराई (बुरे कर्म) लेकर के आयेगा, तो ऐसे लोगों को, जो बुरा काम करते हैं बस उनकी बुराई के मुताबिक बस उतना बदला (सज़ा) मिलेगा जितना वो करते थे। (कसस 83-84)

जो कोई भी बुराई करेगा उसे उसका बदला दिया जायेगा और वो अल्लाह को छोड़कर अपने लिए न कोई दोस्त पायेगा और न कोई मददगार और जो कोई नेक और अच्छे कर्म करेगा, पुरुष हो या स्त्री, अगर वो ईमान वाला होगा, तो ऐसे सब लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। (निसा 123-124)

तो जब बड़ी आफत (कयामत) आयेगी, उस दिन इन्सान अपने कर्मों को याद करेगा और दोज़ख देखने वाले के सामने निकाल कर रख दी जायेगी। तो जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िन्दगी को बेहतर समझा, उसका ठिकाना दोज़ख है और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता है और मन को कामनाओं से रोकता रहा, तो उसका ठिकाना जन्नत है। (नाज़ियात 34-41)

और ये पता करें कि अल्लाह को खुश करने के क्या रास्ते हैं उनमें कुछ को तो इन्सान अपनी समझ से जान सकता है और कुछ को ईशवाणी के द्वारा जानता है। ईशवाणी के लिए अल्लाह अपने चुने हुए लोगों को नबी बनाता है और उनके द्वारा इन्सानों को अच्छे और बुरे कर्मों और सद्ब्यवहार से परिचित कराता है। इस प्रकार वह इन्सानों के युग और परिस्थितियों के अनुसार उनका मार्गदर्शन करता है। इस प्रकार युग बीतते रहे और अन्तिम युग के आरम्भ में अपने आदेशों और

इन्सानों को दी व्यवस्था को सम्पूर्ण करने के लिए ह० मुहम्मद स० को अन्तिम नबी नियुक्त किया और इन आदेशों का नामकरण इस्लाम के नाम पर हुआ।

फिर तुम्हारे पास रसूल इस चीज़ की तस्दीक करने वाला आये जो तुम्हारे पास है, तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना, फिर फरमाया तुम इकरार करते हो और इस पर मेरा अहद कुबूल करते हो, तो वो लोग बोले हम इकरार करते हैं। फरमाया तो तुम लोग गवाह रहना और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ फिर जो कोई इसके बाद किसी और रास्ते पर चलेगा तो यही लोग नाफरमान हैं। तो क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा किसी तरीके (रास्ते) को तलाश कर रहें हैं। जबकी उसके मानने वाले हैं। हाँलाकि आसमान और ज़मीन में जो कुछ भी है, इच्छा से हो या मजबूरी से, सब उसी की तरफ लौटाये जायेंगे। आप कह दीजिये की हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस पर जो हमारे ऊपर (कुआन) उतार गया और उस पर जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और याकूब की औलाद पर उतारा गया है और उस पर जो मूसा और ईसा पर और दूसरे नबियों को दिया गया, उनके रब की ओर से। हम उनके बीच कोई फर्क नहीं करते और हम तो उसी अल्लाह के मानने वाले हैं और जो कोई इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वो उससे हरगिज़ कुबूल नहीं किया जायेगा और वो इन्सान आखिरत में तबाहकारों में से होगा। (आले इमरान 81-85)

क्योंकि इन्सानों को अल्लाह ही ने सारी विशेषतायें दी है तो वह इन्सानों के स्वभाव को अच्छी तरह जानता है। इसलिए ईशवाणी के द्वारा दिये गये आदेश इन्सानों की कार्यक्षमता व स्वभाव के पूर्णतः अनुकूल हैं। क्योंकि अल्लाह जानता है कि इन्सान पर जब उसकी कामनाओं का प्रभाव पड़ता है, तो उसके मन की क्या स्थिति होती है, उसका व्यवहार कैसा होगा? जब अल्लाह को खुश करने का ख्याल आयेगा तो उसका व्यवहार कैसा होगा। पवित्र कुआन की विभिन्न आयतों में इसको चिन्हित किया गया है। इसके लिए कही सालेह, कही मोमिन, आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन शब्दों से मनुष्य के स्वभाव व चरित्र में जो भिन्नता है वो सामने आती हैं। अल्लाह के आदेशों में इन सबको समायोजित कर दिया गया है और इन्सान को इस ओर आकर्षित किया गया है। उसके मन में विभिन्न प्रकार की खचियाँ एवं भाव होते हैं। इन्सान उनका ध्यान रखे की वो भाव जो उसको इच्छा पूर्ति और कुकर्म का मार्ग बताते हैं, वह उनसे सावधान रहे। उनको अपने कर्मों पर प्रभावी न होने दे। वो भाव जो उसको सदाचार और अच्छाई की ओर ले जाते हैं उनसे लाभ उठाये और शक्ति प्राप्त करे।

अल्लाह किसी इन्सान पर उसकी ताकत से अधिक बोझ नहीं डालता, उसे वही मिलेगा जो उसने कमाया है और वह भुगतोगा (भी) वही जो उसने किया है। (अल-बकर 282)

इन्सानों के स्वभाव और कर्मों में मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ पाई जाती है, उनकी ओर संकेत करके ही पवित्र कुर्आन में इन्सान को आदेश दिये गये हैं। उसी के लिए विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया गया है। उनकी मनोवैज्ञानिक स्थितियों का ध्यान रखा गया है। उनको स्थान-स्थान पर स्पष्ट भी किया गया है। जैसे- सूरह- 'आदियात' में एक ओर तो अरबों के प्रिय विषय युद्ध में घोड़ों की तेजी, उनके द्वारा वीरता दिखाने और इससे दुश्मनों को पराजित करने का वर्णन है। दूसरी ओर ये भी बताया गया है कि इन्सान अल्लाह की बात न मानने और इच्छाओं में हृदय से बढ़कर भविष्य की चिन्ता नहीं करते और इससे होने वाले विनाश को भूल जाते हैं। इसी प्रकार व्यापार की चिन्ता और यात्रा में सर्दी-गर्मी में समूहों में यमन व शाम जाने और क़ब्रों के प्रधान होने के कारण यात्रा के खतरो से बचने का जो लाभ अल्लाह की ओर से मिलता है, कम से कम इसके धन्यवाद में उसकी उपासना का तो हक अदा करें।

इसी प्रकार सूरह अन्न में ज़माने की विशेषताओं के आधार से सफल इन्सान की विशेषताओं का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार सूरह 'हज' के अन्तिम भाग में मूर्ति पूजा में जो नासमझी और बुद्धिहीनता नज़र आती है। उसको कम और बहुत अच्छे शब्दों में बताया गया है।

ऐरे लोगों एक बड़ी बात बताई जाती है तो इसे ध्यान से सुनो, जिन लोगों को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वो एक मक्खी तक तो पैदा नहीं कर सकते, चाहें सब ही इसके लिए जमा हो जाए, और अगर मक्खी उनके सामने से कुछ छीन ले जाए, तो वह इससे छुड़ा तक नहीं सकते, तालिब (मदद चाहने वाले) और मतलूब (जिनसे मदद माँगी) कितने गये गुज़रे हैं। (हज 73)

देखो तुम लोग अपनी जरूरतों को बुतों के सामने ले जाते हो और उनकी पूजा करते समय यह नहीं देखते कि ये अपने ऊपर बैठी मक्खी भी नहीं उड़ा सकते। यदि मक्खी उन पर चढ़ाई गई कोई चीज़ ले जाये तो उससे छीन भी नहीं सकते, फिर भी उनसे कुछ मिलने की उम्मीद करना कैसी अजीब बात है। जब ये बुत इतने कमज़ोर और असहाय हैं तो तुम जो इनसे माँगते हो, तुम कितने कमज़ोर होगे।

इसी प्रकार इन्सान के मनोविज्ञान, उसकी दुर्बलता, विशेषतायें और उनके प्रभाव पड़ने को मिलते हैं। इसी प्रकार इन्सान के स्वभाव, उसके व्यवहार और

बुद्धिहीनता के खुले संकेत मिलते हैं। इस प्रकार इन्सान के दिलो-दिमाग और स्वार्थ की अलग-अलग तस्वीरें सामने आती हैं।

इन्सान की विशेषता

इन्सान जानवरो से क्यों ऊँचा है? अपने हाथ-पैर के कारण नहीं, हाथ पैर तो जानवरो के भी होते हैं। अपने दिल के कारण नहीं, अपनी आँखों के कारण भी नहीं, ये चीजे तो जानवरो के भी होती हैं। खाने-पीने के कारण भी नहीं, जानवर भी खाते-पीते हैं। अपने व्यवहार और स्वभाव के कारण, क्या खाना है और क्या नहीं खाना है, हाथ-पैर चलाने हैं, तो कैसे चलाने हैं। हाथ को जुल्म करने के लिये इस्तेमाल न करो, इनको फायदा पहुँचाने के लिये इस्तेमाल करो। अपनो को भी फायदा पहुँचाओ और दूसरो को भी फायदा पहुँचाओ। अपनी आँखो से गलत मत देखो अगर हम देखने में आजाद हैं तो हमने और जानवरो में क्या फर्क है। अल्लाह ने हम को इन्सान बनाया है और बहुत अच्छे से बनाया है। इन्सान को बनाते समय अल्लाह ने फरिश्तो से कहा - हम इन्सान को पैदा कर रहें हैं। तो फरिश्तो को बहुत आश्चर्य हुआ कि सारे जानवर मौजूद हैं, फरिश्ते मौजूद हैं और जिन्न भी मौजूद हैं। जहाँ तक आप की उपासना का प्रश्न है तो हम और सारी सृष्टि उपासना कर रहे हैं। इसके बाद अलग से एक नयी जाति पैदा करने की आवश्यकता क्या है। फिर आप इन्सानों को क्यों पैदा कर रहे हैं? ये सही काम न करके कही नुकसान पहुँचाने के काम न करने लगे।

और वो वक्त याद करो जब तेरे रब ने फरिश्तो से कहा, मैं ज़मीन पर अपना नायब बनाने वाला हूँ, वो बोले क्या तू इसमें ऐसे को (नायब) बनायेगा जो इसमें फसाद बरपा करेगा और खून बहायेगा। जबकी हम तेरी तस्बीह (जाप) करते रहते हैं और तेरी पवित्रता कहते रहते हैं। (अल-बकरा 30)

इस पर अल्लाह ने कहा-

मैं उस बात को जानता हूँ जिसको तुम नहीं जानते। (अल-बकरा 30)

तुम नहीं जानते कि इन्सान के बनाने में क्या भलाई और उद्देश्य है, मैं जानता हूँ। अल्लाह की उपासना करना उसकी बनाई सब चीजों के लिए आवश्यक है, पर ये सब उपासना करने के लिए बाध्य है। इसके बाद भी अल्लाह ने इन्सान को पैदा किया। इन्सान को अल्लाह ने ये सामर्थ्य दिया की अगर वो चाहे तो अल्लाह के बताये रास्ते के विपरीत कार्य कर सकता है, परन्तु उसका लाभ अल्लाह की इच्छा के अनुसार कार्य करने में है।

और हम ने इसको दोनों रास्ते (अच्छाई और बुराई के) बता दिये।

अब देखना ये है कि जब तुम्हारा मन नाफरमानी करने को कहेगा, तो तुम अपने मन पर नियन्त्रण कर पाते हो या नहीं। इसलिए कि तुम्हारे बहुत से

लाभ ऐसे होंगे जिन्हे देखकर तुम्हारा मन नाफरमानी करने को ललचायेगा। अगर नाफरमानी करोगें तो तुम्हे सज़ा मिलेगी और अगर तुम अपनी कामनाओं पर नियन्त्रण कर लोगे तो तुम्हे पुरस्कार मिलेगा और तुम सभ्य इन्सान होने का सबूत दोगे। तुमको इन्सान बनाकर पैदा किया गया है इसलिए नहीं कि एक और जीव बढ़ जाये। जीव तो बहुत सारे हैं साँप, बिच्छु, शेर और जानवर सभी हैं। कौन सी चीज़ ऐसी है जिसका गुण रखने वाले जीव न हों। शेर है वो जानवरो को खाते है, बकरी हैं वो ज़मीन से पैदा होने वाली चाज़ो को खाती है, तो हर प्रकार के जानवर मौजूद है, तो तुम्हारी क्या जरूरत थी। इसलिये कि तुम अपना व्यवहार दिखाओ अच्छा व्यवहार दिखाने के लिए तुम्हे पैदा किया गया।

इन्सान का उच्च स्थान

पवित्र कुर्आन में धर्म की कल्पना बहुत व्यापक एवं मानव मात्र का कल्याण है। जो मानव जीवन के शिष्टाचार के मूल्यों पर आधारित है। वो भाषा, क्षेत्र, रंग, जाति व भौगोलिक आधार पर भेदभाव नहीं करता। वो समस्त मनुष्यों को एक कुटुम्ब मानता है। नेकी और सदाचार एवं चरित्र के अच्छे अथवा बुरे होने पर भेद करता है। वो समस्त इन्सानों को केवल एक ईश्वर के भक्त और एक माता-पिता की सन्तान कहता है। वो एक ईश्वर की उपासना का आदेश देता है। इस प्रकार इन्सान को इन्सान के सामने या इन्सानों के द्वारा बनाई वस्तुओं के सामने झुकने से रोकता है। इस प्रकार वो इन्सान को इस पृथ्वी पर उसके उच्च स्थान एवं श्रेष्ठ चरित्र से परिचित कराता है। जिससे वो इस भरे पूरे संसार में उसके स्वामी एवं सृष्टा के अनुसार अपने कर्तव्यों का पूरी तरह निर्वाह कर सके।

पवित्र कुर्आन जिस प्रकार उपासना में किसी को ईश्वर का साझी बनाने का विरोध करता है और एक ईश्वर की उपासना का आदेश देता है। उसी प्रकार वह सदाचार एवं चरित्र निर्माण के लिए झूठ बोलने, धोखा देने, विश्वासघात, बेईमानी, लालच, नापतोल में कमी, घूस, ब्याज, ईष्ठा एवं अन्य कुकर्मों से भी मना करता है। पवित्र कुर्आन इन बुरी बातों के विरुद्ध जिन गुणों को धारण करने का आदेश देता है। उनमें सद्गुण, सदाचार, सत्यवादिता, संयम, पवित्रता, निर्मलता, पवित्रता, स्वाभिमान, न्याय प्रियता, वचन बद्धता, क्षमा करना आदि गुणों को अपनाने का आदेश देता है। मनुष्य जिस सीमा तक इन सद्गुणों को धारण कर लेता है इस्लाम उसी सीमा तक मनुष्य के स्तर की उच्चता को स्वीकार करता है।

और तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ भलाई करते रहों, अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुराये को पहुँच जाए, तो उनको (उनके कामों पर) उफ तक न कहो और न उनको छिड़कना और उनसे बात आदर के साथ करना और प्यार

और विनम्रता से उनके साथ रहो और उनके लिए दुआ करो कि ऐ मेरे रब जैसे इन्होंने बचपन में मुझे प्रेम से पाला है, तू भी इन पर रहम करा जो कुछ तुम्हारे दिलों में है तुम्हारा रब उसको अच्छी तरह जानता है, अगर तुम नेक होगे तो वह तौबा करने वालों को माफ करने वाला है और रिश्तेदारों, असहायों और यात्रियों को उनका हक दे दो, और फुजूल खर्ची में माल न उड़ाओ। क्योंकि फुजूल खर्ची करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है और अगर तुम अपने रब की रहमत के इन्तेज़ार में जिसकी तुम को उम्मीद है, उन (हकदारों) की ओर ध्यान न दे सको, तो उनसे नमी से बात कह दिया करो और अपने हाथ को न तो अपनी गर्दन से बंधा हुआ (तंग) रखो, और न बिलकुल खोल ही दो कि (सब देकर) फिटकारे हुए लाचार होकर बैठ जाओ। बेशक तुम्हारा रब जिसकी रोज़ी चाहता है फैला देता है और (जिसकी चाहता है) तंग कर देता है, वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और ख़ूब देखने वाला है और अपनी औलाद को निर्धनता के डर से कत्ल न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी, बेशक इनका कत्ल बहुत बड़े गुनाह की बात है और ज़िना (व्यभिचार) के करीब भी न जाना कि वह बेहयाई और बुरी राह है और किसी जीव को कत्ल न करो, जिसे मारना अल्लाह ने हराम ठहराया है, मगर हक के आधार पर और जिस इन्सान को लाचारी की हालत में कत्ल किया गया हो, तो हमने उसके वारिस को अधिकार दे दिया है (बदले का) तो उसको चाहिए कि कत्ल में ज्यादाती न करे, कि वह मदद किया हुआ (कामियाब) है और यतीम के माल के करीब भी न जाओ, मगर (उसके पालन-पोषण के लिए अगर आवश्यक हो तो) ऐसा रास्ता अपनाओ जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए, और अहद (प्रतिज्ञा) को जरूर पूरा करो कि अहद के बारे में पूछा जायेगा और जब नाप कर देने लगे, तो नाप पूरी रखा करो और ठीक तराजू से तोला करो, यह बहुत अच्छी बात है और परिणाम के रूप में भी बेहतर है। और जिस बात का तुमको ज्ञान न हो, उसके पीछे न लगे बेशक कान और आँख और दिल इन सब अंगों से पूछा जायेगा और ज़मीन पर अकड़ कर न चलो, न तो तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो, और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो। इन सब चीज़ों की बुराई तुम्हारे रब के नज़दीक बहुत नापसन्द है। यह हिकमत की उन बातों में से है, जो तुम्हारे रब ने तुम पर वस्य (आदेश) की हैं, और अल्लाह के साथ कोई और (माबूद) उपास्य न ठहराना, वरना नरक में डाल दिये जाओगे मलामत किये हुए और धुतकारे हुए। (बनी इसराईल 23-39)

पवित्र कुर्आन की मनुष्य के बारे में कल्पना

पवित्र कुर्आन की शिक्षाएँ किसी विशेष जाति या युग तक सीमित नहीं उसकी शिक्षाएँ और उसकी मनुष्य के बारे में कल्पना बहुत व्यापक है। इस

कल्पना में जीवन के वो समस्त मार्ग आ जाते हैं जिन पर चलकर मनुष्य सद्गुण से सम्पन्न मनुष्य बनता है। उदाहरण के रूप में अत्याचार के बदले अत्याचार न करना, मित्र तो मित्र शत्रु के साथ भी अच्छा व्यवहार करना, आडम्बरो, आलस, कंजूसी, फुजूल खर्च से बचना। निर्धनो, गरीबों और अनाथों की सहायता करना निस्वार्थ लोगों के काम आना, अच्छा व्यवहार करना माता पिता की सेवा करना, बच्चों से प्रेम करना, छोटों पर कृपा करना, बड़ों का आदर करना, पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार और किसी पर निर्भर न होना। ये सब वो सद्गुण हैं जो इस्लाम में आदर्श मनुष्य की कल्पना में सम्मिलित हैं। संसार के रब और ब्रह्माण्ड के सृष्टा अल्लाह ने अपने पवित्र कुर्आन में इनके सम्बंध में उपदेश दिये हैं। इसी कारण पहले युग के मुसलमानों ने पूर्णतयः इसके अनुसार कर्म किये। उन्होंने पवित्र कुर्आन की शिक्षाओं को अपनी बुद्धि एवं मन में उतारा तथा उच्चतम मानवीय गुणों का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। मक्का में रहते समय उन सब में ये समस्त सद्गुण मिले और जब वो मुहाजिर (परदेसी) बनकर मदीने आये, तो मदीने के मुसलमानों (अन्सार) ने स्वयं कष्ट झेलकर मुहाजरीन के कष्टों को दूर किया। पवित्र कुर्आन में सूरह 'हश्म' में इसी ओर संकेत किया गया है।

और दूसरों को अपने मुकाबले प्राथमिकता देते हैं, चाहे वह खुद भी जरूरतमन्द हों। (हश्म 9)

सूरह 'दहर' में सहाबा की इसी प्रकार की मानवीय सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए पवित्र कुर्आन में वर्णन किया गया है।

खुद खाने की आवश्यकता होने के बाद भी असहायों, गरीबों और कैदियों को खाना खिला देते हैं। (दहर 8)

अच्छी बात कहना एवं बुरी बात से बचना भी पवित्र कुर्आन की मानवीय कल्पना में सम्मिलित है। विशेष रूप से ह० मुहम्मद स० की उम्मत पर इस बात का दायित्व है। इसके साथ स्वयं सदाचारी बनना एवं दूसरों की भलाई के लिये प्रयत्न करना, इसको भी सद्कर्म कहा गया एवं इसका भी उपदेश दिया गया।

तुम लोग बहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान रखते हो। (अले इमरान 110)

किसी भूले भटके यात्री को मार्ग दिखाना, रास्ते से पत्थर, काँटे या अन्य पीड़ादायक वस्तुओं को हटाना भी मानवता है। किसी के साथ नेकी या उपकार करके उसको न जताना, धन्यवाद की अभिलाषा मात्र भी न होना, दिखावे से बचना, ये सब इस्लाम की मानवीय कल्पना में आता है। इसी कारण मुसलमानों को आदेश है।

ऐ ईमान वालों अपनी खैरात (दान) को एहसान दिखा कर और उसको जता कर खत्म न करो। (अल-बकरा 264)

क्योंकि अच्छी बात कहना और क्षमा करना उस दान-दक्षिणा से अच्छा है जो किसी को उपकार जताकर उसके दिल को पीड़ा पहुँचाकर दिया जाये। इसलिए दान-दक्षिणा के लिए ये उचित समझा गया कि इस प्रकार गुप्त रूप से दिया जाये कि इसमें दिखावा न हो। दूसरी बात ये है की दान खुले दिल से, प्रसन्नता के साथ दिया जाये। इसके लिये जोर न डाला जाये, ये कपटाचारी की निशानी है। जो इस्लाम के मानवीय कल्पना के विरुद्ध है।

इन बातों से पवित्र कुर्आन के मानवीय कल्पना की व्यापकता का आभास होता है, इस्लाम की मानवीय कल्पना में सद्गुणों के विभिन्न प्रकार सम्मिलित है। वो एक ओर नम्रता पर बल देता है और दूसरी ओर स्वाभिमान की भी शिक्षा देता है। इसी प्रकार वो जहाँ निर्धनता एवं गरीबी की परिस्थितियों को सहन करने का उपदेश देता है। उसी प्रकार वैभव, बल एवं सौन्दर्य को अपनाने का भी उपदेश देता है। इस्लाम की मानवीय कल्पना के अनुसार पृथ्वी की अमन व शान्ति, विकास व खुशहाली के लिये दोनो प्रकार की शक्तियों के मध्य सामन्जस्य उत्पन्न करना है। इसी कारण इस्लाम अपने मानने वालों में केवल नम्रता, विनीतता एवं सरलता ही उत्पन्न नहीं करता अपितु उसके साथ-साथ दृढ़ इच्छा शक्ति, स्थिरता, अटल संकल्प एवं स्वाभिमान को भी उजागर करता है।

अतः पवित्र कुर्आन की मानवीय कल्पना की विशेषता ये है कि उसने संसार को मानवीय सदाचारों की एक ऐसी व्यापक व्यवस्था दी, जो मनुष्य के उच्च स्तर के अनुरूप है। इसके साथ-साथ उसको मानवीय स्वभाव एवं कर्म की क्षमता के अनुसार सरल कर दिया। जिससे ये प्रत्येक व्यक्ति, जाति और युग के लिए अनुकूल हो। ये इस्लाम ही की मानवीय कल्पना है कि दासों ने स्वामियों का और दबे-कुचलो ने उच्च वर्ग का और नीचे वालों ने ऊपर वालों का सम्मान एवं स्थान ग्रहण किया।

और तुम ही गालिब होंगे अगर तुम अगर तुम ईमान वाले होंगे। (अले इमरान 139)

अध्याय तीन

अल्लाह के आदेशों का पालन

आसमान, जमीन और इसमें मौजूद सारी चीजों को बनाने वाले अल्लाह ने इन्सानों को न केवल ज्ञान दिया है बल्कि उनको सत्य मार्ग दिखाने के लिए समय-समय पर आपने नबियों को भेजा और उन्हें अपनी किताबें दीं। इसके अतिरिक्त अन्तिम युग में इन्सानों को सत्य मार्ग दिखाने के लिए अन्तिम नबी को अन्तिम किताब पवित्र कुर्आन देकर भेजा। जिससे इन्सान इस युग में अपने पैदा करने वाले की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करें और अपने आज्ञाकारी होने का प्रमाण दें। इस संसार को बनाने वाले अल्लाह ने अपनी उपासना के दो रूप बनाये हैं। एक स्वभाविक और दूसरी इच्छा शक्ति से की जाने वाली उपासना। ये दोनों उपासनायें सृष्टि की ओर से की जाती हैं। इसमें इन्सान और जिन्यों को इच्छाशक्ति वाली उपासना दी गयी है। इन दोनों के अतिरिक्त समस्त सृष्टि का स्वभाव ही उपासना करना बनाया गया है। ये सब स्वभाविक रूप से अपने रब की उपासना करते रहते हैं।

उसकी पाकी ब्यान करते हैं सातों आसमान और सातों ज़मीन और जो कोई भी इनमें मौजूद है और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो हम्ह के साथ उसकी पाकी न ब्यान करती हो। अल्बत्ता तुम ही उनकी तस्बीह को नहीं समझते हो। बेशक वो (रब) बड़ा नर्मी वाला है बड़ा माफ करने वाला। (इसरा 44)

क्या तुझे मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह की तस्बीह करते रहते हैं, जो कोई भी आसमानों और ज़मीन में है और पक्षी भी जो पर फैलाए हुए हैं, हर एक को मालूम है अपनी-अपनी दुआ और अपनी तस्बीह और अल्लाह खूब जानता है जो कुछ ये लोग करते हैं। (नूर 41)

लेकिन इन्सानों और जिन्यों को अल्लाह ने सारी सृष्टि से अलग रखा है। इनको इस बात की छूट दी है कि वो उपासना करें या न करें। ये भी बता दिया है कि उपासना करने पर ईमान और न करने पर सज़ा मिलेगी। इनके अतिरिक्त समस्त सृष्टि स्वभाविक रूप से उपासना करती रहती है। इन्सानों और जिन्यों को उनकी परीक्षा लेने के लिए ये अधिकार दिया है, कि वो चाहे तो अपनी इच्छा से

अपने रब की उपासना करें और चाहे तो न करें। ये इसलिए कि स्वतन्त्रता मिलने पर ही इच्छा का पता चलेगा कि कौन अपनी इच्छा पर चलता है और कौन अपने रब की इच्छा पर।

क्योंकि मरने के बाद जब दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा, तो केवल इन्सान और जिन्नों से ही उनके कर्मों का हिसाब लिया जायेगा। अच्छे कर्मों पर इनाम और बुरे कर्मों पर सज़ा मिलेगी। जब स्वतन्त्रता मिलने के बाद भी आज्ञा पालन किया जायेगा तो इससे अल्लाह प्रसन्न होगा। क्योंकि वो मजबूर नहीं थे, फिर भी अपनी कामनाओं के विरुद्ध अपने रब की इच्छा पर चलने को प्राथमिकता देते थे, ये अल्लाह को बहुत पसन्द है। अल्लाह ने संसार में जिन्नों और इन्सानों को बसाया और इन्सानों को ज्ञान का इनाम देकर उनको जिन्नों से भी आगे बढ़ा दिया। इन्सान को ज़मीन पर अपना प्रतिनिधि बनाने का फैसला किया और इन्सानों को इसके अनुसार कर्म करने के निर्देश दिये। अगर वो चाहता तो जिन्नों और इन्सानों का स्वभाव ही उपासना करना बना देता और वो हर समय उपासना करते रहते। किन्तु इससे ये पता नहीं चलता कि ये उपासना मजबूरी में की जा रही है या अपनी इच्छा से। अल्लाह ने अपनी उपासना का आदेश देने के साथ-साथ ये भी कहा है-

धर्म में कोई ज़बर्दस्ती नहीं, हिदायत तो गुमराही से साफ-साफ खुल चुकी है, तो अब जो कोई सरकश (शैतान) को ठुकार दे और अल्लाह पर ईमान लाए, तो उसने ऐसा मज़बूत सहारा धाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं, और अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है। (अल-बकर 256)

नाफरमानी और बुरे काम करने की स्वतन्त्रता भी तो अल्लाह ही ने दी है। अपनी कामनाओं के विरुद्ध अपने रब की आज्ञा पालन का पता उस समय चलेगा जब शैतान इन्सान को उसकी कामनाओं की ओर आकर्षित करे, उनकी ओर ध्यान दिलाये और बुलाये और इन्सान को उसकी कामनाओं के अनुसार कर्म करने को कहें।

इस काम के लिए जिन्नों में से इब्लीस के वंश को ये ताकत दी गयी की वो इन्सानों को बहका सकता है और उनको बुरे कामों की ओर खींचे। अब इन्सानों और जिन्नों को ये बात बता दी गई कि शैतान तुम्हें बुरे कामों की ओर बुलायेगा, जो अल्लाह को नापसंद है। ये तुम्हारी परीक्षा है कि तुम अपनी इच्छा पर चलोगे या अल्लाह की बात मानोगे। जो अल्लाह के नेक बन्दे हैं वो शैतान की बात नहीं मानते और अल्लाह की आज्ञा का पालन करते हैं।

इस प्रकार इन्सानों और जिन्नों की परीक्षा ली जाती है और इसका बदला इस जीवन के बाद कभी न खत्म होने वाले जीवन में दिया जायेगा। आज्ञा पालन

करने वाले जन्नत में जायेंगे और वहाँ की सुविधायें और ईनाम पायेंगे। शैतान के छल में फँसकर नाफरमानी करने वालों को उनके कर्मों के अनुसार कठोर दण्ड दिया जायेगा। इस प्रकार इन्सानों के जन्म से ही परीक्षा आरम्भ हुयी और आज भी चल रही है। अल्लाह ने इन्सानों को सावधान करने और कोई कर्म करते समय परिणाम का ध्यान रखने की बात बताने के लिए इन्सानों में से ही नबी भेजे। जो अपनी जाति को समझाते थे। अपनी किताब भी भेजी जिनमें और भी अच्छी तरह समझाया गया। जिससे इन्सानों और जिनो के पास कोई बहाना न रहे और वो ये न कह सके की हमें अच्छा और बुरा किसी ने बताया नहीं था।

और पैगम्बरों (अवतारों) को हमने भेजा, खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले बनाकर, ताकि पैगम्बरों के आने के बाद इन्सानों के सामने कोई बहाना बाकी न रह जाए और अल्लाह तो है ही बड़ा ज़बरदस्त बड़ी हिकमत वाला। (निसा 165)

अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में कई स्थान पर उन निशानियों का वर्णन किया है जिनसे उसके सृष्टि के निर्माता और सबका मालिक होने के प्रमाणों को आसानी से समझा जा सकता है। उसकी ताकत और समर्थ्य का आभास किया जा सकता है। वो ही जिन्दगी और मौत देने वाला है। उसने ही जीवन में सुख और आराम की चीज़ें बनाई और वो इनको वापस भी ले सकता है। इससे अल्लाह की खुशी और नाराज़गी के महत्व को समझा जा सकता है।

अल्लाह वो है कि कोई उसके सिवा इबादत के योग्य नहीं है, वह ज़िन्दा और हमेशा रहने वाला है, उसे न ऊँघ आ सकती है और न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन ऐसा है जो बिना उसकी इच्छा के (दूसरे की) सिफ़ारिश कर सके, वो जानता है जो कुछ लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे है उस सब को और लोग इस इल्म में से किसी चीज़ को भी नहीं जान सकते सिवाए उसके कि जितना वो खुद (ज्ञान) दे, उसकी कुर्सी (सामर्थ्य) ने समा रखा है आसमानों और ज़मीन को और उनकी निगरानी उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं और वो बड़ा अज़मत (बड़ाई) वाला है। धर्म में कोई ज़बर्दस्ती नहीं, हिदायत तो गुमराही से साफ-साफ़ खुल चुकी है, तो अब जो कोई सरक़श (शैतान) को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, तो उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं और अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह उन लोगों का दोस्त है जो ईमान आए और वो उन्हें अन्यैरों से निकालकर रोशनी की ओर लाता है और जिन लोगों ने इन्कार (कुफ़्र) को अपनाया, उनके दोस्त शैतान हैं, कि वो उनको रोशनी से निकाल कर

अंधेरे की ओर ले जाते हैं, यही लोग जहन्नमी हैं उसमें वो हमेशा पड़े रहेंगे
(अल-बकर 255-257)

इसलिए अल्लाह के पवित्र कुर्आन और उसके द्वारा भेजे नबियों के प्रयासों से लोगो ने अपने रब की इच्छा पर चलने के प्रयास किये। किन्तु बहुत से लोग शैतान के कहने में आकर अपनी कामनाओं को पूरा करने में लगे रहे और अपने नबियों का विरोध करने लगे। जिसके कारण उन कौमों को तबाह और बर्बाद कर दिया गया और परलोक में तो उन्हें और भी कठोर सज़ा मिलेगी।

बीच का रास्ता

जिन कौमों और लोगों ने अपने नबियों की बात को माना और ईशवाणी से लाभ उठाया और अल्लाह की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने अपने रब को खुश करने का अच्छा उदाहरण दिया। इससे हटकर कुछ लोगों ने अपने रब को खुश करने के लिए अपनी ओर से कर्म किये। इसके लिये उन्होंने कष्ट उठाये और परेशानियों का सामना किया, जो उनके लिए आसान नहीं था। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी क्षमता से बढ़कर करने के प्रयास किये जिसके लिए उन्हें संतुलित मार्ग से हटना पड़ा। ये लोग अपने रब की ओर से बताये स्वभाविक कर्मों से अधिक करने लगे, जिसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि अल्लाह ने इन्सानों से अपनी सीमा में रहकर उपासना करने को कहा है और इन्सानों की क्षमता और स्वभाव का ध्यान रखा है।

जैसा की पवित्र कुर्आन में ऐसे लोगों से कहा गया है-

और उन्होंने खुद रहबानियत (संन्यास) को चुना जबकि हमने उसे उनके लिए अनिवार्य नहीं किया था, बल्कि उन्होंने अल्लाह को राजी (प्रसन्न) करने के लिए ऐसा किया था, फिर वो इसकी पूरी तरह निभा न सके। (हदीद 27)

इस प्रकार अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी ह० मुहम्मद स० पर अपनी आज्ञा पालन की जो जिम्मेदारी डाली है, उसमें इन्सानों के स्वभाव व क्षमता का ध्यान रखा है और इन्सानों को अपनी सीमा में रहते हुए कर्म करने का आदेश दिया है। जैसा की पवित्र कुर्आन में संन्यास के बारे में ऊपर दी आयतों में निर्देश दिये और इस प्रकार पवित्र कुर्आन में कई जगह बताया गया है कि तुम्हारे शरीर की जो आवश्यकतायें हैं उनको पूरा करते हुए अल्लाह के आदेशों का पालन करो।

अल्लाह किसी को जिम्मेदार नहीं बनाता मगर उसकी क्षमता के मुताबिक।
(अल-बकर 286)

और दोनों में सन्तुलन बनाने का रास्ता भी बताया है। इसलिए सूरह 'जुमुआ' में जहाँ ये कहा गया है कि जुम्मे की नमाज़ के लिए जब बुलाया जाये

तो अपने कारोबार को छोड़कर आ जाओ, तो ये भी कहा गया है कि नमाज़ के बाद वापस आकर अपने कारोबार में लग जाओ।

ऐ ईमान वालों! जब जुमअः के दिन नमाज़-ए-जुमुआ के लिए अज़ान कही जाए, तो तुम अल्लाह की याद (नमाज़) की ओर तुरन्त चल पड़ा करो, और खरीदना-बेचना और दूसरे काम जो चलने से रोके, छोड़ दिया करो, ये तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो, फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो उस वक्त तुम को इजाज़त है कि तुम ज़मीन पर चलो फिरो और अल्लाह की रोज़ी तलाश करो, और इसमें भी अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करते रहो, ताकि तुम कामयाब हो जाओ और कुछ लोगों का ये हाल है की वो जब कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं और आप को खड़ा हुआ छोड़ जाते हैं, आप कह दीजिए, जो कुछ अल्लाह के पास है, वो इस तिजारत और तमाशे से कहीं बेहतर है और अल्लाह सबसे बेहतर रिस्क देने वाला है। (जुमुआ 9-11)

इसी प्रकार दूसरी जगह कहा है :-

आप कह दीजिए, किसने हराम कर रखा है अल्लाह की उस जीनत को, जिन्हें उसने अपने बन्दों के लिए बनाया और खाने की पाक चीज़ों को? और आप कह दीजिए, यह चीज़े दुनिया की ज़िन्दगी में ईमान वालों के लिए है और क़यामत के दिन तो यह केवल उन्हीं के लिए होगी, इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए विस्तार ये बयान करते हैं, जो (अपने रब की बातों का) ज्ञान रखते हैं (आराफ़ 32)

एकता और विस्तार

इस प्रकार इन्सान को उपासना और आज्ञा पालन का जो आदेश दिया गया है, उसके साथ ये बात भी बता दी गई कि इन्सान के चारो ओर ज़मीन में जो फायदा और आराम पहुँचाने वाली चीज़े हैं, वो इन्सान के लिए ही पैदा की गयी है। जिससे इन्सान को ज़मीन पर रहते हुए ज़िन्दगी गुजारने और इबादत करने में आसानी हो। इनसे इन्सान लाभ उठा सकता है, चाहे वो आज्ञाकारी हो या न हो। नाफरमान लोगों को परलोक जीवन में ये चीज़े नहीं मिलेंगी और आज्ञाकारी लोगों को वहाँ और भी अधिक मिलेगा। दुनिया की ज़िन्दगी में इन चीज़ों से फायदा उठाने की इजाज़त ही नहीं है बल्कि अल्लाह की ओर से आराम के लिए ये चीज़े दी गयी है। लेकिन इस बात का ध्यान रखना है कि नबी के बताये हुए रास्ते के विरुद्ध कर्म न हो। इस प्रकार अल्लाह ने दीन व दुनिया को एक साथ कर दिया है। दीन के साथ दुनिया और दुनिया के साथ दीन मिले हुए

है और इसका रास्ता अल्लाह ने अपनी किताब और अपने नबी के द्वारा बता दिया है।

इस प्रकार इस्लाम जिसको अन्तिम नबी के द्वारा पूरा किया गया है, एक सम्पूर्ण मार्ग दर्शन है, जिसमें दुनिया की सही जरूरतों का भी ध्यान रखा गया है और उपासना के अलग-अलग पहलुओं का भी वर्णन किया गया है। इन दोनों को साथ रखने का आदेश दिया गया है। इसलिए ह० मुहम्मद स० ने फरमाया- 'ताकतवर मोमिन कमज़ोर मोमिन के मुकाबले में अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा बेहतर और महबूब है'।

और उन तीन सहाबियों का किस्सा बताया गया जिनमें एक ने तय किया था कि लगातार रोज़े रखेंगे और दूसरे ने तय किया था कि शादी नहीं करेंगे और तीसरे ने पूरी रात जागने की बात कही। ये तीनों अल्लाह के नबी मुहम्मद स० के पास गये। अल्लाह के नबी को इनके बारे में बताया गया, अल्लाह के नबी ने इन बातों को नापसन्द किया और कहा कि "मैं इबादत भी करता हूँ और उन कामों को भी करता हूँ जिनसे तुम बचना चाहते हो"। इसलिए ये बात साफ़ कर दी गई कि जैसे नबी इन चीज़ों को एक साथ कर रहे हैं, उस प्रकार करना ज़्यादा बेहतर है। इस प्रकार इस्लाम को जीवन का एक सम्पूर्ण और सन्तुलित धर्म बनाया गया। मानव जीवन की देखरेख और मार्ग दर्शन पवित्र कुआन के द्वारा पूर्ण रूप से होता है। अल्लाह ने इसको कसौटी (मानक) बनाया है और सन्यास के स्थान पर सामाजिक जीवन को पसन्द किया है। और कहा

तुम लोग अल्लाह वाले बन जाओ, इसलिए कि तुम किताब पढ़ाते हो, और खुद भी उसे पढ़ते हो। (अले इमरान 79)

और कहा-

निःसन्देह सत्य धर्म अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है (अले इमरान 19)

और कहा-

ऐ ईमान वालों! इस्लाम में पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ, और शैतान के कदमों पर न चलो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। फिर अगर तुम इन स्पष्ट दलीलों (प्रमाणों) के बाद भी जो तुम्हारी तरफ़ आ चुकी हैं, फ़िसल जाओ, तो जान लो की अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत (ज्ञान) वाला है। (अल-बकर 208-209)

अध्याय चार

नबियों को भोजना

अल्लाह ने इस सृष्टि को बनाने के बाद ज़मीन बनाई और इस ज़मीन पर इन्सान को पैदा किया। इस पृथ्वी पर इन्सान को विशेष स्थान दिया। इसके साथ ही अपनी शक्ति को बताते हुए ये भी बता दिया कि इन्सान बड़ा तुच्छ है। उसको मिट्टी से पैदा किया गया है और मिट्टी बहुत सारे जीवों के पैरों तले रौन्दी जाती है किन्तु इन्सान में ऐसी आत्मा डाल दी, जिसके द्वारा यह उच्च श्रेणी तक पहुँच सकता है। एक ओर तो उसकी वास्तविकता तुच्छ बताई और दूसरी ओर उसको कर्मों के अनुसार उच्च स्थान दिया। इस प्रकार इन्सान में अच्छाई और बुराई दोनों पाई जाती है। यदि इन्सान अपनी आत्मा से खुद को जोड़े रहेगा तो उच्च और सम्मानजनक कार्य करेगा। यदि इसके विपरीत करेगा तो बहुत दुर्गति और दयनीय हालत में पहुँच जायेगा। यदि अपने तुच्छ शरीर से जुड़ा रहा तो बुरी हालत में पहुँच जायेगा। इसलिए इन्सान में दोनों बातें देखने को मिलती है, कहीं तो वो बहुत बुरे अन्जाम तक पहुँच जाता है, तो कहीं उच्च व्यवहार देखने को मिलता है। इन्सान में अच्छे आचरण का जो गुण अल्लाह ने रखा है, इसके कारण ही उसको अपना प्रतिनिधि बनाया है। किन्तु इन्सान की इस विशेषता को उसकी आत्मा से जोड़ दिया जो उसके शरीर में डाली गयी है। जिसने अपना सम्बन्ध अपनी आत्मा से तोड़ा और शरीर से जोड़ा तो वह बहुत निन्दनीय स्थान तक पहुँच गया। अल्लाह ने कहा है-

इंजीर और ज़ैतून की कसम और तूर पहाड़ की और इस अमन वाले शहर (मक्का) की, बेशक हमने इन्सान को बहुत ही सुन्दर (साँचे में ढालकर) बनाया, फिर उसको (नरक में) नीचे से भी नीचे सतह पर लौटा दिया, मगर जो लोग ईमान लाए और नेक आमाँल करते रहे, उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है, फिर तुझको क्या हो गया है, (ऐ आदम की औलाद) जो तू बदले के दिन (क्यामत) को झुठलाता है? क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं? (वत्तीन 1-7)

अपना प्रतिनिधि बनाने के साथ ही अल्लाह ने इन्सान को ये दायित्व भी सौंपा है कि वो बिगड़े समाज को ठीक करे और पृथ्वी पर अल्लाह के आदेशों का पालन करने की व्यवस्था बनाये। मुख्य बात ये है कि इन्सान इस बात को माने कि उसका पैदा करने वाला अल्लाह है। उसने इन्सान को पैदा करके आज़ाद नहीं छोड़ दिया है। उसने एक दिन ऐसा रखा है, जिसमें वो सबको एकत्र करेगा और उनसे कर्मों का हिसाब लेगा। अच्छे कर्मों पर इनाम देगा और बुरे कर्मों पर कठोर सज़ा देगा।

जब धरती भूचाल से हिला दी जायेगी और धरती अपने अन्दर से सारे बोझ बाहर निकाल फेंकेगी और इन्सान कहेगा, 'इसको क्या हो गया है', उस दिन वह (अपने ऊपर गुज़रे हुए) हालात की ख़बर बयान कर देगी, क्योंकि आप के रब ने उसे हुक्म दे दिया होगा, उस दिन लोग अलग-अलग टोलियों में आयेंगे, ताकि उन्हें उनके आमाँल (कर्मपत्र) दिखा दिये जाएँ, तो जिसने ज़र्रा बराबर भी भलाई की होगी, वह उसको देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर भी बुराई की होगी वह उसको भी देख लेगा। (ज़िलज़ाल 1-7)

अच्छे कर्म करने वालों के लिए कहा-

और यह कि इन्सान को वही मिलता है जिसकी वो कोशिश करता है और ये कि उसकी कोशिश देखी जायेगी, फिर उसको इसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और ये कि तुम्हारे रब ही के पास पहुँचना है। (नज़्म 39-42)

दूसरे स्थान पर अच्छे और बुरे कर्मों के सम्बन्ध में कहा है-

जो इन्सान बुरे कर्म करेगा उसे उसका बदला दिया जाएगा, और वह अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती पायेगा और न मददगार और जो कोई नेक कर्म करके आयेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उन पर रत्ती बराबर भी जुल्म न होगा और उस इन्सान से किसका धर्म अच्छा हो सकता है जिसने अल्लाह के आदेशों का पालन किया। (निसा 123-124)

इस धरती पर व्यवस्था चलाने के लिए बुद्धि और परिश्रम की जिस विशेषता की आवश्यकता थी। वो अल्लाह ने इन्सान को दी। जो बातें इन्सान की बुद्धि और सामर्थ्य से परे थी अल्लाह ने वो बातें ईशवाणी के माध्यम से संदेष्टाओं को बता दी। ये बातें और निर्देश कभी किताबों के रूप में मिले तो कभी अन्य प्रकार से। ये इस प्रकार हुआ कि आदम अलै० का वंश के इस धरती पर बसने से जब दुनिया की चमक-दमक, इच्छाओं और मनमानी करने की चाह के प्रभाव में इन्सान सत्य मार्ग से हटकर असत्य की ओर चला। जिसके कारण आपस में झगड़ा बढ़ा। तब अल्लाह ने उन्हीं में से उच्च आचरण वाले इन्सानों

को चुना कि वो इन्सानों को समझाएँ और सत्य मार्ग दिखाएँ। इन लोगों को अल्लाह ने नबी (सन्देश) की उपाधि प्रदान की। फरिश्तो के माध्यम से नबियों पर अल्लाह के सन्देश आते और वो लोगों को बताते। इस प्रकार एक वंश से दूसरा वंश बढ़ता गया। जब-जब लोग लालच और शैतान के धोखे में पड़कर सत्य मार्ग से भटक जाते, तब-तब अल्लाह उन्हीं में किसी को नबी बना देता। नबियों के पूर्ण प्रयासों के बाद भी जिन लोगों ने उनकी बात न मानी और मनमानी करते रहते। अल्लाह ने अज़ाब भेजकर उन लोगों को नष्ट कर दिया।

नबी उस दिन से डरते थे जिस दिन हिसाब लिया जायेगा और लोगों से इस बात का ध्यान रखकर जीवन व्यतीत करने को कहते। जब-जब समाज में बुराईयाँ बढ़ जाती नबी उन्हें समाप्त करने का प्रयास करते। नबियों ने सदा यही उपदेश दिये कि अल्लाह अकेला ही उनका पैदा करने वाला, पालने वाला और उनका स्वामी है। उनको जो भी लाभ होता है उसको अल्लाह ही का उपकार माने और अपने कर्मों के द्वारा आभार प्रकट करें। अल्लाह ने इन्सानों को उनका उद्देश्य बताते हुए साफ कहा है-

हमने इन्सानों और जिन्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वो मेरी ही उपासना और आज्ञापालन करें।

और ये भी साफ कर दिया है-

क्या तुम ये साचते हो कि हमने तुमको वे मकसद (उद्देश्य) पैदा किया है और तुम हमारी ओर लौटकर नहीं आओगे? (मोमिनुन 115)

हजरत० नूह अलै०

पवित्र कुर्आन में बहुत से नबियों का उल्लेख है जिन्होंने अपनी कौमों को समझाया। इनमें से एक है नूह अलै० (जल प्लावन वाले मनु) जो 950 साल तक अपनी कौम को समझाते रहे। इसके बाद भी कुछ गिने-चुने लोगों ने ही उनकी बात मानी अन्य सभी नाफरमानी करते रहे। अन्त में उन लोगों को सज़ा मिली और इन्कार करने वालों को पानी में डूबो दिया गया।

पवित्र कुर्आन में इनका किस्सा इस प्रकार आया है-

और हमने 'नूह' को उनकी कौम की ओर भेजा (उन्होंने कहा), "मैं तुम्हें साफ-साफ चेतावनी देने वाला हूँ", यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में एक दर्दनाक अज़ाब के दिन का डर है, तो उनकी कौम के सरदारों ने, जो काफिर थे, कहा, "तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो और यह भी देखते हैं कि बस कुछ ऐसे ही लोग तुम्हारे अनुयायी हैं जो हममें से नीच हैं, वह भी आम राय से वाले लोग और हम अपने मुकाबले में तुम्हारे अन्दर कोई विशेषता नहीं पाते, बल्कि हम तो समझते हैं कि तुम झूठे हो।"

उन्होंने कहा, “ऐ मेरी कौम यह तो बताओ, कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक रोशन दलील (एक विशेष कार्य) पर हूँ और उसने मुझ पर अपनी विशेष कृपा की है, अगर वो तुम्हें नहीं दिखती तो क्या हम उसको तुम्हारे सर थोप दें जबकि तुम उससे नफरत करते हो” और “ऐ मेरी कौम के लोगों! मैं तुम से इस काम पर कोई माल तो नहीं माँगता! मेरा अज्र (बदला) अल्लाह ही के ज़िम्मे है और मैं उन लोगों को जो ईमान ले आए हैं अलग करने वाला नहीं, ये लोग तो अपने रब से मिलने वाले हैं, मगर मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम जिहालत (इन्कार) किये जा रहे हो” और ऐ मेरी कौम के लोगों अगर मैं उन्हें दूर कर दूँ तो अल्लाह के मुकाबले में कौन मेरी मदद कर सकता है? क्या तुम इतना भी नहीं समझते। मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खजाने हैं और न ही मुझे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ और न मैं यह कह सकता हूँ, कि जिन लोगों को तुम नीची नज़र से देखते हो, उनको अल्लाह भलाई (क़ामयाबी) नहीं देगा, जो उनके दिल में है अल्लाह उसे ख़ूब जानता है, मैं अगर ऐसी बात कहूँ तब तो ज़ालिमों में होऊँगा।” उन्होंने कहा, ऐ नूह! तुम हमसे झगड़ चुके और बहुत बहस कर चुके, अगर तुम सच्चे हो, तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो उसे हम पर ले ही आओ।” कहा, “वह तो अल्लाह ही अगर चाहेगा तो तुम पर लाएगा और फिर तुम उसे (अज़ाब को खुद से) हटा नहीं सकते” और अगर मैं तुम्हारा भला ही चाहूँ (और) अल्लाह यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करें, तो मेरा भला चाहना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता, ‘वही’ तुम्हारा रब है और ‘उसी’ की ओर तुम्हें लौटना भी है।” क्या यह कहते हैं कि, “इन्होंने इस कुआँन को गढ़ लिया है, कह दीजिए, “अगर मैंने गढ़ लिया है तो मेरे ही ऊपर मेरा यह जुर्म होगा और तुम जो जुर्म कर रहे हो मैं उससे बरी (मुक्त) हूँ” और नूह के पास वह्य (ईशवाणी) भेजी गई कि “तुम्हारी कौम में से अब (और कोई) ईमान नहीं लाएगा, सिवाय उनके जो लोग ईमान ला चुके, तो जो कुछ ये कह रहे हैं उनकी वजह से दुखी न हो और नाव ‘हमारे’ सामने हमारे आदेश के अनुसार तैयार करो और ‘मुझसे’ उन लोगों के विषय में बात न करना जिन्होंने (अपने ऊपर) जुल्म किया है, इसलिए कि वे ज़ख़र डुबो दिये जाएँगे और (नूह) नाव बनाने लगे और उनकी कौम के सरदार जब भी उनके पास से गुज़रते तो उसका मज़ाक़ उड़ाते, उन्होंने कहा, “अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम्हारे ऊपर हँसते हैं जैसे तुम हमारे ऊपर हँसते हो, तो जल्द ही तुम को मालूम हो जायेगा कि किस पर अज़ाब आने वाला है जो उसे रूसवा कर देगा, और उस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होगा”? यहाँ तक कि जब हमारा आदेश हुआ, तो ज़मीन के (गर्भ से) तंदूर उबल पड़ा, तो

‘हमने’ कहा, ‘हर नस्त में से दो (नर और मादा) के जोड़े उसमें ले लो और अपने घर वालों को भी-सिवाय ऐसे इन्सान के जिसके बारे में आदेश हो चुका हो और जो ईमान लाया हो उसे भी, मगर उनके साथ जो ईमान लाये थे, वो बहुत थोड़े ही लोग थे और नूह ने कहा आओ नाव में सवार हो जाओ अल्लाह ही के नाम से ये चलेगी और उसी के नाम पर रुकेगी, इसमें सवार हो जाओ बेशक मेरा ‘रब’ बड़ा माफ करने वाला है और वो नाव उन्हें लेकर लहरों के बीच चलने लगी, पहाड़ जैसी मौज़ों में और नूह ने अपने बेटे को पुकारा, वह किनारे पर था, “ऐ मेरे बेटे! सवार हो हमारे साथ और काफिरों के साथ मत हो”। वह बोला “मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह लिए लेता हूँ जो मुझे पानी से बचा लेगा” कहा, “आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचने वाला नहीं सिवाय उसके जिस पर वह रहम करे” इतने में दोनों के बीच मौज़ (लहर) आ पड़ी और डूबने वालों के साथ वो भी डूब गया और कहा गया, “ऐ धरती! अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान तू थम जा” इतने में पानी तह में बैठ गया और फैसला पूरा हो गया और वह (नाव) जूदी (पहाड़) पर टिक गई और कह दिया गया कि जुल्म करने वाले लोग दूर हो गये और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा, “ऐ मेरे रब! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों ही में है और तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बेहतर हाकिम है”। (अल्लाह ने) कहा, “ऐ नूह! वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं, क्योंकि उसके कर्म बुरे थे, तो मुझसे ऐसी चीज़ों का सवाल न करो जिसकी तुम्हें खबर न हो, मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि तुम नादानों में से न हो”। (नूह) बोले “ऐ मेरे रब! मैं तुझ से तेरी पनाह मांगता हूँ कि तुझसे उस चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे कोई इल्म न हो, अब अगर तूने मुझे माफ न किया और मुझ पर दया न की, तो मैं घाटे में पड़ कर रहूँगा”। कहा गया, “ऐ नूह हमारी ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ, (जो) तुम पर और उन गिरोहों पर होगी जो तुम्हारे साथ हैं, उतर जाओ कुछ गिरोह ऐसे भी होंगे जिन्हें हम थोड़े दिनों का सुख देंगे, फिर उन्हें हमारी ओर से दुख देने वाला आज़ाब आ पहुँचेगा। यह ग़ैब (परोक्ष) की खबरें हैं जिनकी हम आप की ओर वदय कर रहे हैं, इससे पहले न तो आप को उनकी खबर थी और न आप की कौम को, अतः सब्र से काम लो, बेशक (भला) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है। (हूद 25-49)

अन्य सन्देष्टा

पवित्र कुर्आन में हजरत नूह अलै० और उनकी कौम के वर्णन के बाद ह० हूद अलै०, ह० सालेह अलै०, ह० शूएब अलै० का उल्लेख है। इन्होंने अपने-अपने युग में अपनी-अपनी कौमो आद, समूद, सूत और कौम मदयन में सत्य की पुकार लगाई। कौम आद- बहुदेववाद, अभिमान और अन्य बुराईयों में,

कौम समुद्र- बहुदेववाद, सरकशी और अन्य बुराईयों में, कौम लूत- समलिंगी, कौम मदयन नाप-तौल में कमी में पड़कर नष्ट हो गये। इन सभी लोगों ने अपने-अपने नबियों की बातों को अनदेखा किया और अपनी दुष्टता और गन्दगी में पड़े रहे। ये लोग अपने नबियों का मज़ाक उड़ाते और उनको तकलीफ देते। अन्त में ये लोग अज़ाब के शिकार हुए और नष्ट हो गये। इन कौमो के वर्णन के बाद फिरऔन और उसकी कौम का वर्णन किया गया है। जिसको मूसा अलै० ने समझाया कि वो अल्लाह की नाफरमानी और सरकशी से रूक जाये। वो बनी इस्राईल पर जुल्म करना छोड़ दे और उनको अपने देश से जाने दो। किन्तु फिरऔन नहीं माना वो बनी इस्राईल पर जुल्म करता रहा और अपने खुदा होने का दावा करता रहा। हज़रत मूसा ने भिन्न प्रकार से उसे समझाने के प्रयत्न किये पर वो नहीं माना। इसके कारण उस पर समुद्र में डूबने का अज़ाब आया। इस प्रकार मानव इतिहास में जब-जब व्यवहारिक और धार्मिक स्तर पर पथभ्रष्टता और बिगाड़ बढ़ा। नबियों के बहुत समझाने के बाद भी लोग नहीं माने तो उन सब कौमो पर अल्लाह का गुस्सा आया और वो अल्लाह की पकड़ से खुद को बचा न सके।

और हमने (कौम) आद की ओर उनके भाई हूद को (भेजा), उन्होंने कहा! ऐ मेरी कौम अल्लाह की उपासना करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई उपासक नहीं, तुम तो केवल झूठ गढ़ते हो, ऐ मेरी कौम! मैं इस पर तुम से बदले में कोई मज़दूरी नहीं माँगता, मेरा पुण्य (मज़दूरी) तो बस उसी पर निर्भर है, जिसने मुझे पैदा किया है, फिर क्या तुम अक्स से काम नहीं लेते? और ऐ मेरी कौम के लोगों अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगों, फिर उसी से तौबा करो, वह तुम पर खूब बारिश बरसाएगा और तुम्हारी क्षमता में वृद्धि करेगा, और मुज़रिम बनकर मुहँ न फेरो। वे बोले, ऐ हूद! तुम हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आए, और हम सिर्फ तुम्हारे कहने से अपने देवताओं को नहीं छोड़ सकते, और न हम तुम पर किसी तरह ईमान लाने वाले हैं, हम तो यही समझते हैं कि हमारे किसी देवता ने तुम को मुसीबत में डाल रखा है, उन्होंने कहा, मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं, जिनको तुमने साझीदार ठहरा रखा है। अल्लाह के सिवा, तुम सब मेरे साथ दौंव घात लगाकर देखो और मुझे मोहलत भी न दो, मैं तो अल्लाह ही पर भरोसा रखता हूँ 'वही' मेरा रब है, और तुम्हारा भी, जितने भी जानदार हैं सबकी पेशानी (मस्तिष्क) तो 'उसी' के हाथ में है, बेशक मेरा रब सीधी राह पर है, तो अगर तुम इन्कार करते हो तो करो, मैं तो तुम्हें (खुदा का) सन्देश दे चुका जिसको लेकर मैं भेजा गया था, और मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरी किसी कौम

को लाएगा, और तुम 'उसका' कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और वास्तव में मेरा रब हर चीज़ पर निगराँ (संरक्षक) है। और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, तो हमने अपनी दया से हूद को, और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए थे अपनी कृपा से बचा लिया, और 'हमने' उन्हें भारी अज़ाब से बचा लिया, और ये थी क़ौम आद जिन्होंने अपने रब की आयतों (निशानियों) से इन्कार किया, और रसूलों की नाफरमानी की, और सरकश (शैतान) विरोधी के पीछे चलते रहे, तो इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगी रही और कयामत के दिन भी (अपमानित होंगे), सुन लो की आद (क़ौम) ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, (और) सुन लो कि हूद की क़ौम आद पर फिटकार हो। और समूद की ओर उनके भाई सालेह को (भेजा) तो उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम तुम अल्लाह ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं, उसी ने तुम्हें ज़मीन में पैदा किया और उसी में आबाद कर दिया, तो तुम उसी से गुनाह माफ कराओ और उसी से तौबा करो, बेशक मेरा रब पास है और दुआओं को कुबूल करने वाला है। उन्होंने कहा, ऐ सालेह! इससे पहले हम तुम से उम्मीदें रखते थे, क्या तुम हमें उनकी उपासना से रोकते हो जिनकी उपासना हमारे बाप-दादा करते रहें हैं? जिसकी ओर तुम हमें बुला रहें हो इसमें हमें बड़ा सन्देह है? (सालेह) ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमने सोचा, अगर मैं अपने रब की ओर से प्रमाण पर हूँ, और उसने मुझे अपनी रहमत से नवाज़ा हो, तो कौन है, जो अल्लाह की पकड़ से मुझे बचायेगा, अगर मैं उसकी नाफरमानी करूँ, तो तुम इसके सिवा और क्या कर सकते हो कि मेरी तबाही में ज़्यादती कर दो? और ऐ क़ौम! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए (चरती रहे), और इसे तकलीफ न देना वरना जल्द ही तुम्हें अज़ाब आ पकड़ेगा। फिर उन्होंने उसकी कूँचे काट डालीं (अर्थात् मार डाला), तब (सालेह) ने कहा, तुम अपने घरों में तीन दिन और रह लो यह ऐसा वादा है जो झूठ न होगा। फिर जब हमारा हुक्म (अज़ाब का) आ पहुँचा, तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उनके साथ जो ईमान लाये थे उनको, अपनी मेहरबानी से (उस अज़ाब से भी) बचा लिया, और उस दिन की रूसवाई से भी (बचाए रखा) बेशक तुम्हारा 'रब' ज़बर्दस्त, ताकत वाला है। और जो ज़ालिम थे उन्हें एक भयंकर चीख ने आ पकड़ा, तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। मानों ये कभी वहाँ बसे ही न थे, सुन लो! कि समूद ने अपने रब से कुफ़्र किया, खूब सुन लो! कि समूद (रहमत से) दूर हो गये और हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) इब्राहीम के पास खुशखबरी लेकर आए उन्होंने कहा सलाम हो, उन्होंने भी कहा सलाम हो, फिर उन्होंने कुछ देर न की, कि एक भूना हुआ बछड़ा ले

आए। तो जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ रहे, तो उन्हें अजनबी समझा और दिल में उनसे डरे, वे बोले, “डरो नहीं हम तो लूत की कौम की ओर भेजे गये हैं” और उनकी पत्नी भी खड़ी थी, वह उस पर हँस पड़ी, फिर हमनें उनको बशारत दी इस्हाक और इस्हाक के बाद याकूब की। वह बोली, अरे! मेरी सन्तान होगी? जबकि मैं तो बूढ़ी हो चुकी हूँ और ये मेरे पति भी बूढ़े हो चुके हैं, यह तो बड़ी अजीब बात है। उन्होंने कहा, क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअज़्जुब करती हो? अल्लाह की रहमत और बरकतें हों तुम पर, ऐ अह्ले बैत! बेशक ‘वही’ तअरीफ़ के लायक और बड़ी शान वाला है। तो जब इब्राहीम की घबराहट दूर हो गई और उन्हें खुशखबरी भी मिल गयी तो लूत की कौम के बारे में हमसे कहने लगे, बेशक इब्राहीम बड़े सहनशील, नर्म दिल और हमारी ओर आकर्षित होने वाले थे। “ऐ इब्राहीम! इस ख्याल को छोड़ दो, तुम्हारे ‘रब’ का हुक्म आ चुका है, और इन लोगों पर ऐसा अज़ाब आने वाला है जो किसी तरह टल नहीं सकता, और जब हमारे भेजे हुए दूत लूत के पास पहुँचे, तो वह (उनके) आने से घबराए और उनकी वजह से बहुत तंग दिल हुए और बोले, “आज तो बड़ी मुसीबत का दिन है”, और उनकी कौम के लोग दौड़ते हुए उनके पास आए, और पहले ही से कुकर्म किया करते थे, उन्होंने कहा! यह मेरी बेटियाँ हैं, यह तुम्हारे लिए पवित्र हैं, तो अल्लाह से डरो, मेरे मेहमानों के मामले में मुझे रूसवा न करो, क्या तुम में कोई भी भला आदमी नहीं? उन लोगों ने कहा, “तुम्हें तो मालूम है कि तेरी बेटियों की हमें कोई ज़रूरत नहीं, और तुम वह भी खूब जानते हो जो कुछ हम इरादा रखते हैं”। उन्होंने कहा, “क्या ही अच्छा होता कि मुझमें तुमसे मुकाबले की शक्ति होती, या कोई मज़बूत सहारा होता, जिसकी मैं पनाह लेता”। उन्होंने कहा, “ऐ लूत हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं, ये लोग तुम तक हरगिज़ नहीं पहुँच सकते, अतः तुम रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर निकल जाओ, और तुममें से पीछे कोई पलट कर न देखे, मगर तुम्हारी पत्नी, कि उस पर भी वही आफत आएगी जो उन पर आएगी, उन के अज़ाब का वक्त सुबह के लिए निश्चित है, तो क्या सुबह करीब नहीं?” फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उसको (पलट कर) नीचे ऊपर कर दिया, और हमने कंकरीले पथर ताबड़ तौड़ बरसाए, जिन पर तुम्हारे रब के यहाँ से निशान किये हुए थे और यह ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं और मदयन की ओर उनके भाई शूऐब को (भेजा) तो उन्होंने कहा! ऐ मेरी कौम अल्लाह की उपासना करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं, और नाप तोल में कमी न करो, मैं तो तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूँ, मगर मुझे तुम्हारे बारों में एक ऐसे दिन के अज़ाब का डर है, जो तुमको घेरकर रहेगा, ऐ मेरी कौम इन्साफ़ के साथ नाप

और तौल को पूरा किया करो, और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और ज़मीन में फसाद और खराबी न फैलाओ, अगर तुमको यकीन हो तो अल्लाह का दिया हुआ नफा तुम्हारे लिए है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर रखवाला नहीं हूँ। उन्होंने कहा, "ऐ शुरेब क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं, या हमें इस बात का अधिकार नहीं कि अपने माल जिस तरह चाहे इस्तेमाल करें? वास्तव में तुम ही बड़े बुद्धिमान और बड़े धार्मिक हो"। (शुरेब ने) कहा, ऐ मेरी कौम! तुमने यह भी सोचा कि अगर मैं अपने रब की ओर से रोशन दलील (आदेश) पर जमा हुआ हूँ और उसने अपनी ओर से मुझे अच्छी रोज़ी भी प्रदान की हो, और मैं ये नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ, खुद उस को कलूँ, मैं तो अपने बस भर केवल सुधार चाहता हूँ, और जो मुझे सामर्थ्य है अल्लाह ही का है 'उसी' पर मेरा भरोसा है, और उसी की ओर मुझे लौटना है, तो मैं उसी से माँगता हूँ, और ऐ मेरी कौम! मेरे खिलाफ तुम्हारा विरोध तुम्हें उस अज़ाब का भोगी न बना दे कि तुम पर भी वही कुछ बीते जो 'नूह' की कौम, या 'हूद' की कौम या 'सालेह' की कौम पर बीत चुका है, और लूत की कौम तो तुमसे कुछ दूर नहीं, और अपने रब से अपने गुनाह माफ कराओ फिर उसी से माँगो, बेशक मेरा रब बड़ी रहमत वाला, मुहब्बत वाला है। उन्होंने कहा, ऐ शुरेब तुम्हारी बहुत सी बातें तो हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तो तुम को अपने बीच कमज़ोर ही देखते हैं, और अगर तुम्हारी बिरादरी के आदमी न होते, तो हम तुमको संगसार (पत्थर मार-मार कर खत्म) कर देते और तुम हम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो। उन्होंने कहा, ऐ मेरी कौम क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से भी ज़्यादा है, कि अल्लाह को तुमने पीछे डाल दिया, तुम जो कुछ भी कर रहें हो मेरा रब सब जानता है, और ऐ मेरी कौम! तुम अपना कार्य करो, मैं भी अपना कार्य कर रहा हूँ, जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा कि किस पर वो अज़ाब आएगा, जो उसे ज़लील करके रहेगा और कौन है जो झूठा है? और तुम भी इन्तेज़ार करो, तुम्हारे साथ मैं भी इन्तेज़ार करता हूँ। और जब हमारा हुक्म (अज़ाब का) आया, तो हमने शुरेब को और उन लोगों को जो उन पर ईमान लाए थे, अपनी रहमत से बचा लिया, और ज़ालिम को सख्त चिंघाड़ ने आ पकड़ा, तो सुबह को औंधे पड़े रह गये, मानो वह वहाँ कभी बसे ही न थे, सुन लो! मदयन वालों को (रहमत से) दूरी हुई, जैसे दूरी समूद को हो चुकी थी। और हमने मूसा को अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ भेजा, फिरऔन और उसके सरदारों की ओर, तो वह लोग फिरऔन ही के हुक्म पर चलते रहे और फिरऔन का हुक्म ठीक न था, वह

कयामत के दिन अपनी कौम के आगे-आगे होगा और उनको आग में जा उतारेगा, और बहुत ही बुरा घाट है वह उतरने का, और यहाँ (दुनिया में) भी लानत उनके पीछे लगी रही, और कयामत के दिन भी, बुरा बदला है जो उनको मिलेगा। यह उन बस्तियों की कुछ खबरें हैं जो हम आप से बयान करते हैं उनमें से कुछ कायम हैं और कुछ उजड़ गयीं। और 'हमने' उन लोगों पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने खुद अपने आप पर जुल्म किया, और उन्हें उनके देवताओं ने कोई लाभ नहीं दिया जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे, जब तुम्हारे रब का आदेश आ पहुँचा, बल्कि उन देवताओं ने उनके विनाश के अलावा उनके लिए किसी और चीज़ में ज्यादाती नहीं की। (हृद 50-101)

और सूरह यूनुस में संक्षेप में इसका वर्णन है

(ऐ नबी) आप उन्हें नूह का किस्सा पढ़कर सुनाइयें जब उन्होंने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगों अगर तुम पर मेरा रहना और मेरे उपदेश जो अल्लाह के आदेशों से सम्बन्धित हैं बहुत ही कठिन लग रहें हैं। तो मैं अल्लाह पर पूर्ण विश्वास करता हूँ तुम भी अपने साझियों (देवताओं) के साथ मिलकर योजना बना लो, फिर वो योजना किसी पर छिपी न रहे, फिर उसको मेरे ऊपर कर गुज़रों और मुझे समय न दो और अगर तुम इन्कार ही किये जाओगे तो सुन लो मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस अल्लाह ही पर है और मुझे आदेश मिला है कि मैं आज्ञाकारी बनूँ। यहाँ तक कि वो लोग नूह को झुटलाते रहे, फिर हमने नूह को और जो लोग उनके साथ नाव में थे बचा लिया और हमने उन्हें आबाद किया और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुटलाया हमने उन्हें डुबो दिया। सो देखो जिनको डराया गया उनका अन्जाम क्या हुआ, फिर हमने नूह के बाद और नबियों को उनकी कौम की ओर भेजा वो उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए, मगर ये न हुआ कि जिस चीज़ को उन्होंने पहले झुटला दिया था, उस पर ईमान ले आते, हम इसी प्रकार बन्द लगा देते हैं, हृद से निकल जाने वाले के दिलों पर। फिर हमने इन नबियों के बाद मूसा और हारून को फिरओन और उसके सरदारों के पास भेजा, उन्होंने धमण्ड किया और वो लोग थे ही जुर्म करने वाले। (यूनुस 71-75)

पवित्र कुर्आन में उन कौमों और नबियों के प्रयासों को बताने के विषय में ये बात खोल दी गयी कि नबियों के बहुत समझाने के बाद भी जब वो लोग अपने रब का इन्कार करते रहे और अल्लाह के आदेशों का अपमान करने रहें, तो अल्लाह का अज़ाब आ गया और उन्हें बुरे कर्मों की सज़ा हुई। पवित्र कुर्आन में बताया गया है-

और जो लोग ज़ालिम हैं उनकी ओर आकर्षित न होना, नहीं तो तुम्हें नरक की आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई दोस्त नहीं होगा। (अगर तुम ज़ालिमों की ओर आकर्षित हो गये) तो फिर तुमको सहायता न मिलेगी। (हूद 113)

ह० इब्राहीम अलै०

नबियों में उनके सरताज इब्राहीम अलै० का जिक्र पवित्र कुर्आन में कई जगह आया है। ह० इब्राहीम अलै० ने अल्लाह के आदेशों का इस प्रकार पालन किया कि वो अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दों में विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने बचपन में ही अपनी बुद्धि से अपने रब को पहचाना और दूसरे लोगों को भी बताया। लोगों को अल्लाह की ओर बुलाने के लिए उन्होंने बहुत त्याग दिये जो अल्लाह की आज्ञापालन के श्रेष्ठ उदाहरण बन गये। एक मात्र अल्लाह को अपने ईश्वर कहने पर उनको आग में डाला गया। ह० इब्राहीम ने आग में जाना स्वीकार किया पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को अपना ईश्वर मानने से इन्कार कर दिया। इसके बाद उनको देश से निकाला गया। ह० इब्राहीम ने सत्य के लिए अपने देश को भी छोड़ दिया। इसके बाद बहुत दिनों बाद पैदा हुये बच्चे को जो उन्हें बहुत प्रिय था, उसकी माँ के साथ अल्लाह के आदेश पर एक बियावान स्थान पर छोड़ने पर भी सहमत हो गये। इस प्रकार अपनी एक मात्र सन्तान और पत्नी का त्याग करने को भी तैयार हो गये। अल्लाह की इच्छा से ये बच्चा जीवित रहा और बड़ा हुआ। इसका नाम इस्माईल था जो अपने माता-पिता का प्रिय और आज्ञाकारी बना। इसके बाद अल्लाह ने ह० इब्राहीम अलै० की फिर परीक्षा ली। अल्लाह ने आदेश दिया के अपने इस प्रिय बेटे की कुर्बानी दो। तब इब्राहीम अलै० के इसको भी स्वीकार कर लिया। जब वो अपने बेटे की कुर्बानी देने लगे तब अल्लाह ने उनकी कुर्बानी को स्वीकार करने का संदेश दिया। ह० इस्माईल के स्थान पर एक मेढ़ा आ गया जिसकी कुर्बानी दी गयी। ये ऐसी कुर्बानी थी जिसको अल्लाह ने अन्य नबियों की कुर्बानियों की तुलना में अधिक पसन्द किया। इन कुर्बानियों को अन्य नबियों की कुर्बानियों में श्रेष्ठ स्थान मिला। इसी कारण अल्लाह ने ह० इब्राहीम को खलील (दोस्त) की उपाधी दी। जिसका जिक्र पवित्र कुर्आन में है- *“और इब्राहीम अलै० को अल्लाह ने अपना दोस्त बना लिया है”* अल्लाह ने अपनी इस पसन्द को इब्राहीम अलै० के वंश में भी रखा है। जिसकी दुआ इब्राहीम अलै० ने की थी। परन्तु ये भी कह दिया है कि अल्लाह इब्राहीम अलै० के वंश में केवल उनको ही पसन्द करेगा जो सत्य मार्ग पर चलेंगे और अपने को उसके योग्य बनायेंगे।

और (याद करो) जब इब्राहीम को उनके रब ने कुछ बातों में आजमाया, तो उन्होंने उन बातों को पूरा कर दिखाया, (तो अल्लाह ने) कहा, "मैं ज़रूर तुमको, लोगों का इमाम (पथ प्रदर्शक) बनाऊँगा।" उन्होंने कहा, मेरी नस्ल में भी, कहा, मेरा वादा ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (अल-बकर 124)

और जिस समय इब्राहीम ने कहा, "मेरे रब इस शहर को अमन वाला बना दीजिए, और मुझको और मेरी सन्तान को इससे बचा लीजिए कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ, मेरे रब उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया, तो जो कोई मेरे रास्ते पर चलेगा वह तो मेरा है ही, और जिसने मेरा कहना न माना तो 'तू' उसे बड़ा माफ करने वाला, रहम वाला है। ऐ मेरे रब मैंने अपनी औलाद को (एक ऐसी) घाटी में जहाँ खेती नहीं होती, तेरे सम्मानित घर (कअब:) के पास बसाया है, ऐ हमारे रब ताकि ये नमाज़ कायम करें, अतः लोगों के दिलों को झुका दीजिए, और उन्हें फल खाने को दीजिए, ताकि वे शुक्र करें। (इब्राहीम 35,37)

ह० इब्राहीम अलै० ने अपने अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए उसके दिये कठिन आदेशों को पूरा किया। जिसके कारण इब्राहीम अलै० अल्लाह के प्रिय नबी बन गये और उन्हें अल्लाह के दोस्त की उपाधि मिली। इब्राहीम अलै० के बेटे इस्माईल अलै० के वंश में अन्तिम नबी ह० मुहम्मद स० का जन्म हुआ। इसके अतिरिक्त इब्राहीम अलै० के दूसरे बेटे ह० इस्हाक अलै० को भी उच्च स्थान दिया गया। इस्हाक अलै० उनके बेटे याकूब अलै० और उनके बेटे यूसुफ अलै० नबी बनें। ह० याकूब अलै० के वंश में बराबर नबी पैदा होते रहे जो बनी इस्राईल कहलाये। ह० इस्माईल अलै० के वंश में अन्तिम नबी को भेजना था। जिनको उस दौर में सत्यमार्ग और भलाई का रास्ता दिखाना था जो समाजिक बुराई की घरम सीमा का दौर था। इसके बाद संसार का अन्त होने वाला था। इसलिए आप स० की नुबुव्वत कयामत तक है।

ह० मूसा अलै०

इब्राहीम अलै० के वंश में याकूब अलै० के बच्चे जो बनी इस्राईल थे। इनमें एक बड़े नबी ह० मूसा अलै० हुए जिनका वर्णन पवित्र कुर्आन में आता है। बनी इस्राईल का परिवार यूसुफ अलै० के राजा बनने के बाद मिश्र आ गया था। यहाँ ये लोग बहुत समय तक रहे। बाद में संख्या में कम होने के कारण ये लोग मिश्र के राजा फिरओन की क्रूरता और कष्टों का शिकार हुए। अल्लाह ने बनी इस्राईल को इन कष्टों से मुक्ति दिलाने के लिए ह० मूसा अलै० को नबी बनाया। उन्होंने अपने युग के हठधर्मी और निर्दयी राजा फिरओन को समझाया। उसको बहुदेववाद छोड़कर एकेश्वरवाद का निमन्त्रण दिया। उसकी क्रूरता और शक्ति का सामना किया। इसके बाद अपनी जाति जिसको फिरओन से बचाकर

लाये थे। इनमें सदिष्टा के रूप में कार्य किया। ह० मूसा अलै० ने विश्वास और आस्था को बार-बार ठीक करने का प्रयास किया और लोगों का मार्गदर्शन किया। ह० मूसा को ये विशेषता मिली कि उन्होंने अल्लाह से बात की और उनको 'कलीमुल्लाह' (अल्लाह से बात करने वाला) की उपाधि दी गयी। ह० मूसा पर 'तौरत' नामक ईशग्रन्थ अवतरित हुआ। इसमें इन्सानों के मार्ग दर्शन और भलाई की बातें थी।

मिस्र में फिरओन और उसके साथियों ने बहुत उत्पात मचाया था। बनी इस्राईल कमजोर और संख्या में कम थे। उनमें जब कोई लड़का पैदा होता तो उसे मार दिया जाता और यदि लड़की पैदा होती तो उसे जीवित छोड़ा दिया जाता। जिससे वो फिरओन की कौम के घरों में कामकाज करें। देश में कमजोर लोगों को बहुत यातनायें दी जाती थी। इसके अतिरिक्त फिरओन अपने को खुदा कहता था और अपनी पूजा करवाता था। वो स्पष्ट रूप से कहता था कि मेरे अतिरिक्त कोई और तुम्हारा खुदा नहीं है। मूसा अलै० ने उसको बहुत समझाया और बहुत समय बीतने के बाद जब वो नहीं माना और अत्याचार करता रहा, तब अल्लाह का अज़ाब आया और फिरओन अपने साथियों के साथ समुद्र में डूब गया। इस प्रकार बनी इस्राईल को फिरओन से मुक्ति मिली और उन पर अल्लाह की कृपा हुई। अल्लाह ने मूसा अलै० से उनकी कौम बनी इस्राईल के मार्गदर्शन का काम लिया। इनमें बहुत बरकत दी और उनकी शिक्षाओं को मानने वाले यहूद कहलाये। किन्तु बाद में बनी इस्राईल अपने नबी के बताये मार्ग से हटने लगे और शिर्क तक करने लगे। जब अपनी बुराईयों पर डटे रहे और धोखा देते रहे तब अल्लाह ने उनको मुसीबतों में डाला। वो अपनी ज़िद से बाज़ न आये और बुरे कर्म करते रहे। यहाँ तक कि उन्होंने अपने नबियों को सताया और किसी को मार भी डाला। अन्त में ह० ईसा को मारने का भी षड़यन्त्र रचा था जिसे अल्लाह ने नाकाम कर दिया।

जो लोग ईमान लाये और जो यहूदी और साबई और ईसाई हैं, उनमें से जो कोई भी अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान लाए, और अच्छे काम करते रहे, तो ऐसे लोगों को न (कयामत के दिन) कोई डर होगा और न वे गुमगीन होंगे। हमने बनी इस्राईल से अहद लिया और उनकी ओर रसूल भेजे, उनके पास जब भी कोई रसूल वह कुछ लेकर आता, जो उन्हें पसन्द न होता तो, कितनों को उन्होंने झुठला दिया और कितनों को तो कत्ल ही कर डाला, और उन्होंने समझा कि कोई आफत न आएगी, तो वे अन्ये और बहरे बन गये, फिर अल्लाह ने उस पर मेहरबानी की, फिर उनमें बहुत से लोग अन्ये और बहरे हो गये, और अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे करते हैं। (मायदा 69-71)

अहले किताब तुमसे माँग करते हैं, कि तुम उन पर एक किताब आसमान से उतार लाओ, तो यह मूसा से इससे भी बड़ी माँग कर चुके हैं। उन्होंने कहा था, “हमें अल्लाह को खुले तौर पर दिखा दो” तो उनके इस गुनाह के कारण बिजली की कड़क ने उन्हें आ दबोचा, फिर वो बछड़े को अपना उपास्य बना बैठे, जबकि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थी, फिर हमने उसे भी माफ कर दिया और मूसा को खुली हुआ गलबा (विजय) दी और उनसे वादा लेने के बाद तूर (पहाड़) को उन पर उठा दिया और उनसे कहा, “दरवाज़े से सज्द करते हुए दाखिल हो” और उनसे कहा, “हफ्ते (शनिवार के दिन) के बारे में ज्यादाती न करना, और हमने उनसे बहुत मज़बूत वादा लिया। फिर उनके वादा तोड़ देने और अल्लाह की आयतों का इन्कार करने और नबियों को नाहक कत्ल करने, और उनके यह कहने के कारण कि “हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हैं” बल्कि उनके कुफ्र (इन्कार) की वजह से अल्लाह ने उन पर मुहर लगा दी, तो यह बहुत ही कम ईमान लाते हैं। और उनके इन्कार के कारण और मरियम के खिलाफ एक बड़ा आरोप लगाने के कारण और उनके यह कहने के कि “हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, (जो) अल्लाह के रसूल (हैं), को कत्ल कर डाला, जबकि न तो उन्होंने कत्ल किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया, बल्कि उन पर सन्देह डाल दिया गया, और जो लोग उनका विरोध करते थे उनके बारे में शक में पड़े हैं, और अटकलों पर चलने के सिवा उनके पास कोई ज्ञान न था, और निश्चय ही उन्होंने उन (ईसा) को कत्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उनको अपनी ओर उठा लिया, और अल्लाह प्रभुत्वशाली हिकमत वाला है। और अहले किताब में से कोई ऐसा न होगा, मगर उनकी मौत से पहले उन पर ईमान न लाया हो, और वो कयामत के दिन उन पर गवाह होगा। तो हमने यहूदियों के जुल्म के कारण बहुत सी अच्छी पाक चीज़ों को उन पर हARAM कर दिया, जो उनके लिए हलाल थी और इस कारण भी कि वह अल्लाह के रास्ते से रोकते थे। और इस कारण भी कि मना करने के बाद भी सूद लेते थे, और इस कारण की लोगों के माल नाहक खाते थे, और उनमें से जो काफिर हैं, उनके लिए हमने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

(निसा 153-161)

मरियम के पुत्र ईसा अलै०

ह० मूसा के बाद जब बनी इस्राईल में बिगाड़ पैदा हुआ तो अल्लाह ने ह० ईसा अलै० को नबी बनाकर मार्गदर्शन के लिए भेजा। उनको ये विशेषता दी कि वो बचपन में ही बोलते थे और उनको सच बात कहने की क्षमता दी। अल्लाह ने फरिश्ते के द्वारा ईसा अलै० की माँ को सूचना दी की उनको बेटा

पैदा होगा। ह० मरयम को आश्चर्य हुआ कि बिना विवाह के सन्तान कैसे होगी। अल्लाह ने उनके इस आश्चर्य को दूर किया। पवित्र कुआन में ईसा अलै० के किस्से को विस्तार से बताया गया है। जिसमें उनकी विशेषतायें, स्थान, शिक्षाएँ, आचरण, चमत्कारों और अल्लाह के आदेशों का वर्णन किया गया है।

(याद करो) जब फरिश्तों ने कहा, “ऐ मरयम अल्लाह आप को खुश खबरी दे रहा है, अपनी ओर से एक कलमे (जान) की जिसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा, दुनिया और आखिरत में इज्जत वालों और मुक़र्रब लोगों में से होगा।” और वह लोगों से पालने में भी बात करेंगे, और बड़ी उम्र को पहुँकर भी, और वह नेक लोगों में से होंगे। वह बोली ऐ मेरे रब मुझे लड़का किस तरह होगा जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं, कहा, “ऐसा ही होगा अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है, जब वह किसी बात को पूरा करना चाहता है, तो बस उससे कहता है, हो जा, तो वह हो जाता है, और (अल्लाह) उसे किताब और हिकमत, और तौरत और इंजील सिखा देगा, और उसे (बनी इस्राईल की सन्तान) की ओर रसूल बना कर भेजेगा (वह कहेगा), “मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ, मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दे की शक्त बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा बन जाता है, और मैं अल्लाह के हुक्म से अन्ये और अबरस (सफेद दाग वाले) को अच्छा कर देता हूँ, और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को ज़िन्दा कर देता हूँ, और तुम जो कुछ खाते हो, और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो, वह तुम्हें बतला देता हूँ, बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो। और मैं पुष्टि करने वाला हूँ अपने से पहले आने वाली तौरत की, और इसलिए भी कि तुम्हारे लिए कुछ उन चीज़ों की हलाल कर दूँ, जो तुम्हारे लिए हराम थी, और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ, तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो, बेशक अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, तो उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है। फिर जब ईसा को उनकी ओर से इन्कार का एहसास हुआ तो उन्होंने कहा, “कौन अल्लाह की ओर (बढ़ने में) मेरा मददगार होगा” हवारी बोले, हम हैं अल्लाह के मददगार और हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाह रहिए कि हम मुसलमान (आज्ञाकारी) हैं। (ऐ) हमारे रब! हम ईमान ले आए उस पर जो कुछ ‘तू’ ने अवतरित किया है, और हमने पैरवी कर ली रसूल की, तो हमें भी गवाहों के साथ लिख ले। और उन्होंने गुप्त योजना की, तो अल्लाह ने भी गुप्त योजना की, और अल्लाह सब गुप्त योजना बनाने वालों से बेहतर योजना बनाने वाला है। (वह समय याद करो) जब अल्लाह ने कहा, “ऐ ईसा! मैं तुमको मौत देने वाला

हूँ, और तुमको अपनी ओर उठाने वाला हूँ, और उन लोगों से जो काफिर हैं, तुम्हें पाक करने वाला हूँ, और जो तुम्हारे अनुयायी हैं उन्हें कयामत के दिन तक उन लोगों पर प्रभावी रखूँगा जिन्होंने इन्कार किया, फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है, फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फैसला कर दूँगा जिनके विषय में तुम मतभेद करते रहते थे। तो जिन लोगों ने इन्कार किया, उन्हें दुनिया और आखिरत में सख्त अज़ाब दूँगा और उनका कोई मददगार न होगा। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये, तो अल्लाह उन्हें पूरा-पूरा बदला देगा, और अल्लाह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। (ऐ मुहम्मद) ये आयतें, हम आपको हिकमत भरी नसीहतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं। ईसा का हाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसा है, कि उसने उनको मिट्टी से बनाया, फिर उनसे कहा बन जाओ तो वो बन गये।

(आले इमरान 50-59)

जब ह० मरयम के कसम खाने के बाद भी जब लोग उन पर आरोप लगाते रहे। तब उन्होंने इशारा किया बच्चे से ही सच बात पूछ लो। ह० ईसा का माँ की गोद में सच बात बोलने का किस्सा पवित्र कुर्आन में इस प्रकार आया है—
तो (मरयम ने) उस बच्चे की ओर इशारा किया, लोगों ने कहा, हम इस बच्चे से क्या बात करें जो अभी पालने में है। (बच्चे ने कहा) मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उसने मुझे किताब दी और नबी बनाया है, और मुझे बरकत वाला बनाया, जहाँ भी मैं रहूँ, और उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया, जब तक कि मैं ज़िन्दा रहूँ, और अपनी माँ का हक अदा करने वाला बनाया और उसने मुझे सरकश और बदबख्त नहीं बनाया, और सलाम है मुझ पर, कि जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा, यह मरयम का बेटा ईसा है, सच्ची बात है जिसमें लोग सन्देह करते हैं। अल्लाह की ये शान नहीं कि वो किसी को औलाद बनाए, वो बिल्कुल पाक है, जब वो कोई काम करना चाहता है तो उसको कह देता है, कि हो जा, तो वो हो जाता है। और वास्तव में अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। सिर्फ उसी की उपासना करो यही सीधा रास्ता है। (मरयम 29-36)

ईसा अलै० के निर्देशों और उपदेशों को उनकी कौम ने उस प्रकार नहीं माना जैसा उनको मानना चाहिए था। किन्तु दूसरी कौमों ने उनके नबी होने को स्वीकार किया और ये लोग ईसाई कहलाये। ईसा अलै० का देश नासराह होने के कारण ये लोग नस्तानी कहे जाने लगे। ईसा अलै० के कुछ अनुयायियों ने हद पार कर दी और वो लोग सत्य मार्ग से भटक गये। इन्होंने ईसा अलै० को अल्लाह का बन्दा और नबी से बढ़कर समझना आरम्भ कर दिया। ये लोग ईसा० को

अल्लाह का बेटा कहने लगे। ये इतनी कठोर बात थी कि इस पर अल्लाह का अज़ाब आ गया।

और कहते हैं, रहमान ने किसी को अपना बेटा बना रखा है। बड़ी भारी बात है जो तुम (ज़बान पर) लाते हो। करीब है कि इस (झूठ) से आसमान टूट पड़े और ज़मीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़े, (इस बात पर) कि इन्होंने रहमान के लिए बेटा होने का दावा किया, और रहमान की यह शान नहीं कि किसी को अपना बेटा बनाए। आसमानों और ज़मीनों में जो भी है, एक बन्दे के रूप में रहमान के पास हाज़िर होंगे। (मरयम 88-93)

एक दूसरे स्थान पर अल्लाह ने गुमराह लोगों का हाल इस प्रकार बताया है।

और जब अल्लाह कहेगा, ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह के अलावा दो और माबूद (उपास्य) मुझे और मेरी माँ को बना लो? वह कहेंगे तू पाक है, मुझसे यह नहीं हो सकता की मैं वह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई हक नहीं, अगर मैंने ऐसा कहा होता तो तुझे मालूम ही होता, तू जानता है, जो कुछ मेरे मन में है और मैं नहीं जानता जो कुछ तेरे मन में है, बेशक तू छिपी बातों का खूब जानने वाला है। (मायदा 112)

ईसा अलै० लोगों को सत्य मार्ग की ओर बुलाते रहे और अल्लाह को मानने का निमन्त्रण देते रहे। कुछ लोगों ने माना और कुछ ने नहीं। अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में कहा है—

ऐ ईमान वाले अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने हवारीयों (साथियों) से कहा था, कौन है जो अल्लाह की राह में मेरे मददगार हो? हवारीयों ने जवाब दिया, हम हैं, अल्लाह के मददगार, तो बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने (अल्लाह के आदेशों का) इन्कार किया, तो हमने ईमान लाने वालों की, उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, और वे ग़ालिब (प्रभावी) हो गये। (सफ 14)

बनी इस्राईल ने जब हक अदा नहीं किया तब ईशदूत का सम्मान ह० इब्रहीम अलै० के दूसरे परिवार को दे दिया गया। इसमें अन्तिम नबी ह० मुहम्मद स० का जन्म हुआ। अन्तिम नबी होने के कारण इनको सबसे ऊँचा स्थान और इनके द्वारा लाये संविधान को सारे संविधानों का निचोड़ बनाया गया। इसके बाद सृष्टि में किसी अन्य को नबी बनाने से मना कर दिया गया। इस प्रकार ह० मुहम्मद स० को अल्लाह के आदेश सम्पूर्ण रूप से बता दिये गये और आप संसार के अन्त तक नबी हुये। ह० मुहम्मद स० की बताई बातों पर चलना अनिवार्य कर दिया गया। आप को अल्लाह की और से अन्तिम किताब पवित्र कुर्आन दी गयी। इसमें सारे इन्सानों की सफलता का मार्ग बताया गया।

ह० ईसा अलै० के 600 साल बाद ह० मुहम्मद स० का जन्म हुआ। ईसा अलै० ने भी ह० मुहम्मद स० के अन्तिम नबी होने की सूचना दी थी। इसको पवित्र कुर्आन में इस प्रकार बताया गया है-

और वो समय याद करने योग्य है जब ईसा पुत्र मरयम ने कहा ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ मुझसे पहले जो (किताब) तौरत आ चुकी है मैं उसको प्रमाणित करता हूँ और मेरे बाद जो एक रसूल आने वाले हैं जिनका नाम अहमद होगा मैं उनकी खुश खबरी देने वाला हूँ। (सफ 6)

किन्तु जब अन्तिम नबी अपने प्रभाव और विशेषताओं के साथ आये और अपने से पहले आये नबियों की उन बातों को शुद्ध किया जिन पर लोग चल रहे थे और सत्य धर्म का उपदेश दिया तो उनको कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। अल्लाह कहता है-

‘फिर जब वो उन लोगों के पास खुली निशानियाँ लाए, तो वो लोग कहने लगे ये सिर्फ जादू है’ (सफ 6)

लेकिन इसके बाद लोग झुड़ों में आने लगे और अन्तिम नबी को मानने लगे। इस प्रकार ह० मुहम्मद स० की उम्मत सबसे बड़ी उम्मत बन गयी। अल्लाह की ओर से भेजे इस धर्म को इस्लाम नाम दिया गया। जिसका ऐलान नबियों के पिता ह० इब्रहीम अलै० ने किया था।

और अल्लाह की राह में कोशिश करते रहो जैसा कि कोशिश करने का हक है, उसने तुम्हें चुन लिया और तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी नहीं रखी, (और) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन तुम्हारे लिए पसन्द किया है, उसने तुम्हारा नाम पहले की किताबों में भी मुस्लिम रखा था, और इसमें भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हों, और तुम लोगों पर गवाह हों, तो नमाज़ कायम करो, और ज़कात दो, और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ो रहो, वही तुम्हारा मौला (संरक्षक) है, तो वह क्या ही अच्छा मौला है, और क्या ही अच्छा मददगार। (हज 78)

और कहता है-

जो कोई इस्लाम के अलावा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वह उससे हरगिज़ कुबूल न किया जाएगा और वो इन्सान आखिरत में तबाहकारों में से होगा। (आले इमरान 85)

सय्यदना ह० मुहम्मद स०

अल्लाह पाक ने सृष्टि में इज्जत पाने वाले और नबियों में अन्तिम नबी हजरत मुहम्मद स० को इन्सानों को अन्तिम संदेश देने भेजा। ह० मुहम्मद स० ने इन्सानों को सत्यमार्ग और अल्लाह के आदेशों पर चलने का मार्ग बताया। जो संसार के नष्ट होने तक रहेगा। ह० मुहम्मद स० के आने से पहले जो नबी और रसूलों के आने का क्रम चल रहा था वो ह० ईसा अलै० पर आकर रुक गया था। क्योंकि उनकी कौम ने अपने नबी के साथ ऐसा अनुचित व्यवहार किया कि उसकी बेबरकती से नबियों के आने का सिलसिला रुक गया और ६०० साल तक रुका रहा। नबियों के पास अल्लाह की ओर से संदेश आते थे और वो उनको लोगों तक पहुँचा देते थे। इस पवित्र क्रम की अपेक्षा करने से इन्सानों को कुछ समय के लिए इससे वंचित कर दिया गया। इसके बाद अल्लाह की कृपा हुई और ह० मुहम्मद स० को अन्तिम नबी बनाकर भलाई और मार्गदर्शन की सम्पूर्ण विशेषता देकर भेजा। अल्लाह ने ह० मुहम्मद स० पर नबियों के आने के क्रम को समाप्त कर दिया और आप को अन्तिम नबी घोषित कर दिया। ह० मुहम्मद स० के आने से पहले नबियों को संदेश दिये जाते थे। उनमें परिस्थितियों और समय में अन्तर को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार धार्मिक कर्मों को दृढ़ता और सम्पूर्णता प्रदान की गयी। ये ऐसी विशेषता है जो किसी और नबी को नहीं दी गयी। कहा गया-

आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म सम्पूर्ण कर दिया और तुमको मैंने अपनी नेमतें पूरी-पूरी दे दी, और तुमको अपनी स्वीकृति और पसन्द इस्लाम धर्म में दी। (मायदा 3)

दूसरी विशेषता ये दी गयी कि ह० मुहम्मद स० को ईशवाणी के द्वारा जिस सदाचार और व्यवहार पर चलाया गया। उसको सारे इन्सानों के लिए उच्च आचरण और अनुसरण योग्य मार्ग का उदाहरण बनाया गया। इस पर चलना कयामत तक आने वाले इन्सानों के लिए आवश्यक है। इस आचरण को अपनाने में ही सफलता है। सब लोग अपने जीवन को इसी के समान बनाये।

क्योंकि ह० मुहम्मद स० के जीवन को समस्त इन्सानों के लिए एक आदर्श बनाना था इसलिए अल्लाह ने बचपन से लेकर मृत्यु तक ऐसे हालात से गुज़ारा कि आप का जीवन इन्सानों के लिए उदाहरण बन जाए। ह० मुहम्मद स० उच्च कोटि के इन्सान, सदाचारी, अनुसरण योग्य और सच्चे मुसलमान बने। जिससे मानव जीवन के हर विभाग में आपके कर्मों से लाभ हो सके। नुबुव्वत मिलने के बाद तो अल्लाह की ओर से ईशवाणी के द्वारा ह० मुहम्मद स० को ईशज्ञान व शिक्षा दी जाती रही। ह० मुहम्मद स० की कौम अनपढ़ थी। इसलिए ह० मुहम्मद स० ने संसारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। इसलिए ह० मुहम्मद स० के स्वभाव और विचारों पर किसी के सिखाने या पढ़ाने का प्रभाव नहीं था। इस पवित्र स्वभाव पर ईशवाणी के द्वारा प्रभाव डाला गया। पवित्र कुर्आन और ह० मुहम्मद स० की कही बातों से इसका पता चलता है कि किस प्रकार ईशवाणी के द्वारा ह० मुहम्मद स० को रास्ता दिखाया गया और प्रशिक्षण दिया गया। उदाहरण के लिए एक बार ह० मुहम्मद स० एक बड़े सरदार को समझा रहे थे और सत्य धर्म को स्वीकार करने का निमन्त्रण दे रहे थे। इस बीच एक अन्धे मुसलमान इस सभा में आये। ह० मुहम्मद स० ने सोचा कि ये सरदार इस समय बात सुन रहा है इसलिए उस अन्धे आदमी की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। ये बात अल्लाह को पसन्द न आई। एक ओर अल्लाह को मानने वाला और दूसरी ओर उससे बेपरवाह और गुमराह। ऐसे आदमी को नेक आदमी से अधिक महत्व देना उचित नहीं। ये आयत अवतरित हुई-

पैगम्बर (स०) त्वोरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया, (इस बात पर) कि उनके पास एक अन्धा आया। और आप को क्या मालूम शायद वह आपकी शिक्षा से पूरी तरह सुधर जाता? या नसीहत पर ध्यान देता और नसीहत करना उसके लिए लाभदायक होता। जो आदमी लापरवाही करता है, उसकी ओर तो आप ध्यान देते हैं, और वह न सुधरे तो उसकी आप पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं, और जो (आदमी) आप के पास दौड़ता हुआ आया, और वो (अल्लाह से) डर रहा होता है, तो आप उससे गफलत बरतते हैं, हरगिज़ ऐसा न कीजिए, बेशक यह (कुर्आन) तो एक नसीहत नामा है। (अबस 1-11)

इसी प्रकार बदर के युद्ध के बाद बन्दियों के बारे में आप को ध्यान दिलाया गया और ह० मुहम्मद स० ने अपनी ओर से जो सोचा था उसको अनुचित कहा गया। इसी प्रकार और कई ऐसी घटनाएँ हुई जब ह० मुहम्मद स० को अपनी राय को बदलने का आदेश दिया गया। इस प्रकार ह० मुहम्मद स० को आरम्भ ही से अल्लाह की ओर से मार्गदर्शन मिलता रहा और आपको आदर्श बनाया गया। इसी प्रकार ह० मुहम्मद स० का प्रशिक्षण और शिक्षा अल्लाह की

और से होने का उदाहरण सूरह- 'वज्रुहा' में पता चलता है। एक बार ह० मुहम्मद स० को लगने लगा कि अल्लाह की ओर से कम ध्यान दिया जा रहा है। तब ये आयत अवतरित हुई-

अल्लाह ने पहली आयत में सुबह और रात की कसम ले कर ह० मुहम्मद स० से कहा है

तुम को तुम्हारे रब ने छोड़ा नहीं है और न तुमको न पसन्द किया, और आखिरत आप के लिए दुनिया से बेहतर है, और जल्द ही अल्लाह आप को इतना देगा कि आप खुश हो जाएँगे, तुम क्या यतीम नहीं थे? उसने तुम्हारी जीवन के लिए ठिकाना दिया (इसमें ये इशारा है की पिता के न होने और माता के जल्द मर जाने के बाद, अल्लाह ने दादा और चाचा में विशेष प्रेम कि भावना पैदा कर दी, इसलिए उन्होंने आप का अपनी सगे बच्चों से भी अधिक ख्याल रखा)

दूसरी आयत में कहा-

तुम जीवन के रास्ते के बारे में तय नहीं कर पा रहे थे, तुमको अच्छे रास्ते पर डाला, इसमें ये इशारा मिलता है कि अधर्म के माहौल में आप हर प्रकार की बुरी बातों से घिरे हुए थे, किन्तु आप को अल्लाह ने ऐसे स्वभाव दिया कि आप इस माहौल से अलग रहे और इसकी बुराईयों से बच गये। बड़े होकर शहर से बाहर एकान्त में एक जगह जाकर वक्त गुज़ारने लगे। अपने रब के बारे में सोचते और गुफ़ा में जाकर वक्त गुज़ारते।

तीसरी आयत में कहा-

और तुमको निर्धन पाया तो ग़नी (धनवान) कर दिया। इसमें ये इशारा मिलता है कि आप के कुछ बड़े हो जाने पर अल्लाह की ओर से काम-काज के बारे में विचार करने की समझ मिली, और आप उचित कार्यों को करके खुशहाल हो गये।

चौथी आयत में है-

तुम इस बात का ध्यान रखो कि यतीम पर अत्याचार न हो और माँगने वाले को छिड़का न जाए। और तुम्हारे रब की ओर से तुमको जो हिदायत और नुबुव्वत की जो उपाधि मिली है उसको बताओ।

(वज्रुहा)

अल्लाह पाक को ह० मुहम्मद स० पर ऐसी जिम्मदारी का बोझ डालना जो साधारण इन्सान के बस से बाहर था। इसलिए आप को बचपन ही से ऐसी हालात और ऊँच-नीच से गुज़ारा जो हालात का सामना करने और समझ और साहस से सही मार्ग खोजने में मदद करें। क्योंकि परिश्रम और कठिन परिस्थितियों में इन्सान की प्रतिभा उभरती है। इसलिए सबसे पहले आपका सामना

यतीमी की बेचारगी से कराया गया। जब आपने होश संभाला तो देखा कि आप के सर पर बाप का साया नहीं है और जब 6 साल के हुए तो माँ का साया भी हटा लिया गया। जबकी आपके चारो ओर जो अपनी उम्र के बच्चे थे उनके माँ-बाप जीवित थे। ये बात आम तौर पर बच्चे के लिए कठोरता का कारण बनती है। माँ के जाने के बाद संभालने के लिए दादा थे। तो आपको भी ८ साल की उम्र में उठा लिया गया। इन चीजों को आम तौर पर बच्चा सहन नहीं कर पाता और देखभाल करने वाला न होने के कारण रास्ते से भटक जाता है और सभ्य आचरण से दूर हो जाता है। किन्तु आप स० को इससे अल्लाह की कृपा मिली और अल्लाह की दी हुई ऐसी हिम्मत मिली कि आप के अन्दर कठिन परिस्थितियों को झेलने और उनमें अपनी पसन्द का रास्ता निकालने की क्षमता पैदा हुई। अल्लाह ने आप स० को ये हिम्मत मुख्य रूप से दी जिसके कारण आप में परिस्थितियों और घटनाओं की जरूरतों को सही से समझने और जीवन में कठिनाईयों का सामना करने की क्षमता पैदा हुयी। ह० मुहम्मद स० ने सम्मान वाला जीवन और सभ्य रास्ता ही चुना। जब आप स० कुछ बड़े हुए तो आपने मजदूरी पर बकरियाँ चराई और बड़े होकर अपना खानदानी पेशा व्यापार करने लगे। आपको व्यापार में इतनी सुविधायें मिली कि अपने प्रिय चाचा के कमज़ोर हालात को देखते हुए अपने दूसरे चाचा अब्बास को ये सलाह दी कि अबू तालिब के कई बेटे हैं और उनके हालात कमज़ोर हैं। इसलिए उनके एक बेटे को मैं ले लेता हूँ और एक को आप ले लें। इस प्रकार एक को ह० अब्बास ने अपने साथ रखा और दूसरे को आप स० ने अपने साथ रख लिया। ह० अब्बास ने ह० अकील की जिम्मेदारी ली और आप स० ने ह० अली को लिया और जीवन भर अपने साथ रखा।

सारी उम्मत की माता ह० खदीजा से आप स० का विवाह भी अल्लाह की ओर से भलाई थी। ह० खदीजा ने दूसरे कई लोगों को विवाह के लिए मना कर दिया था लेकिन आप स० के पास खुद रिश्ता भेजा। ह० खदीजा आप स० से उम्र में कुछ बड़ी थी। ये आप स० की दूरदर्शिता थी कि आपने कम उम्र और हमउम्र औरतों की तुलना में अपने से बड़ी और नेक औरत से विवाह करना पसन्द किया।

ये बात अल्लाह की ओर से तय की गई भलाई का हिस्सा लगता है। जिससे १५ साल बाद जब आप स० लोगों को इस्लाम की ओर बुलाए तो आपकी पत्नी से भी आप स० को सहयोग मिला। ये विवाह ईशवाणी के आने से पहले हुआ। जब आप स० ४० वर्ष के हुए तब अल्लाह की ओर से ईशवाणी के आने का क्रम शुरू हो गया। इस प्रकार आप स० के लिए अल्लाह की ओर से मिलने

वाला मार्ग और भलाई तथा बाद में ईशवाणी सांसारिक ज्ञान का बदल बन गयी। आप के चरित्र को इन्सानों के नहीं बल्कि अल्लाह की देखरेख में संवारा गया और आप स० को कयामत तक आने वाले इन्सानों के लिए उदाहरण बना दिया गया।

तुम लोगों के लिए अल्लाह के नबी में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है उस के लिए जो अल्लाह और आखिरत के दिन से डरता हो और अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करता हो। (अहज़ाब 21)

आप के इस पवित्र और मजबूत जीवन के कारण ही ये अनिवार्य हुआ की सारे इन्सान न सिर्फ आपके धार्मिक जीवन को अपनाए बल्कि जहाँ तक सम्भव हो अपने जीवन में आपके चरित्र का अनुसरण करें। जिससे हमारा जीवन भी आप स० के जीवन के अनुरूप हो जायें। आप स० का जीवन न सिर्फ मुसलमानों के लिए बल्कि सारे इन्सानों के लिए सत्य और सभ्य मार्ग का उदाहरण बनाया गया। जिससे न सिर्फ मुसलमान बल्कि सारे इन्सान लाभ उठा रहे हैं। ह० मुहम्मद स० को अल्लाह ने सारे इन्सानों के लिए रहमत बनाया। यह बात अल्लाह अपने पवित्र कुर्आन में कहता है। *"हमने तुमको तमाम आलमों के लिए रहमत बनाकर भेजा"*। आप स० को पवित्र चरित्र एवं विशेषताओं के कारण इन्सानों की सफलता एवं मार्गदर्शन का प्रकाश निर्धारित किया गया। जिससे एक ओर तो हमको अल्लाह के आदेश मिलते हैं जो ईशवाणी के रूप में हैं। दूसरी ओर ह० मुहम्मद स० के चरित्र में जो विशेषताएँ हैं उनका अनुसरण करते हैं। जिससे हमारे जीवन की गाड़ी सफलता के मार्ग पर चले। जिसके संकेत सूरह फातिहा में दिये गए हैं। *"हमें सीधे रास्ते पर चला"*। इस्लाम क्योंकि अल्लाह की ओर से दिया गया सम्पूर्ण, मजबूत एवं ईश्वरीय धर्म है। इसलिए इसकी सुरक्षा की व्यवस्था भी की गयी जिससे कयामत तक इससे मार्ग दर्शन और लाभ मिलता रहे। इसकी सुरक्षा के दो माध्यम बताए गए। एक तो पवित्र कुर्आन और दूसरा ह० मुहम्मद स० की सुन्नतें (उपदेश)। पवित्र कुर्आन अल्लाह की ओर से भेजी गई ईश्वरीय किताब है। यह पहले आए नबियों के द्वारा दिए गए संविधान की पुष्टि करने के साथ-साथ कयामत तक आने वाले इन्सानों और युगों के अनुकूल मार्गदर्शन और ज्ञान देता है। इसकी सुरक्षा की व्यवस्था पवित्र कुर्आन में की गयी है। *"हमने ही नसीहत नामा उतारा है और हम ही इसके मुहाफिज़ (संरक्षक) हैं"*। इसकी सुरक्षा का अर्थ इसके द्वारा मिले धर्म, सदाचार और संविधान की सुरक्षा है। ह० मुहम्मद स० का चरित्र पवित्र कुर्आन का दर्पण है। सारी उम्मत की माँ ह० आयशा रजि० से एक बार आप० के चरित्र के बारे में पूछा गया तो उन्होने जवाब दिया आप स० का चरित्र कुर्आन के अनुसार था। यही मार्ग हमें ह०

मुहम्मद स० के जीवन से मिलता है और इसका ही अनुसरण करने का आदेश अल्लाह ने हमें दिया है। इसीलिए आप स० के चरित्र को जानने वाले और धार्मिक विद्वानों ने लोगों को बताने के लिए आप स० के चरित्र पर किताबें लिखी हैं। विद्वानों ने आप स० के साथियों से आपके चरित्र को जाना। जो सच्चे, अमानतदार और अल्लाह और ह० मुहम्मद स० के आदेशों का पालन करने वाले और उन पर जान न्योछावर करने वाले थे। उनको आप स० पर पूर्ण विश्वास था। इन लोगों की सच्चाई और विशेषताओं को बताते हुए अल्लाह ने पवित्र कुरआन में कहा है-

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वो इन्कार करने वालों पर सख्त और आपस में रहम दिल हैं, (ऐ देखने वाले) तू उनको देखता है कि (अधिक) सज्दे करने के कारण उनके माथे पर निशान पड़े हुए हैं, उनकी यही विशेषताएँ तो तौरत में हैं और यही विशेषताएँ इन्जील में हैं। वो एक खेती के समान है, जिसने (पहले ज़मीन से) अपनी कोपल निकाली और फिर उसे मज़बूत किया, फिर मोटी हुई और अपने इतने पर सीधी खड़ी हो गयी और खेती करने वालों को खुश करने लगी, जिससे इन्कार करने वाले उनसे जलो जो लोग उनमें से ईमान लाए और भले काम करते रहे, उनसे अल्लाह ने माफ़ी और बहुत बड़े ईनाम का वादा किया है। (फ़तह 29)

आप स० की जीवनी को लिखने का उद्देश्य आप स० के चरित्र से मिलने वाले लाभ को जारी रखना है। आप स० के चरित्र पर जो किताबें लिखी गयी है उनमें विस्तार पूर्वक वर्णन भी मिलता है और संक्षेप में भी। कुछ किताबों में आप के चरित्र की किसी एक विशेषता पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार आप स० के जीवन पर एक बहुत विशाल पुस्तकालय तैयार हो गया है। यह किताबें आप स० के चरित्र के विभिन्न पहलुओं को बताती हैं। आपके उच्च एवं अनुसरण योग्य जीवन की दृढ़ता एवं विस्तार को बताती है। महान विद्वान ह० मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी ने आप स० के पवित्र चरित्र को बताते हुए लिखा है। "एक ऐसा जीवन जो मानव जीवन की हर परिस्थितियों, भावनाओं और सम्पूर्ण आचरण को एकत्र करे। ऐसा जीवन एक मात्र मुहम्मद स० का जीवन है। यदि तुम अमीर आदमी हो तो मक्के के व्यापारी को देखो। यदि तुम गरीब आदमी हो तो अबू तालिब की घाटी में कैद और मदीने के मेहमान के हालात देखो। यदि तुम राजा हो तो अरब के राजा का हाल पढ़ो। यदि तुम प्रजा हो तो कुरैश के गरीब पर नज़र डालो। यदि तुम विजेता हो तो बदर के विजेता को देखो और यदि तुम पराजित हो गये हो तो ओहद से शिक्षा लो। यदि तुम अध्यापक हो तो सफा की वादी में पढ़ाने वाले को देखो। यदि तुम शिष्य हो तो जिवराईल के

सामने बैठने वाले को देखो। यदि वक्ता हो तो मस्जिद-ए-नबवी के मिम्बर पर खड़े होने वाले की बात सुनो। यदि तुम एकान्त और कमज़ोरी में सत्य की आवाज़ लगाना चाहते हो तो मक्के में अकेले बिना किसी सहयोग के आवाज़ लगाने वाले को देखो। यदि सत्य की विजय के बाद तुम दुश्मन को कमज़ोर बना चुके हो तो मक्का को विजय करने वाले को देखो। यदि तुम संसारिक कठिनाईयों और अपने व्यापार को सही करना चाहते हो तो बनी नज़ीर, खैबर और फिदक की ज़मीन के मालिक का व्यापार और व्यवस्था देखो। यदि तुम यतीम हो तो अब्दुल्लाह और आमीना के ज़िगर के टुकड़े को न भूलो। यदि तुम बच्चे हो तो दाई हलीमा के लाडले को देखो। यदि तुम जवान हो तो मक्के के चरवाहे का जीवन देखो। यदि तुम व्यापार में यात्रा करो तो बसरा में यात्रा करने वाले का उदाहरण देखो। यदि तुम जज या पंचायत के मुखिया हो तो मक्के में सूरज निकलने से पहले जाने वाले को देखो, जो हजरे असवद (जन्नत का पथर) को काबे की दीवार में लगा रहा है। मदीने की कच्ची मस्जिद के आँगन में बैठने वाले जज और न्याय करने वाले को देखो। जिसकी नज़र में अमीर और गरीब सब बराबर थे। यदि तुम पति हो तो खदीजा रज़ि० और आयशा रज़ि० के पति को देखो। यदि तुम सन्तान हो तो फातिमा के पिता और हसन-हुसैन रज़ि० के नाना का हाल पढ़ो। यहाँ तक की तुम जो कुछ भी हो जिस हाल में भी हो तुम्हें जीवन में सच्चाई और भलाई का मार्ग ह० मुहम्मद स० के जीवन के खज़ाने में हर समय मिल जायेगा। इसलिए मानवता और सत्य मार्ग खोजने वाले के लिए मुहम्मद स० का जीवन ही सत्य और सफलता पाने का रास्ता है। जिसके सामने ह० मुहम्मद स० का जीवन है उसके सामने नूह अलै०, इब्राहीम अलै०, अय्यूब अलै०, यूनस अलै०, मूसा अलै० और ईसा अलै० का जीवन है। ऐसा लगता है की सारे नबियों के आचरण को मिला कर एक कर दिया गया हो। मुहम्मद स० के आचरण में श्रेष्ठ व्यवहार व कर्म रखे गये हैं। जिसमें भलाई और हर चीज़ को पाने का बेहतरीन सामान मौजूद है। मुहम्मद स० को संसारिक पढ़ाई से दूर रखकर और अनपढ़ कौम में पैदा करके भी अल्लाह ने नबियों का सरदार बनाया। इसमें एक भलाई ये रही कि कोई भी इन्सान जीवन में जो जानकारी प्राप्त करता है वो उसके परिश्रम और समाज में सुनी हुई बातें होती है। इसके बाद जब वो पढ़ने जाता है तो उसके शिक्षक जो उसको बताते हैं वो उसकी मुख्य जानकारी होती है। वो इतना महत्वपूर्ण ज्ञान होता है कि इन्सान अपने हालात और संसारिक कर्मों में उससे मदद लेता है और जीवन का रास्ता चुनता है।

अल्लाह ने आप स० को अनपढ़ रखकर अपनी ओर से ईशवाणी के द्वारा ज्ञान दिया। अल्लाह ने मुहम्मद स० को अपनी ओर से दिये जाने वाले

मार्गदर्शन और संदेशों के माध्यम से ज्ञान दिया। इस प्रकार आप स० संसारिक पाठशाला में नहीं पढ़ें बल्कि अल्लाह की सर्वश्रेष्ठ पाठशाला से ज्ञान प्राप्त करने वाले अकेले इन्सान हैं। जहाँ आप स० को ऐसी सच्चाई और क्षमता दी गयी जो किसी और इन्सान को नहीं मिली थी। इसके बाद ह० मुहम्मद स० को ये संदेश और शिक्षाएँ लोगों तक पहुँचाने के लिए कहा गया। इस प्रकार आप स० के माध्यम से लोगो तक अल्लाह के आदेश पहुँचने लगे।

वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उनको उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उनको पाक करता है और उन्हें किताब व हिकमत सिखाता है, यकीनन ये उससे पहले खुली गुमराही में थे। (जुमुआ 2)

तो जो चीज़ पैगम्बर तुमको दें वो ले लो और जिससे मना करे उससे रुक जाओ, बेशक खुदा सख्त अज़ाब देने वाला है। (हश् 7)

तुम लोगों के लिए अल्लाह के नबी में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है उस के लिए जो अल्लाह और आखिरत के दिन से डरता हो और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करता हो। (अहज़ाब 21)

और न वो अपनी इच्छा से बोलते हैं, यह (कुर्आन) तो अल्लाह का आदेश है जो उनकी ओर भेजा जाता है। (नज्म 3-4)

ह० मुहम्मद स० न सिर्फ पवित्र कुर्आन को लोगों तक पहुँचाने वाले थे बल्कि अल्लाह की इच्छा को सही रूप में बताने वाले भी थे। इस प्रकार पवित्र कुर्आन जो केवल ईशवाणी है और अहादीस व सुन्नत जो ह० मुहम्मद स० के कर्म व वाणी है। दोनों अल्लाह की ओर से दिये गये निर्देशों का निचोड़ और समस्त इन्सानों के लिए मार्गदर्शन है। इस प्रकार ह० मुहम्मद स० को सारे इन्सानों के लिए रहमत बनाकर भेजा गया।

और (ऐ मुहम्मद) हमने तुमको सब लोगों के लिए खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते। (सबा २८)

वो अल्लाह ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत का सामान यानि कुर्आन और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसे तमाम धर्मों पर गालिब (प्रभावी) कर दे चाहे मुशिरकों को कितना बुरा ही लगे। (तौबा 33)

ऐ नबी हमने आप को गवाही और खुशखबरी देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा, और अल्लाह की इजाज़त से उसकी ओर बुलाने वाला और रौशन विराग बनाया। (अहज़ाब 45-46)

पवित्र कुर्आन का शिक्षा-दीक्षा का तरीका

अन्तिम नबी स० को ईशवाणी के आने से पहले 40 साल के जीवन में ऐसे हालात से गुज़ारा गया की उसके प्रभाव से आप स० कठिन कार्यों को करने और उनका हक अदा करने में सक्षम बन गये। आप स० में इन कार्यों को अल्लाह की इच्छा के अनुसार करने की क्षमता पैदा हो गयी।

ईशवाणी के आरम्भ से पहले आपके 40 साल के जीवन को देखा जाए तो यह सत्य सामने आयेगा कि किसी इन्सान को बेहतर से बेहतर इन्सान बनाने में जिन परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। वो अल्लाह ने आपके भाग्य में लिखी थी। बचपन में ही आपको अनाथ कर दिया गया। ऐसे हाल में बच्चे माँ-बाप का प्यार और स्नेह न मिलने और लोगों की बेरुखी को देखकर उसका दिल कठोर, निराशा और दुर्बलता का शिकार हो जाता है जिसका प्रभाव अनाथ बच्चों के व्यवहार व चरित्र पर पड़ता है। ऐसे में यदि कोई माँ-बाप के समान प्यार और स्नेह देने वाला मिल जाए तो निराशा और कठोरता के स्थान पर आत्म निर्भरता और संयम और सहन शक्ति पैदा होती है। ये बात आप स० को मिली और इसके साथ-साथ कुरैश और मुख्य रूप से बनी हाशिम परिवार में पैदा होने के कारण आपके आचरण को उच्च व आत्मनिर्भर बनने का लाभ मिला। इसी कारण आपको समाज में उच्च आचरण एवं प्रिय होने का स्थान मिला। सब आपके उच्च आचरण को देखकर आपको सच बोलने वाला (सादिक) और अमीन (अमानतदार) कहने लगे। जो किसी अन्य को नहीं कहते थे। सादिक का अर्थ सच्च बोलने वाला और सही काम करने वाला है। इसीलिए आप स० को सादिक कहा गया। जिससे यह पता चलता है कि आपके जीवन में कथनी और करनी एक समान थी और कर्म बहुत उच्च थे। अमीन का अर्थ अधिकार और दायित्व का पालन करने वाला आपको सबने कहा क्योंकि आपकी यह विशेषताएँ थी। उस समय समाज में पढ़ने लिखने का रिवाज़ नहीं था। इसका लाभ यह हुआ कि आपका स्वभाव और सोच का चुनाव सीमित और इन्सानों द्वारा तय किये गये ज्ञान के अनुसार नहीं हुआ। जो पाठ्यक्रम के विषय और पढ़ने वाले के विचार होते हैं, उनके न होने से आपके स्वभाव का चुनाव स्वभाविक वातावरण में और उच्च पारिवारिक प्राकृतिक माहौल में हुआ। किसी शिक्षक के विचारों या इन्सानों द्वारा बनाये गये पाठ्यक्रम व प्रशिक्षण आप स० को नहीं मिला है। आपका

प्रशिक्षण और पालन-पोषण और आचरण की विशेषताएँ अल्लाह के द्वारा चुनी परिस्थितियों में हुईं जैसा की सूरह 'वज्जुहा' में बताया गया है। आपका समाज इन्सानों के स्वभाव के अनुसार अपने वास्तविक रूप में था। जिस पर किसी शिक्षा और पालन-पोषण का प्रभाव नहीं हुआ था। क्योंकि उनमें शिक्षा का रिवाज नहीं था और वो बाहर की दुनिया से कटे हुए थे। छोटे-छोटे कबीलो में रहने के कारण उनके परिवार भी बस्तियों तक सीमित थे। उनमें कुरैश मक्के का प्रमुख और अरबों में उच्च स्थान रखने वाला समाज था। और सारे अरब में उनको उच्च समझा जाता था। इन लोगों को पवित्र काबे का संरक्षक होने के कारण अच्छा समाज बनाने का अवसर मिला था। इस समाज में आप स० ने ४० साल बहुत पवित्र और अच्छे आचरण के साथ व्यतीत किये। फिर नबी बनाये जाने के बाद आपका मार्ग दर्शन मुख्य रूप से ईशवाणी के द्वारा होने लगा। इससे नबी के कार्यों को करने और समाज पर प्रभाव डालने की क्षमता आप में पैदा हो गयी। इस कार्य में आने वाली कठिनाईयों का सामना करने के लिए आप स० को आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन दिया जाता रहा। विभिन्न परिस्थितियों में मानव स्वभाव होने के कारण जब भी आप को कोई परेशानी आती तो ईशवाणी के द्वारा रास्ता बताया जाता। इस प्रकार आपको सही रास्ता मिल जाता। आपके एक चाचा अबु लहब ने आपको कष्ट देकर बहुत दुखी किया और अल्लाह की ओर बुलाने का विरोध किया। अबु लहब ने पीड़ादायक शब्दों का प्रयोग किया और कहा तुम टूट जाओ। इस पर अल्लाह ने ईशवाणी के द्वारा आप स० को तसल्ली दी और आयत अवतरित हुई- जिसमें कहा गया बर्बादी और टूटफूट हो अबुलहब के लिए है और उसकी बीवी के लिए है जो तुच्छ कर्म करते हैं। ये दोनों कुछ दिन के जीवन के बाद सदा रहने वाले जीवन में कठोर यातनाओं और अल्लाह के अज़ाब में रहेंगे। यानी वो तो नासमझी कर रहा है। अपने को तबाह कर रहा है। आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

अबू लहब के हाथ टूट जाए और वो बर्बाद हो जाए। न तो उसका माल ही कुछ काम आया और न वह जो उसने कमाया था। वह बहुत जल्द भड़कती हुई आग में डाला जाएगा, और उस की पत्नी भी जो सिर पर ईथन लाद कर लाती है। उसकी गर्दन में मूँझ की रस्सी होगी। (लहब)

इसी प्रकार जब आप पर ताने कसे गये कि आप के कोई बेटा नहीं है जबकी अरबों में बेटे का बहुत अधिक महत्व था। उनमें आपस में लड़ाईयाँ थी। जिस खानदान में लड़के अधिक होते थे उनके जीतने के अवसर अधिक होते थे। जब आप स० पर ये ताने कसे गये तब अल्लाह ने ईशवाणी के द्वारा तसल्ली दी और कहा- आपको अल्लाह ने आपके दूसरे जीवन में कौसर जैसा मुख्य इनाम

दिया है। आप अपने अल्लाह की इबादत नमाज़ को पढ़ते रहिए और अल्लाह के नाम पर कुर्बानी कीजिए। आपका बुरा चाहने वाले का वंश समाप्त हो जायेगा। यानी लड़के से वंश चलता है आपका वंश पुत्र के बिना उच्च सम्मान से चलेगा और आपका बुरा चाहने वाले का वंश समाप्त हो जायेगा।

बेशक 'हमने' आपको कौसर (अर्थात् जन्नत की एक नहर) प्रदान की, तो आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और कुर्बानी किया कीजिए। बेशक आपका दुश्मन ही बेनाम व निशान है। (कौसर)

यह तो छोटी सी सूरत का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त और भी बड़ी-बड़ी सूरतें आपकी तसल्ली और दृढ़ता के लिए अवतरित की गयी। जैसे सूरह-‘कसस’ जिसमें ह० मूसा का किस्सा बताया गया कि बचपन में उनके सामने ऐसे हालात थे कि उनको कत्ल कर दिया जाता लेकिन अल्लाह ने उनको बचाया। ह० मूसा अपने दुश्मनों में पले। अल्लाह ने उनके शत्रु से ही उनकी रक्षा करवाई। फिर जब परदेस जाने पर मजबूर हुए तो वहाँ भी अल्लाह ने उनकी सहायता की और फिर उनको नबी बनाया। और नुबुव्वत के कार्यों को करने के लिए दुश्मन राजा का सामना हुआ जो उनका शत्रु था। लेकिन बराबर अल्लाह ह० मूसा को बचाता रहा और अल्लाह ने उनके शत्रु को बर्बाद कर दिया। यह किस्सा मुहम्मद स० के हालात से मिलता-जुलता है। स्पष्ट है कि आप को दृढ़ता मिली। इसी प्रकार सूरह यूसुफ का अवतरण हुआ। इसमें यूसुफ अलै० को उनके भाई बचपन में ही मारना चाहते थे। लेकिन अल्लाह ने उनको बचाया। यूसुफ अलै० को कठिन परिस्थितियों में परायों के बीच अपमानजनक हालात से गुज़रना पड़ा। अल्लाह ने यूसुफ अलै० को खतरों से बचाया और अन्त में उनके लिए सम्मान के रास्ते पैदा किये। एक ओर तो वो राजा बने और दूसरी ओर उनको नबी बनाया। इस प्रकार दो-दो सम्मान दिए। उनके गुणों को बताया कि जो अल्लाह की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करता है और कठिनाईयों में संयम से काम लेता है। ऐसे अच्छे लोगों के कर्मों को अल्लाह व्यर्थ नहीं जाने देता।

कठिनाईयों में तसल्ली के लिए ईशवाणी के अतिरिक्त आपको शत्रु पर सफलता मिलने के समय में जो स्वभाविक और अभिमान की भावना पैदा होती है। उसमें भी ईशवाणी के द्वारा आपका मार्गदर्शन किया जाता था। इस प्रकार एक ओर आपका मार्गदर्शन और दूसरी ओर आपके साथियों का प्रशिक्षण भी हो जाता था। इस प्रकार पवित्र कुर्आन और मुहम्मद स० का जीवन एक दूसरे का दर्पण बन गया। इसी की ओर ध्यान दिलाते हुए हमारी माता ह० आयशा ने कहा था कि आप स० का जीवन और व्यवहार पवित्र कुर्आन से मिलता है। इस प्रकार आकाशीय मार्गदर्शन से उच्च समाज बन गया। जिसका कोई दूसरा उदाहरण

इन्सानि समाज में नहीं मिलता। यह ह० मुहम्मद स० के साथियों का समाज था। जो अपने नबी से प्रेम और श्रद्धा रखते थे और उनके कर्मों को अनुसरण योग्य समझते थे। वो उसी रूप में ढल गये थे जो उनके नबी को अल्लाह की ओर से दिया गया था। इस प्रकार ईशवाणी से मात्र आप स० का ही मार्गदर्शन नहीं हुआ बल्कि आपके साथियों का भी प्रशिक्षण हुआ। जिसको पवित्र कुरआन में कई स्थान पर बताया गया।

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ कोशिश की, वे और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी, और मदद की, वही लोग आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, और जो लोग ईमान तो लाए, लेकिन उन्होंने हिजरत नहीं की, तुम्हारी उनसे कोई दोस्ती नहीं, जब तक कि वे हिजरत न करें और अगर वह तुमसे मदद माँगे दीन के काम में तो तुम पर ज़रूरी है कि मदद करो, सिवाए इसके, कि यह मदद किसी ऐसी क़ौम के मुकाबले में हो जिससे तुम्हारे बीच संधि हो, और अल्लाह खूब देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। और जो लोग काफिर हैं, वह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, अगर तुम ऐसा न करोगे तो धरती में फ़ित्ना और बड़ा फ़साद फैल जाएगा। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में कोशिश की, और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी और मदद की, वही सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाली रोज़ी है। (अनफ़ाल 72-75)

अध्याय पाँच

पवित्र कुर्आन अन्तिम किताब और मार्ग दर्शक

अल्लाह के द्वारा मानव जीवन-यापन के लिए जो ज्ञान दिया गया है, वह 'वह्य मतलू' अर्थात् पढ़ी जा सकने वाली ईशवाणी पर आधारित है। अधिक विस्तार व स्पष्टीकरण के लिए हदीसे नबवी (अर्थात् अन्तिम ईशदूत मुहम्मद स० की कथनी, कर्मों, आदेशों व निषेध का संकलन) प्रदान की गई। पवित्र कुर्आन को ऐसे व्यापक, विविध, चमत्कारिक व अलौकिक रूप में प्रदान किया गया, जो इस संसार के स्वामी के वैभव के योग्य है। इसमें जीवन से समस्त क्षेत्रों से सम्बन्धित ज्ञान को उच्च स्तर पर समायोजित कर दिया गया है।

इसमें दीन-धर्म के व्यापक दृष्टिकोण, अल्लाह के एक मात्र रब होने, ह० मुहम्मद स० के अन्तिम ईशदूत होने, अल्लाह की उपासना के आधारों, ईशदूतों पर, फरिश्तों पर, आकाश से अवतरित की जाने वाली किताबों पर, परोक्ष पर, स्वर्ग व नरक पर, आत्मा की वास्तविकता पर, सत्य का स्पष्टीकरण, असत्य को चिन्हित करना, जिन्नो, शैतानों, आस्था और कर्म का स्पष्टीकरण, सत्य का प्रचार व प्रसार, जिहाद व युद्ध से सम्बन्धित, सामाजिक समस्याएँ, सद्ब्यवहार व आत्म शुद्धीकरण, आर्थिक मामलों से सम्बन्धित न्याय पालिका के आदेश, राजनैतिक मोर्चे, खेती-बाड़ी, व्यापार, पिछली जातियों के इतिहास के लाभदायक एवं प्रभावी घटनाक्रमों, अन्य धर्मों के विश्लेषण के साथ अल्लाह ने पवित्र कुर्आन को अन्तिम और सम्पूर्ण आसमानी किताब बना कर कयामत तक इसकी सुरक्षा का वादा और प्रबन्ध किया। इन्सानों के द्वारा किया जाने वाला ऐसा सरल एवं अनुसरण योग्य सिद्धांत दिया, जिससे इसकी सुरक्षा दृढ़ता के साथ स्थिर है। वो यह कि इसके पाठ को उपासना बना दिया, इसी लिए सारी नमाजों में इसकी आयतें पढ़ी जाती हैं। इसके बिना नमाज़ सम्पन्न नहीं होती। इसके साथ ही इसको पढ़ने पर असीमित पुण्य घोषित किया गया। जिसको पाने के लिए हर मुसलमान इसको पढ़ना आवश्यक और उपयोगी समझता है। इसी कारण इसको याद करने का प्रयास करता है। लाखों मुसलमान इसको पूरा याद करके 'हाफिज़' बनते हैं। इससे इसके शब्दों ही की नहीं अपितु इसके अक्षरों की भी सुरक्षा होती है। लाखों इन्सानों के दिल पर लिखे जाने के बाद यदि कोई इसको पढ़ने में गलती करता है, तो दूसरे हाफिज़ उसको ठीक कर देते हैं। अतः अल्लाह की ओर से भेजी

गयी ये अन्तिम किताब कयामत तक इन्सानों के लिए ईश्वरीय आदेशों और मार्गदर्शन का स्रोत है, जिसमें समस्त मानवीय पक्षों के लिए संकेत व आदेश हैं, इसमें सारी आवश्यक बातों का ज्ञान कराया गया है। इस सम्बन्ध में जिन-जिन बातों का ज्ञान आवश्यक था, उनसे अवगत कराया गया है। जिन जातियों ने सत्य मार्ग को छोड़ दिया, उनके मार्ग दर्शन के लिए जो नबी भेजे गये, इनमें से कुछ का वर्णन किया गया है। उनका जो परिणाम हुआ उससे डराया गया है तथा उन पर आये अज़ाब को बताकर कहा गया है कि परलोक का दंड उससे भी बड़ा है।

आखिरत का अज़ाब बढ़ा हुआ है। (जुमर 26)

अल्लाह की ओर से अवतरित यह किताब वास्तव में अल्लाह के ज्ञान के अथाह सागर “उम्मुलकिताब” ही का भाग है। अल्लाह की ओर से नबियों को दी जाने वाली किताबों में पवित्र कुर्आन के अन्तिम किताब होने के कारण, इसमें उन सभी पक्षों को समायोजित कर दिया गया, जिनका सम्बन्ध मानव जीवन से है। इसमें कुछ पिछली जातियों के अहंकार एवं उनके परिणाम को उदाहरण स्वरूप बताया गया है। इन्सानों को बुरे परिणाम से डराया गया है। अब ये इन्सानों पर है कि वो पवित्र कुर्आन में बताए गए आदेशों, उपदेशों और मार्ग दर्शन का आदर करें या अनादर करें। अगर इनका सम्मान करेंगे और लाभ उठावेंगे तो इसका परिणाम अच्छा होगा और स्वर्ग की प्राप्ति होगी। यदि इसका अनादर किया जाएगा तो इसका परिणाम नरक होगा।

पवित्र कुर्आन का अवतरण एवं संरक्षण

सर्व शक्तिमान अल्लाह ने कहा है-

इसको खुल अमीन (जिब्राईल फरिश्ता) लेकर उतरे, आप के दिल पर, ताकि आप चेतावनी देने वाले बनें। (शोअरा 193-194)

अतः अल्लाह से इस पवित्र कुर्आन को लेकर जिबराईल नामक फरिश्तें मुहम्मद स० के पास लाते थे, उनको सुनाते थे और याद करवा देते थे। आप स० अपने साथियों को ये सूरतें लिखवा देते थे। ह० अबुबक्र की खिलाफत के दौर में और उसके बाद ह० उस्मान की खिलाफत के दौर में पवित्र कुर्आन की आयतों और सूरतों को उनके सही क्रम में पूरी सावधानी के साथ लिखवाया गया और विभिन्न स्थानों पर भेज दिया गया। इस प्रकार पवित्र कुर्आन पूर्णतः विश्वसनीय विधि से समस्त भू-भाग में फैल गया। इसको कयामत तक सुरक्षित रखने का प्रबन्ध भी इस प्रकार किया गया की लाखों लोग इसे याद कर लेते हैं। इनको हाफिज़ कहते हैं। ये लोग सारे संसार में फैले हुए हैं। इनमें से किसी में भी पवित्र कुर्आन को पढ़ने में विरोधाभास नहीं मिलता।

पवित्र कुर्आन के विभिन्न नाम

प्रसिद्ध व्याख्याकार, इतिहासकार, लेखक अबुल फज़ल जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान पुत्र अबी बक्र, जो इमाम सुयूती के नाम से प्रसिद्ध हैं, इनके द्वारा

लिखी किताबों की संख्या 561 बताई जाती है। इन्होंने अपनी एक किताब “इतकान फी उलुमिल कुर्आन” पृष्ठ 1-5 में पवित्र कुर्आन के ५५ नामों का विशेष रूप से वर्णन किया है। इनकी मूल विशेषता यह है कि इन नामों का उल्लेख पवित्र कुर्आन की सूरतों और आयतों में पाया जाता है। इनमें से कुछ नाम इस प्रकार हैं- ‘अल किताब’, ‘अल-करीम’, ‘अल-कलाम’, अल-कुर्आन, ‘अल मुबारक’ इत्यादि। ये सभी नाम उन गुणों और विशेषताओं को बताते हैं जो ईशवाणी में पाए जाते हैं।

किताबुल इत्कान में इन नामों के अतिरिक्त 45 और नामों का उल्लेख किया गया है। इन सब नामों में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित नाम ‘कुर्आन’ ही है। पवित्र कुर्आन में कई स्थानों पर इसका उल्लेख है-

रमज़ान का महीना वो है जिसमें कुर्आन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए हिदायत है। (अल-बकर 185)

और तुम जिस हाल में भी होते हो, और कुर्आन में से जो कुछ भी पढ़ते हो, और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हें देख रहे होते हैं (यूनुस 61)

और कुर्आन को हमने थोड़ा-थोड़ा करके इसलिए उतारा, ताकि तुम ठहर-ठहर कर लोगों को इसे पढ़कर सुनाते रहो, और हमने इसे धीरे-धीरे उतारा है। (बनी इस्राईल 106)

तो सबसे ऊँचा अल्लाह है, सच्चा बादशाह है, और आप कुर्आन के बारे में जल्दी न किया कीजिए, जब तक कि इसकी वहत आप पर पूरी न उतार दी जाए, और कहिए कि “ऐ मेरे रब, मेरे इल्म को बढ़ा दे। (ताहा 114)

और रसूल कहेंगे, “ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने इस कुर्आन को छोड़ दिया था।” (फुर्कान 30)

और इन्कार करने वाले कहते हैं कि इस पर पूरा कुर्आन एक ही समय में क्यों नहीं उतरा? ऐसा इसलिए किया गया ताकि इसके द्वारा हम तुम्हारे दिल को मज़बूत करें, और इसलिए हमने इसे बहुत ठहर-ठहर कर उतारा (फुर्कान 32)

जिसने आप पर कुर्आन (के आदेशों पर अमल और उसके प्रचार को) फर्ज किया, वह आप को आप के वास्तविक वतन (मक्का में) फिर पहुँचायेगा, कह दीजिए, “मेरा रब उस आदमी को खूब जानता है कि कौन हिदायत (मार्ग दर्शन) लेकर आया है, और कौन खुली गुमराही में है? (क़सस 85)

ये आयतें हैं कुर्आन और एक स्पष्ट किताब की। हिदायत और खुशख़बरी है ईमान वालों के लिए। (नम्ल 1-2)

और हमने इस कुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें पेश की है, (रूम 58)

ईशवाणी एवं उसका अवतरण

इन्सान को इस लोक में अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए ज्ञान प्राप्त करना होता है। इसीलिए अल्लाह ने तीन चीज़ें ऐसी बनाई हैं जिनके द्वारा इन्सान को जीवन की समस्त आवश्यकताओं का ज्ञान प्राप्त होता है। (1) इन्द्रियाँ- आँख, कान, मुँह और हाथ पैर। (2) बुद्धि (3) ईशवाणी।

इनमें पहले दो ऐसे हैं, जो अधिकतर प्रयोग किये जाते हैं और चलन में हैं। लोग इन्हीं को पर्याप्त समझते हैं। उनकी पहुँच कितनी ही अधिक क्यों न हो, परन्तु इनकी सीमा निर्धारित है। उस सीमा से आगे ये कार्य नहीं कर सकते। तीसरा माध्यम ईशवाणी का है। इसका ज्ञान न इन्द्रियों के द्वारा हो सकता है और न बुद्धि का प्रयोग करके, यह केवल अल्लाह के द्वारा चुने गये अपने नबी पर अवतरित की जाती है। यह दो रूप में होती है, एक 'मतलू' और दूसरी 'गैर-ए-मतलू'। 'वही मतलू' अल्लाह के द्वारा चुने गये शब्दों में आती थी, इसलिए यह आसमानी किताब कहलाई। क्योंकि इसके शब्द भी अल्लाह की ओर से होते हैं, इसी कारण इसका पाठ भी किया जाता है। इससे पहले भी पिछली जातियों में नबियों पर ईशवाणी अवतरित की गयी। जैसे- 'तौरेत' व 'इंजील' इत्यादि पवित्र कुर्आन इसकी अन्तिम कड़ी है। पवित्र कुर्आन में इससे पहले आई किताबों के आदेश समायोजित कर दिये गये।

दूसरे वो ईशवाणी जो अल्लाह की ओर से निश्चित शब्दों में नहीं उतारी गयी, इसके विषय व अर्थ नबी को बतायें गये। इनको नबी ने अपनी भाषा में बताया ये 'वह्य-ए-गैर मतलू' या 'हदीस-ए-नबवी' कहलाई। यह भी दो प्रकार की हैं, एक तो वह जिसे ह० मुहम्मद स० ने अल्लाह की ओर से कहा है "कि अल्लाह ने कहा या अल्लाह कहता है। इन्हें 'हदीसे कुदसी' कहा गया है। यह हदीस का विशेष प्रकार है, यह हदीसे अधिक नहीं हैं, हदीसों का मुख्य संकलन इसके अतिरिक्त है। जिसमें शरीयत के आदेशों का विस्तार पूर्वक वर्णन है तथा पवित्र कुर्आन की व्याख्या है।

ईशवाणी का अवतरण ह० मुहम्मद स० पर समाप्त हो गया। अब न तो किसी इन्सान पर ईशवाणी उतरेगी और न इसकी आवश्यकता बाकी रह गयी है।

ईशवाणी के अवतरण के विभिन्न प्रकार

ईशवाणी ह० मुहम्मद स० पर विभिन्न प्रकार से अवतरित होती थी। बुखारी (हदीस की किताब) में ह० आयशा रज़ि कहती हैं, कि एक बार ह० हारिस बिन हिशाम रज़ि० ने ह० मुहम्मद स० से प्रश्न किया कि आप स० पर 'वह्य' किस प्रकार आती है? ह० मुहम्मद स० ने कहा "कभी तो मेरे कान में घंटी की आवाज़ सुनाई देती है तथा 'वह्य' का ये प्रकार मेरे लिए सबसे कठिन होता है। फिर जब यह समाप्त हो जाती है तो जो कुछ उस आवाज़ ने मुझसे कहा होता है, वो मुझे याद हो जाता है। कभी 'वह्य' लाने वाला फ़रिश्ता मेरे सामने एक इन्सान के रूप में आता है। आप स० पर जब 'वह्य' अवतरित होती थी तो आप पर बहुत बोझ पड़ता था। ह० आयशा रज़ि इस हदीस के अन्त में कहती हैं कि मैंने बहुत ठण्डी रात में ह० मुहम्मद स० पर 'वह्य' का अवतरण देखा है, ऐसी ठण्ड में भी जब 'वह्य' का अवतरण समाप्त होता, तो आप स० का माथा पसीने से भर जाता। इस हाल में कभी इतना बोझ पड़ता कि जिस जानवर पर आप स० बैठे होते वो इस भार से दबकर बैठने के करीब हो जाता। यह ईशवाणी का पवित्र भार था, जो सहन सकने योग्य बनाने के बाद भी इतना भारी था। इसका ऐसा प्रभाव पड़ता कि एक बार आप स० का सर मुबारक ह० जैद की जांघ पर रखा था और इसी हाल में 'वह्य' का अवतरण आरम्भ हो गया। ह० जैद की जांघ पर इतना भार पड़ा कि वो टूटने के करीब हो गयी। कभी-कभी इस 'वह्य' की धीमी आवाज़ दूसरे लोगों की भी महसूस होती थी। ह० उमर रज़ि कहते हैं कि जब आप स० पर 'वह्य' उतरी तो आप स० के चमकते चहरे के पास मधुमक्खी की भिन-भिनाहट जैसी आवाज़ सुनाई देती थी। ईशवाणी के अवतरण का दूसरा रूप ये था कि ह० जिब्राईल किसी इन्सान के रूप में आकर आप तक अल्लाह का सन्देश पहुँचाते थे। इसमें अधिकतर ह० जिब्राईल अलै० मशहूर सहाबी ह० दहिया कलबी रज़ि० के रूप में आते थे, कभी-कभी किसी अन्य के रूप में भी आते थे। तीसरा प्रकार ये था कि ह० जिब्राईल अलै० अपने वास्तविक रूप में दिखाई देते, लेकिन ऐसा दो बार हुआ जो सहीह हदीस में है। चौथा प्रकार बिना किसी माध्यम के अल्लाह से बात है। इससे जागते हुए केवल एक बार अर्थात् मैराज के समय आप स० प्रतिष्ठ हुए, जबकि सोते हुए भी एक बार आप स० ने अल्लाह से बात की है। पाँचवा प्रकार ये था कि ह० जिब्राईल बिना किसी रूप में आपके सामने आये बिना, आप स० के दिल में बात डाल देते।

पवित्र कुर्आन का अवतरण पवित्र महीने रमज़ान की रात (लैइला-तुल-कदर) में लौहे महफूज़ से पृथ्वी के निकटवर्ती आकाश पर हुआ। इसके बाद इस ईशवाणी का अवतरण छोटे-छोटे टुकड़ों में कभी दो-चार आयतों तो कभी एक पूरी सूरत के रूप में आवश्यकता के अनुसार आप स० के दिल पर होता रहा। ये आप स० की उम्र के अन्तिम २३ साल में हुआ। अवतरण का ये क्रम इसलिए प्रयोग किया गया, जिससे मुहम्मद स० को समझने, याद करने तथा अरब वासियों के स्वभाव, प्रकृति, व्यवहार व उनके मानसिक दृष्टिकोण के परिवर्तन एवं शुद्धिकरण में सरलता एवं सुगमता हो।

पवित्र कुर्आन अल्लाह के पास “लौहे-ए-महफूज़” में है, जिसमें किसी भी प्रकार के परिवर्तन की सम्भावना नहीं है, फिर वहाँ से पूर्णतः सुरक्षित व सतर्कता के साथ ह० मुहम्मद स० पर अवतरित हुआ। पवित्र कुर्आन के अवतरण से पहले एक अन्य दशा सत्य सपनों के द्वारा आरम्भ हुई, जबकि आप स० को एकान्त में अल्लाह को याद करना प्रिय हो गया। इसके लिए आप स० ‘हिरा’ नामक गुफा में जाकर कई-कई रात उपासना करते रहते थे। नबुव्वत का समय आरम्भ होने पर इसी गुफा में एक दिन आप स० के पास अल्लाह की ओर से एक फरिश्ता आया, और पवित्र कुर्आन की आयतें पढ़ाई। इस प्रकार पवित्र कुर्आन के अवतरण का क्रम आरम्भ हो गया।

पवित्र कुर्आन के अवतरण का आरम्भ बृहस्पतिवार के दिन, रमज़ान के महीने की १७ तारीख को ह० मुहम्मद स० के जन्म के ४१ वें वर्ष अर्थात् ६१० ई०, मगरिब की नमाज़ के बाद हुआ। इस समय ह० मुहम्मद स० पवित्र कअबः से ३ मील दूर, असब की घाटी में ‘हिरा’ नामक गुफा में थे। जो ‘जब्नुनूर’ अर्थात् ‘प्रकाश पर्वत’ की ऊँचाई पर स्थित है, इस समय आप स० अल्लाह की याद में थे। ‘हिरा’ गुफा में ५ आयतों का अवतरण हुआ, जो सूरह ‘इकरा’ का आरम्भ है, इसके बाद कुछ दिन अवतरण का क्रम रुक गया, जिसके कारण ह० मुहम्मद स० उदास रहे, परन्तु पुनः ‘वह्य’ का क्रम आरम्भ हो गया। इस बार आप स० को जिब्राईल (फरिश्तों) अपने वास्तविक रूप में दिखाई दिये। यदि कोई सामान्य इन्सान उनको देख लेता तो अवश्य ही बेहोश हो जाता। इस बार भी आप स० पर कुर्आन की आयतें अवतरित हुई। पवित्र कुर्आन का अवतरण कभी संक्षेप में तो कभी पूरी सूरत के रूप में होता। यह सब आप स० के हृदय में सुरक्षित होता रहा। ईशवाणी का प्रचार इस्लाम के अनुयायी मुसलमानों में पास और दूर के क्षेत्रों में होता रहा। मुसलमान आप स० से ईशवाणी को सुनते और याद कर लेते। मदीने आ जाने के बाद भी ईशवाणी का क्रम जारी रहा और आप स० इसको लिखवाते रहे, यहाँ तक की अराफात के मैदान में अन्तिम ‘वह्य’

अवतरित हुई। ये शुक्रवार की शाम ६ जिल्हियज्ज १० हिजरी को अवतरित हुई। यह अन्तिम आयत सूरह 'माइदा' की तीसरी आयत है। इस तरह अवतरण का समय 22 वर्ष, 2 माह और 12 दिन होता है।

पवित्र कुर्आन का पुस्तकीय क्रम उसके अवतरण के क्रम से भिन्न रखा गया है। यह क्रम सूरह 'फातिहा' से आरम्भ होकर सूरह नास पर समाप्त होता है। पवित्र कुर्आन में 30 पारे हैं, जिनमें 114 सूरतें हैं, 6666 आयतें हैं, वाक्यों की संख्या 77439 है, शब्दों की संख्या 323937 हैं, 557 रूकुअः हैं और 7 मंजिलें हैं।

पवित्र कुर्आन की प्रथम व अन्तिम आयतें

सबसे पहले सूरह 'अलक' की पाँच आयतें हैं। इनमें पढ़ने और पढ़ाने को अल्लाह के नाम के साथ जोड़ने को कहा गया है। एक उम्मी (जिसने किसी मनुष्य से पढ़ना लिखना न सीखा हो) के लिए यह आदेश बड़ा महत्व रखता है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि इस उम्मत में आरम्भ से ही ज्ञान को विशेष महत्व दिया गया है। इसको अल्लाह के नाम के साथ जोड़ने में यह संकेत दिया गया है कि ज्ञान को संसार के स्वामी अल्लाह के अधीन बना कर प्राप्त करना है। इन्ही आयतों में 'कलम' का वर्णन है, जो ज्ञान के विस्तार, प्रचार और युगों-युगों तक इसके लाभ क्षेत्र को विस्तृत करने का साधन है।

अपने रब का नाम लेकर पढ़िए जिसने पैदा किया, और जिसने इन्सान को लोथड़े से पैदा किया, और आप पढ़ीए आप का रब बहुत करीम है, और जिसने (इन्सान को) कलम के द्वारा पढ़ना सिखाया, और इन्सान को वो चीज़ें सिखाई जिनको वो नहीं जानता था। (अलक 1)

और उस दिन से डरते रहो जबकी तुम अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे, फिर हर इन्सान को अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला मिलगा और उन पर कुछ भी जुल्म न होगा। (अल-बकर 281)

यह आयत इन्सानों के अन्त की ओर इशारा करती है कि यह लोक अन्त में छोड़ना है। इस लोक में किये कर्मों का हिसाब देना होगा। अच्छे और बुरे कर्मों के अनुसार फल या दण्ड भोगना होगा। इस अन्तिम आयत के अवतरण के बाद ह० मुहम्मद स० मात्र ६ दिन और जीवित रहे, इसके बाद इस संसार से चले गये।

मक्की और मदीनी सूरतें

ईशदूत की उपाधि मिलने के बाद १३ साल ह० मुहम्मद स० मक्का शहर में रहे। इसके बाद अल्लाह के आदेश पर मदीना आ गये (हिजरत की)। मक्के से मदीने की दूरी 450 किमी है। मदीना आने से पहले जो सूरतें अवतरित हुई, वो

मक्की सूरतें कहलाई। मदीना आने के बाद जो सूरतें अवतरित हुई वो मदनी सूरतें कहलाई। मक्की सूरतें ८६ और मदनी सूरतें २८ है। मक्की आयतें और सूरतें छोटी एवं संक्षेप में है और मदनी आयतें व सूरतें लम्बी एवं विस्तृत हैं। मक्की सूरतों में अधिकतर एकेश्वरवाद, रिसालत, परलोक और मरने के बाद उठाये जाने का वर्णन है। इन सूरतों में आप स० को तसल्ली, पिछली जातियों के साथ घटी घटनायें, अल्लाह के आदेश और संविधान के बारे में बताया गया है। इसके विपरीत मदनी सूरतों में पारिवारिक और सामाजिक कानून, युद्ध और जिहाद के कानून, सीमाये और फर्ज बताये गये हैं। मक्की सूरतों में बहुत सुन्दर भाषा शैली का प्रयोग किया गया है, उनमें संकेत, एकरूपता और उदाहरण अधिक हैं और इसमें शब्द शैली विस्तृत है, इसके विपरीत मदनी सूरतों में सरल शैली का प्रयोग किया गया है।

सूरतों और आयतों का क्रम

पवित्र कुर्आन का जो क्रम आज है, ये उसके अवतरण का क्रम नहीं है। पवित्र कुर्आन हालात और आवश्यकता के अनुसार अवतरित होता रहा। पढ़ने के लिए इसका क्रम दूसरा रखा गया है। जैसे पवित्र कुर्आन में सूरह 'अलक' का क्रम ८६ है जबकि ये सबसे पहले अवतरित हुई है। सूरह 'फातिह' क्रम में सबसे पहले है, जबकि अवतरण के क्रम में ये पाँचवे नम्बर पर है। ये क्रम भी अल्लाह की ओर से निर्धारित किया गया है। जब कोई सूरत अवतरित होती तो जिब्राईल उसके क्रम को याद करवा देते थे, जो लिख लिया जाता था। आप स० ने अपनी ओर से इनमें कुछ नहीं किया, जैसा आप स० से अल्लाह ने कहा वैसा ही आप स० ने किया। यहाँ तक की सूरतों के नाम, संख्या, आरम्भ और अन्त, उनमें आयतों की संख्या सब कुछ अल्लाह की ओर से निर्धारित किया गया। आप स० की राय, इच्छा और पसन्द का इसमें योगदान नहीं है। पवित्र कुर्आन को पारे, रूकुउ और मंजिलों में बाँटने का काम धार्मिक ज्ञानियों ने किया। जिससे इसको पढ़ने और याद करने में आसानी हो। यही कारण है कि इन निशानियों को पवित्र कुर्आन की आयतों से बाहर लिखा जाता है।

पवित्र कुर्आन को किताब का रूप देना

पवित्र कुर्आन का विशेष गुण जो दूसरी आसमानी किताबों को नहीं मिला वो ये है कि इसको अवतरण के दिन से ही बराबर पढ़ा जाने लगा। इस प्रकार इससे मार्ग दर्शन मिलने लगा। इसके शब्दों व वाक्यों में किसी सन्देह का कोई स्थान नहीं रहा। इसके अवतरण के चौथे दिन से ही इसको लिखना आरम्भ हो गया। सईद के पुत्र खालिद वो पहले भाग्यशाली इन्सान बने, जिन्होंने इस्लाम लाने के बाद सबसे पहले ईशवाणी को लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप स० ने

अपने साथियों को ईशवाणी लिखने के काम पर लगा रखा था। एक सहाबी रबीइ के पुत्र हंज़ला रज़ि० तो परछाई के समान आप स० के साथ रहते, ताकि जैसे ही ईशवाणी का अवतरण हो उसे लिख लिया जाए। जब ईशवाणी को लिख लिया जाता तो ह० मुहम्मद स० उसको पढ़वा कर बड़े ध्यान से सुनते और जब इसके शब्दों और उच्चारण को प्रमाणित कर देते तो इसको लिखने और याद करने का काम शुरू हो जाता। इस प्रकार याद करने वाले याद कर लेते और लिखने वाले लिख लेते। इस प्रकार पवित्र कुर्आन की सुरक्षा आप स० की देख-रेख और जिब्राईल फरिश्ते के माध्यम से पूर्ण रूप से की गयी।

अन्य धर्मों के विद्वानों ने भी इस बात को माना है। सर विलियम मियोर लिखते हैं कि “इस बात के ठोस प्रमाण मौजूद हैं कि आप स० के जीवन में पूरा कुर्आन लिखा हुआ सहाबा के पास मौजूद था। डा० राडवेल लिखते हैं कि “पवित्र कुर्आन के लिखी हुई प्रति ह० मुहम्मद स० के काल में मौजूद थी।

पवित्र कुर्आन को एकत्र करना

(1) अल्लाह ने पहले दिन से ही ये निर्धारित कर रखा था कि पवित्र कुर्आन को किस रूप में और कब अवतरित करना है और फिर किस प्रकार इसकी आयतों और सूरतों को क्रमबद्ध करना है। इस प्रकार इसको एकत्र करने और सुरक्षा की सारी बातें पहले से निर्धारित थी।

कह दीजिए, “इसे उतारा है, उसने जो आसमानों और ज़मीन के भेदों को जानता है। (फुर्कान 6)

और क्यों न हो ये किताब अल्लाह की कृपा का परिणाम है और इसको अल्लाह ही ने अवतरित किया है। इसलिए इसको एकत्र करने और अवतरण का क्रम पहले से ही अल्लाह ने निर्धारित कर रखे होंगे।

(2) फिर जब इस किताब के बारे में अल्लाह के ज्ञान ने लोहे महफूज का रूप लिया, जिसको अल्लाह के ज्ञान का प्रकाश कहना चाहिए, तो उस समय भी ये दोनों बातें तय होंगी।

बल्कि यह तो वह कुर्आन है जो बड़ी शान वाला है, लौहे महफूज (सुरक्षित पट्टिका) में। (बुरुज 21-22)

लौहे महफूज का दूसरा नाम ‘अल किताब’ है। ये ज्ञान की वास्तविकता को अपने में समाए हुए है।

ज़मीन पर चलने वाला, या दो परों से उड़ने वाला, कोई परिन्दा हो, यह सब तुम्हारी ही तरह के (अल्लाह के) बनाए हैं, हमने किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है। (अनआम 38)

सच्चाई और ज्ञान के इस खज़ाने को पवित्र कुर्आन ने 'उम्मुल किताब' कहा है।

अल्लाह जिसे चाहता है मिटा देता है, और (जिसे चाहता) बाकी रखता है, और उसी के पास अस्त किताब है। (राद 39)

ह० मुहम्मद स० पवित्र कुर्आन को याद करवाने के अतिरिक्त लिखवाने का भी पूरा ध्यान रखते थे। हज़रत उस्मान रज़ि० बताते हैं कि आप स० का मामूल ये था कि जब पवित्र कुर्आन का अवतरण होता तो आप लिखने वाले को निर्देश देते कि इसको किस सूरह में किस आयत के बाद लिखा जाए।

ह० मुहम्मद स० के जीवन में ही आपके साथियों ने पवित्र कुर्आन की सुरक्षा का इत्तेज़ाम याद करके और लिखकर कर लिया था। लगभग 10,000 सहाबा को पवित्र कुर्आन याद था। उन सहाबा को गिनना मुश्किल है जिनके पास पवित्र कुर्आन लिखित रूप में था। ईशवाणी को लिखने के लिए उस दौर में पाई जाने वाली मज़बूत और सुरक्षित चीज़ों को चुना गया। जैसे कागज़ के टुकड़े, चमड़ा, पत्थर की सफेद पतली-पतली तख्तियाँ, ऊँट की हड्डी, खजूर की छाल आदि जिससे ये लेखनी महीनों और सालों के गुज़रने के बाद भी सुरक्षित रहे।

आप स० ने अपने जीवन में पवित्र कुर्आन को याद करवा दिया था और लिखवा दिया था। हाफिज़ों के दिलों में ये 'लौह महफूज़' के समान सुरक्षित था। किन्तु ये एक किताब के रूप में नहीं था, बहुत सारी चीज़ों पर अलग-अलग लिखा था और बहुत से सहाबा के पास सुरक्षित था। ह० अबुबक्र रज़ि० के दौर में मुसैलमा कज़ाब के विरुद्ध युद्ध में 700 सहाबा शहीद हो गये। वक्त की पुकार, हालात और आने वाले खतरों को महसूस करते हुए ह० उमर की बैचेनी बढ़ गयी और उन्होंने ह० अबुबक्र को तुरन्त पवित्र कुर्आन को किताब के रूप में एकत्र करने को कहा। ह० अबुबक्र ने उनकी बात को माना और ह० मुहम्मद स० से सीधे सुने हुए हिस्सों को अरबी भाषा में एकत्र करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार पवित्र कुर्आन को एकत्र किया गया और ये 'मुसहफ़' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सहाबा ने इसकी नकल करके बहुत से प्रति तैयार कर ली। क्योंकि सहाबा बहुत से कबीलों में रहते थे और उनके बोल-चाल का विधि अलग-अलग थी, वो उसी अन्दाज़ में पवित्र कुर्आन को पढ़ते थे। जिसकी उनको इजाज़त थी, पर पढ़ने की विधि के इस अन्तर को अरबी ना जानने वाले और नये मुसलमान होने वाले लोग नहीं समझ पाते और इससे अपसी मतभेद होने की आशंका थी। इसलिए ह० उस्मान की खिलाफत के दौर में इससे लोगों को बचाने का प्रबन्ध किया गया। ह० उस्मान ने 'मुसहफ़' को ह० हफ़ज़ा रज़ि० के यहाँ से मंगवाया और उसकी नकल करने के लिए साबित के पुत्र जैद, जाबिर के पुत्र अब्दुल्लाह,

आस के पुत्र सईद, हारिस के पुत्र अब्दुर्रहमान रज़ि० को नियुक्त किया। इन्होंने वास्तविक कुरैश वाली विधि में पवित्र कुर्आन की बहुत सी प्रति तैयार करके उसे आम कर दिया। ये प्रति ह० अबुबक्र के दौर में एकत्र की गयी प्रति के समान थी और ह० मुहम्मद स० के दौर से प्रमाणित थी। इस प्रकार पवित्र कुर्आन के बारे में किसी सन्देह का कोई स्थान न रहा। इस प्रकार पवित्र कुर्आन को किताब के रूप में अरब के विभिन्न शहरों में भेज दिया गया, जिससे सब लोग एक ही विधि में कुर्आन पढ़ें। इसके साथ ही एक अरबी को जानने और पढ़ने वाले ज्ञानी को भी भेजा जाता, जिससे इसके उच्चारण में किसी प्रकार का मतभेद न हो। इसमें से एक प्रति ह० उस्मान ने अपने पास रख ली, जिसको 'मुस्हफ उस्मानी' कहते हैं। ह० उस्मान को इस कार्य के लिए 'जामेउल कुर्आन' कहा जाता है यानि उम्मत को एक कुर्आन पर जमा करने वाला। जहाँ तक पवित्र कुर्आन को एकत्र करने की बात है तो वो ह० मुहम्मद स० और ह० अबुबक्र रज़ि० के दौर में हो चुका था। ह० उस्मान के इस कार्य को सारे लोगों ने देखा और सहाबा ने इसको प्रमाणित किया। ह० अली रज़ि० कहते हैं कि "उस्मान के बारे में कोई बात उनकी भलाई के सिवा न कहो, क्योंकि अल्लाह की कसम उन्होंने 'मुस्हफ' के बारे में जो काम किया वो हम सब के सामने और हमारी राय लेकर किया"। पवित्र कुर्आन की ये प्रतियाँ इस समय तक मात्राओं से खाली थीं, इसलिए अरब के बाहर के लोगों को इसे पढ़ने में मुश्किल होती थी। इसलिए इसमें मात्रायेँ लगाई गयी, जिससे अरब के बाहर के लोग इसे पढ़ सके। इन 'मुस्हफ उस्मानी' में से दो प्रतियाँ आज भी मौजूद और सुरक्षित हैं। एक ताशकन्द में और दूसरा इस्तमबूल (तुर्की) में है। ये अल्लाह की क़ुदरत की निशानी और हैरत की चीज़ बने हुए हैं। इस प्रकार पवित्र कुर्आन आज भी पूरी तरह सुरक्षित है।

यह एक ज़बर्दस्त किताब है। असत्य उस तक न उसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, यह उसकी ओर से नाज़िल हुई है जो हिकमत वाला खूबियों वाला है। (हमीम सजदा 41-42)

बेशक हम ही ने नसीहत नामा उतारा है और हम ही इसके निगहबान (संरक्षक) हैं। (हिज़्र 9)

इस कुर्आन का जमा करना और पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (कियामह 17)

अध्याय छः

पवित्र कुर्आन की प्रतिष्ठा

पवित्र कुर्आन का आधार गुण यह है कि यह सत्य मार्ग दिखाने वाला है। इसमें किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है। इस सच्चाई को पवित्र कुर्आन ने इन शब्दों में बताया है-

इस किताब में कोई सन्देह नहीं, रहनुमा है परहेज़गारों के लिए।
(अल-बकर 2)

इससे बढ़कर इसकी और क्या बढ़ाई हो सकती है कि अल्लाह ने इसको नसीहत, स्वास्थ्य, भलाई, सद्मार्ग और कृपा कहा है।

ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से नसीहत (उपदेश) और उन बीमारियों के लिए जो सीनों में छुपी हुई हैं शिफा आ चुकी है। और वो ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत है। कह दीजिए यह कुर्आन अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रहमत से अवतरित हुआ है, और लोगों को चाहिए कि इसको पाकर खुश हों, यह उस (माल) से कहीं बेहतर है जिसको ये जमा करने में लगे हैं। (यूनुस 57-58)

ये कुर्आन तो तमाम जगहों के लिए एक नसीहत है। (साद 87)

ये कुर्आन आप स० और आपकी उम्मत के लिए बड़े सम्मान (फख्र) की चीज़ है।

यकीनन ये कुर्आन आप स० और आप की क़ौम के लिए बड़े सम्मान की चीज़ है और जल्द ही तुमसे इसके बारे में सवाल किया जाएगा। (जुखरुफ)

पवित्र कुर्आन की यह श्रेष्ठता है कि ये अल्लाह की ओर से अवतरित किया गया है और पूरी तरह सच्चा है, लोगों को सत्य मार्ग की ओर बुलाता है और इसकी सब बातें भलाई और सच्चाई से भरी हैं।

ऐ रसूल बेशक हमने आप की ओर हक के साथ किताब (पवित्र कुर्आन) अवतरित की है, तो आप अल्लाह की उपासना सिर्फ उसी की आज्ञा पालन करते हुए करें। (जुमर 2)

पवित्र कुर्आन की हर तरह से सुरक्षा की ज़िम्मेदारी भी अल्लाह ने खुद अपने ऊपर ली है। और कहा

बेशक इस (पवित्र कुर्आन) को जमा करने और पढ़ाने के ज़िम्मेदार हम खुद हैं। तो जब हम इसको (जिब्राईल के माध्यम से) पढ़ें तो इसके बाद आप भी पढ़ें फिर इसकी व्याख्या करना, समझाना भी हमारे ज़िम्मे है। (क़ियामह 17-19)

पवित्र कुर्आन की विशेषताओं में से एक विशेषता यह भी है कि इसका अर्थ और व्याख्या बहुत आसान है। इसके शब्दों और शैली में भी बड़ी सरलता पाई जाती है। इसको समझने और याद करने में कोई कठिनाई नहीं होती। यही कारण है कि दुनिया में करोड़ों लोग इसके हाफिज़ (याद करने वाले) और अनगिनत लोग इसकी व्याख्या करने वाले हैं। ये चीज़ इसकी श्रेष्ठता और विशेषताओं का प्रमाण है।

हमने पवित्र कुर्आन को आसान कर दिया है, याद करने वालों के लिए, कोई है नसीहत हासिल करने वाला (कमर)

पवित्र कुर्आन की श्रेष्ठता का इस सच्चाई से भी पता चलता है कि वो लोगों को ऐसी मानसिकता और कर्म के रास्ते पर चलाता है, जो हर तरह से सीधी और सरल है।

बेशक ये कुर्आन वो रास्ता दिखाता है जो सबसे सीधा है और ईमान वालों को जो भलाई के कार्य करते रहते हैं। खुशखबरी सुनाता है कि उन्हें बड़ा अज़्र और बदला मिलने वाला है। (बनी इसराईल 9)

तीन प्रकार की उपासनाओं में व्यस्त रहना पवित्र कुर्आन के अनुसार सबसे बड़ी उपासना है। 1. कुर्आन पढ़ना, 2. नमाज़ में व्यस्त होना, 3. इनफाक (अल्लाह के रास्ते में खर्च करना)

जो लोग अल्लाह की किताब को पढ़ते हैं और नमाज़ कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें रिज़क दिया है उसमें से खुले और छुपकर खर्च करते हैं, यकीनन वो ऐसी तिजारत (व्यापार) के उम्मीदवार हैं, जिसमें हरगिज़ नुकसान नहीं होगा। (फ़ातिर 29)

अल्लाह के रसूल ने फरमाया "तुममें से बेहतर वो शख्स है जो कुर्आन का ज्ञान प्राप्त करे और दूसरों को सिखाए" (हदीस)

अन्य ईशग्रन्थों में पवित्र कुर्आन का स्थान

पवित्र कुर्आन से पहले भी इस संसार में ईशग्रन्थ आए थे। किन्तु पवित्र कुर्आन के अतिरिक्त कोई भी ईशग्रन्थ अपने वास्तविक रूप में नहीं बचा था। उनमें परिवर्तन किये जा चुके थे। ह० मूसा अलै० पर अवतरित हुई किताब तौरैत, ह० मूसा के बाद लिखी गयी और इसमें कुछ अध्याय मूसा अलै० के आने से पहले और बाद के एवं मूसा अलै० के आने की भविष्यवाणी के बढ़ाये गये हैं। इसमें और अधिक परिवर्तन किये जाते रहे और इसके अनुवाद भी एक दूसरे से भिन्न थे। इन्जील का भी यही हाल है इसको भी ईसा अलै० के बाद उनके शिष्यों ने सूचीबद्ध किया और इसमें अपनी ओर से ईसा अलै० के जीवन की

घटनाएं और उनके कथनों को मिला दिया। इस प्रकार इन्जील भी अल्लाह के कथनों और शब्दों पर नहीं बची। यहाँ तक की ईसा अलै० के वाक्यों का भी से कहना कठिन है कि वो ईसा अलै० ने कहे भी है या नहीं। इसके अतिरिक्त कथनों में भी परस्पर टकराव मिलता है।

इसलिए इन्जील और अन्य किताबों और उनमें बताई घटनाओं में बहुत अन्तर पाया जाता है। ईसाई और यहूदी इसको गलत भी नहीं समझते। क्योंकि पवित्र कुर्आन से पहले ईशवाणी के शब्दों और अर्थों को सुरक्षित रखने की कल्पना भी नहीं की जाती थी। यही दशा दूसरी आसमानी किताबों की भी थी।

पवित्र कुर्आन जो मुहम्मद स० पर अवतरित हुआ इसके बारे में आप स० को ये निर्देश दिये गये थे कि वो अपनी ओर से इसमें कुछ भी घटा या बढ़ा नहीं सकते थे। यहाँ तक कि मुहम्मद स० को ये अधिकार भी नहीं था कि वो कोई शब्द हटा कर उसके स्थान पर उस जैसा दूसरा शब्द भी लगा सकें। इसलिए अल्लाह जिब्राईल नामक फरिश्ते को ईशवाणी देता और वो आप स० को जाकर सुनाते। ह० मुहम्मद स० इन शब्दों को उसी रूप में लोगों को सुनाते। ह० मुहम्मद स० को ये निर्देश दिये गये थे कि आप पवित्र कुर्आन को पढ़ने में जल्दी न करें। पहले पवित्र कुर्आन को उसके शब्दों और अर्थों के साथ अच्छी तरह याद कर लें। उसके बाद लोगों को सुनाए। इसका उद्देश्य यह था कि पवित्र कुर्आन जिस प्रकार आपके दिल व दिमाग पर अक्षर डाल रहा है, उसी प्रकार इसके अर्थ व उद्देश्य भी प्रभाव डालें। जैसे-जैसे ह० मुहम्मद स० पर कुर्आन अवतरित होता जाता उसको लिख लिया जाता। इसके लिए लिखने वाले भी तय किये गये थे। ह० मुहम्मद स० साल में एक बार इसको दोहराते थे। ईशवाणी के द्वारा आप स० को प्रत्येक सूरह और आयत के सम्बन्ध में निर्देश दिये जाते थे कि इसका स्थान कहाँ है। यहाँ तक कि इसको क्रमबद्ध करने में भी आप स० को कोई अधिकार नहीं था जैसा अल्लाह की ओर से आदेश होता वैसा ही किया जाता। इस प्रकार पवित्र कुर्आन की सुरक्षा की गयी और इसको एक किताब का रूप दे दिया गया। यह किताब आज भी अपने वास्तविक रूप में है और सारे संसार के मुसलमानों के पास है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसकी प्रतिष्ठा आज भी वैसी है जैसा कि इसके अवतरण के समय में थी और कयामत तक इसी प्रकार रहेगी।

पवित्र कुर्आन के बारे में अन्य धर्म के विद्वानों के विचार

श्रीमान कान्ट ने पवित्र कुर्आन के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं “बुद्धि स्तब्ध है कि इस प्रकार की वाणी एक ऐसे मनुष्य के मुख से निकली जो पढ़ा लिखा नहीं था। पश्चिम ने स्वीकार कर लिया है कि शब्द और अर्थ हर प्रकार से कोई भी इन्सान इसका उदाहरण नहीं दे सकता। ये वही वाणी है

जिसकी उच्च निबन्ध रचना ने ख़ताब के पुत्र उमर को सन्तुष्ट कर दिया और उन्होंने इस्लाम को स्वीकार कर लिया। ये वही वाणी है कि जब ईसा अलै० के जन्म के विषय में इसके कथनों को अबितालिब के पुत्र जाफर ने बादशाह हब्बा के दरबार में पढ़ा तो उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे और वो चिल्ला उठा 'ये वाणी उसी धारा से निकली है जिससे ईसा अलै० की वाणी आई थी।

एन्साईक्लोपीडिया ब्रिटैनिका भाग-16 पेज 599 में है- पवित्र कुर्आन के विभिन्न भागों के अर्थ एक दूसरे से अलग हैं। बहुत सी आयतें धर्म और सदाचार के विषय पर हैं। अल्लाह की शक्ति और इतिहास और सन्देशों को सूचना देने के द्वारा, इसमें अल्लाह की बढ़ाई और कृपा और सच्चाई की याद दिलाई गयी है। विशेषकर ह० मुहम्मद स० के द्वारा अल्लाह को एक और सर्वशक्तिमान घोषित किया गया है। मूर्ति पूजा और मानव पूजा और अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों की उपासना को अधर्म कहा गया है। पवित्र कुर्आन के बारे में ये सत्य है कि ये दुनिया की किताबों में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली किताब है।

इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध इतिहासकार डा० गिबन अपनी प्रसिद्ध किताब के 5 वें संस्करण के 5 वें अध्याय में लिखते हैं- पवित्र कुर्आन की श्रेष्ठता और विशेषता को प्रशान्त महासागर से लेकर गंगा तक ने स्वीकार कर लिया है कि ये किताब संसद की रूह है और एक बुनियादी कानून है और सिर्फ धर्म की बुनियाद ही के लिए नहीं बल्कि पुरस्कार और सज़ा के आदेशों के लिए भी एक नियम का स्थान रखती है। उन कानूनों के लिए भी है जिन पर ये सांसारिक व्यवस्था टिकी है, जिससे मानव जीवन जुड़ा है। जिसका मानव जीवन की व्यवस्था और उसके सुधार से गहरा सम्बन्ध है। सत्य यह है कि ह० मुहम्मद स० की लाई हुई व्यवस्था सब पर हावी है। ये व्यवस्था ऐसी बुद्धिमत्ता और ऐसे कानून पर बनाई गयी है कि सारे संसार में उसकी मिसाल नहीं मिल सकती।

पवित्र कुर्आन पिछली किताबों का संरक्षक और ईशवाणी के अवतरण की श्रेष्ठ व उच्चतम कड़ी है।

पवित्र कुर्आन का पिछली किताबों और विशेष रूप से नबियों के सम्बन्ध में क्या धारणा है। इसको विस्तारपूर्वक समझाने के लिए हम तीन प्रकार से वर्णन कर सकते हैं।

(1) इस सम्बन्ध में पहली बात यह है कि पवित्र कुर्आन इस बात को स्वीकार नहीं करता कि समय या युग के बीतने के साथ सच्चाई बदल जाती है या विभिन्न जातियों के झगड़े सच्चाई का रूप बदल सकते हैं। सच्चाई सदा एक है इसको बाँटा नहीं जा सकता या इस प्रकार कहना चाहिए कि वो वास्तविकता है जो हर दौर में आदर और स्वीकार करने योग्य है।

इन्ही विश्वव्यापी सच्चाईयों को बताने और फैलाने के लिये नबियों को भेजा गया। एक मुसलमान के लिए पवित्र कुर्आन को अपने लिए मार्गदर्शन मानने के साथ ही ये भी आवश्यक है कि वो ऐसे लोगो पर विश्वास रखे जिन्होंने अलग-अलग दौर में सच्चाई के इस काफिले को आगे बढ़ाने की कोशिश की। पवित्र कुर्आन ने इन समस्त सच्चाईयों को अपने अन्दर समेट लिया है और इनको प्रमाणित कर दिया है। इसलिए पवित्र कुर्आन बार-बार यह बात कहता है कि तुम ईशवाणी और नबियों के आने के क्रम पर विश्वास रखो जो आदम अलै० से आरम्भ होकर मुहम्मद स० पर आकर सम्पन्न हुआ।

ऐ ईमान वालो ईमान रखो अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी, और उन किताबों पर भी जो पहले आ चुकी हैं। (निसा 136)

यूँ कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पैगाम पर जो हमारी तरफ उतरा, और जो इब्राहीम, इस्हाक, याकूब, और उनकी औलाद पर उतारा गया, और उस पर भी ईमान लाए जो मूसा, ईसा और तमाम पैगम्बरों को उनके रब की ओर से दिया गया। हम ईमान लाने में उनमें से किसी के बारे में फर्क नहीं करते, हम तो अल्लाह के सामने सर झुकाने वाले हैं। (अल-बकर 136)

पिछले नबियों और बीत चुकी सच्ची बातों को अपने में समा लेने के गुण को पवित्र कुर्आन ने 'मुहइमिन' के नाम से पुकारा है। इस सम्बन्ध में दूसरी विशेष बात ये है-

और हम ने तुम्हारी ओर ये किताब हक के साथ उतारी, जो उस किताब की तस्दीक करती है जो इसके पहले से मौजूद है और जो उनके संरक्षक का स्थान रखती है। (मायदा 47)

मुहइमिन अल्लाह का भी गुण है-

वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं, वह बादशाह है बड़ा पवित्र, पूरी तरह सत्तामती और अमन देने वाला, रक्षा करने वाला (हश्श 23)

मोहइमिन शब्द का अर्थ बताने के लिए हिन्दी में कोई एक शब्द काफी नहीं है। इन सारे प्रमाणों पर विचार किया जाए तो ये पता चलेगा कि पवित्र कुर्आन जब अपने अवतरण से पहले की शिक्षाओं के बारे में शब्द 'मोहइमिन' का प्रयोग करता है तो उसका अर्थ ये होता है कि पवित्र कुर्आन ने एक गवाह और संरक्षक के रूप में न सिर्फ पिछले ज्ञान की आत्मा को सुरक्षित रखा है बल्कि एक संरक्षक के रूप में इस बात की भी रक्षा की है कि कहाँ-कहाँ इस आत्मा को जख्मी किया गया है और कहाँ-कहाँ विचारों, आस्था और अल्लाह के आदेशों में परिवर्तन किये गये हैं। किन्-फिन जगहों पर सच्चे ज्ञान के समझने और उस पर अमल करने में पिछली कौमों ने गलतियाँ हुईं। पवित्र कुर्आन ने इन सभी चीज़ों की रक्षा की है।

पवित्र कुर्आन और अरबी भाषा

कोई भी भाषा जो इन्सान प्रयोग करता है उसमें तीन पहलु होते हैं। एक तो असल बात जो दूसरो तक पहुँचाता है, दूसरा वह रूप जिसमें वो कही जा रही है। तीसरा उसको कहने का अंदाज़ व तरीका। इन तीनों का ध्यान रखकर बात सही ढंग से कही जा रही है और इसी के अनुसार इसका प्रभाव पड़ता है। किसी बात का उद्देश्य कभी सिर्फ बात कहना होता है और कभी उसके द्वारा दिल और दिमाग को एक दिशा देना होता है। जहाँ तक किसी बात को बताने का सम्बन्ध है तो यह साधारण योग्यता का काम है जो उस किसी भाषा का जानने वाला साधारण आदमी कर सकता है। किन्तु यदि दिल व दिमाग को दिशा देनी हो यह उसके लिए अनुकूल शब्दों को चुनकर उनको उपयुक्त स्थान पर प्रयोग करने से होता है। बात को कहने वाला जितना इन बातों का ध्यान रखेगा उतना ही अच्छे से वो अपनी बात को कह सकेगा।

पवित्र कुर्आन अल्लाह का कलाम है जो सारे संसार को पैदा करने और पालने वाला है। वो इनको सिर्फ पैदा करने वाला ही नहीं है बल्कि इनकी क्षमताओं को भी पैदा करने वाला है। इस वाणी में मात्र बात को बताना ही नहीं बल्कि इन्सानों को उनके जीवन का उद्देश्य, उनकी सफलता और मुक्ति का मार्ग बताना है। लोगो के समझने की शक्ति और मन भी अल्लाह ही का बनाया हुआ है। उसके अतिरिक्त कौन इनके गुणों और समझने की शक्ति को जान सकता है। वो इस बात को भी अच्छी तरह जानता है कि किसी एक इन्सान के समझने की शक्ति दूसरे से किस प्रकार भिन्न है। इस अन्तर का किस प्रकार ध्यान रखा जाए। इन्सानों के लिए जो लाभदायक बातें हो सकती है वो सब इस संसार को बनाने वाले अल्लाह के अतिरिक्त कौन जान सकता है। इस लिए पवित्र कुर्आन में इन बातों के अनुकूल श्रेष्ठ वाणी का प्रयोग किया गया है। कम क्षमता वाले इन्सान के लिए क्या विषय हो सकता है और बुद्धिमान इन्सान के लिए किस प्रकार का विषय उचित है। ये एक ऐसी विशेषता है जिसने पवित्र कुर्आन को एक चमत्कारिक रूप दे दिया है जो इन्सानों की क्षमता से बाहर है। उद्देश्य और सफलता की ओर ले जाने के ये पहलु पिछले 1400 साल से खोजकर्ताओं और ज्ञानियों पर खुलते जा रहे हैं। आज 1400 साल से अधिक बीतने के बाद भी

नये-नये पहलुओं का खुलना जारी है। हर बात का एक छिपा हुआ दिल होता है और बात का उद्देश्य उसी में होता है। इसको बताने के लिए इसके भाव को बताने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जिसको इन्सान अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार प्रयोग करता है। प्रत्यक्ष उसके वस्त्रों के समान है और दिल उसके अन्दर छिपा हुआ होता है। प्रत्यक्ष को ही देखकर उसके अन्तःकरण या दिल को समझा जाता है। सारे जानदारों का दिल और विशेष रूप से इन्सानों के मन में बड़ी चंचलता, विशेषता और गहराई रखी गयी है। इन्सानों के अन्दर बहुत सी ऐसी बातें होती हैं कि उसको इन्सानों की कोशिश से लिखित रूप में लाना बहुत कठिन होता है। विशेष रूप से भावनाओं को प्रकट करना जैसे धमण्ड और आज्ञापालन, साहस और आत्मविश्वास, अभिमान, कार्यक्षमता, प्रसन्नता, प्रेम और घृणा, पसन्द-नापसन्द, आदि।

ये ऐसी भावनाएं हैं जिनको पूर्ण रूप से व्यक्त करने की क्षमता इन्सान में नहीं है। इन भावनाओं को यदि लिखित रूप दिया जाये तो हर लिखने पढ़ने वाला इन्हें समझ नहीं सकेगा। किन्तु इन्सानों को पैदा करने वाला इन सब बातों को जानता है। वो लिखने-पढ़ने वालों की क्षमता को भी जानता है। इसलिए इन्सानों को निर्देश देने में उसने जिस विधि का प्रयोग किया है उसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं हो सकता। इस प्रकार पवित्र कुर्आन उच्च प्रभाव और क्रान्ति लाने वाला है। क्योंकि इन्सानों को पैदा करने का उद्देश्य ही श्रेष्ठ रखा गया है। इस उद्देश्य के अनुसार ही इन्सानों को निर्देश दिये गये हैं। इस प्रकार अल्लाह की वाणी पवित्र कुर्आन सारी प्रभावी चीजों से भरा है। इनको पूरा करने में जिन बातों को श्रेष्ठ रखा गया है उनको समझना भी इन्सानों के बस से बाहर है। अल्लाह ने इस बात का ध्यान रखा है कि सुनने वालों की समझ के अनुकूल उन तक बात पहुँच जाये और कोई ये न कह सके की हमें तो पता ही नहीं था।

पवित्र कुर्आन को सुनने और पढ़ने वाले अरब वासी थे और अरबी भाषा को जानने वाले थे। अरबी भाषा को समझने वाले, बात की गहराई को समझने वाले और उनसे प्रभावित होने वाले थे। इसके कारण ही उन्होंने ईशवाणी से अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बहुत लाभ उठाया। ये सिलसिला आज तक जारी है। उन पर ये ज़िम्मेदारी डाली गयी कि वो इस वाणी को दूसरों तक पहुँचायें। इसलिए ये काम भी बहुत अच्छी तरह किया गया। जो लोग अरबी भाषा का अच्छा ज्ञान और क्षमता रखते हैं। वो पवित्र कुर्आन से इस प्रकार प्रभावित होते हैं कि उसका कोई और उदाहरण नहीं मिलता। वो पवित्र कुर्आन के शब्द-शब्द में छिपी विशेषताओं को देखकर चकित हो जाते हैं और ये कहते हैं कि ये किसी इन्सान की वाणी नहीं हो सकती। ये वास्तव में ईशवाणी है। वो

इससे लाभ उठाते हैं और इसका हक अदा करते हैं। किन्तु जो लोग विशेष रुचि रखते हैं और भाषा की गहराई और विशेषता को साधारण इन्सानों से अधिक जानते हैं। वो दूसरों की तुलना में इस बात को अधिक जानते हैं कि पवित्र कुर्आन भिन्न-भिन्न और प्रभावी विशेषताओं वाला है। इसका हर शब्द एक चमत्कार के समान है। इन्सान आवश्यकता के अनुसार इसको समझने और लाभ उठाने की सीमा में है। कोई भी इन्सान ऐसी वाणी नहीं बना सकता। यदि सारे इन्सान एक स्थान पर एकत्र हो जाए और पवित्र कुर्आन के जैसी वाणी बनाने की कोशिश करें तो ऐसा नहीं कर सकेंगे। पिछले दौर में कुछ लोगों ने इसके असफल प्रयास किये हैं। सबको ये आभास हो गया कि ये उनकी ओर से बनाया गया है। इस बात को अल्लाह ने साफ-साफ कह दिया है।

आप कह दीजिए कि यदि सारे इन्सान और जिन्न इस बात के लिए एकत्र हो जाए कि इस कुर्आन के जैसा कुर्आन ले आए (जबकि) उसके जैसा नहीं ला सकेंगे, चाहे एक दूसरे के मददगार बन जाए। (इसरा 88)

अल्लाह की ओर से इन्सानों को सफलता और मुक्ति का मार्ग दिखाने वाली अन्तिम किताब पवित्र कुर्आन है। अल्लाह की इच्छा पर चलने के लिए ये एक ऐसा प्रकाश है जिसका कोई भी इन्सान इन्कार नहीं कर सकता और यदि कोई ऐसा करता है तो वह वास्तविक और सदा रहने वाली सफलता से वंचित हो जाता है। पवित्र कुर्आन ईशवाणी होने के कारण पवित्र और श्रेष्ठ स्थान रखता है। इसलिए इसको पढ़ना भी उपासना करना है। इसके विषय और निर्देश संसारिक जीवन में सफलता और परलोक में मुक्ति का माध्यम बनते हैं। पवित्र कुर्आन अपने उच्च स्थान और विशेषताओं के कारण वास्तविकताओं और भेदों का एक गुलदस्ता है। जिसके अलग-अलग पहलु खुलते जा रहे हैं। इसके नये-नये लाभ सामने आते जा रहे हैं। इसकी ओर इशारा करते हुए खुद पवित्र कुर्आन ने कहीं इसको नूर यानि उच्च प्रकाशीय कहा है। कहीं इसको अल 'मुबीन' बात को खोलने वाला, कहीं इसको 'हकीम' यानि बुद्धि और हिकमत वाला कलाम, कहीं इसको अरबी यानि भाषा की सम्पूर्णता और स्पष्टता, कहीं इसको 'ज़िकरा' यानि याद दिलाने वाला कलाम, कहीं इसको 'हुदा' यानि मार्गदर्शन करने वाला कलाम, कहीं इसको फुरकान यानि सत्य और असत्य के बीच अन्तर बताने वाला, कहीं इसको 'रहमत' यानि अपने अनुयाइयों के लिए भलाई और दया का माध्यम बनने वाला, कहीं इसको 'शिफा' आत्मिक और शारीरिक रोगों को दूर करने वाला, कहीं इसको 'ज़िया' यानि प्रकाशीय, कहीं इसको 'मुबारक' यानि भूलोक और परलोक में बरकत देने वाला, कहीं इसको 'अज़ीज़' यानि दृढ़ और प्रभावी, कहीं इसको 'करीम' यानि सम्मान दिलाने वाला, कहीं इसको 'अली' यानि उच्च स्थान दिलाने

वाला, कही इसको 'उम्मुल किताब' यानि अल्लाह की ओर से संसार और उसके द्वारा पैदा की गई मख़लूक के लिए एक सम्पूर्ण जीवन विधान और अल्लाह के आदेशों का, व्यवस्था का एक संकलन है। इस रूप में पवित्र कुर्आन एक ऐसी किताब है जो हर प्रकार की विशेषताओं और खूबियों और हर प्रकार की मानवीय सफलता और आवश्यकता के लिए इससे बेहतर और कोई किताब नहीं है।

पवित्र कुर्आन इन्सानों को उनके स्वभाव और कामनाओं का ध्यान रखते हुए समझाता है और मार्गदर्शन करता है। इस ओर ध्यान दिलाने के लिए इसमें ऐसे उदाहरण हैं। जिनमें मानव स्वभाव और कामनाओं का पूरा ध्यान रखा गया है ऐसे उदाहरण बहुत प्रभावी शैली में पाये जाते हैं। ये पवित्र कुर्आन की भिन्न सूरतों में फैले हुए हैं। उदाहरण के तौर पर सूरह 'तकासुर' में कहा गया है कि वास्तविकता से रूठे हुये इन्सान में स्वार्थ और कामनायें, विचार और इच्छा इतने बढ़ जाते हैं। इसके लिए वो एक दूसरे से लड़ाई करने के लिए पूरी तरह तुल जाता है और अन्त में उसकी मृत्यु का समय आ जाता है। उस समय उसको अपने बुरे अन्जाम का पता चलता है कि हाय क्या हुआ और वो अपनी लापरवाही का अन्जाम नरक के रूप में देखता है। अब अपने ईश्वर के सामने जवाब और हिसाब देना है।

अल्लाह ने कहा है-

तुमको (माल-दौलत में एक दूसरे से बढ़ने की फिक्र ने) ग्राफिल (लापरवाह) कर दिया है, यहाँ तक कि तुम कब्रों तक पहुँच जाते हो। देखो तुमको बहुत जल्द पता चल जाएगा। फिर सुन लो तुम्हें बहुत जल्द पता चल जाएगा। सच तो ये है कि अगर तुम्हें सच्चा इल्म पता चल जाता, (तो दुनिया के पीछे न पड़ते), तुम ज़रूर नरक देखोगे। फिर तुम अपनी आँखों से ऐसा साफ-साफ देखोगे कि तुमको यकीन हो जाएगा। फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में ज़रूर सवाल किया जाएगा। (तकासुर)

इसी प्रकार सूरह 'माऊन' में भी अल्लाह ने ऐसे इन्सान के लक्षण बताये हैं जो स्वार्थ और मनमाने जीवन में डूबा है। अपने रब की आज्ञापालन करने से मना कर देता है और सत्य का पूर्णतः विद्रोही हो जाता है। वो पहले तो सत्य का इन्कार करता है। इसके बाद उसका हाल ऐसा हो जाता है कि वो दूसरों के साथ सहानुभूती से काम नहीं लेता। अनाथ को धुतकारता है और गरीब को खाना खिलाने से मना करता है। दिखावे के काम में लग जाता है और नमाज़ से बचता है। छोटी से छोटी चीज़ को भी देने में कंजूसी करता है।

क्या आप ने उस आदमी को देखा जो बदले के दिन को झुठलाता है, सो ये वही है जो यतीम को धक्के देता है, और मिसकीन (मुहताज) को खिलाने की

तर्गिब (प्रोत्साहन) नहीं देता। तो ऐसे नमाज़ियों के लिए तबाही है, जो अपनी नमाज़ से गाफिल रहते हैं, जो दिखावा करते हैं, और मामूली चीज़ें भी (थोड़ी देर के लिए) नहीं देते। (माऊन)

इसी प्रकार सूरह अल अम्र देखे। इस छोटी सी सूरत में अल्लाह सफल इन्सान के लक्षण बताता है। जीवन के बड़े नुकसान से वही इन्सान बच सकता है जिसने अपने रब के आदेशों को स्वीकार किया हो और उसके अनुसार सभ्य कर्म किये हो। एक दूसरे को सभ्य कर्म करने के लिए प्रोत्साहित किया हो। सत्य की ओर बुलाने में उसको जो परेशानियाँ आए या विरोध का सामना करना पड़ा हो। उसमें संयम से काम लिया हो और आपस में संयम से काम लेने को कहा हो।

अल्लाह ने कहा है-

ज़माने की कसम, बेशक इन्सान बड़े धाटे में है, मगर उन लोगों के सिवा जो ईमान लाये और भले काम करते रहे और एक-दूसरे को हक की नसीहत करते रहे, और सब की ताकीद (प्रोत्साहित) करते रहे। (अम्र)

इस प्रकार यदि देखा जाए तो पवित्र कुआँन में इन्सानों के मार्ग दर्शन और भलाई के बहुत से उदाहरण मिलते हैं। जो उनके स्वभाव और क्षमता के अनुकूल बहुत प्रभावी और भिन्न रूप में बताये गये हैं।

इसके द्वारा पवित्र कुआँन हर प्रकार के इन्सानों के स्वभाव के अनुकूल मार्गदर्शन का रास्ता दिखाता है और इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए सम्पूर्ण और श्रेष्ठ जीवन शैली प्रस्तुत करता है। यह मानव स्वभाव का ऐसा ध्यान रखता है कि सुनने वालों के दिलों में बात उतर जाये और हर इन्सान को अपनी भलाई की बात इसमें मिल जाए। इन्सानों को व्यर्थ कर्मों से बचाने वाली बात सामने आ जाए। इस प्रकार यह इन्सानों के मार्गदर्शन और मुक्ति के लिए ऐसी किताब है कि उसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं है।

अरब वासियों का जीवन संस्कृति से दूर होने और गरीबी के कारण कठिन परिश्रम करने पर मजबूर था। आत्म सम्मान और स्वभाव के कारण बहुत जल्द युद्ध करने पर तैयार रहते थे। सूखे इलाकों में रहने के कारण आपस में लड़ाई के अवसर आते रहते थे। इसके साथ-साथ यात्रियों की सहायता और सम्मान सूखे इलाकों में उनकी जरूरत बन गयी थी। जिसके कारण अतिथियों और यात्रियों के साथ बहुत अधिक सहानुभूती पाई जाती थी। आपस की लड़ाई खाने-पीने की चीज़ों के लिए कई बार सालों तक चलती रहती थी। इसके लिए उनको हर समय तैयार रहना पड़ता था। जिसके कारण उनको अधिक सन्तानों और युद्ध के सामान की आवश्यकता होती थी। इसमें पुत्र की भूमिका मुख्य थी। युद्ध कला में कुशल और दक्ष घोड़ा उनको अन्य चीज़ों से अधिक प्रिय होता। वो

अपने घोड़ों की विशेषताओं पर गर्व किया करते थे। युद्ध में किये उनके और घोड़ों के कारनामों उनकी सभाओं को गरमा दिया करते थे। अल्लाह ने उनको भलाई पर लाने के लिए उनके स्वभाव के अनुकूल सूरह 'अल आदियात' में अपने चमत्कारी शैली में बात कही है। तेज़ दौड़ने वाले घोड़ों की कसम जिनकी तेज़ी और रफ्तार ऐसी कि उनकी ठोकड़ों से चिगारियाँ उठें और मुँह में धूक भर आये। वो सुबह होते-होते दुश्मन पर हमला कर दें और उनके पैरों से धूल उड़ने लगती है और वो दुश्मनों के झुण्ड में पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार उनके दिल और दिमाग को मोह लेते हैं और स्वभाव में उत्तेजना भरते हुए कहा कि इन्सान भी कितना नाशुक है। वो अपने नाशुकी को खुद भी अच्छी तरह देख रहा है और समझ रहा है। यानि ऐसी दिलचस्प और मनपसन्द चीज़ें देने के बाद भी इन्सान अल्लाह की शुक्र गुजारी की ओर ध्यान नहीं देता। वो अपने फायदे की इच्छा में बहुत आगे चला जाता है। जब लोग कब्रों से उठाये जायेंगे और उन लोगों के कर्म सामने लाये जायेंगे। उस समय अल्लाह उनको देख लेगा।

उन सरपट दौड़ने वालों (घोड़ों) की कसम, जो हाँफ उठते हैं, फिर पत्थरों पर (नाल) मारकर आग निकालते हैं, फिर प्रातः काल (दुश्मनों पर) थावा बोलते हैं, फिर उस समय धूल उड़ाते हैं, फिर उस समय भीड़ (दुश्मन की फौज) में जा घुसते हैं, बेशक इन्सान अपने रब का नाशुका है, और बेशक वह इस पर खुद गवाह है, और बेशक वह तो माल से सख्त मुहब्बत करने वाला है क्या वह नहीं जानता कि (एक दिन) कब्रों में जो कुछ है उसे बाहर निकाल लिया जाएगा, और जो दिल में है, वे ज़ाहिर कर दिये जाएँगे। बेशक उनका रब, उस दिन उनसे खूब अच्छी तरह बाख़बर (भिन्न) होगा। (आदियात)

ऐ लोगों एक मिसाल ब्यान की जाती है, इसे ध्यान से सुनो! अल्लाह के सिवा जिनको तुम पुकारते हो वो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब इकट्ठे क्यों न हो जाएँ, और अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले, तो वे उसे छुड़ा भी नहीं सकते, तालिब (मदद चाहने वाला) भी कमज़ोर और मतलूब भी (जिनसे मदद चाही)। उन्होंने अल्लाह को नहीं पहचाना जैसा की उसको पहचानने का हक था। बेशक अल्लाह सर्वशक्तिमान और प्रभावी है। (हज 73-74)

इन आयतों में विशेष बात यह है कि इन्सानों को समझाने के लिए उनके स्वभाव का ध्यान रखा गया है। इन्सानों ने अपनी ही बनाई चीज़ों को खुदा बना लिया है और वो इतनी भी ताकत नहीं रखते कि मक्खी जैसे तुच्छ जीव को भी अपने ऊपर बैठने से रोक सकें। अपने कृपा करने वाले रब को अन्देखा कर दिया है जो सर्वशक्तिमान है। एक उसी ने सारे संसार की रचना की और जिसको जैसा चाहा बनाया और जिसमें जैसी चाही क्षमता रखी। ये मूर्तियाँ जिनको

ये पूजते हैं ये मक्खी तो क्या ही पैदा करेंगे यदि मक्खी इनके खाने की चीज़ को ले जाए तो ये उसको वापस भी नहीं ला सकते। इसके बाद कहा- देखो ये अपनी बनाई मूर्तियों से भाँगने वाले कितने कमज़ोर हैं। इन्सान का स्वभाव और प्रभावित होने का जो गुण है उसको पवित्र कुर्आन में इतने प्रभावी उदाहरणों से समझाया है कि बात दिल में उतर जाए। इन्सानों ने अपनी अज्ञानता और प्रथाओं में अपने मन से जो धारणायें बना रखी हैं उनका तिलिस्म चूर-चूर हो जाए। ये पवित्र कुर्आन का चमत्कार है। इसमें पढ़ने और सुनने वालों से बात करते समय उनकी समझ का भी ध्यान रखा गया है। किसी विषय पर बात करते समय इन्सानों के दिल और दिमाग दोनों को सामने रखकर बात कही गयी है। इसको सुनकर आदमी इसके प्रभाव से स्तब्ध रह जाता है और इसकी बातों का कायल हो जाता है। जैसे ६० उमर के इस्लाम में आने की घटना से पता चलता है। ६० मुहम्मद स० जब बात करते थे तो कुर्आन की आयतों का प्रभाव पड़ता था। पवित्र कुर्आन का ये चमत्कार लोगों को इस्लाम की ओर बुलाने वालों के लिए अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये किताब पवित्र कुर्आन इन्सानों के लिए एक बहुत बड़ी नेमत है। विशेषकर इसलिए कि ज़मीन पर रहने वाले जीवों में से किसी ने पवित्र कुर्आन से वो लाभ नहीं उठाया जो इन्सानों को मिला। ये आसमानी किताब होने के कारण ऐसी शक्ति रखती है कि ज़मीन इसको सहन नहीं कर सकती। अल्लाह ने अपनी कृपा से इन्सानों की भलाई के लिए इसे इन्सानों की भाषा में अवतरित किया। ये भाषा उस समय इन्सानों की आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य हो गयी थी। इस भाषा को जानने वालों में इस ईशवाणी को समझने की योग्यता बहुत अच्छी तरह बन गयी थी। इस लिए इस भाषा के द्वारा ईशवाणी के अवतरण और इन्सानों के मार्गदर्शन का मार्ग बन गया। अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में इन्सानों की प्रधानता और आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा है।

अगर इस कुर्आन को हम किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि अल्लाह के डर से दबा हुआ, और फटा जा रहा है, और ये मिसाल हम लोगों के लिए इसलिए बयान करते हैं ताकि वो सोच विचार करें। (हज़ूर २१)

पवित्र कुर्आन की जो पहली सूरत अवतरित हुयी उसमें इन्सानों की उच्च क्षमता यानी ज्ञान से कार्य करने को बताया है। इन्सानों को ज्ञान भाषा के माध्यम से मिलता है। ज्ञान के कारण ही इन्सानों को अन्य प्राणियों पर बढ़त और श्रेष्ठता मिली है। ज्ञान ही वो नेमत है जिसके द्वारा इन्सान भौतिक और आन्तरिक जीवन में तरक्की करता आया है और आगे भी इसका मोहताज

रहेगा। पवित्र कुर्आन इन्सानों को लाभ देने वाली किताब है ये लोगों को अन्धेरो से निकालकर उजाले की ओर लाती है। इसलिए कहा गया-

यह किताब है जिसे हमने आप पर उतारा है, ताकि आप लोगों को अन्धेरे से उजाले की ओर उनके रब के हुक्म से ले आएँ, शक्तिशाली, खूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की ओर (इब्राहीम 1)

अल्लाह संसार की हर चीज़ को बनाने वाले और उसको उसके उद्देश्य के अनुसार काम पर लगाने वाला है। इसलिए वो सबके स्वभाव को जानता है। वो इन्सानों के भी स्वभाव को जानता है। वो इन्सानों के अन्दर मौजूद अच्छाई और बुराई की बातों को भी जानता है। इसीलिए अल्लाह ने इन्सानों के स्वभाव और और उनकी संसारिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही निर्देश दिये हैं। उसने इन्सानों को सत्य मार्ग बताने के लिए उस भाषा को चुना जो वहाँ रहने वाले लोगों की जानी पहचानी भाषा थी। इस भाषा की शैली उनके ज्ञान के अनुकूल थी। ये इन्सानों के स्वभाव और ज्ञान को प्रभावित करती है। यही कारण है कि पवित्र कुर्आन इन्सानों के दिल व दिमाग दोनों के साज़ों को एक साथ छेड़ता है और प्रभावित करता है। पवित्र कुर्आन का ये गुण चमत्कारिक गुण है। किसी भी इन्सानी भाषा में ये शैली नहीं पाई जाती और न आज तक दुनिया इसका कोई उदाहरण दे पाई है। बड़े से बड़ा ज्ञानी भी इस जैसी किताब नहीं बना सकता ये पवित्र कुर्आन का चमत्कार है। जबकि इसको पढ़कर इसका अर्थ समझा जा सकता है और अपनी प्रतिभा के अनुसार इससे लाभ उठाया जा सकता है।

और ये मिसालें हम लोगों के लिए ब्यान करते हैं और इसे तो अक्ल वाले ही समझते हैं। (अनकबूत 43)

इन्सानों पर ये किताब उस मुख्य उद्देश्य के लिए अवतरित की गई है जो सांसारिक जरूरतों से कहीं बढ़कर है। इसमें एक ओर तो पथभ्रष्टता से बचाने और उसके बुरे परिणाम से डराया गया है। दूसरी ओर अल्लाह की महानता और विशालता की निशानियाँ बताई गयी हैं। संसार में मानव का जो आदर्श चरित्र हो सकता है उसको बताया गया है। इससे इन्सानों के लिए अल्लाह की कृपा और भलाई का समझना आसान हो जाता है।

पढ़िए और (याद रखिए कि) आपका रब बड़ा करीम है, जिसने कलम के ज़रिये इल्म सिखाया, और इन्सान को वह इल्म सिखाया, जिसको वह न जानता था। (अलक 3,5)

कहो भला जो लोग इल्म रखते हैं और जो नहीं रखते, दोनों बराबर हो सकते हैं?

फिर कहा-

खुदा से तो उसके बन्दों में वे ही डरते हैं जो समझदार हैं। (फ़ातिर 28)
अल्लाह ने इन्सानों को ज्ञान एक ऐसी कुँजी के रूप में दिया है जिससे इन्सान भिन्न-भिन्न परिस्थितियों को जान सकता है। भिन्न-भिन्न विभागों में नये-नये रास्ते खोज सकता है। ज्ञान की ओर पवित्र कुर्आन ने ध्यान दिलाया है। वो लोग जो अनपढ़ है ज्ञान सीखें जिससे यह उनके लिए जीवन का खज़ाना बन सके। जीवन में इससे सफलता और मुक्ति मिले और वो चीज़ें मिले जो उसके लिए सहायक हो सकें। अल्लाह ने कलम की कसम खाई है और कलम वो कीमती खज़ाना है जो इन्सानों के लिए ज्ञान और गुणों के नये-नये रास्ते खोलता है। इसलिए कहा गया है-

तू, कसम है कलम की और जो वो लिखते हैं। (कलम 1)

अल्लाह ने पवित्र कुर्आन को अपने ज्ञान के खज़ाने में से जिसको अल किताब के नाम से पुकारा है इसका एक हिस्सा बनाया है। ये ज्ञान वो ज्ञान है जो सिर्फ संसार को पैदा करने वाले अल्लाह के लिए है। उसकी कृपा और दया का ऐसा असीमित सागर है जिसके आरम्भ और अन्त का कोई पता नहीं ला सकता। अल्लाह ने अपने असीमित ज्ञान का कुछ हिस्सा इन्सानों को पवित्र कुर्आन के रूप में दिया है और कह-

यह किताब (कुर्आन) इसमें कोई शक नहीं कि ये अल्लाह का कलाम है, अल्लाह से डरने वालों के लिए रहनुमा है। (अल-बकर 1,2)

ये वही ज्ञान है जिसका एक हिस्सा पवित्र कुर्आन में है। ये सत्य और असत्य में अन्तर बताने वाली पवित्र वाणी है। अल्लाह ने ये पवित्र किताब इन्सानों को इसलिए दी जिससे यह इन्सानों के इस संसार और परलोक में शुभ संकेत का माध्यम बने। इन्सानों को इस संसार और परलोक में सफलता मिल सके। अल्लाह ने इन्सानों को सदोपदेश दिये हैं कि इन्सान को अल्लाह से इस संसार और परलोक में सफलता की दुआ करनी चाहिए और इन शब्दों में प्रार्थना करनी चाहिए-

हमारे रब हमें दुनिया में भी नेमत अदा कर और आखिरत में भी नेमत से नवाज, और दोज़ख के अज़ाब से बचा। (अल-बकर 201)

और फिर कहा

ऐ हमारे रब तूने जिन-जिन चीज़ों का हमसे नबियों के माध्यम से वादा किया है, वह हमें अता कर, और कयामत के दिन हमें रसवा न करना, बेशक तू अपने वादे के खिलाफ नहीं करता। (आलेइमरान-194)

ये आयतें इन्सान मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य की ओर इशारा करती हैं।

और हमने तुम्हारी तरफ रोशन आयतें नाज़िल की हैं, और जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी खबरें और परहेज़गारों के लिए नसीहत (तूर 34)

इस प्रकार पवित्र कुर्आन में निम्न तीन प्रकार के विषयों की ओर संकेत मिलता है-

(1) पवित्र कुर्आन की वो आयतें जो एकदम खुली है। इनसे हर पढ़ने वाला और समझने वाला लाभ उठा सकता है। ये वो आयतें हैं जो जीवन के सीधे और सत्य मार्ग को बताती हैं। ये आयतें संसार के ज्ञान और गुणों से भरी हैं। इन्सानों को ईश्वर में विश्वास और मुक्ति का मार्ग बताती हैं।

(2) पवित्र कुर्आन में उन कौमों का वर्णन मिलता है जिन्होंने अपने नबियों की बात को नहीं माना और उनकी एक न सुनी। उन लोगों ने प्रमाणों से भी कोई शिक्षा नहीं ली और वो लोग तबाह और बर्बाद हो गये।

(3) पवित्र कुर्आन में ऐसे उपदेश और शिक्षायें मिलती हैं जो अच्छे आचरण और सदाचारियों के दिलों पर प्रभाव डालती हैं। उनको अच्छे कर्म और भलाई करने पर उभारती हैं। पवित्र कुर्आन की ये आयतें इस ओर संकेत करती हैं-

और हमने लोगों के (समझाने के) लिए इस कुर्आन में हर तरह की मिसालें बयान की हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें। (जुमर 27)

कह दो की उसने, इसको उतारा है जो आसमान और ज़मीन की छुपी बातों को जानता है। बेशक वो माफ करने वाला मेहरबान है। (फुर्कान 6)

अल्लाह ने अपनी वाणी में तेज व प्रतिष्ठा और ज्ञान व सम्मान का भी वर्णन किया है। उस वाणी का भी वर्णन किया है जो आयतें परोक्ष ज्ञान की हैं। जिनका इन्सान अपनी बुद्धि से वर्णन नहीं कर सकता।

ये परोक्ष की खबरें हैं जिनकी हम आप के ऊपर वक़्त कर रहे हैं, इससे पहले न तो आप को उनकी खबर थी और न आप की कौम को, अतः सब से काम लो, बेशक (बला) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है। (हूद 49)

कह दो कि यदि इन्सान और ज़िन्न एक साथ इसलिए जमा हो जाए कि इस कुर्आन जैसा बना लाए तो इसके जैसा न बना सकेंगे, चाहे वो एक दूसरे की मदद करें। (इसरा 88)

कह दो कि अगर सच्चे हो तो तुम खुदा के पास से कोई किताब ले आओ, जो इन दोनों किताबों से बढ़कर नसीहत करने वाली हो ताकि मैं भी उसकी पैरवी करूँ। (कसस 49)

फिर भी पवित्र कुर्आन अपनी भाषा और शैली में भिन्न है जिससे आयतों को समझना और जानना आसान हो जाता है। इसको समझने में सांसारिक एवं स्वाभाविक उदाहरणों से सहायता मिलती है। इसी क्रम में पिछली कौमों के किस्से भी आते हैं। परोक्ष ज्ञान इन्सानों के लिए सत्य को जानने में सहायक सिद्ध हो जाता है। ये पवित्र कुर्आन का मात्र एक पहलू है। जहाँ तक शब्दों और उनके अर्थों को जानने का सम्बन्ध है तो वह इतना मनमोहक है कि चमत्कार से खाली नहीं है। अरब वासी जिनको पवित्र कुर्आन के अवतरण से पहले ये भ्रम था कि उनकी भाषा व शैली श्रेष्ठ है। उन लोगों ने जब पवित्र कुर्आन को सुना तो चकित रह गये। पवित्र कुर्आन ने जब उनको पुकारा तो उन्होंने इसकी शैली और श्रेष्ठता के सामने घुटने टेक दिये। इसलिए पिछली कौमों के किस्सों में जिस प्रभावी शैली का प्रयोग किया गया है और स्वर्ग और नरक के दृश्यों को जैसे प्रस्तुत किया गया है वो बस अद्भुत उदाहरण है। किसी दृश्य को बताने का इससे श्रेष्ठ और कोई रूप नहीं हो सकता। ये पढ़ने और सुनने वालों के दिलों पर धाक जमा लेता है। जहाँ तक किसी घटना को बताने का सम्बन्ध है तो वह सबके दिलों को मोह लेता है। इसी प्रकार भिन्न परिस्थितियों और घटनाओं के लिए प्रयोग किये गये शब्दों में भी अन्तर है।

यही कारण है कि विद्वानों ने पवित्र कुर्आन की विशेषता को बताने के लिए बहुत सी किताबें लिखी। इनमें वो भी जिनसे पवित्र कुर्आन के अनोखेपन का पता चलता है। वो भी है जिनमें वो सूचनायें हैं जो पवित्र कुर्आन के अवतरण के बाद सामने आयी और समय-समय पर यूँ ही सामने आती रहेंगी। इनमें कुछ ऐसी है जिनमें बहुत से प्रमाण हैं और कुछ उन घटनाओं से सम्बन्ध रखती हैं जो पिछली कौमों के साथ घटी।

पवित्र कुर्आन ने शब्दों और अर्थों दोनों प्रकार से इन्सानों के स्वभाव का ध्यान रखा है। इसकी आयतों पर विचार करने से ऐसी बातें सामने आती हैं कि लोग चकित रह जाते हैं। इससे पवित्र कुर्आन के चमत्कारी होने का प्रमाण मिलता है। इसलिए पवित्र कुर्आन को जो भी सच्चे मन से पढ़ता है वो प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। वो इस पर विश्वास करने लगता है और इसे सत्य और प्रमाणित कह उठता है। पवित्र कुर्आन इन्सानों को सत्य मार्ग दिखाने वाला सबसे बड़ा मार्गदर्शक है।

कुरआन की श्रेष्ठा एवं विशेषता

सारे संसार के मालिक अल्लाह की वाणी होने के कारण पवित्र कुर्आन अपने शब्दों और अर्थ दोनों में श्रेष्ठ है। जो बातें इसमें कही गयी हैं इन्सानों की भलाई के लिए उससे श्रेष्ठ कोई और बात नहीं हो सकती। क्योंकि पवित्र कुर्आन अरब वासियों पर अवतरित किया गया इसलिए इसकी भाषा अरबी है।

(ये अल्लाह की किताब) रहमान व रहीम (की तरफ) से उतारी गयी है, इसकी आयतें पूरी तरह खोल-खोल कर बतायी गयी, अरबी भाषा में उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं, जो बशारत (खुशखबरी) भी सुनाता है और डराता भी है। (सजदा 2-4)

पवित्र कुर्आन के अवतरण के समय अरबी भाषा अपनी शैली और प्रभाव के उच्च स्थान पर थी। इसके बोलने वाले अनपढ़ होने के आदमी अपनी बात को बहुत प्रभावी रूप से कहते थे। वो भाषा की समझ और प्रभाव को अच्छी तरह जानते थे। उनकी भाषा में जब पवित्र कुर्आन अवतरित हुआ तो अरब वासी चकित रह गये। अपनी भाषा शैली और अलंकार से श्रेष्ठ वाणी उनके सामने आ गयी। जो सुनता वो इसका कायल हो जाता और इसको मानने पर मजबूर हो जाता।

सहज किताब और समस्त ब्रह्माण के लिए मार्गदर्शक

अल्लाह ने अपने पवित्र कुर्आन में जो श्रेष्ठ, उच्च शैली का और मार्गदर्शन करने वाला है। वो बातें बताई हैं जो इस संसार को बनाने वाले एक मात्र अल्लाह को मानने और उसके आदेशों पर चलने की शिक्षा देती हैं। इसमें इन्सानों के स्वभाव और आचरण के अच्छे और बुरे परिणाम को बहुत प्रभावी ढंग से बताया गया है। क्योंकि अल्लाह ने इन्सानों को इस संसार में अपनी इबादत के लिए पैदा किया है और अपना प्रतिनिधि बनाया है। अल्लाह की इच्छा के अनुसार कर्म करने को कहा है और इन कर्मों को करने की क्षमता भी इन्सानों को दी है। जिससे इन्सान अपने पैदा किये जाने के मकसद को पूरा कर सके। इसी लिए मृत्यु के बाद दूसरा जीवन रखा है जिससे इन्सानों को अपने कर्मों का फल मिल जाए। अच्छे कर्मों के बदले इन्सान को ईनाम मिल सके

इसलिए इन्सानों को नबियों के द्वारा शिक्षायें दी गयी। सत्य मार्ग पर चलने के लिए ईशवाणी के द्वारा पवित्र कुर्आन के रूप में पढ़ने योग्य वाणी दी।

महानता और पवित्रता

क्योंकि इस किताब का सम्बन्ध सारी दुनिया के मालिक अल्लाह से है इसलिए ये किताब भी उतनी ही पवित्र और शक्तिमान है। जो संसार में रहने वाले इन्सानों को दी गयी है। यदि अल्लाह ने इस किताब को इसकी आसमानी ताकत के साथ भेजा होता तो धरती इसको सहन नहीं कर पाती। इसलिए अल्लाह ने इसको इन्सानों की सहन शक्ति को बनाकर भेजा। इस किताब की श्रेष्ठता को अल्लाह ने इस प्रकार बताया है-

ज़मीन और ज़मीनी दुर्बलता, वो इतना बुलन्द और विशाल है, कि पृथ्वी की सहनशक्ति उसको संभालने के की क्षमता नहीं रखती, अगर इसको पहाड़ पर भी उतारा जाता तो पहाड़ फट जाता। (हश्म 21)

लेकिन इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए इस किताब को फरिश्तों के द्वारा और इन्सानों में श्रेष्ठ और आसमानी विशेषता रखने वाले इन्सान ह० मुहम्मद स० पर उतारा गया और कहा

इसको अमानतदार फरिश्ता लेकर आया है, आप के दिल पर साफ अरबी भाषा में, ताकि आप (भी) सारे डराने वालों में हो जाए, और इस (कुर्आन) का जिक्र पहली उम्मतों की (आसमानी) किताबों में (भी) है। (शोअरा 196)

ह० मुहम्मद स० पर भी इसके अवतरण के समय इतना जोर पड़ता था की वो काँप जाते और पसीना-पसीना हो जाते थे। इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए इस किताब को उन पर अवतरित किया गया। और कहा-

तुम्हारे लिए अल्लाह आयतों को अच्छी तरीके से बयान करता है ताकि तुम गौर-फिक्र से काम लो। (अल-बकर 219)

इस किताब की श्रेष्ठता, इसके महत्व और अल्लाह से इसके विशेष सम्बन्ध की ओर ध्यान दिलाया गया है। यह अल्लाह की किताब है।

इसको हाथ नहीं लगाते, मगर पाक होकर (ये कुर्आन) सारे संसार के रब की ओर से उतारा गया है। क्या तुम इस कलाम से इन्कार करते हो? (वाकिआ 71,79)

इसको जिस महीने में उतारा गया उस महीने की भी विशेषता बताई गयी।

रमज़ान का महीना है जिसमें पवित्र कुर्आन अवतरित हुआ, जो लोगों का रहनुमा है और जिसमें हिदायत की खुली निशानियाँ हैं, और जो सत्य और असत्य को अलग-अलग करने वाला है। (अल-बकर 185)

और जिस रात में उतारा गया उस रात के महत्व को भी बताया

हमने इस किताब को शबेकद में नाज़िल (करना शुरू) किया, और तुम्हें क्या मालूम की शबेकद क्या है? शबेकद हजार महीनों से बेहतर है, इसमें रुह (अल अमीन, जिब्राईल) और फरिस्तें हर काम के (इन्तेज़ाम के लिए) अपने रब के हुक्म से उतरते हैं, ये (रात) सुबहा होने तक (अमान और) सलामती है। (क़द)

इसको इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए संसारिक ज्ञान का माध्यम बताया।

यह किताब (कुर्आन) इसमें कोई शक नहीं (अल्लाह का कलाम, अल्लाह से) डरने वालों की रहनुमा है। (अल-बकर 1-2)

इस प्रकार इस पवित्र किताब की विशेषता और महत्व को बता दिया गया और इसे आकाशीय और प्रकाशमान किताब कहा गया।

महान और दार्शनिक वाणी

पवित्र कुर्आन अल्लाह की किताब है और आसमान से अवतरित की गयी है। इस प्रकार इसका एक सिरा अल्लाह से जुड़ा है और दूसरा इन्सानों के लाभ के लिए पृथ्वी पर उतारा गया है। पृथ्वी पर रहने वाले इन्सानों में से जो इस पर विश्वास करें उन तक पहुँचाया गया है। इस प्रकार इसे सत्य कर्म करने वालों के लिए लाभदायक बनाया गया है। इस प्रकार आसमानी किताब को सुन्दर भाषा, अर्थ, विषय और उद्देश्य देकर अल्लाह ने इन्सानों के मार्गदर्शन का माध्यम बना दिया। इसके विषय तो वही रखे गये हैं जिनके बारे में जानना इन्सानों के लिए आवश्यक है। इनके द्वारा इन्सानों को अपने पैदा करने वाले और पालने वाले की कृपा और महानता को समझने में सहायता मिलती है। इसका बहुत सुन्दरता से वर्णन किया गया है जिससे इसको समझने और कर्म करने में सहायता मिले। इन्सानों की क्षमता को ध्यान में रखकर इसकी भाषा को बनाया जिससे पढ़ने और सुनने वालों के दिल और दिमाग में समा सके। मुख्य रूप से इसके अवतरण के समय ऐसा हुआ कि किसी विरोधी ने भी यदि शुद्ध मन से इसे पढ़ा तो वह प्रभावित हुआ और इस पर विश्वास करने लगा। ऐसी पवित्र और श्रेष्ठ वाणी तो इस संसार को बनाने वाले ही की हो सकती है। इसका बनाना किसी इन्सान के वश में नहीं है। इसलिए कुर्आन ने सबको ललकारा है कि यदि इसे किसी इन्सान की वाणी समझते हो तो ऐसी वाणी बना कर लाओ। इस प्रकार पृथ्वी की सहन शक्ति से परे और आकाशीय शक्ति रखने वाले इस पवित्र कुर्आन को मिट्टी से बने इन्सान के लिए लाभदायक बना दिया गया। इन्सानों के मन-मस्तिष्क में बसाने के लिए इसके उच्च विषयों को सरल एवं प्रभावी बनाया गया। इसको दिल में समाने वाले शब्दों में प्रस्तुत किया गया। इसलिए इसको मुबीन (विस्तार पूर्वक) के नाम से प्रशंसित किया गया।

और हम ने कुर्आन को आसान किया है तो है कोई? जो इससे नसीहत हासिल करे? (अल-बकर 17)

पवित्र कुरआन सच बात को आसान और मन मोहक ढंग से बताने के लिए सुनने वालों कि समझ और कामनाओं का ध्यान रखते हुए बात कहता है। उदाहरण के लिए-

अलिफ लाम मीम रा। ये पवित्र कुरआन कि आयतें हैं, और जो कुछ आप पर आप के रब की ओर से अवतरित किया जाता है, वो बिल्कुल सच हैं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते, अल्लाह तो वही है जिसने आसमानों को उठा रखा है बिना सुतून (स्तम्भ) के, जैसा की तुम उसे देख रहे हो, फिर (अल्लाह) अर्श पर कायम हो गया, और सूरज और चांद को अपना ताबेदार (आज्ञाकारी) बनाया, और हर एक दौड़ता रहता है, एक निश्चित समय के लिए, वही (अल्लाह) सारे कामों का इत्तेजाम करता है, निशानियों को खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम अपने रब की मुलाकात का यक़ीन कर लो, और वो वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और दरिया बना दिये, और उसमें हर तरह के फल की दो किस्में रख दी, वो रात को दिन से छुपा देता है, बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। और ज़मीन में अलग-अलग टुकड़े एक-दूसरे से मिले हुए हैं, और (उसमें) अँगूरो के बाग हैं, और खेतियाँ हैं और खजूरों के शाखों वाले पेड़ हैं और कुछ बिना शाखों वाले, सब को एक पानी से सींचा जाता है, और 'हम' फिर भी एक फल को दूसरे फल पर जायके (स्वाद) में बढ़ा देते हैं, उसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक्लमन्द हैं। अगर तुम्हें तअज्जुब (हैरानी) है, तो तअज्जुब की बात उनका ये कहना है कि "क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे?" तो क्या हम दोबारा नये सिरों से पैदा किये जाएंगे? यही वो लोग हैं जिन्होंने अपने अल्लाह से कुफ़ (इन्कार) किया और यही हैं जिनकी गर्दनों में तौक डाले जाएंगे, और यही हैं जो जहन्नम में रहने वाले हैं, जो उसमें हमेशा रहेंगे। और ये लोग भलाई से पहले बुराई (अजाब) के लिए तुमसे जल्दी कर रहें हैं, जबकि इनसे पहले कितनी ही (शिक्षाप्रद) मिसालें गुज़र चुकी हैं, बेशक तेरा रब लोगों के (अपने ऊपर) जुल्म के बाद भी माफ़ कर देता है। बेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में बड़ा सख्त है। वो लोग कहते हैं जिन्होंने इन्कार किया, कि इस (नबी) पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी? आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं, हर क़ौम के लिए हिदायत करने वाले (रास्ता बताने वाले) होते चले आए हैं। अल्लाह जानता है जो कुछ हर माँ अपने गर्भ में रखती है और जो गर्भ में कमी ज़्यादती होती है, उसके पास हर चीज़ का एक अन्दाज़ा है। वो छिपी और खुली हर बात को जानने वाला है, और बड़ाई में बहुत ऊँची शान वाला है। तुम में से जो इन्सान चाहे चुपके से कोई बात कहे, या पुकार कर कहे, और जो कोई रात में छिपता हो और जो दिन में चलता-फिरता हो, सब (उसके लिए) बराबर हैं। इन्सान के आगे-पीछे (अल्लाह के) रक्षक होते हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी सुरक्षा करते हैं। अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता, जब तक वो खुद उसे नहीं बदलते जो कुछ उनके दिलों

में हैं, अल्लाह जब किसी क़ौम की बुराई (सज़ा) का इरादा करता है, तो फिर वो उससे हटती नहीं, सिवाए उस (अल्लाह) के कोई मददगार नहीं होता। अल्लाह वही है, जो तुमको डराने और उम्मीद दिलाने के लिए, बिजली दिखाता है और भारी बादलो को पैदा करता है, और गरजने वाला बादल अल्लाह की तारीफ और पाकी बयान करता है, और फरिश्ते भी उसके डर से, और वही आसमान से बिजलियाँ गिराता है और जिस पर चाहता है गिरा देता है। और वे लोग अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं, और वो बड़ी सख्त उपाय करने वाला है। उसी को पुकारना हक (सच्चाई) है, और उसके अलावा जिनको ये पुकारते हैं, वो उनकी पुकार का जवाब भी नहीं देते, मगर जैसे कोई शख्स अपने दोनों हाथ पानी की तरह फैलाए हुए हो, तो पानी उसके मुँह में पहुँच जाए। जबकि वो पानी उसके मुँह में पहुँचने वाला नहीं। काफिरों (इन्कार करने वालों) की पुकार तो बस भटकने के लिए ही होती है। आप कह दीजिए आसमानों और ज़मीन का रब कौन है? फिर कह दीजिए अल्लाह। आप कह दीजिए क्या तुम फिर भी दूसरों को अपना संरक्षक बना रहे हो, जो खुद अधिकार नहीं रखते, अपने किसी लाभ का और न नुकसान का। कह दीजिए ऐ नबी! क्या आँधा और आँखों वाले बराबर होते हैं? या अन्धेरा और उजाला बराबर हो सकते हैं? क्या जिन्हें इन लोगों ने अल्लाह का साझी बनाया है, उन्होंने भी कुछ पैदा किया है? जैसा कि उस अल्लाह ने पैदा किया, जिसके कारण सृष्टि की रचना में भ्रम पैदा हो गया है। हर चीज़ को पैदा करने वाला अल्लाह है, वो अकेला और जबरदस्त है। उसी ने आसमान से पानी बरसाया, तो फिर अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार नदी नाले बह निकले, फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए ज़ाग को उठा लिया, और उस चीज़ ने भी जिसको आग में डालकर तपाते हैं, ज़ेवर या साज़ो समान के लिए, इसी तरह के ज़ाग हैं। इसी तरह अल्लाह हक और नाहक की मिसाल बयान करता है, अब ज़ाग तो खत्म हो जाता है और जो लोगों को नफ़ा देने वाली चीज़ है वो बाक़ी रहती है। अल्लाह इसी तरह मिसाले बयान करता है। जिन्होंने अपने रब की बात को कुबूल कर लिया उनके लिए भलाई है, और जिन्होंने उसका हुक्म न माना, अगर उनके पास वो सब कुछ हो जो ज़मीन में है, और उतना ही और भी हो, और वो सब कुछ अपने (बचाव) में दे दें, तो यही हैं वो लोग जिनका बुरा हिसाब है, और उनका ठिकाना जहन्नम है, जो बहुत बुरी जगह है। क्या वो इन्सान, जो जानता हो की आप के रब की ओर से आप पर जो अवतरित किया गया है, वो सच है, क्या ऐसा इन्सान उस जैसा हो सकता है, जो अन्धा है। नसीहत तो वही कुबूल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। जो लोग अल्लाह के साथ किये वादे को पूरा करते हैं और अपने वचन को नहीं तोड़ते और अल्लाह ने जिन चीज़ों को जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे जोड़ते हैं। और अपने रब से डरते रहते हैं और हिसाब की सख्ती से डरते रहते हैं। और जिन लोगों ने अपने रब की खुशी हासिल करने के लिए सब्र से काम लिया और नमाज़े कायम रखी, और जो कुछ हमने दे रखा है

उसमें से खुले और छुपकर खर्च किया, बुराई के बदले भलाई की, यही लोग हैं जिनका आखिरत में अच्छा बदला है, (उनके लिए) हमेशा रहने के बाग हैं जिनमें वो दाखिल होंगे और उनके बाप दादा भी और पत्नियाँ और औलाद में से जो नेक होंगे वो भी, और हर दरवाजे से उनके पास फरिश्ते आयेगे (और कहेंगे) तुम पर सलामती हो, सब्र के बदले, क्या ही अच्छा बदला है आखिरत के घर का और जो अल्लाह के साथ पक्का अहद (वादा) करके तोड़ते हैं और जिनको अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है उसको तोड़ते हैं और ज़मीन पर फसाद फैलाते हैं। यही लोग हैं जिन पर लानत है और उनके लिए (आखिरत में) बुरा घर है। अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है कम कर देता है और वे दुनिया की जिन्दगी में खुश हैं जबकि दुनिया की जिन्दगी आखिरत के मुकाबले बहुत कम है। जिन लोगों ने इन्कार किया वो कहते हैं, इस पर इसके खर्च की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। कह दीजिए अल्लाह जिसे चाहता है, पथ भ्रष्ट कर देता है और जिसको चाहता है रास्ता दिखाता है, जो उसकी तरफ लौटता है। जो लोग ईमान लाए और उनके दिलों को अल्लाह के जिक्र से इत्मिनान होता है, जान लो अल्लाह के जिक्र से ही दिलों को तसल्ली हासिल होती है। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये उनके लिए खुशहाली है, और बेहतरीन ठिकाना। इसी तरह हमने आप को ऐसी उम्मत में रसूल बनाकर भेजा है जिससे पहले बहुत सी उम्में गुज़र चुकी हैं। ताकि जो हमने आप पर अवतरित किया है (ईशवाणी की है) आप पढ़कर उनको सुना दें। ये अल्लाह रहमान का इन्कार करते हैं, आप कह दीजिए मेरा पालने वाला तो वही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं (उपास्य नहीं) उसी पर मेरा भरोसा है, और उसी की ओर लौटना है। (सूरा 1-30)

चमत्कारी एवं प्रकाशमान वाणी

पवित्र कुर्आन को ईशवाणी के द्वारा धीरे-धीरे २३ साल में ह० मुहम्मद स० पर अवतरित किया गया। इसके अवतरण में हालात और जरूरतों का ध्यान रखा गया। जिससे सुनने और पढ़ने वाले विभिन्न जरूरतों में इसके निर्देशों को समझ सकें। इसका मुख्य उद्देश्य इन्सानों का मार्ग दर्शन है। क्योंकि यह ईशवाणी है इसलिए इसको पढ़ना भी इबादत है। यह इन्सानों की समझ के अनुकूल होने के बाद भी इन्सानों की सतह से बहुत ऊँचा स्थान रखता है। इन्सानों के स्वाभाव का ध्यान रखते हुए इसकी भाषा शैली में भिन्नता मिलती है। प्रसारण की विशेषता के साथ ही इसमें दोहो में प्रभावित करने के जो भिन्न रूप होते हैं उनमें कुछ मिलती-जुलती नज़र आती है। इस प्रकार पवित्र कुर्आन की वाणी की विभिन्नता में संसारिक स्वाद भी नज़र आता है। इन्सान यदि ऐसी किताब बनाने की कोशिश भी करें तब भी ऐसी वाणी और विषय बनाना सम्भव नहीं है। अरबी भाषा को जानने वाले ज्ञानी पवित्र कुर्आन को समझते तो है क्योंकि इसके शब्द समझने योग्य बनायें

गये है परन्तु वो ऐसी वाणी नहीं बना सकते। जो बात इन्सानों की क्षमता से परे हो, संसार के मालिक की ओर से, नबियों के माध्यम से, सहने योग्य बनाकर अवतरित की गयी हो वो इन्सानों के बस में नहीं है। यह एक चमत्कारी वाणी कहलाती है। इस प्रकार पवित्र कुर्आन अपने गुणों के आधार पर मौजिज़ा (चमत्कार) है। मौजिज़ा का अर्थ है ऐसी चीज़ जो इन्सानों की समझ और देखने के लायक हो लेकिन उनके बस से बाहर हो दूसरा कोई उसको कर न सके। इसलिए अरब के बड़े से बड़े ज्ञानी भी पवित्र कुर्आन के जैसी किताब न बना सके। पवित्र कुर्आन ने बार-बार यह कहा है की यदि तुमको इस किताब के ईशवाणी होने में शक है तो तुम इस जैसी वाणी बनाकर दिखाओ। अरब वासी इसको सहन न कर सके और जब कुर्आन को सुनते तो इसको ईशवाणी मानने पर मजबूर हो जाते। इसमें जो निर्देश और मार्गदर्शन दिये गये है उनका पालन करने में लग जाते। इसके बहुत से उदाहरण हमें मिलते है जिसमें अरब के पाखण्ड ज्ञानियों ने पवित्र कुर्आन की शैली के सामने घुटने टेक दिये। जो लोग पवित्र कुर्आन पर विश्वास नहीं करना चाहते थे वो अपने कानों में अँगुलियाँ डाल लेते थे और इसे सुनने से बचते थे। क्योंकि उनको पता था कि इसे सुनते ही प्रभाव पड़ जाता है। लेकिन इन्सान अपने कानों को कहीं तक बन्द कर सकता है और सत्य को मानने से कब तक बच सकता है। कामनाओं और इच्छाओं की चाह में जब इन्सान के जीवन में अन्धेरा छा जाता है और सत्य को ढाँक लेता है। तब ईशवाणी के माध्यम से अन्धेरा छट जाता है और प्रकाश फैल जाता है। इस प्रकार इन्सानों को अन्य सृष्टि से प्रतिष्ठित बनाया गया है। उसको ईशवाणी दी गयी है जिससे वो इसका अनुसरण करे। बुद्धि और विवेक की जो बातें इसमें बताई गयी है उन पर चले। इन बातों के कारण ही पवित्र कुर्आन को 'हकीम' कहा जाता है। इसी प्रकार अल्लाह के इस पवित्र कुर्आन में बहुत सी चमत्कारी बातें है जिनका अलग-अलग स्थानों पर वर्णन है। ये सब अल्लाह की नित्य और स्थायी कृपा और ज्ञान का हिस्सा है जो इन्सानों के मार्गदर्शन के आवश्यकतानुसार अवतरित किया गया है। यह अपनी महानता में ऐसी शक्ति वाला है की पहाड़ और यहाँ तक की इन्सान भी इसको सहन नहीं कर सकते।

किन्तु मिट्टी से बने इन्सान को जब अल्लाह ने अपना प्रतिनिधि बनाया तो उसने कुछ इन्सानों को ऐसी क्षमता दी कि वो इसे सहन कर सकें। वरना इतनी शक्ति जो पहाड़ को जला दे और तोड़ दे इन्सान को आसानी से नष्ट कर सकती है। ये अल्लाह की विशेष कृपा थी कि इन्सान को ऐसे शक्तिशाली कलाम से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान की। उसने पवित्र कुर्आन को इन्सानों के लाभ के लिए बनाया। इस प्रकार इन्सान को सृष्टि की और चीज़ों से प्रधानता दी। इन्सानों पर अपनी कृपाओं का धन्यवाद करने का ऐसा दायित्व दिया जो अन्य प्राणियों की

क्षमता और सामर्थ्य से बाहर है। ये ऐसी विशेष कृपा है जिसका इन्सान जितना आदर करे कम है।

एक प्रभावी और सम्पूर्ण वाणी

अल्लाह के इस कलाम में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं लाभ उठाने का अवसर रखा गया है। इसमें मानव जीवन के लिए ऐसा मार्गदर्शन और भलाई-बुराई की ऐसी बातें हैं जिनके सामने आने पर इन्सान बिना प्रभावित हुए नहीं रह पाता और अल्लाह की कृपा पर फिदा हो जाता है। उसकी महानता के सामने पराजित हो जाता है। ये तो इसके अर्थ और विषय का हाल है। दूसरी ओर शब्दों की सुन्दरता और लेख को समझना, तो ये मानव बुद्धि को आकर्षित करते हैं। ये भाषा के ज्ञानियों के सामने बराबर प्रकट होते रहते हैं। ये क्रम 1400 साल से अब तक जारी है। ये बातें इस पवित्र किताब के ईशवाणी होने का प्रमाण बनती रहती हैं। कुर्आन का परिचय संक्षेप में यह है जिसको पहली बड़ी सूरत बकरः के आरम्भ में अल्लाह ने बताया है—

ये वो किताब है जिसके बारे में कोई शक कि गुंजाईश नहीं, ये हिदायत और रहमाई करने वाली है, उन लोगों के लिए जो अपने रब की नाराज़गी से डरते हैं, और एहतियात का जीवन जीते हैं। (अल-बकर 1-3)

कुर्आन में इकना (संतुष्टि) का गुण

पवित्र कुर्आन जो एक नित्य और स्थायी ईशवाणी है। चमत्कार और प्रभावी भाषा की सभी शक्तें और विशेषतायें इसमें पूर्ण रूप से हैं। यही कारण है कि कुर्आन ने दिल और दिमाग पर गहरा प्रभाव डाला है। सन्देह और शिकायतों को समाप्त किया। विचारों को संतुष्ट किया और लोगों को सत्य मार्ग पर चलाया और अल्लाह के आदेशों का पालन कराया।

समस्त मानव इतिहास में पवित्र कुर्आन जैसी सम्पूर्ण और प्रभावी वाणी नहीं मिलती। पवित्र कुर्आन के इन आश्चर्यजनक और प्रभावी गुणों की विशेषतायें ये हैं।

- (1) मानव बुद्धि और विचारों से इसका स्वाभाविक मेल होना।
- (2) खुले हुए, स्वच्छ और सन्तोषजनक प्रमाण।
- (3) आस्था और व्यवहार में मानव स्वभाव का पूरा ध्यान और मानव जीवन के अस्तित्व के उद्देश्य की व्याख्या।
- (4) इन्सानों की कामनाओं और ज़रूरतों को सदाचार की सीमाओं में रहते हुए पूरा करना।

अध्याय सात

ज्ञान और गोष्ठी

‘हकीमुल इस्लाम’ ह० मौलाना शाह वलीउल्लाह देहलवी ने पवित्र कुर्आन के ज्ञान और गोष्ठी को ५ शाखाओं में बाँटा है।

1-पवित्र कुर्आन के आदेश

पवित्र कुर्आन के आदेशों, इसके द्वारा अनिवार्य और निषेध किये गये कर्मों से सम्बन्धित ज्ञान। उनका सम्बन्ध उपासना से हो या व्यवहार से, योजनाओं से हो या राष्ट्रीय राजनीति से, जीवन में आने वाली विभिन्न परिस्थितियों से हो या अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए की जाने वाली उपासना पद्धति से हो। इन सबको विस्तार पूर्वक बताना ‘फिक्ह’ का काम है।

2-धार्मिक मतों का ज्ञान

जिसका अर्थ यह है कि यहूदी, ईसाई, नास्तिकों और मक्का के बहुदेववादियों के बारे में, जो सत्य मार्ग से दूर चले गये थे। जिनमें कुछ तो बहुत दूर हो गये। पवित्र कुर्आन अपनी चमत्कारी शैली से उनके बुरे कर्मों और पथभ्रष्टता को प्रमाणित कर देता है और स्पष्ट तथ्यों से उनको लाजवाब कर देता है।

3-अल्लाह की नेमतों का जिक्र

अल्लाह की निशानियों और नेमतों का वर्णन। इसमें ज़मीन और आसमान को बनाने और उन बातों का वर्णन किया गया है, जो अल्लाह की ओर से इन्सानों को बताई गयी। इनको इन्सान अपनी बुद्धि और सोच विचार से समझ सकता है। पवित्र कुर्आन इनकी ओर ध्यान दिलाता है कि अल्लाह को सारे संसार का रब माने और पहचाने।

4-अल्लाह की तरफ से सर्वनाश(अज़ाब) का जिक्र

इनमें अल्लाह के द्वारा बताये और बनाये उन हालातों और घटनाओं का वर्णन है, जो आज्ञाकारी बन्दों को मिलने वाले इनाम और नाफरमानों को मिलने वाली सज़ा से सम्बन्धित हैं। मानव इतिहास में वो लोग जो सत्य मार्ग से भटक गये,

फिर उनमें सन्देश भेजे गये। जिन्होंने लोगों को समझाने का हर सम्भव प्रयास किया। किन्तु लोग नहीं माने, यहाँ तक की उन्होंने नबियों को अन्तिम सीमा तक कष्ट दिये। तब अल्लाह ने अज़ाब भेजकर उन लोगों को नष्ट कर दिया।

5-मौत का ज़िक्र

इसमें मौत और मौत के बाद के हालात बताये गये हैं। इसमें कयामत, मरने के बाद उठने, हिसाब-किताब होने, अच्छे और बुरे कर्मों का तराजू पर तुलने और स्वर्ग व नरक की व्याख्या की गयी है। अल्लाह की इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने का क्या परिणाम होगा, जो मरने के बाद दोबारा जीवित किये जाने पर पता चलेगा।

पवित्र कुर्आन की प्राथमिकता

पवित्र कुर्आन की प्राथमिकताओं की सूची बहुत लम्बी है। यह वो पहली आसमानी किताब है, जिसने इन्सानों के दिलों पर सत्य मार्ग की कहानी लिखी। जिसकी सुरक्षा, संरक्षण का दायित्व उस सर्वशक्तिमान अल्लाह ने स्वयं लिया। जिसने जीवन के सभी रहस्यों और हालातों का सन्तोषजनक हल दिया। जिसने मानव समाज में न्याय और समानता को ईश्वर प्रेम की बुनियाद पर बनाया। इन्सानों के सामने सोच-विचार की नयी-नयी राहें खोल दी। इन बातों को देखकर इकबाल की वो बात याद आ जाती है कि पवित्र कुर्आन ही वो पहली किताब है जिसने सोच-दृष्टिकोण और ज्ञान के सम्बन्ध में बहस की और इनके बारे में विस्तार पूर्वक बताया। कुर्आन ही ने सबसे पहले सन्देशों और ईशवाणी पर अपने विचार रखे। कुर्आन ही ने इतिहास के महत्व पर जोर दिया, कुर्आन ही ने कामनाओं के बारे में तीखी टिप्पणी की। कुर्आन ही वो पहली किताब है जिसने इन्सानों को सृष्टि के बारे में जानने पर उभारा। दूसरे शब्दों में ये चार विषय हैं जिनसे पवित्र कुर्आन की प्राथमिकताओं का पता चलता है।

१. ईशवाणी
२. इतिहास
३. कामनाएं
४. प्रकृति और चरित्र का अध्ययन।

यही ज्ञान के वो चार स्रोत हैं जिनको एक साथ सामने रखने पर जीवन का वास्तविक नक्शा बनता है। जिन कौमों ने इन चीज़ों से लाभ उठाया वो जीवित रही और जिन्होंने अनदेखा किया वो अपमानित हुए।

पवित्र कुर्आन में ब्रह्ममाण की वास्तविकता पर सोच-विचार करने को कहा गया है, जिससे ईमान को दृढ़ता मिले- पवित्र कुर्आन की एक

विशेषता ये भी है कि वो विनाशकारी और अनिवार्य दोनों विषयों के विस्तारपूर्वक अध्ययन पर इन्सानों को उभारता है। इस सृष्टि की व्यवस्था को देखकर उसका अध्ययन करने, इसके अस्तित्व का पता लगाकर, इन सबको बनाने वाले अल्लाह तक पहुँचने को कहता है। इस्लाम के आधार एकेश्वरवाद, सन्देशों पर विश्वास और आखिरत को मानने के लिए इस सृष्टि की व्यवस्था से प्रमाण देना और इन्कार करने वालों तक बात पहुँचा देना। इसको इस प्रकार बताया गया है-

धरती पर विश्वास करने वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ मौजूद हैं और खुद तुम्हारी अपनी जात में भी, क्या तुमको नज़र नहीं आता। (ज़ारियात 21)

इस्लाम को मानने वालों को प्रकृति में उपस्थित प्रमाणों के बारे में बताना। यानि सृष्टि में जो प्रकृति के नियमों से लाभ उठाना चाहिए। इससे मानव जीवन को बेहतर बनाने और सत्य धर्म के प्रचार-प्रसार में पूरी लगन से लगना। जिससे इन्सानों को सत्य मार्ग दिखाने का कार्य पूरा हो और इन्सान अल्लाह का प्रतिनिधि होने के दायित्व को पूरा करे।

पवित्र कुर्आन की गोष्ठी की विभिन्नता

पवित्र कुर्आन की सुरक्षा का वादा स्वयं अल्लाह ने इस ऐलान के साथ किया है *“हमने ही इस जिक्र (कुर्आन) को उतारा है और हम ही इसकी (हर तरह से) सुरक्षा करने वाले हैं”* अल्लाह इसकी सुरक्षा स्वयं अपने आप भी कर सकता था, पर उसने इन्सानों को ही इसका माध्यम बना दिया है। लाखों मुसलमानों के इसको बहुत अधिक पढ़ने और इसको याद करने की क्षमता देकर इसकी सुरक्षा की व्यवस्था की। रमज़ान के महीने में पढ़ी जाने वाली विशेष नमाज़ तरावीह में इसको पढ़ने और विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद करने की क्षमता इन्सानों को दी। इस सब के द्वारा पवित्र कुर्आन की ऐसी दृढ़ सुरक्षा हो गयी कि कोई चतुर से चतुर आदमी भी इसमें बिगाड़ पैदा नहीं कर सकता। अरबी भाषा में इसकी बहुत सी व्याख्याएँ की गयीं। इसके अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी इसकी व्याख्याएँ और अनुवाद किये गये। वास्तव में पवित्र कुर्आन एक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देने वाली किताब है। जो सत्य मार्ग दिखाती है और सत्य की ओर बुलाती है। अच्छे चरित्र को अपनाने, अपने रब की आज्ञा का पालन करने, उसका शुक्र करने और उससे लौ लगाने को कहती है। इसकी भाषा शैली भी श्रेष्ठ और मानव स्वभाव के अनुकूल है। इसमें ज्ञान और गुण की दिलो-दिमाग पर प्रभाव डालने वाली और स्पष्ट बातें हैं। यह बात पवित्र कुर्आन की भाषा शैली और अलंकार की श्रेष्ठता को बताती है। इसके साथ ही पवित्र कुर्आन में इन्सानों की बुद्धि को आकर्षित करने वाले विषय भी हैं। इसमें इन्सानों के विचार, इच्छाओं और व्यवहार के विभिन्न पहलु मिलते हैं। इन्सानों का अपने जीवन में

जिन चीजों से सामना होता है, उनका वर्णन भी पवित्र कुर्आन में विभिन्न स्थानों पर आया है।

सपनों की व्याख्या

वो वक्त याद करने लायक है जब यूसुफ ने अपने पिता से कहा! ऐ पिता जी मैंने (सपने में) 11 सितारे और सूरज और चाँद देखे हैं, उनको अपने सामने सच्चा करते देखा है। (यूसुफ 4)

और यूसुफ ने कहा! ऐ मेरे पिता ये मेरे पहले सपने की ताबीर (अर्थ) है मेरे रब ने उनको सच कर दिखाया। (यूसुफ 100)

लोकोक्त विज्ञान

सब से कमज़ोर घर मकड़ी का होता है।

क्या आपको मालूम नहीं है कि अल्लाह ने कैसी मिसाल बताई है पवित्र कलमे की, वो एक पवित्र पेड़ के समान है जिसकी जड़े बहुत मज़बूत हैं, और उसकी डालियाँ ऊँचाई में फैली हुई हैं, वो अपने रब के हुक्म से हर फसल में अपना फल देता हो। लोगों के लिए अल्लाह ये मिसालें बताता है जिससे लोग खूब समझ लें। और गन्दी बात (कुर्फ और शिर्क) की मिसाल ऐसी है, जैसे एक खराब पेड़ हो कि जिसको ज़मीन के ऊपर से उखाड़ लिया जाए और उसमें कोई सबात (पायदारी) न हो। (इब्राहीम 24-26)

नैतिक विज्ञान

बेशक अल्लाह इन्साफ और अहसान करने का और करीबी रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है और खुली बेहयाई और बुरे कामों और जुल्म-ज्यादती से भी मना करता है। अल्लाह तुमको इसलिए नसीहत करता है कि तुम नसीहत कुबूल करो। अल्लाह से किये अपने वादे को पूरा करो और तुम इसको अपने ज़िम्मे ले लो और कसम खाने के बाद, उनको मज़बूत करने के बाद न तोड़ो, और तुम अल्लाह को गवाह भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह को मालूम है जो कुछ तुम करते हो। (नहल 90-91)

अहसान का बदला अहसान है (रहमान 60)।

मनोविज्ञान

ये अल्लाह की फितरत है जिस पर उसने इन्सानों को पैदा किया (रूम 30)

पर्यटन एवं यात्राएं

क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते उनसे पहले लोगों का अन्जाम क्या हुआ (फ़ातिर 44)

आकाशीय शोध

वो ज्ञात बहुत बुलन्द व बाला (सर्वश्रेष्ठ) है जिसने आसमान में बड़े-बड़े तारे बनाए और आसमान में एक चिराग (सूरज) और नूरानी चाँद बनाया। (फुर्कान 61)

ऐतिहासिक ज्ञान

उन (पहले लोगों) के किस्सों में बुद्धिमानों के लिए इबरत (नसीहत) है (यूसुफ 111)

आर्थिक पहलू

हमने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और तुम्हारे लिए ज़मीन में रोज़ी पैदा की (आराफ 10)

फिर जब नमाज़ पूरी हो चुके तो तुम ज़मीन पर चलो और खुदा का फज़ल (रोज़ी) तलाश करो। (जुमुआ 10)

(ऐ नबी) आप कह दीजिए कि किसने हराम किया अल्लाह की पैदा की हुई ज़ीनत (कपड़ों) को जिसको उसने अपने बन्दों के लिए बनाया और खाने पीने की पाक चीज़ों को। (आराफ 32)

खाओ और पियो और इसराफ न करो (उसमें हद से आगे न बढ़ो)

शोध का रूप

(ऐ नबी) अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक (अधर्मी) कोई खबर लाए तो उसको देखा करो (तहकीक किया करो)।

मनुष्य वस्त्र

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और ऐसे कुर्ते (लिबास) जो जंग में तुम्हारी सुरक्षा करते हैं। (नहल 81)

खाद्यान्त

और आसमान से पानी बरसाकर तुम्हारे खाने के लिए तरह-तरह के फल (मेवे) पैदा किये। (अल-बकर 22)

धातु उद्योग

(अल्लाह ने फरमाया) कुशादा ज़िरहें (जंगी लिबास) बनाओ और उसकी कड़ियों को अन्दाज़ से जोड़ें

पवित्र कुर्आन में जीवन और सृष्टि से सम्बन्धित वास्तविकताएं

महान विद्वान मौलाना अली मियाँ नदवी लिखते हैं- एक लेखक स्वभाव वाला विद्यार्थी पवित्र कुर्आन के अध्ययन के समय ये सच्चाई देखकर चकित रह जाता है कि ये श्रेष्ठ किताब एक उम्मी (अनपढ़) पर आज से लगभग 1400 वर्ष पहले अरब के सीमित और (संसारिक दृष्टि में) ज्ञान से कटे हुए समाज में अवतरित हुई थी। इसमें बहुत अधिक उन सच्चाईयों और उन चीजों का जिक्र आता है जिनका सम्बन्ध इतिहास, भूगोल और भौतिक ज्ञान, खगोलशास्त्र, जीव विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान और इसके अतिरिक्त बहुत से विषयों पर पवित्र कुर्आन में प्रकाश डाला गया है। मानव संरचना और उसके शरीर के अंगों का जोड़ और उसके बहुत सारे प्राकृतिक ज्ञान से सम्बन्धित है जिनके बारे में पिछली सदियों से सच्चाईयों और ज्ञान की एक नयी दुनिया खुल गयी है। मानव ज्ञान के ज़मीन और आसमान बदल गये हैं। पवित्र कुर्आन में कोई ऐसी बात नहीं कही गयी जिसको आधुनिक विज्ञान ने गलत सिद्ध कर दिया हो। इसमें बहुत से भेद और सच्चाईयाँ आ गयी हैं। जिनका ज्ञान आधुनिक समयकाल में खोला गया है। उसका अभी वर्तमान काल में ज्ञान हुआ है। इस कड़ी को खोलने के लिए एक किताब नहीं बल्कि एक पुस्तकालय की आवश्यकता है।

एक फ्रांस के विद्वान और खोजकर्ता मौरिस बोकाइले ने अपनी किताब बाइबल, कुर्आन और विज्ञान में लिखा है।

“आसमानों और ज़मीन की पैदाईश और इस सृष्टि का अस्तित्व, भौतिक ज्ञान, आकाश की संरचना, आकाशीय संसार की बुलन्दी, मौसम विज्ञान, पानी और समुद्रों का जीवन, दरिन्दों का बुनियादी किरदार, पृथ्वी का तल और पहाड़ों के हालात, पेड़-पौधों और जानवरों की दुनिया, जीवन का आरम्भ और अन्त, मानव जाति का जन्म और प्रजनन, हमदमजपबेबपमदबम और मानवीय विकास और बहुत से विशेष ऐतिहासिक घटनाओं जैसे तूफान-ए-नुह, मिस्र में बनी इस्राईल का समय, मिस्र से ह० मूसा का निकलना, ह० मूसा के समय में फिरऔन और उसकी हालत इत्यादि और प्रकृतिक ज्ञान, भौतिक ज्ञान, जीवनी, चिकित्सा विज्ञान, इतिहास की नयी खोज की रोशनी में पवित्र कुर्आन और बाइबिल की तुलना करने के बाद ये निर्णय लिया गया कि तौरेत और इन्जील की उन बातों के मुकाबले पवित्र कुर्आन का ज्ञान वैज्ञानिक दृष्टि के नये परिणामों से अनुकूलता में बिल्कुल अलग और श्रेष्ठ है। पवित्र कुर्आन की सच्चाई हर सन्देह और शंका से پاک है। इस प्रकार पवित्र कुर्आन पर मानव के आर्थिक जीवन, उसके सामाजिक, राजनैतिक भावनाओं का कोई असर नहीं हुआ। उसका हृदायतनामा इन्सान की इन सब ज़रूरतों में नित्य और स्थायी है।

अध्याय आठ

पवित्र कुर्आन की चमत्कारी विशेषता

1- कमालुददीन मुहम्मद का कहना है कि पवित्र कुर्आन का चमत्कार इसके संकलन की सुन्दरता में बसा है। इसके शब्द और अर्थ दोनों में ये विशेषता पाई जाती है कि उनके रूप, संरचना और वर्णन के चयन में उस स्तर एवं सतह का ध्यान रखा गया है, जो सर्वश्रेष्ठ है।

2- एक राय ये है कि इसमें भविष्य की बातों को बताना चमत्कार है, इसमें बताई बातों का एक-एक शब्द सत्य सिद्ध हुआ है। जैसे बदर के युद्ध के बारे में कहा- “जल्द ही ये लोग पराजित होंगे और पीठ फेर कर भाग खड़े होंगे” (लुकमान 45) इसमें ईरानियों के साथ युद्ध में रोमियों के विजयी होने की खबर उस समय दी गयी थी जब कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था।

3- एक राय ये है कि इसका चमत्कार ये है कि ये पिछली घटनाओं को इस प्रकार बताता है जैसे ह० मुहम्मद स० ने उनको अपनी आँखों से देखा हो जबकि इतिहास उनको भुला चुका था।

“इन हालात के बारे में खबरों का सम्बन्ध परोक्ष से है, जो हम तुम्हारी ओर भेजते हैं, और इससे पहले न तुम ही इस को जानते थे और न तुम्हारी कौम” (हूद 49)

4- एक विचार ये है कि पवित्र कुर्आन का ये चमत्कार है कि इसने न सिर्फ अलग-अलग कौमों के हालात पर प्रकाश डाला है बल्कि उनके समकालीन लोगों की मानसिक कमजोरियों से भी पर्दा उठाया है और ये भी बताया है की उनके दिलों में क्या-क्या विचार और सन्देह पनप रहें थे।

“उस वक्त तुम से दो समूहों ने जी छोड़ देना चाहा” (आले इमरान 122)

“और ये अपने दिलों में कहते हैं कि ये अगर वास्तव में नबी हैं तो जो कुछ हम कहते हैं उस पर हमें सज़ा क्यों नहीं मिलती?” (मुजादिला 8)

5- समस्त विद्वानों की राय है कि पवित्र कुर्आन का चमत्कार ये है कि इसकी संरचना, क्रमबद्धता और इसके अर्थों की सरलता इस प्रकार स्पष्ट है

कि कोई इन्सान इनको महसूस किये बिना नहीं रह सकता। इससे ये सिद्ध होता है कि ये उस सर्वशक्तिमान की ओर से अवतरित किया गया है जिसके असीमित ज्ञान से कोई चीज़ बाहर नहीं है। जो अर्थों की श्रेष्ठता और सतह को जानता है और शब्दों की उपयुक्तता को भी अच्छी तरह समझता है।

6- ईमाम फखरुद्दीन राज़ी का कहना है कि इसका चमत्कार इसकी भाषा की सरलता और अलंकार का सभी त्रुटियों और मतभेदों से पवित्र होना है, जो इन्सानियत की विशेषता है।

7- काज़ी अबुबक्र अपनी किताब ऐजाज़ुल कुर्आन में लिखते हैं कि पवित्र कुर्आन के चमत्कार में ये भेद बसा है कि इसकी शैली उस दौर की समस्त शैलियों से भिन्न है। ये न तो उस कविता के समान है और न ही उस गद्यांश के समान जिसको उस युग के विद्वान और कवि अपनी लेख में प्रयोग करते थे। स्पष्ट है कि इस भाषा शैली का बढ़ना संयोग और भाग्य की बात कह कर नहीं टाला जा सकता बल्कि इसमें एक विशेष प्रकार की शुद्धता, सुन्दरता और मधुरता पाई जाती है। अनोखापन, अद्भुतता का ये प्रमाण यह इसलिए है क्योंकि इसको ज़मीन और आसमान में एक अनोखी चीज़ होने का स्थान प्राप्त है।

8- अबु याकूब यूसुफ पुत्र अबिबक्र ने अपनी किताब 'मिफताहुल उलूम' में से राय लिखी है कि पवित्र कुर्आन के चमत्कार का कोई पहलु निर्धारित करना कठिन है। जो इन्सान अलंकार और भाषा की सरलता का सही ज्ञान और रूचि रखता हो, वो समझ सकता है कि इसकी भाषा और अलंकार की श्रेष्ठता को शब्दों में बताना सम्भव नहीं है। जैसे किसी की सुन्दरता को शब्दों में बताना कठिन होता है क्योंकि ये महसूस करने की चीज़ है शब्दों में बताने की नहीं। इसी प्रकार पवित्र कुर्आन की भाषा और अलंकार की श्रेष्ठता को शब्दों में बताना सम्भव नहीं है।

9- अबु हयान तौहीदी ने पवित्र कुर्आन से सम्बन्धित जिस वाक्य को बहुत पसन्द किया है वो ये है "वास्तविकता ये है कि शब्दों और अर्थ का ये वो संयोग है जो न सिर्फ अछूता, कोमल और ऊँचा है बल्कि इसने चमत्कार के उन सभी कारणों को घेर लिया है जिससे पवित्र कुर्आन की पवित्रता की भावना दिल में उभरती और जीवित होती है।

10-अबुल हसन हाज़िम ने 'मिनहाजुल बलागा' में अपने विचार व्यक्त किये हैं कि पवित्र कुर्आन में अलंकार और भाषा की सरलता का होना ही इसके चमत्कारी होने का प्रमाण नहीं है। वास्तविक प्रमाण जिसको चमत्कार कह सकते हैं ये है कि पवित्र कुर्आन आरम्भ से अन्त तक, भाषा की

सरलता और अलंकार में श्रेष्ठ है और इसको निरन्तर और सरलता के साथ पढ़ा जाता है। कहीं भी ऐसा स्थान दिखाई नहीं देता जहाँ कोई त्रुटि, झोल, असन्तुलन या अपने स्तर से हटकर किसी और चीज़ का अहसास होता हो।

वास्तव में पवित्र कुर्आन के चमत्कार के इतने सारे पहलु हैं कि इनको एक विभाग में रखा नहीं जा सकता। बहुत से विषयों पर प्रकाश डाला गया है और बहुत से विषय वो हैं जहाँ तक इन्सानों की बुद्धि अभी तक नहीं पहुँच पाई है। कयामत तक इसके चमत्कारी पहलु सामने आते रहेंगे।

पवित्र कुर्आन के चमत्कारी पहलु

पवित्र कुर्आन अपने भाव और अर्थ में बहुत प्रभावी और अपनी मनमोहक विशेषताओं में अद्वितीय है। इसमें प्रयोग हुए वाक्यों के शब्दों की सरलता, अर्थ, रवानी, मधुरता, दृढ़ता, महत्व, कही मन को मोह लेने वाली बातें और कहीं डराने वाला अन्दाज़। ये वो विशेषताएँ हैं जिनको चमत्कार के सिवा और क्या कहा जा सकता है। पवित्र कुर्आन के इस चमत्कार का सबसे अधिक प्रदर्शन आयतों के अर्थ की सरलता, वर्णन की सुगमता एवं गहनता से होता है। सुन्दरता, मधुरता, भाषा की निरन्तरता और मिठास, अलंकार, संक्षेप और अर्थों की मन-मोहकता, सौंदर्य का आनन्द, उच्चारण की संगीतमयता और उसकी मन को मोह लेने वाली दशा से पवित्र कुर्आन शब्दों, अर्थों एवं उच्च उद्देश्यों से परिपूर्ण आभूषण के समान हो गया है। जिस पर रंग-ढंग, संतुलन एवं अनुपात की छाया है।

पवित्र कुर्आन की आयतों के बीच बहुत कोमल सम्बन्ध होता है, जहाँ तक पहुँचने के लिए बहुत ही गहरे सोच-विचार की आवश्यकता होती है। इसकी हर आयत एक साहित्य और विषय को समेटे हुए है। जबकि पवित्र कुर्आन २३ साल में आवश्यकता अनुसार थोड़ा-थोड़ा अवतरित होता रहा, परन्तु इस क्रम से लिख लिया जाता था जिसको अल्लाह के नबी ह० मुहम्मद स० बताते थे। इसके अवतरित होने में एक क्रमबद्ध सुन्दरता, बातों में दृढ़ता और मधुरता है। इसमें ज्ञान और गुणों के ऐसे कोमल बिन्दु हैं जिनको पहचानना साधारण बुद्धि के व्यक्ति के बस की बात नहीं। इनको जानने के लिए ज्ञान और गुणों के ज्ञानियों और विद्वानों की सहायता की आवश्यकता है।

अल्लाह के इस साहित्य में सृष्टि के भेदों को खोला गया है। इसमें बुद्धिमत्ता के संकेत मिलते हैं और स्वभाव की उच्चता, बुद्धि की तीव्रता, आत्मिक विकास के साथ अलंकार की सरलता और अधिकता खुलकर सामने आती है।

पवित्र कुर्आन में ठहरने की जगहों का एक विशेष अन्दाज़

पवित्र कुर्आन की आयतों के अन्त में उन पर रुकने की जगह में खींच कर पढ़े जाने वाले अक्षर हैं। इन अक्षरों के साथ नून व मीम मिलकर सुन्दरता पैदा करते हैं। आवाज़ को खींच कर पढ़ने और उसमें एक गुनगुनाहट पैदा करके पवित्र कुर्आन के शब्दों, उनके क्रम और शैली बहुत सरल और मधुर होती है। पवित्र कुर्आन की आयतों के ठहराव आवाज़ की मधुरता से एक संगीत के समान सुन्दरता पैदा करता है। अक्षरों का क्रमबद्ध होना और उन पर हरकात (मात्राओं) से संगीत की सी मधुरता पैदा हो जाती है। उसमें झंकार, सुन्दरता और मधुरता पैदा हो जाती है। शब्दों और ठहराव के ऊपर-नीचे होने से आवाज़ में खुद मिठास पैदा हो जाती है। पवित्र कुर्आन की अलग-अलग सूरतों में ठहरने का अलग-अलग सुन्दर अन्दाज़, इनके बोलने और सुनने को आनन्दमय कर देते हैं। जैसे सूरह 'मरयम' के अन्त में एक प्रकार के शब्दों का आना और इसी प्रकार लम्बी सूरतों में आवाज़ को मधुर बनाने वाले शब्दों का आना। छोटी-छोटी सूरतों में वाक्यों की मधुरता और सुन्दरता के साथ संगीत से भरपूर शब्द आए गये। जैसे सूरह 'शमस' सूरह 'करिअः' सूरह 'फील' और सूरह 'काफिरून' में शब्दों के साथ अर्थों में मधुरता पाई जाती है। पवित्र कुर्आन दिलों-दिमाग पर छाने के बाद ज़बान को भी मधुर बना देता है। इसकी हर-हर सूरत अपने अलग-अलग ठहरने के अन्दाज़ में अलग-अलग उदाहरण बनकर सुनने और बोलने को मन्त्रमुग्ध कर रही है। विशेष रूप से पवित्र कुर्आन के शब्द, उसके अर्थ, वाक्य और उन पर ठहरने का एक मधुर अन्दाज़ ये सब पवित्र कुर्आन का एक चमत्कार हैं।

जब आसमान फट पड़े, और जब तारे झड़ पड़े, और जब समुन्द्र उबल पड़े, और जब मुर्दे कब्रों से निकल आए, और हर कोई (इन्सान) जान लेगा जो कुछ आगे करेगा और जो कुछ पीछे करेगा, ऐ इन्सान तुझे अपने कृपा करने वाले रब से क्या चीज़ मग़रूर (अभिमानि) करती है, जिसने तुझे पैदा किया और मुनासिब (ठीक) रखा, जिस शक्त में चाहा तुझे बनाया। हरगिज़ नहीं, तुम दीन को झुठलाते हो और तुम पर निगरा तय किये हुए हैं, इज़्ज़तदार लिखाने वाले, जो कुछ तुम करते हो वो जानते हैं, बेशक नेक लोग स्वर्ग में हैं और बेशक पापी नरक में हैं, इन्साफ के दिन वो इसमें डाले जायेंगे। इससे वो बचने वाले नहीं हैं, तुझे क्या पता की इन्साफ का दिन क्या है? जिस दिन कोई किसी का मालिक नहीं होगा और हर काम इस दिन अल्लाह ही का होगा। (इनफितार)

पवित्र कुर्आन का चकित करने वाला संख्यात्मक चमत्कार

दुनिया जैसे-जैसे विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति करती जा रही है, पवित्र कुर्आन के नये-नये भेद लोगों के सामने आते जा रहें हैं। ;उवकमतद मसमबजतवदपब लेजमउल्ल कम्प्यूटर के अविष्कार ने खोज और ज्ञान की दुनिया में क्रांति ला दी है। कम्प्यूटर के द्वारा वर्तमान काल के कुछ अरब विद्वानों ने पवित्र कुर्आन के नये चमत्कारी पहलुओं से लोगों को अवगत कराया है। वो पवित्र कुर्आन का संख्याओं का चमत्कार है। यानि गिनती और संख्या के पवित्र कुर्आन के चमत्कार पर बहुत से धार्मिक ज्ञानियों ने ध्यान दिया। यहाँ पर पवित्र कुर्आन के संख्या के चमत्कार के कुछ उदाहरण बताये जा रहें हैं।

- पवित्र कुर्आन में अल्लाह ने अपनी मख़्लूक़ात (सृष्टि) के लिए 'कुल' का शब्द 233 बार प्रयोग किया है, तो जिन्न और फ़रिशतों के लिए भी 'कुल' का शब्द 233 बार प्रयोग किया है। ये चकित करने वाली समानता है। इससे पवित्र कुर्आन का परिवर्तन से पवित्र होना समझा जा सकता है।
- पवित्र कुर्आन में ये बताया गया है कि आसमान 7 हैं। इसी प्रकार पवित्र कुर्आन में "सब-अ स-मा-वात" का शब्द भी 7 बार आया है।
- ईमान और "आ-म-नु " का शब्द पवित्र कुर्आन में 52 बार आया है, इसी प्रकार शब्द 'कुफ़' भी 52 बार आया है। ईमान और कुफ़ के शब्दों में समानता पवित्र कुर्आन के चमत्कार को दर्शाती है।
- संख्या के चमत्कार का एक और उदाहरण देखें सूरह 'तौबा' में कहा गया है अल्लाह के पास महीनों की संख्या 12 है। आयत में जिस प्रकार साल में 12 महीने होने का वर्णन करते हुए "शहर" का शब्द प्रयोग किया गया है, उसी प्रकार पूरे कुर्आन में "शहर" शब्द 92 बार ही प्रयोग हुआ है। कैसी अजीब समानता है।
- दुनिया का ज़िक्र पवित्र कुर्आन में 110 बार आया है तो आखिरत का ज़िक्र भी 110 बार आया है।

- फरिस्तों का ज़िक्र 88 बार आया है तो शैतान का ज़िक्र भी 88 बार आया है।
- जीवन का ज़िक्र 145 बार है तो मृत्यु का भी 145 बार है।
- शब्द 'नास' (लोगों) का ज़िक्र 50 बार आया है तो 'अर रुसुल' (नबियों) जो लोगों की ओर भेजे जाते हैं का ज़िक्र भी 50 बार है।
- कुछ शब्दों की समानता बहुत महत्व रखती है जैसे इब्नीस का ज़िक्र 99 बार है तो उससे अल्लाह की पनाह माँगने का ज़िक्र भी 11 बार है। जिसमें अजीब मानवीय संकेत दिया गया है।
- इसी प्रकार खर्च करने का ज़िक्र 73 बार आया है, तो खुशी का ज़िक्र भी 73 बार आया है। जिसमें इशारा है कि अल्लाह की राह में अपनी खुशी से अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए खर्च करना चाहिए।
- इसी प्रकार पवित्र कुआँन में 'जाल्लून' 17 बार आया है जिसका अर्थ गुमराही है, तो 'अल मौता' भी 17 बार आया है। जिसका इशारा है कि गुमराही मौत है। गुमराही वास्तविक जीवन से वंचित कर देती है।
- शब्द 'ज़कात' 32 बार आया है तो 'बरकत' भी 32 बार आया है। जिसका इशारा है कि ज़कात देने से धन में कमी नहीं होती बल्कि इसमें बरकत होती है।
- शब्द 'सहर' 40 बार आया है तो इसी प्रकार शब्द 'फितना' भी 40 बार आया है। इससे सहर (जादू) के फितना होने का इशारा है।
- 'लिसान' (ज़बान) 25 बार आया है तो 'नसीहत' (नसीहत) भी 25 बार आया है। ज़बान से नसीहत निकलनी चाहिए।
- शब्द 'अज़्ज़हब' (सोना) 8 बार है तो 'अत्तुरफ' (भोग विलास) भी 8 बार है।
- शब्द 'अकल' 49 बार है तो 'नूर' भी 49 बार है।
- शब्द 'अश्शिवदा' (सख्त तकलीफ) 114 बार आया है तो 'सन्न' भी 998 बार आया है।
- शब्द 'मुहम्मद' 4 बार आया है तो 'शरिअत' (जीवन विधान) भी 4 बार आया है।
- शब्द 'अर रज़ुल' (आदमी) का ज़िक्र 24 बार आया है तो 'अल मरआ' (औरत) भी 24 बार आया है।
- शब्द 'अल जहर' (तीव्रता) 18 बार आया है तो 'अस्सर' (भेद) भी 95 बार आया है।
- शब्द 'अबरार' (नेक) का ज़िक्र 'फुज्जार' (पापी) से दो गुना है। 'फुज्जार' का ज़िक्र 3 बार है तो 'अबरार' का 6 बार है। यानि नेक लोगों को पापियों से अधिक होना चाहिए।

- इसी प्रकार 'जज़ा' (बदला) का ज़िक्र 117 बार है तो 'मगफिरत' (माफ़ी) का 234 बार है। इसका अर्थ ये है कि असल बदले की अपेक्षा में माफ़ी को अधिक और विस्तृत बताया गया है।
- आदमी की रचना मिट्टी और वीर्य दोनों से हुई है तो जहाँ 'जुत्फः' (वीर्य) का ज़िक्र 12 बार आया है तो वही शब्द 'तीन' (मिट्टी) भी 12 बार आया है।
- आदमी को अल्लाह के पास फल उसके फेअल (कर्म) पर मिलता है तो शब्द 'फेल' 108 बार है तो शब्द 'अजर' (परिणाम) का भी 108 बार है।
- 'हिसाब' का ज़िक्र 29 बार है तो 'अदल' का भी 29 बार है। यानि हिसाब पूरे अदल और इन्साफ के साथ होगा।
- शब्द कुर्आन और उससे सम्बन्धित चीज़ों का ज़िक्र 70 बार आया है। इसी प्रकार शब्द इस्लाम और उससे सम्बन्धित चीज़ों का ज़िक्र भी 70 बार आया है।

मौलाना अब्दुल रऊफ रहमानी लिखते हैं "ये गणन और संख्या का ताल माल जो विभिन्न स्थानों पर नज़र आ चुका है ये तीन वास्तविकताओं को बताता है। पहली ये कि पवित्र कुर्आन किसी इन्सान की बनाई किताब नहीं हो सकती। दूसरे ये कि इस पवित्र कुर्आन में किसी तरह का परिवर्तन या उलट फेर नहीं हुई और न इसमें किसी शब्द को परिवर्तित किया गया है। तीसरे ये कि पवित्र कुर्आन सदा के लिए एक चमत्कार है 1400 साल गुज़रने के बाद भी कोई इसका सामना नहीं कर सका।

एक और विद्वान ने अपनी कुर्आनी गणना की अदभुत चीज़ें बताई हैं। सूरह 'हदीद' की क्रम संख्या 57 है और लोहे का पेवजवच भी 57 है।

सूरह 'इनशिकाकः' का नम्बर 84 है आपको हैरानी होगी कि प्लोनियम की तत्व संख्या 84 है। ये तत्व फटने पर बहुत ऊर्जा पैदा करता है।

इन्सान का शब्द पवित्र कुर्आन में 65 बार आया है और उससे जैसे शब्द हैं जैसे मिट्टी 17 बार, वीर्य की बूँदें 12 बार, (गर्भाशय में) अविकसित बच्चा 6 बार, अधूरी शक्ल में माँस का लौथड़ा 12 बार, हड्डी 15 बार, माँस 12 बार, कुल गणना 65 बार हुई।

इसी प्रकार ज़मीन का वर्णन 93 बार आया और समुद्र का वर्णन 23 बार आया अर्थात् ज़मीन और पानी का स्तर इस सुन्दरता के साथ बताया है।

अध्याय नौ

पवित्र कुर्आन की शिक्षायें

शिष्टाचार के निर्देश

ये मानव चरित्र का वो पहलु है जिसमें इन्सान बिना किसी इच्छा के अपने स्वभाव को व्यक्त करता है। इसमें इन्सान की भावनाएँ जुड़ी होती हैं, जो कई बार गलत रूप में सामने आती हैं। इनको असभ्य होने से बचाकर और सभ्य बनाकर इन्सान प्रशंसा के योग्य बन जाता है। पवित्र कुर्आन चरित्र को सभ्य बनाने के निर्देश और इसके लिए मार्गदर्शन देता है। यह इन्सान की व्यक्तिगत आज़ादी को समाप्त नहीं करता। यह एक दूसरे के प्रति दया, सहानुभूति और न्याय करने को कहता है। जिससे लोगों में शिष्टाचार की भावना को प्रोत्साहन मिले। पवित्र कुर्आन शिष्टाचार की आधार शिक्षा का प्रचार करता है।

खुदा तुम को इन्साफ और अच्छे व्यवहार और रिश्तेदारों की मदद का हुक्म देता है, वो बेहयाई की बातों, नापसन्द कार्यों और दूसरों के साथ अन्याय करने से रोकता है, वो तुम को नसीहत करता है, (ताकि) तुम नसीहत हासिल करो। (नहल 16)

इस आयत में शिष्टाचार के समस्त पहलुओं को समायोजित किया गया है। इस पवित्र आयत में अल्लाह ने न्याय और परोपकार को सदाचार का आधार कहा है। निर्लज्जता एवं बुरी बातों से रोका है। जिससे इन्सान लापरवाही का शिकार न हो और उसका चरित्र व व्यवहार श्रेष्ठ हो जाये। पवित्र कुर्आन की विभिन्न सूरतों में स्थान-स्थान पर उच्च व्यवहार व शिष्टाचार के निर्देश दिये गये हैं। ये सादे और मन को मोह लेने वाले अंदाज़ में बताये गये हैं।

सूरह फातिहा

पवित्र कुर्आन का आरम्भ सारे संसार के पालनहार अल्लाह के गुणगान से है। उसके आदेशों को स्वीकार करने और उससे सहायता माँगने वाली सूरह से आरम्भ किया गया है। इस सूरह को सूरह 'फातिहा' कहते हैं। इसमें ७ आयतें हैं और ये नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाती है। इस प्रकार अल्लाह और उसके

बन्दों में जो सम्बन्ध है, उसको सुबह-शाम याद किया जाता है और उसका जाप किया जाता है। इस सूरह के माध्यम से भक्त सारे संसार के पालनहार अल्लाह से सहायता माँगता है और उसकी उपासना (इबादत) करता है।

“हर प्रकार की तारीफ अल्लाह ही के लिए हैं, जो तमाम आलमों (सृष्टियों) का रब (पालने वाला) है, बड़ा मेहरबान (दयावान), निहायत रहम वाला (कृपालु) है, न्याय के दिन का मालिक है, हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं, हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनआम फरमाया, न की उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तेरा गज़ब (प्रकोप) हुआ और न उनके रास्ते पर जो राह से भटके हुए हैं”। (सूरह-फातिहा)

पहली आयत में इन्सान अपने रब की नेमतों का शुक्र अदा करता है। तारीफ और शुक्र उसी सर्वश्रेष्ठ के लिए है जिसका नाम ‘अल्लाह’ है। वो सारी सृष्टि का पालने वाला है। सबका भरण-पोषण करने वाला है। सहारा देने वाला है, सारी सृष्टि और ब्रह्माण्ड का मालिक है।

उसका विशेष गुण रहमान और रहीम है। सारे जीवों की राहत और भलाई का इन्तेज़ाम करता है। सब पर कृपा करता है। उसकी रहमत और कृपा की कोई सीमा नहीं।

इसी के साथ वो यह भी देखता है कि बन्दा अपने रब की नेअमतों और रहमतों को कितना मानता है और उसके कहने पर कितना चलता है। इसकी परीक्षा के लिए उसने एक दिन निर्धारित कर दिया है। जिस दिन सारी सृष्टि को नष्ट करके नया जीवन दिया जायेगा। इस दिन सबको उसके सामने पेश होना होगा। सब उस सर्वश्रेष्ठ और सबके मलिक ‘अल्लाह’ के सामने जायेंगे और अपने कर्मों का हिसाब देंगे। उस दिन का वो अकेला मालिक है।

आज हुक्मत किसकी है? तन्हा अल्लाह की है जो ज़बरदस्त है। (शाफिर 12)
इसलिए बन्दों को अभी से इस बात की चिन्ता करनी चाहिए कि वो उस दिन की तैयारी करें। मानव जीवन का जो उद्देश्य है, उसको पूरा करें। यानि अपने रब की आज्ञा का पालन और उसका शुक्र अदा करें।

ये प्रार्थना की है कि हम तेरी ही इबादत करते हैं। क्योंकि सही रूप में आज्ञापालन करना और बुरी बातों से बचना कठिन कार्य है। जिसके लिए इन्सान अपने रब से सहायता माँगता रहता है। ये सहायता उसकी ओर से है, जो सबका मालिक है और सारी सृष्टि उसके वश में है। इसलिए हम तुझ ही से मदद माँगते हैं, तू ही सत्य मार्ग पर चला (मार्गदर्शन कर) सद्बुद्धि दे और सहायता करा। हमें उन लोगों के रास्तों पर चला जिन पर तूने विशेष कृपा की और उन लोगों के रास्तों से बचा, जिनसे तू नाराज़ है या वो सीधे रास्तों से भटके है।

इस प्रकार ये ७ आयतें उस उद्देश्य और कर्म को बताती हैं जो इन्सान और ईश्वर के बीच होना चाहिए। ये सूरह पवित्र कुर्आन के आरम्भ में आई हैं, इसलिए इसे सूरह 'फातिहा' कहते हैं। इसको एक जाप का रूप दे दिया गया, जिससे इन्सान अपने रब की भक्ति करता है और उससे सहायता माँगता है। पवित्र कुर्आन में सूरह 'फातिहा' के अतिरिक्त ११३ सूरतें हैं जिनसे मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं में मार्ग दर्शन मिलता है।

सबसे पहले अवतरित हुयी सूरत में ज्ञान प्राप्त करने के निर्देश

पवित्र कुर्आन में सबसे पहले सूरह 'अलक' का अवतरण हुआ। इसमें ज्ञान को अल्लाह के नाम के साथ प्राप्त करने के निर्देश दिये गये हैं।

पढ़िए अल्लाह के नाम के साथ जिसने सबको पैदा किया, जिसने इन्सान को खून के लौथड़े से पैदा किया, पढ़िए और (याद रखिए कि) आपका रब बड़ा करीम है, जिसने कलम के ज़रिये इल्म सिखाया और इन्सान को वह इल्म सिखाया, जिसको वह नहीं जानता था। बेशक इन्सान अपने रब के साथ नाफरमानी करने वाला है, इसलिए कि उसने अपने आप को गनी (बेनियाज़/निराधार) समझ लिया है। बेशक तुम सबको अल्लाह की ओर लौटना है। (अलक 1-8)

इन्सानों में ज्ञान का जो विशेष गुण है, उसके कारण वो सृष्टि की अन्य चीज़ों से श्रेष्ठ है। अपनी बुद्धि का प्रयोग करके अपने आस-पास के माहौल का ज्ञान प्राप्त करने और उसके द्वारा अपने जीवन को सँवारने की ओर ध्यान दिलाया गया है। इन निर्देशों को यदि हम इतिहास की रोशनी में देखें तो ये बात सिद्ध हो जाती है कि संसार में जो उन्नति और खोजें होती रही हैं या होती रहेंगी, वो सब इन्सान को अल्लाह के द्वारा दिये ज्ञान प्राप्त करने के गुण के कारण हैं। इस विशेष गुण को देकर अल्लाह ने इन्सान को अन्य सृष्टि से श्रेष्ठ बना दिया। इसके साथ ये भी बता दिया कि ये अपनी तारीफ और खुद पसन्दी के धोखे में फँस सकता है। जिसके कारण इन्सान अभिमानी हो सकता है। इससे समाज में बड़ी खराबी पैदा हो सकती है। इसलिए सबसे पहले अवतरित हुई सूरत में ज्ञान को अल्लाह के नाम के साथ जोड़ दिया गया। चाहे तुम कितनी ही तरक्की करो और ज्ञान से कितना ही लाभ उठाओ पर ये न भूलो कि ये विशेषता तुमको अल्लाह ही ने दी है। इसलिए ज्ञान को अल्लाह के नाम के साथ जोड़ा गया। जब तक ज्ञान अल्लाह के नाम के साथ जुड़ा रहेगा तो इन्सान अपने और समाज दोनों के लिए अच्छाई और कामयाबी का माध्यम बनेगा। इस प्रकार इन्सान उन बुराईयों से बचा रहेगा जो अभिमान और धमण्ड के कारण पैदा होती हैं। ये पवित्र कुर्आन के माध्यम से अल्लाह के द्वारा दी गयी पहली शिक्षा है। ये शिक्षा मानव इतिहास के नये युग के आरम्भ में आई किताब में दी गयी। ये युग

ज्ञान प्राप्त करने, जीवन के विभिन्न पहलुओं में इसका प्रयोग किये जाने और सारे संसार के लोगों के मध्य सम्बन्ध जोड़ने का गवाह बनने वाला था। ये बात पवित्र कुर्आन की सबसे पहले अवतरित हुई सूरत में बताई गयी। सम्पूर्ण कुर्आन के अवतरित हो जाने के बाद इन्सानों की आवश्यकता के अनुसार इनको नये क्रम में रखा गया। इसमें सूरह 'फातिहा' को सबसे पहले रखा गया जो पवित्र कुर्आन की उच्च भूमिका व सार है। ये क्रम पढ़ने के लिए और इन्सानों के लाभ के लिए रखा गया है जिससे पढ़ने वालों को लाभ हो। इस क्रम में सबसे पहले आई सूरह 'फातिहा' हर मौके पर प्राथमिकता का स्थान रखती है। इसमें सारे संसार के रब को मानने, उसके उपकारों को स्वीकार करने और जीवन को बेहतर बनाने के लिए उससे मदद माँगी गयी है। पथभ्रष्टता से बचाने की प्रार्थना की गयी है। इसके बाद सूरह 'बकर' आती है जो एक बड़ी और दृढ़ सूरत है।

सूरह बकर: और अन्य सूरते

इस सूरह का आरम्भ अल्लाह की पवित्रता और महानता को बताने के साथ हुआ है।

अलिफ लाम मीम, ये किताब कि इसमें कोई सन्देह नहीं, हिदायत है अल्लाह से उरने वालों के लिए, जो गैब (परोक्ष) पर ईमान रखते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हमने उनको दे रखा है, उसमें से खर्च करते हैं और यकीन तो बस आखिरत ही पर रखते हैं, यही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं और पूरे कामयाब तो बस यही हैं। (अल-बकर 1-5)

इन प्रारम्भिक आयतों में यह बात बताई गयी है कि जीवन को सँवारने और सही रखने के लिए अल्लाह का कानून और नियम निर्धारित है। इनका आधार यह है कि अपने पैदा करने और पालने वाले अल्लाह को दिल से माना जाए। जो बातें आँखों से नहीं देखी लेकिन अल्लाह के पवित्र कुर्आन और अन्तिम नबी मुहम्मद स० के द्वारा बताई गयी है, उन पर विश्वास करो। यह विश्वास इस प्रकार हो जैसे हम अपनी मेहनत और खोज से प्राप्त की गयी चीज़ों पर विश्वास करते हैं। फिर अपने रब की ओर से दिये जीवन और उपकारों का धन्यवाद उसकी उपासना के द्वारा किया जाए। इसमें मुख्य कर्म नमाज़ पढ़ना है। जो उपासना का दृढ़ और प्रभावी रूप है। इसके साथ समाज में गरीब और जरूरतमंदों की सहायता करना और उनके दुख-दर्द में साथ देना। इसके साथ ही अल्लाह की ओर से दी गयी किताबों पर विश्वास रखना। जिनमें इन्सानों के लिए मार्गदर्शन और अल्लाह की उपासना करने की शिक्षायें हैं। इसके साथ ही अल्लाह के नबियों पर विश्वास करना। यह बात मानना की इस जीवन के बाद नया जीवन मिलेगा। जिसमें कर्मों के अनुसार फल मिलेगा, इनाम और सज़ा मिलेगी। मृत्यु के बाद मिलने वाले जीवन और हिसाब-किताब में विश्वास के द्वारा ही इस

जीवन में कर्मों पर नियन्त्रण किया जा सकता है। ये विषय वो विषय हैं जो इन्सान के उच्च स्थान और आचरण की ओर संकेत करते हैं।

इन आयतों के बाद ह० मुहम्मद स० से पहले आए नबियों और उनकी कौमों का उल्लेख किया गया है। उन बातों को बताया गया है, जो उन लोगों ने अल्लाह के आदेशों के विरुद्ध की और उसकी नाराज़गी के भोगी हुए। इसके साथ-साथ बहुत से आवश्यक आदेशों का भी वर्णन है। इसके अतिरिक्त इस विस्तृत सूरह में मानव जीवन में आने वाली अच्छी और बुरी बातों को बताया गया है। जो मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं में मार्गदर्शन व निर्देश देती है। इस बड़ी सूरत के बाद दूसरी सूरते भी इससे मिलते-जुलते आदेशों और निर्देशों पर बहुत प्रभावी रूप में अवतरित हुयी।

जिसका प्रभाव और सुन्दरता इसके ईशवाणी होने का प्रमाण सिद्ध हुआ। इसको सुनकर और पढ़कर इन्सान कहने पर मजबूर हो जाता है कि यह इन्सानों की वाणी नहीं है यह तो ईशवाणी है। इसकी विभिन्न सूरतों में अल्लाह की कृपा के बहुत से उदाहरण दिये गये हैं। पिछली कौमों के किस्से बताकर उनके असभ्य आचरण की और नबियों के द्वारा उनको समझाने और सदाचार व आस्था की ओर बुलाने की घटनायें बताई गयी हैं, जो बहुत प्रभावी हैं। बहुत अधिक आज्ञा उल्लंघन करने पर जो दण्ड दिया गया उसका भी वर्णन किया गया है। इस प्रकार पवित्र कुर्आन के माध्यम से इन्सानों को मार्ग दर्शन मिला। परन्तु ये केवल उन लोगों के लिए है जो बुरे कर्मों से बचना चाहते हैं। जो लोग विचार करने के लिए भी तैयार नहीं हैं उनका अभिमान और धमण्ड में पड़कर भटक जाना और जानवरों के समान हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इन लोगों को समझाने के लिए अल्लाह अपनी प्रभावी वाणी और आकर्षक शैली के अतिरिक्त और कोई विधि भी अपना सकता था। इन्सानों के स्वभाव को जन्म से ही ऐसा बना देता कि वो बुरे काम कर ही न पाते और अच्छे काम करने पर मजबूर हो जाते। किन्तु इसमें इन्सानों के कर्म उनकी इच्छा से न होते और उनका कोई गुण सामने न आता। इसलिए अल्लाह ने कहा है कि हम चाहते तो सबको सीधे रास्ते पर ले आते पर इससे इन्सान की इच्छा शक्ति सामने न आती और इन्सानों की भावनाओं और कर्मों की परीक्षा न हो पाती। इस प्रकार इनाम और सज़ा का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता। इस प्रकार पवित्र कुर्आन अल्लाह की दी हुई वह किताब है जो इन्सानों को सत्य मार्ग दिखाकर उनको विशेष योग्यता प्रदान करती है और उनका मार्ग दर्शन करती है। जिससे इन्सान यह न कह सके “हमे तो बताया ही नहीं गया था”। जो लोग जीवन में बुरे कर्मों से नहीं बचते और उन्हें अल्लाह की नाराज़गी की कोई परवाह नहीं करते, उनके भाग्य में नरक का अज़ाब है। जब उनके बुरे कर्मों का फल सामने आयेगा तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। तब कोई रास्ता सामने न आयेगा। यही ऐसे लोगों का अंजाम होगा इसकी ओर पवित्र कुर्आन ने बार-बार ध्यान दिलाया है।

पवित्र कुर्आन की मूल शिक्षायें

संसार में जितने धर्म सामने आये, उनमें से कुछ तो वो है जो लोगों ने अपनी इच्छा से बना लिए, ये लोगों के मनगढ़न्त धर्म हैं। दूसरें वो हैं जो अल्लाह ने नबियों के माध्यम से इन्सानों को दिये, ये आकाशीय धर्म हैं। पवित्र कुर्आन ने आकाशीय धर्म को उसके वास्तविक रूप में रखते हुए, उस पर चलने का आदेश दिया है। मनगढ़न्त धर्मों को खुली गुमराही (पतझ्रष्टता) का माध्यम कहा है। इस गुमराही को शिर्क यानि अल्लाह के साथ किसी को साझी करना और कुर्फ यानि अल्लाह का इन्कार करना कहा है।

आकाशीय धर्म जो नबियों के माध्यम से दिये गये, उन सभी धर्मों में प्रार्थना, कर्म और आदेशों से पहले विश्वास और आस्था को शुद्ध किया गया है। हर नबी ने अपने युग में सबसे पहले एक मात्र अल्लाह के ईश्वर होने, सारी सृष्टि के निर्माता और मालिक होने, उसके पवित्र एवं सर्वश्रेष्ठ होने की शिक्षा दी है। उसकी प्रार्थना और धन्यवाद के तरीके बताए हैं। सभी नबियों का प्रयास एवं प्रचार की मुख्य शिक्षायें यही रही है। इन आकाशीय धर्मों को लाने वाले नबियों पर अल्लाह ने किताबें अवतरित की। इनमें ऐकेश्वरवाद और सभ्य कर्मों की शिक्षायें दी गयीं। नबियों के बाद लोगों ने इन धर्मों में परिवर्तन किये और अपने मत जोड़कर अपनी इच्छा के अनुसार इन धर्मों का पालन किया। इन मतों एवं कुप्रथाओं का अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी को दी किताब पवित्र कुर्आन में संशोधन किया। इस अन्तिम आसमानी किताब की सुरक्षा का अल्लाह ने वादा किया और स्वयं इसकी सुरक्षा का दायित्व लिया। धार्मिक कर्मों में अलग-अलग कौमों के विशेष कार्यों में कुछ परिवर्तन छोड़ दिये गये थे। जिनको अपने अन्तिम नबी के द्वारा पूरा करा दिया। इस प्रकार धार्मिक आदेशों को सम्पूर्ण किया। इस धर्म को 'इस्लाम' के नाम से अन्तिम नबी एवं अन्तिम किताब के द्वारा सम्पूर्ण एवं सदा रहने वाला धर्म बना दिया। पवित्र कुर्आन ईश्वर की अन्तिम एवं नित्य किताब है। ये ही पवित्र कुर्आन का मूल विषय एवं शिक्षायें हैं।

ऐकेश्वरवाद का मत

अल्लाह की अन्तिम किताब पवित्र कुर्आन सबसे पहले ऐकेश्वरवाद का उपदेश देती है। इसके बाद सम्पूर्ण सृष्टि और इसमें रहने वाले जीवों को बनाने

वाले अल्लाह का धन्यवाद व उपासना करने पर जोर देती है। इस सन्दर्भ में पहले तो उस सर्वश्रेष्ठ की महानता को बताती है, फिर मानव जीवन के उद्देश्य को बताती है। अल्लाह अपने सर्वशक्तिमान होने को बताता है और अपनी बातों को प्रमाणित करता है।

अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वो ज़बरदस्त हिकमत वाला है। उसी की सलतनत है, आसमानों की और ज़मीन की, वो ही जिन्दगी देता है और मौत देता है, वही हर चीज़ पर कादिर (प्रभावी) है, वही पहले है और वही बाद में है, वही ज़ाहिर है और वही छिपा है और वो हर चीज़ का जानने वाला है। वो ऐसा है कि जिसने आसमानों और ज़मीन को ६ दिनों में पैदा किया, फिर तख्त पर कायम हुआ, वो सब कुछ जानता है, जो चीज़ ज़मीन के अन्दर जाती होती है और जो चीज़ उसमें से निकलती है और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ उसमें चढ़ती है और वो तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम कहीं भी हो और वो तुम्हारे सब कर्मों को भी देखता है। उसकी सलतनत है आसमानों की और ज़मीन की और अल्लाह ही की ओर सब लौट जाएंगे, वही रात को दिन में दाखिल करता है और वही दिन को रात में दाखिल करता है। तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ, जो माल उसने तुमको दिया है उसमें से खर्च करो, तो जो लोग तुमने से ईमान ले आये और खर्च करें उनको बड़ा सबाब मिलेगा। (हदीद १-७)

और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो ज़रूर यही जवाब दें कि अल्लाह ने। आप कहे की अलहमदुलिल्लाह (सारी तारीफ अल्लाह के लिए हैं), बल्कि उनमें से अक्सर नहीं जानते जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है सब अल्लाह ही का है, और बेशक अल्लाह बेनियाज़ सब खूबियों वाला है और जितने पेड़ इस ज़मीन में है, अगर वो सब कलम बन जाए और ये जो समुद्र है (रोशनाई बन जाए) इसके अलावा सात समुद्र इसमें और मिल जाए, तो अल्लाह की बातें (तारीफ) खत्म न हों। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। तुम सब का पैदा करना और जिन्दा करना बस ऐसा ही है जैसा एक इन्सान का, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता, सब कुछ देखता है। (लुकमान २४-२७)

आप कहिए कि आसमानों और ज़मीन का रब कौन है? आप ही कह दीजिए कि अल्लाह है, फिर आप ही कहिए कि क्या फिर भी तुमने उस के यानि अल्लाह के सिवा दूसरो को मददगार करार दे रखा है, जो खुद अपनी ज़ात के नफे नुकसान के भी मालिक नहीं। आप ये भी कहिए कि क्या आँधा और आँखों वाला बराबर हो सकता है या ये कहिए कि क्या अन्धेरा और रोशनी बराबर हो

सकती है, या उन्होंने अल्लाह के ऐसे साक्षी बना रखे हैं, कि उन्होंने भी किसी चीज़ को पैदा किया हो जैसे अल्लाह पैदा करता है। फिर उनको पैदा करना एक सा मालूम हुआ हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही हर चीज़ का खालिक (बनाने वाला) है और वो ही वाहिद (अकेला) है ग़ालिब (प्रभावी) है। (राद 12)

तो तुम अल्लाह कि तस्बीह किया करो शाम के वक्त और सुबह के वक्त और तमाम आसमानों और ज़मीन में उसकी हम्द (प्रशंसा) होती है और पिछले पहर और जब तुम पर दोपहर के समय वो जानदार को बेजान से बाहर लाता है और बेजान को जानदार से बाहर लाता है और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। इसी की निशानियों में से एक ये है कि तुम को मिट्टी से पैदा किया है, फिर थोड़े ही दिनों में तुम आदमी बनकर फेले हुए फिरते हो और उसी की निशानियों में से ये है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही जैसी बीवियाँ बनाई ताकि तुम को उनके पास आराम मिले और तुम मियाँ-बीवी में मुहब्बत और हमदर्दी पैदा की। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो फ़िक्र से काम लेते हैं और इसी की निशानियों में से आसमान और ज़मीन का बनाना है और तुम्हारे लिए भाषाओं और रंगों का अलग-अलग होना है, इसमें इल्म वालों के लिए निशानियाँ हैं। इसी की निशानियों में से तुम्हारा सोना लेटना है रात और दिन में और उसकी रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। उसी की निशानियों में से ये है कि वो तुमको बिजली दिखाता है। जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है और वो ही आसमान से पानी बरसाता है फिर इसी से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक्ल रखते हैं। उसी की निशानियों में से ये है कि आसमान और ज़मीन उसी के हुक्म से कायम है, फिर जब तुम को पुकार कर ज़मीन में से बुलायेगा तो तुम अचानक निकल पड़ोगे और जितने आसमान और ज़मीन मौजूद हैं सब उसके अधीन हैं। वही है जो पहली बार पैदा करता है और वो ही दोबारा पैदा करेगा और ये उसके लिए बहुत आसान है। आसमानों और ज़मीन में उसी की शान ऊँची है और वो ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (रूम 17-27)

फिर इस बात को बताया गया है कि इस सब निज़ाम (व्यवस्था) को बनाने के पीछे एक मकसद है। जैसा कि बताया गया-

और मैंने जिन्न और इन्सानों को इसलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत किया करें, मैं उनसे रोज़ी कमाने को नहीं कहता और न ये कहता हूँ कि वो मुझको खिलाया करें, अल्लाह खुद ही सबको रिज़्क पहुचाने वाला कुव्वत (सामर्थ्य रखने) वाला बहुत जानने वाला है। (ज़ारियात ५६-५७)

इस उद्देश्य के लिए हमारी पृथ्वी को चुना गया और इन्सानों को इस उद्देश्य को पूरा करने का दायित्व सौंपा गया। इसमें सबसे पहले इस सृष्टि को बनाने वाले और पालने वाले अल्लाह पर ईमान लाना है। अपने कर्मों को अल्लाह की इच्छा के अनुसार ही करना है। इन कर्मों को अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी स० के माध्यम से लोगों को बताया और समझाया। इसके साथ ही ये बात स्पष्ट कर दी कि इन्सानों को पैदा करने का उद्देश्य उनकी परीक्षा लेना है। उनके कर्मों का फल मृत्यु के बाद परलोक में दिया जायेगा, जो इस संसार से श्रेष्ठ और सदा रहने वाला है। अच्छे कर्म करने वालों को इनाम दिया जायेगा। जिन लोगों ने अल्लाह के आदेशों का पालन नहीं किया होगा उनको सज़ा दी जायेगी। जिससे वो अपनी ग़लतियों की सज़ा पा लें।

जब अल्लाह ने अपनी किताबों और संदेष्टाओं के माध्यम से सत्य और असत्य को बता दिया। तो अब आदेशों का पालन करने वालों को इनाम मिलेगा और इसके विपरीत करने वालों को दण्ड दिया जायेगा।

वो खुदा बड़ा आलीशान (सर्वश्रेष्ठ) है जिसके कब्जे में सारी सलतनत है और वो हर चीज़ पर कादिर (प्रभावी) है। जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से कौन अच्छे कर्म करता है और वो ज़बरदस्त और माफ़ करने वाला है। (मुल्क 1-2)

वही है जो तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है और वो ही है जो आसमान से तुम्हारे लिए रिज़्क भेजता है और सिर्फ वही इन्सान नसीहत कुबूल करता है जो खुदा की ओर लोटने का इरादा करता है। तो तुम लोग अल्लाह को नेक नीयत से पुकारो, चाहे काफ़िरों को नापसन्द क्यों न हो। वो ऊँचे दर्जे (उच्चतम श्रेणी) वाला, अर्श का मालिक है। वो अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है ईशवाणी यानि अपना हुक्म भेजता है ताकि वो लोगों को कयामत के दिन से डराए। जिस दिन सब लोग खुदा के सामने मौजूद होंगे, उनकी कोई बात खुदा से छिपी न रह सकेगी, आज के दिन किस की हुक्मत होगी? बस अल्लाह की ही होगी, जो अकेला और सब पर काबू रखने वाला है। आज हर इन्सान को उसके किये का बदला दिया जाएगा, आज किसी पर जुल्म न होगा, अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (मोमिन 13-17)

आप कह दीजिए! क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर को अपना रब बनाने के लिए तलाश करूँ? जबकि वो मालिक है हर चीज़ का और इन्सान जो कर्म करता है वो उसी पर रहता है और कोई दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम सबको अपने रब के पास जाना होगा, फिर वो तुमको बता देगा जिस-जिस चीज़ में तुम में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) थे और वो ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में

कुछ स्वतन्त्रता दी और एक को दूसरे पर सम्मानजनक बनाया, जिससे तुमको आजमाए ऊपरी तौर से उन चीजों में जो तुमको दी हैं, बेशक तुम्हारा रब जल्द ही सज़ा देने वाला और बेशक वो बड़ा माफ करने वाला, बड़ी महरबानी करने वाला है। (अनआम 164-165)

उस सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सारे संसार को बनाया और उनके कार्यों को भी निर्धारित किया। अब वो यह परीक्षा लेता है कि हम उसकी इच्छा के अनुसार कर्म करते हैं या नहीं। हमारे चारों ओर पाई जाने वाली चीजों को देखकर यह बात सिद्ध हो जाती है। इन्सान जो इस संसार में श्रेष्ठ है और अपनी इच्छा से कर्म करने में सबसे आगे नज़र आता है। वो भी अल्लाह के सामने मशीन का एक पुर्जे से अधिक नहीं है। अल्लाह इसको जैसे चलाना चाहे, ये चलने पर मजबूर है। यहाँ तक की खाने का एक टुकड़ा भी निगलने के बाद हमारे वश से बाहर है। इसके पाचन की जो क्रिया अल्लाह ने बना दी है, उसके अनुसार ही से पेट में जाता है आँतों से गुज़रता हुआ, अपना कार्य पूरा करके बाहर आ जाता है। हमको जो ज्ञान दिया गया है उसके अनुसार हमारे वश में बस इतना है कि ऐसा खाना खाया जायें जो पेट में जाकर अटक न जाये। इस प्रकार इन्सान अपनी सारी प्रतिभाओं के बाद भी बस इतनी ही क्षमता रखता है। सैकड़ों बार हम खाना खाते हैं, वो हमारे शरीर में पचता है। इससे शरीर को ऊर्जा मिलती है, जिससे हमारे शरीर के अंग सुचारु रूप से कार्य करते हैं। ये प्रक्रिया इन्सानों के शरीर में हज़ारों साल से चल रही है। यदि हम इसके विपरीत कुछ करते हैं, तो हम नुकसान में पड़ जातें हैं। इस परेशानी और नुकसान को दूर करने के लिए अल्लाह ने जो उपचार की चीज़ें बनाई हैं उनका सहारा लेना पड़ता है। इसमें भी हम अल्लाह की ओर से निर्धारित व्यवस्था से हट नहीं सकते। दूध से हम दूध ही का लाभ ले सकते हैं।

एकेश्वरवाद में आने वाली दूसरी सच्चाईयाँ

अब सवाल ये उठता है की अल्लाह ने इन्सानों को जो इच्छा शक्ति और विवशता दी है वो क्यों है? क्योंकि व्यवस्था चाहे जो भी हो उसका कोई उद्देश्य होता है। ना तो यह सृष्टि ही बिना उद्देश्य के बनाई गयी है और ना ही इसमें रहने वाले जीव और इन्सान। पवित्र कुर्आन में है-

तो क्या तुम्हारा ध्याल था कि हमने तुमको यून ही बे मकसद पैदा कर दिया है और तुम हमारे पास लौटा कर न लाए जाओगे। (मोमिनुन 115)

देखना यह है कि उद्देश्य क्या है? इस उद्देश्य को हम अल्लाह के द्वारा दी गयी अन्तिम किताब पवित्र कुर्आन ही से अच्छी तरह समझ सकते हैं। पवित्र कुर्आन में है-

बेशक ये कुर्आन ऐसे रास्तों की हिदायत करता है जो बिल्कुल सीधा है और ईमान वालों को जो नेक कर्म करते रहते हैं, खुश खबरी देता है कि उनके लिए बड़ा भारी अज्र (इनाम) है और ये भी बताता है कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (बनी इस्राईल 9-10)

जो कोई दुनिया की इच्छा रखेगा, हम उसको दुनिया में से जितना चाहेंगे, जिसके लिए चाहेंगे दे देंगे, फिर हम उसके लिए जहन्नम रखेंगे। इसमें वो बदहाल और अपमानित होकर दाखिल होगा। जो कोई आखिरत की इच्छा रखेगा और उसके लिए कोशिश भी उसके लायक करेगा और वो मोमिन भी हो तो ऐसे लोगों कि कोशिश कुबूल होकर रहेगी। (बनी इस्राईल 18,19)

सबसे पहले सर्वशक्तिमान अल्लाह को इस सृष्टि का अकेला मालिक और पैदा करने वाला मानना। उसको एक एवं सर्वशक्तिमान मानना। दूसरा उसकी ओर से इन्सानों को समझाने के लिए जो नबी भेजे गये, उनको स्वीकार करना, उनकी हर बात को सच एवं अल्लाह का पैगाम समझना। तीसरा इस बात पर विश्वास रखना कि मृत्यु के बाद नया जीवन मिलेगा, जिसमें इस जीवन में किये कर्मों का हिसाब लिया जायेगा। कर्मों के अनुसार ही इनाम और सज़ा मिलेगी। इन तीन बातों के बाद ये बात भी माननी है की इन्सानों और अल्लाह के बीच फरिशतों की एक जाति है। ये अल्लाह के आदेशों को नबियों तक लाती है और अल्लाह के आदेश से इस संसार की व्यवस्था को चलाती है। इस बात को स्वीकार करना कि इस संसार में जो कुछ भी होता है वो अल्लाह ही के आदेश से होता है। वो हर चीज़ को जानने वाला है। पवित्र कुर्आन में इन बातों को इस प्रकार कहा गया- “ईमान लाया मैं अल्लाह पर, उसके फरिशतों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आखिरत के दिन पर और इस बात पर की अच्छी और बुरी तकदीर अल्लाह की ओर से होती है और मौत के बाद दोबारा उठाए जाने पर”। अल्लाह के आज्ञाकारी होने के दो आधार स्तम्भ हैं।

(1) ईमान (विश्वास) (2) विश्वास के अनुसार कर्म

विश्वास तो ऊपर बता दिया गया है। कर्म इस प्रकार हो कि उसमें अल्लाह पर विश्वास दिखाई दे। इन्सान जो भी आस्था रखता है वो उसके कर्म में दिखाई दे ही जाती है। जबकि इन्सान अपनी-अपनी सोच के अनुसार अपना रूप बना लेता है। इन्सान जिसको सर्वशक्तिमान समझता है, अपने कर्मों में उसकी प्रसन्नता और नाराज़गी का ध्यान रखकर उसकी उपासना करता है।

इस्लाम में एक मात्र अल्लाह ही को सर्वशक्तिमान, संसार का मालिक, लाभ-हानि देने वाला और उपासना के योग्य कहा गया है। जिसमें कोई सन्देह

नहीं। किन्तु जिसके हाथ से इस्लाम की बताई गयी सच्चाई का दामन छूट गया। वो अपनी सोच और अनुमान से विश्वास बना लेता है। उसे अपने आस-पास जो भी इन्सान या कोई चीज़ अपने से अधिक शक्तिशाली दिखाई देती है। उसके सामने झुक जाता है और उसकी उपासना करने लगता है। ये उसकी सोच का परिणाम होता है। आम तौर पर लोग किसी विशेष गुण वाले इन्सान को उसकी विशेषता के कारण सम्मान देते हैं। धीरे-धीरे ये आदर-सत्कार इतना बढ़ जाता है कि इन्सान यह सोचने लगता है कि इसमें मानव शक्ति से अधिक कोई शक्ति है। ये भावना इतनी बढ़ जाती है कि इन्सान उससे सम्बन्धित हर चीज़ में श्रद्धा रखने लगता है और उससे लाभ-हानि मिलने का विश्वास करने लगता है। ये कोई पत्थर भी हो सकता है या कोई जानवर भी। इन्सान इनकी उपासना और सम्मान करने लगता है। इस प्रकार उस सर्वशक्तिमान, सर्वश्रेष्ठ और एक मात्र अल्लाह के विशेष गुण दूसरे इन्सानों और वस्तुओं में समझने लगता है। ये ही शिर्क है, जो सारे संसार के स्वामी अल्लाह को बहुत नापसन्द है और उसकी नाराज़गी का कारण है।

पहले अरब वासियों में मूर्ति पूजा नहीं थी। लोग इब्राहीम अलै० को मानते थे और एक मात्र अल्लाह में विश्वास रखते थे। बाद में उनमें एक अम्र नाम का आदमी पैदा हुआ, उसने शाम की यात्रा से वापस आते समय वहाँ की मूर्तियों की पूजा का विचार अरब वासियों को दिया। उसने हुबुल नाम की एक मूर्ति को इन्सानों से अधिक शक्तिशाली बताया और उसकी मूर्ति लाकर दी। इसके सामने झुकने को लाभ मिलने का माध्यम बताया। इसके बाद यह बात फैल गयी और इसी प्रकार की मूर्तियाँ बनने लगी और मूर्ति पूजा आम हो गयी। लोग बड़े लोगों में श्रद्धा रखने लगे और उनकी मूर्ति काबे में रखने लगे। यहाँ तक की काबे में 360 मूर्तियाँ रखी हुयी थी।

नबी का कार्य यह होता है कि वो अपने लोगों में फैली बुराईयों और कृपथाओं को दूर करे और लोगों की आस्था और विश्वास को शुद्ध करे। इस प्रकार अपने से पहले आए नबियों के सन्देशों को ताज़ा करे। ह० मुहम्मद स० ने इसी कार्य को किया। उन्होंने लोगों को सत्य मार्ग की ओर बुलाया। यह पहले नबियों ही की तरह लोगों को अल्लाह की ओर बुलाने का काम था। लाभ और हानि मात्र अल्लाह ही के बस में है। उसकी बनाई चीज़ों में कोई उसके बराबर नहीं। इस सृष्टि की रचना में उसका कोई सहायक नहीं। उसको किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। किसी को उसका सहायक समझना गलत ही नहीं बल्कि उसकी कृपा का इन्कार करना है। इस कायनात का कण-कण उसके आदेश का पालन करता है। लाभ और हानि उसी के आदेश से होती है। उसके

अतिरिक्त किसी को लाभ-हानि देने वाला मानना उसकी नाशुकी है, जो उसको पसन्द नहीं है। वो इसको दण्ड योग्य अपराध समझता है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई कितना ही बड़ा इन्सान हो, चाहे फरिश्ता ही क्यों न हो, सब उसके बनाये हुये हैं। सबके लिए उसके आदेशों का पालन करना और उसकी उपासना करना आवश्यक है।

अल्लाह ने पवित्र कुआन में उन सभी पहलुओं की ओर ध्यान दिलाया है, जिनका सामना इन्सान करता है और उसके दायित्व को स्पष्ट कर दिया है। इसमें सबसे पहली जिम्मेदारी ईमान की है। अपने पैदा करने वाले को एक मानों, उसी ने तुमको और जीवन की समस्त सुविधाओं को पैदा किया और इन्सान को इनसे लाभ उठाने का अवसर दिया। उसके आदेशों का पालन करो और उसे धन्यवाद दो। उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने से बचो। ये सोचों की तुमको मिट्टी से पैदा किया गया है और मिट्टी अन्य चीजों की अपेक्षा तुच्छ है। इसके बाद भी अल्लाह ने इन्सान को अन्य जीवों से श्रेष्ठ स्थान दिया है। ये बात स्पष्ट कर दी कि यदि तुम अल्लाह की आज्ञा का पालन करोगे तो तुम्हें श्रेष्ठ स्थान मिलेगा और यदि तुम इसके विपरीत करोगे तो तुम अपमानित होगे और तुम्हें दण्ड मिलेगा।

इन्जीर और जैतून की कसम और तूर पहाड़ की और इस अमन वाले शहर (मक्का) की, बेशक हमने इन्सान को बहुत ही सुन्दर (साँचे में ढालकर) बनाया, फिर उसको (नरक में) नीचे से भी नीचे सतह पर लौटा दिया, मगर जो लोग ईमान लाए और नेक आमांल करते रहे, उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है, फिर तुझको क्या हो गया है, (ऐ आदम की औलाद) जो तू बदले के दिन (क्यामत) को झुठलाता है? क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं? (वत्तीन 9-19)

दूसरे स्थान पर कहा है कि इन्सान अपनी कामनाओं का दास है। इसके कारण उसे बहुत हानि होती है। इससे वही लोग बचे जिन्होंने अल्लाह पर विश्वास किया, अच्छे कर्म किये और दूसरों को इसके लिए प्रोत्साहित किया। इस कार्य को करने में उसे जो कष्ट उठाने पड़े उन पर संयम से काम लिया।

ज़माने की कसम, बेशक इन्सान बड़े घाटे में है, मगर उन लोगों के सिवा जो ईमान लाये और भले काम करते रहे और एक-दूसरे को हक की नसीहत करते रहे, और सब्र की ताकीद करते रहे। (अस्र)

पवित्र कुआन में ईमान के सम्बन्ध में जो बातें बताई गयी हैं, उनमें सबसे पहले एकेश्वरवाद है यानि अल्लाह को एक मानना, उसी को सारे संसार का पैदा करने और पालने वाला समझना और उसी की उपासना करना। सारे नबियों पर जिनको अल्लाह ने सत्यमार्ग दिखाने के लिए भेजा, विश्वास करना। अपने युग के

नबी की सभी बातों को मानना, जो अल्लाह की ओर के ईशवाणी के आने का माध्यम है। इनमें अन्तिम नबी मुहम्मद स० हुये हैं, जिनको अल्लाह ने विशेष स्थान दिया और कयामत तक आने वाले इन्सानों और सारी सृष्टि के लिए भेजा। तीसरा आखिरत पर विश्वास रखना कि इस संसार के नष्ट होने के बाद दोबारा जीवित होना है और इस जीवन में किये कर्मों का हिसाब देना है। इसके साथ ही अल्लाह की ओर से भेजी गयी किताबों पर विश्वास रखना जैसे तौरेत, इन्जील, ज़बूर और कुर्आन। इसके साथ ही फरिश्तों पर विश्वास रखना जो अल्लाह के आदेशों को पृथ्वी तक लाते हैं। इस बात पर विश्वास रखना कि हर चीज़ अल्लाह के वश में है, जो कुछ उसने किया, उसको पूरा अधिकार था और उसकी इच्छा है। उसी ने सारे संसार की रचना की और हर चीज़ की विशेषता बनाई, वो जब चाहे इसमें कुछ भी परिवर्तन कर सकता है।

अल्लाह के नबी लोगों को सत्य मार्ग दिखाने और जीवन में सदाचार लाने के लिए बार-बार आते रहे। इनके सन्देशों का पवित्र कुर्आन में कई स्थानों पर वर्णन है। इनमें सबसे पहले एक मात्र अल्लाह को सारे संसार का पैदा करने, पालने वाला और सबका स्वामी मानना है। इसलिए अल्लाह के साथ किसी को साझी करने को दृढ़ता से मना किया और इसे शिर्क कहा है।

अल्लाह हर गुनाह को माफ कर देगा पर शिर्क को बिना पश्चाताप के माफ नहीं करेगा।

बेशक अल्लाह इस बात को माफ नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को साझी बना दिया जाए। इसके सिवा जितने गुनाह हैं, जिसके लिए मन्ज़ूर होगा वो गुनाह माफ कर देगा और जो अल्लाह के साथ साझी ठहराता है वो बड़ा जुर्म करने वाला है। (निसा 48)

पवित्र कुर्आन के अनुसार अल्लाह और बन्दों के बीच एकेश्वरवाद का सम्बन्ध है। इसका अर्थ है कि अल्लाह एक है, सारे संसार का मालिक है, हर छुपी और खुली बात का जानने वाला है, हर चीज़ उसके वश में है और उसकी कृपा से हैं।

वो ऐसा रब है कि जिसके सिवा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं, वो बादशाह है, सारी ज़ुटियों से पाक है, पूरी तरह सलामती और अमन देने वाला, रक्षा करने वाला, ज़बरदस्त है, खराबी को ठीक करने वाला, बड़ी शान वाला है, जिसकी शान ये है कि वो लोगों के शिर्क से पाक है। वही पैदा करने वाला है, ठीक-ठीक बनाने वाला है, यानि हर चीज़ को भलाई के मुताबिक बनाने वाला है, शकल बनाने वाला है, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं, सारी चीज़ें उसकी तस्बीह (जाप)

करती हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं और वो ही ज़बरदस्त हिकमत वाला है।
(हज़ 23-24)

इसमें अल्लाह ने अपनी आज्ञा पालन और श्रेष्ठ मानव चरित्र के जो नियम दिये हैं वो 6 नियमों पर आधारित है। एकेश्वरवाद इसका मूल भाग है। सबसे पहले एकेश्वरवाद को मानना और इसके अनुसार कर्म करना इसके बाद फरिश्तों को मानना, जो आकाशीय प्राणी हैं और अल्लाह के आदेशों को पूरा करते हैं। फिर अल्लाह की किताबों पर, उसके नबियों पर, कयामत के दिन पर और तकदीर पर विश्वास रखना। हर बात अल्लाह की ओर से निर्धारित है। इन सब नियमों का आधार पहला नियम एकेश्वरवाद है क्योंकि हर काम का करने वाला वही एक, सर्वशक्तिमान और कृपा करने वाला अल्लाह है। हम फरिश्तों पर विश्वास इसलिये करते हैं क्योंकि उनको अल्लाह ने अपने लिए पैदा किया है। किताबों पर इसलिए ईमान रखते हैं क्योंकि वो अल्लाह की वाणी पर आधारित हैं और उसी के द्वारा अवतरित की गयी हैं। नबियों पर इसलिए विश्वास है क्योंकि वो सत्य मार्ग दिखाने वाले हैं और अल्लाह के संदेशों को इन्सानों तक पहुँचाने के लिये नियुक्त किये गये हैं। कयामत पर इसलिए विश्वास है क्योंकि वो न्याय का दिन है। सृष्टि की हर चीज़ और मानव का अस्तित्व अल्लाह की ओर से होने का विश्वास है, इसलिए हमें आदेश दिया गया है कि इन सब पर ईमान लाओ। यह स्वीकार करने और इसके अनुसार कर्म करने की बात है। इसी को अक्वीदा कहते हैं। इसके बाद कर्म हैं, यह भी विश्वास को मिलाकर ५ नियमों में से है—कलमा, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज़ा।

नमाज़ रात और दिन में 5 बार पढ़ना अनिवार्य है। रोज़ा सूरज निकलने से छिपने तक खाने-पीने और बुरे कामों से खुद को बचाना है और बीबी के शारीरिक सम्बन्ध बनाने से रुके रहना है। रोज़े साल में एक महीने रखने होते हैं। 'ज़कात' अपने माल में से एक छोटा सा भाग गरीबों को देना है। 'हज़' जीवन में एक बार मक्का जाकर इबादत करना है, जबकि वहाँ जाने के लिए पैसे और ताकत हो। यहाँ तक कि हर बात जो इस्लाम में है, चाहे वो विश्वास हो या कर्म उसका सम्बन्ध एकेश्वरवाद से है। एक अल्लाह को रब मानने से है। अल्लाह की ओर से निर्धारित जीवन की सारी व्यवस्था इसी एक केन्द्र बिन्दु के ईद-गिर्द घूमती है। इसलिए इस्लाम की सारी व्यवस्था में आधार शिला एकेश्वरवाद है। ये वो सच्चाई है जिसका मन में विश्वास करना और ज़बान से कहना आवश्यक है। इस विश्वास और इसके अनुसार कर्म के अतिरिक्त हर कर्म व्यर्थ है। एकेश्वरवाद सत्य धर्म और विश्वास का मूल स्रोत है। इसलिए अल्लाह को एक और सर्वश्रेष्ठ मानना, उसकी प्रसन्नता के लिए कार्य करना हर इन्सान के जीवन का वास्तविक

उद्देश्य है। यदि एकेश्वरवाद न हो तो इन्सान के मन व मस्तिष्क में सत्य का प्रकाश उत्पन्न नहीं हो सकता। पवित्र कुर्आन ने अल्लाह और एकेश्वरवाद पर बार-बार स्वभाविक एवं तर्क संगत प्रमाणों को एकत्र किया है। ये प्रमाण उस शैली में हैं कि हर बुद्धिमान इन्सान आसानी से समझ सकता है, उसका दिमाग आसानी से इनको स्वीकार कर लेगा। इससे वो ही मना करेगा जिसने ये तय कर लिया है कि वो किसी भी प्रकार सत्य को स्वीकार नहीं करेगा। पवित्र कुर्आन के प्रमाणों का पहला स्रोत चिन्तन-मनन है। इसमें अल्लाह की निशानियों में सोच-विचार करने को कहा गया है। इसका कहना है ज़मीन की हर चीज़ में, आसमान के हर दृश्य में और जीवन के हर परिवर्तन में अल्लाह को पहचानने की निशानियाँ हैं। वो स्वभाविक शास्त्रार्थ से अल्लाह के होने की गवाही देता है। इसलिए वो कहता है, ये तारों भरा आसमान, ज़मीन, चाँद-सूरज, पेड़, नदियाँ, समुद्र ये सब इस संसार को बनाने वाले का पता देते हैं।

आसमानों और ज़मीन की पैदाईश, रात और दिन के बदलने में अक्लमंदों के लिए निशानियाँ हैं। (आले इमरान 190)

वो अल्लाह है जो आसमानों से पानी बरसाता है, फिर ज़मीन से उगने वाली चीज़ें पैदा करता है और हरयाली उगाता है, खजूर के गुच्छे, अँगूर के बाग, जैतून और अनार पैदा करता है। बेशक इन सब चीज़ों में ईमान वालों के लिए दलीले (प्रमाण) हैं। (अनआम 99)

उसने आसमानों की छत को बिना किसी सतून (खम्बों) के खड़ा किया है और ज़मीन में ऐसे छूटे (पहाड़) डाल दिये हैं कि वो तुमको लेकर हिल नहीं जाती और इसमें हर तरह के जानवर फैला दिये हैं। हमने ही आसमान से पानी बरसाया, फिर इससे उसमें (ज़मीन में) हर तरह की अच्छी चीज़ें उगाई। ये तो अल्लाह की ओर से पैदा की हुई हैं। तो मुझे दिखा कि अल्लाह के सिवा जो लोग हैं, उन्होंने क्या पैदा किया है? हकीकत तो यह है कि ये ज़ालिम तो खुली गुमराही में पड़े हैं। (लुकमान 10-11)

अच्छा बतलाओं किसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और किसने तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया (हम ने)। फिर हम ही ने इससे हरे-भरे बाग उगाए तुम्हारा काम तो न था कि तुम उनके पेड़ों को उगाते, तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद (उपास्य) है? (कदापि नहीं) बल्कि ये लोग रास्ते से अलग हो रहे हैं। भला किसने ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया और इसके बीच में नदियाँ बहाई, और उसके लिए पहाड़ बनाए और किसने वो समुद्रों के बीच रोक लगाई (ये सब कुछ अल्लाह ने बनाया) तो क्या अल्लाह के साथ कोई और उपास्य है? (कदापि नहीं) बल्कि उनमें अक्सर लोग समझ नहीं रखते। भला

कौन बेकरार की फरियाद सुनता है जब वो उससे दुआ करता है? और कौन उसकी तकलीफ को दूर करता है? और कौन तुमको ज़मीन में नायब बनाता है? (ये सब कुछ अल्लाह ही करता है)। तो क्या अल्लाह के साथ कोई और उपास्य है? (कदापि नहीं)। तुम बहुत कम गौर (विचार) करते हो, भला कौन तुमको जंगल और दरिया के अन्धेरो में रास्ता बताता है? और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को खुशखबरी बनाकर भेजता है? (ये सब कुछ अल्लाह ही करता है) तो क्या अल्लाह के साथ कोई और उपास्य है? (कदापि नहीं) ये लोग जो शिर्क करते हैं अल्लाह की शन उससे बहुत ऊँची है। (नस्त 60-61)

इनमें से हर आयत एकेश्वरवाद पर एक प्रमाण है। पवित्र कुर्आन का ये वो प्रमाण है जिसके द्वारा उसने अल्लाह की सत्यता और एकेश्वरवाद को दुनिया की चीज़ों के माध्यम से चिन्हित किया है, जो वास्तविक प्रमाण हैं। इनके द्वारा बात दिल में उतर जाती है और समझ आ जाती है। अनाज के दाने, अँगूर की बेले, खजूर के पेड़, सब्जियाँ, जैतून का तेल, पेड़ों के झुण्ड, भिन्न-भिन्न प्रकार की चिड़ियाँ, ये सब इस बात का प्रमाण देते हैं कि इन सबका कोई पैदा करने वाला है। इसलिए पवित्र कुर्आन इस सच्चाई को बताता है कि कर्म बिना कर्म करने वाले के, गीत बिना गीतकार के कैसे बन सकता है? अतः इन चीज़ों को देखकर कोई कैसे इस बात को मानने पर बाध्य नहीं होगा कि इस व्यवस्था को चलाने वाला कोई है। ये सृष्टि संयोग वश नहीं बन गयी है। इसका कोई बनाने वाला और चलाने वाला है। वो एक है, उसी के आदेश से सब कुछ हो रहा है। इसलिए हर सोचने और देखने की क्षमता रखने वाला इन चीज़ों को देखकर कह उठता है, ये सृष्टि उस सर्वशक्तिमान के बिना ना तो बन सकती है और न चल सकती है।

अद्वैतवाद का एक और प्रमाण पवित्र कुर्आन में यह है कि इस सृष्टि और इसकी व्यवस्था को चलाने वाले यदि दो होते, तो उनमें आपस में मतभेद होता और हर काम में बिगाड़ आ जाता और ये व्यवस्था नष्ट हो जाती। इसका एक उदाहरण यह है कि यदि किसी देश के दो राजा हो जाए या किसी व्यवस्था को चलाने वाले उच्च अधिकारी दो हों, तो वह व्यवस्था खराब हो जाती है। इसलिए यह अल्लाह के एक होने का प्रमाण है कि वो इस व्यवस्था को सुचारु रूप से चला रहा है। सूरज अपने समय पर उगता है और रात अपने समय पर होती है। आसमान से बारिश अपने समय पर होती है। किसी में ये ताकत नहीं है कि वो सूरज को पूरब की जगह पश्चिम से निकाल कर दिखाये और इन्सान अपनी मृत्यु के सामने विवश है।

इब्राहीम अलै० ने कहा कि अल्लाह सूरज को (हर) रोज़ पूरब से निकालता है तो तुम एक दिन पश्चिम से निकाल दो। इस पर वो काफिर चकित रह गया और कुछ जवाब न दे सका। (अल-बकर 258)

हमने हर चीज़ को अन्वाजे (आवश्यकतानुसार) से पैदा किया। (कमर 49)

ये वो स्वभाविक प्रमाण है जिसके सामने बुद्धि और सदबुद्धि समर्पित है और इस बात को मानना पड़ता है ज़मीन से लेकर आसमान तक सारी सृष्टि एक सुनियोजित व्यवस्था है। ये सारी व्यवस्था एक सम्पूर्ण संविधान के रूप में चल रही है। जिसमें एक पूर्ण सत्ता, त्रुटिहीन नीति और सम्पूर्ण ज्ञान दिखाई देता है। ये इस बात का प्रमाण है कि कोई है जो इस व्यवस्था को चला रहा है और वो अल्लाह है।

क्या आसमान और ज़मीन पैदा करने वाले खुदा में शक है।

दुनिया इसीलिए चल रही है क्योंकि इसको चलाने वाला एक है, उसी के पास सारे अधिकार हैं। एकेश्वरवाद एक विश्व व्यापी सच्चाई ही नहीं, यह एक अनुसरण योग्य सत्य है। मानव जीवन और समाज एकेश्वरवाद को अपना कर सत्य मार्ग पर आ जाते हैं। इन्सान उस एक अल्लाह का भक्त है, उसे बहुत सारे खुदाओं को नहीं पूजना है। उस एक मात्र अल्लाह को मानना है। इस प्रकार मानव जीवन पर एकेश्वरवाद का ये प्रभाव पड़ता है कि उससे इन्सान निडर, निर्भय, सहासी और जुझारु बन जाता है। इसके विपरीत बहुदेववाद का प्रभाव यह होता है कि उससे इन्सान कायर, कमज़ोर और निर्दयी हो जाता है। वो ये ही सोचता रहता है कि किस-किस को मनाये और किस-किस के आगे झुके और किस-किस का कहा माने।

एकेश्वरवाद इन्सान में स्वाभिमान की भावना पैदा करता है। एकेश्वरवाद को मानने वाला इन्सान धमण्डी और अभिमानी नहीं होता। उसमें नमी और आज्ञा पालन की भावना आ जाती है। एकेश्वरवाद को मानने वाला छोटी सोच का नहीं होता, वो अपने अधीन लोगों के साथ अन्याय नहीं करता और ना ही उनको बिना कारण परेशान करता है। क्योंकि वो एक एवं अद्वितीय अल्लाह में विश्वास रखता है। उसी को सबका स्वामी मानता है, उसी से माँगता है, उसी से लेता है। एकेश्वरवाद को मानने वाला झूठे खुदाओं के सामने सर झुकाने पर मजबूर नहीं होता। वो सिर्फ अल्लाह से लौ लगाता है। वो सर्वशक्तिमान है उससे सब कुछ मिल सकता है। एकेश्वरवाद का सामाजिक जीवन पर ये प्रभाव पड़ता है कि मानव समाज की बुनियाद सम्पूर्ण न्याय और आपसी प्रेम, सदाचार और भाईचारे से बनती है। संसार में इस समय होने वाले विनाश का कारण यही है कि इन्सान एकेश्वरवाद पर पूरी तरह विश्वास नहीं करता है। अल्लाह की इच्छा

के सामने किसी की इच्छा नहीं चल सकती। सबकी इच्छाओं पर उसकी इच्छा प्रभावी है। उसके अतिरिक्त किसी की इच्छा से इस सृष्टि की व्यवस्था नहीं चल रही है। वास्तविक विश्वास आत्मा और मन में होता है। इन्सान के लिए सबसे बड़ी मूर्ति वो है जो उसने अपने मन में छुपा रखी है। उस मूर्ति को तोड़ना ही वास्तविक एकेश्वरवाद है। एकेश्वरवाद से दिल में ईश्वर के प्रति प्रेम, प्रसन्नता और उसका डर पैदा होता है। इसीलिए सारे बुरे विचारों से बचने के लिए नमाज़ की हर रकअत में सूरह फातिहा पढ़ने का आदेश दिया गया है, जिसमें ये आयत आती है।

ऐ सारे संसार के अब हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

ईमान

एकेश्वरवाद ईमान (विश्वास) की शक्ति से बनता है और इसके द्वारा ही कर्म में आता है। यही विश्वास इस्लाम के नियमों को जीवन में लाने का आधार बनता है। इस्लाम में यह विश्वास रखना है कि एक मात्र अल्लाह को ईश्वर माने, ह० मुहम्मद स० को अन्तिम नबी माने, फरिश्तों, आसमानी किताबों, कयामत और तकदीर पर विश्वास हो। ये सब अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ है। इन बातों पर दिल से विश्वास किया जाए, यही विश्वास हमारे सब कर्मों का आधार बनता है। इसके बिना हमारे कर्मों का कोई आधार नहीं। जब ईमान जन्म लेता है तो मन का उजाला बन जाता है। ये उजाला ही सभ्य एवं भरोसेमन्द जीवन का स्रोत बन जाता है। यदि ईमान ना हो तो मानव जीवन एक खुले आकाश में भटकता रहता है, जिसका न कोई उद्देश्य होता है और न उसमें शांति होती है। ईमान से जीवन में उद्देश्य और मंज़िल निर्धारित होती है। वो उद्देश्य यह है कि इन्सान अपने पैदा करने और पालने वाले की आज्ञा का पालन करे और उसकी उपासना करे। जिससे इन्सान अपने जीवन का धन्यवाद कर सके। पवित्र कुर्आन में आता है-

“मैंने इन्सानों और जिन्यों को इसलिए पैदा किया है कि वो मेरी उपासना करें”।

इस विश्वास में ऐसा प्रभाव है कि यदि इन्सान के मन में यह विश्वास बस जाए कि सारे संसार को बनाने वाला एक एवं अद्वितीय अल्लाह है, तो उसके मन में एकाग्रता पैदा होती है। वो ये कि हमको सारे संसार के स्वामी का संरक्षण मिला हुआ है और उसने अपने भक्तों पर दया करने का वादा किया है। इस भावना के साथ इन्सान उससे लौ लगाता है और उसकी उपासना करता है। उसी से आस लगाता है यही बात मानव चरित्र एवं कर्मों का आधार बनती है। इन्सान के कर्मों में उद्देश्य एवं प्रभाव तब आता है, जब वो मन से अल्लाह और उसके नबी पर विश्वास करे। इसलिए इन्सान के सभी कर्मों और विश्वास का उदाहरण ईमान है। पवित्र कुर्आन में सबसे पहले ईमान ही पर जोर दिया गया है। अल्लाह ने कहा है-

ये किताब पवित्र कुर्आन हर तरह के शक और सन्देह से پاک है और जो लोग एहतियात का (सभ्य) जीवन व्यतीत करने वाले हैं और आँखों से नज़र

न आने वाली यानि परोक्ष की सच्चाईयों पर ईमान रखते हैं, उनके लिए यह किताब रहनुमाई (मार्ग दर्शन) और हिदायत का माध्यम है। (अल-बकर २, ३)

इसी ईमान का चमत्कार था कि अरब वासी जो पहले अनपढ़ और निर्दयी थे। देखते ही देखते सदाचार के उदाहरण बन गये। ईमान की शक्ति प्राप्त करके उन्होंने दुनिया के बड़े हिस्से पर राज किया। इसका कारण यह है कि ईमान से इन्सान के दिल में एक शुद्धि एवं क्रान्ति पैदा होती है।

ये संसार एक राज्य के समान है और इसका राजा अल्लाह है, नबी उसके प्रतिनिधि हैं, पवित्र कुर्आन उसका संविधान है। जो इन्सान उसके शासन को स्वीकार करे, उसके लिए आवश्यक है कि वो उसके नियमों का पालन करे और उसके आदेशों को माने। उसके नियमों का पालन यह है कि नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात का पालन करें। इस प्रकार अपने जीवन को अल्लाह के पवित्र कुर्आन और अल्लाह के बताये रास्ते पर लाये। ये ईमान का वो भाग है जिसमें इस्लामी संस्कृति बनती है। जिन पर चलकर इन्सान का मन जागरूक होता है। इस प्रकार इस्लामी संस्कृति और ईमान जहाँ इन्सान के अन्तरमन को सँवारेते हैं, वही उसके संसारिक जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं। वो इस प्रकार की जब इन्सान के बोल और कर्म में समानता, मन की सच्चाई और सत्कर्म, पवित्रता, निष्ठा, लज्जा, न्याय प्रियता, प्रतिज्ञा का पालन, क्षमा-याचना, स्वाभिमान और आत्म सम्मान जैसी विशेषताएँ पैदा हो जाए तो सारा समाज स्वयं ही सुधर जाए और मानव समाज एक शुद्ध समाज बन जाये। इसमें कपट, शोषण, नाप-तोल में कमी, चुगली, जमाखोरी, रिश्तखोरी और लालच जैसी बुराईयाँ पैदा नहीं होंगी। ये तब ही हो सकता है जब इन्सान शुद्ध मन से अल्लाह और उसके नबी पर विश्वास करे। इस प्रकार ये ईमान समाज को सुधारता है और इन्सान की कार्य क्षमता को शुद्ध एवं दृढ़ बनाता है। पवित्र कुर्आन में कई स्थानों पर विभिन्न शैलियों में इन विशेषताओं की ओर ध्यान दिलाया गया है। इसके साथ ही बुरे कर्मों से बचने के निर्देश दिये गये हैं। इसमें परलोक जीवन के आने और उसमें कर्मों का हिसाब होने का वर्णन है।

नमाज़

ईमान और सत्कर्म करने की विधि मानव जीवन के आरम्भ से प्रथम मानव और सन्देश्य आदम अलै० (आदि मनु) के द्वारा बताई गयी हैं। जो समय के प्रभाव से विभिन्न जातियों, उनकी कल्पनाओं, स्वार्थ और हठधर्मी के प्रभाव से बदलती रही। इसलिए अल्लाह ने अपने नबियों के माध्यम से ईमान और एकेश्वरवाद के अनुसार उपासना विधि के निर्देश दिये। ये एक दूसरे के हालात में अन्तर के कारण एक दूसरे से थोड़े भिन्न थे।

ह० मुहम्मद स० क्योंकि अन्तिम सन्देश्य थे और विश्वव्यापी धर्म लेकर आये थे, इसलिए उनके द्वारा अल्लाह ने उपासना विधि का दृढ़ रूप निर्धारित किया। इसमें शरीर और मन दोनों भाग लेते हैं। नमाज़ में सीधे खड़े होना (कयाम), झुककर हाथों से घुटनों को पकड़ना (रुकू), साष्टांग (सज्दा) और सीधे पैर को बिछाकर उस पर बैठना (तश्हहुद) चारों अवस्थाएँ एक साथ एकत्र कर दी गयी हैं। नमाज़ के अतिरिक्त रोज़ा, ज़कात और हज भी उपासना करने के माध्यम हैं। इस प्रकार विश्वास, एकेश्वरवाद और आज्ञा पालन के द्वारा अल्लाह की उपासना होती रहती है।

अल्लाह पाक ने क़ज़्वे को, जो कि आदर का स्थान है, लोगों के बने रहने का माध्यम बना दिया। (मायदा ८७)

अल्लाह की उस कृपा का धन्यवाद करने के लिए जो इन्सानों पर सबसे अधिक की गयी है, उसके सामने श्रद्धा को प्रकट करना अनिवार्य है। अन्य जीवों की तुलना में इन्सानों को जो श्रेष्ठ स्थान दिया गया है, उसके लिए ये भी ज़रूरी है कि इन्सानों के द्वारा की जाने वाली उपासना भी श्रेष्ठ और दृढ़ हो। ये बात सबसे अधिक नमाज़ में मिलती है।

उपासना के चार स्तम्भों में सबसे पहले नमाज़ है। ये हर मुसलमान के लिए हर हाल में आवश्यक है। उपासना के आधार गुण इसमें मिलते हैं। इनके महत्व और भावना को समझने के लिए अल्लाह और बन्दों के बीच सम्बन्ध को समझना आवश्यक है।

अल्लाह और इन्सान के बीच सम्बन्ध

उसके लिए हमें सबसे पहले अल्लाह के उन गुणों को जिनको हम शक्ति और सामर्थ्य, ज्ञान, दया, कृपा और दानशीलता कहते हैं। इन पर विश्वास करना, स्वीकार करना और उसे एक साथी के नाम से पुकारते हैं। पवित्र कुर्आन में उसके जो श्रेष्ठ गुण और नाम बताये गये हैं और उनके चमत्कारी अर्थ बताये गये हैं, उनको मस्तिष्क में ताज़ा करना चाहिए। इन्सान की निर्धनता, विवशता, निर्बलता और भिक्षा को देखना चाहिए और उसके उच्च कोटि और महत्वपूर्णता पर दृष्टि डालना चाहिए। जो किसी अन्य जीव को नहीं दी गयी। संसारिक और आत्मिक दोनों श्रेणियों में उसकी न मिटने वाली भूख और प्यास को देखना चाहिए। जिसमें इन्सान ने दरिन्दों को भी पीछे छोड़ दिया है। उसकी ज़रूरतों, इच्छाओं और कामनाओं की न समाप्त होने वाली सूची को देखना चाहिए। जिसकी अधिकता, भिन्नता, नरम स्वभाव और सूक्ष्म दृष्टि में उसके जैसा कोई नहीं है। उसके प्रेम, लाचारी, दीवानगी, आत्म समर्पण, सहमति और निर्वाह को देखना चाहिए। जो उसकी शिराओं में बसा है। इन सब खुली हुई सच्चाईयों को जानने के बाद भी क्या इन्सान को इसकी आवश्यकता नहीं है कि वो अपने पालनहार के सामने निरन्तर उपासना, भक्ति, नमस्कार और प्रार्थना की अवस्था में रहे। वो दानशील और सारे संसार का स्वामी है। जो इन्सान की इच्छाओं को पूरा करता है चाहे वो शब्दों में कही गयी हो या उसकी दशा से प्रकट हो।

और तुमको हर उस चीज़ में से दिया जो तुमने माँगी और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो उन्हें गिन न पाओगे। (इब्राहीम 34)

सारी सृष्टि अल्लाह के सामने नतमस्तक और प्रार्थना में है

जब से ये दुनिया बनी है तब से सूरज प्रकाश और गर्मी देता आ रहा है। यह अपने कर्तव्य को बिना रुके पूरा कर रहा है। चाँद अपनी गति और रोशनी से महीनों और सालों को निर्धारित करता है। पहाड़ हज़ारों सालों से अपने कार्य को कर रहे हैं। पेड़ अपने स्थान पर अल्लाह की उपासना में लगे हैं और अपनी छाया और फलों से लोगों को लाभ दे रहे हैं। हवा इन्सान के लिए जीवन का सन्देश लेकर और बादल पानी लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं और ज़मीन को नया जीवन देते हैं। इसके कारण स्रोत बहते हैं और इन्सान की प्यास बुझती है, फसलें पकती हैं और ज़मीन अपना खज़ाना उगल देती है। चरने वाले जानवर अपनी टाँगों पर चलते, दौड़ते और चरते हुए, ऐसे लगते हैं कि वो अल्लाह के सामने झुके हों। ये जानवर इन्सान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते हैं, बोझ उठाते हैं, इनसे इन्सान सर्दी से बचने का सामान और अपने खाने-पीने की व्यवस्था करता है। कुछ जानवर पेट के बल चलते हैं और उनसे भी इन्सानों को बहुत से लाभ हैं। ये सारे जीव जो न बुद्धि रखते हैं

और न मन, हर समय अल्लाह की आज्ञापालन और उपासना में लगे हैं। इनके यहाँ न तो विद्रोह है, न उकताहट और न ये कभी हड़ताल करते हैं, न कभी छुट्टी लेते हैं और न कभी झगड़ा करते हैं। ऐसा लगता है कि हर हाल में अल्लाह के सामने नतमस्तक हैं।

क्या तुझे खबर नहीं कि अल्लाह ही को सच्चा करते हैं, जो कोई भी आसमानों और ज़मीन में हैं और सूरज, चाँद, सितारे, पहाड़, पेड़, चौपाए और अधिकतर इन्सान भी और बहुत से इन्सानों पर अज़ाब (भी) साबित हो गया है और जिसको अल्लाह ज़लील करे उसका कोई इज़्जत देने वाला नहीं। बेशक अल्लाह जो चाहे करे। (हज 18)

और अल्लाह ही को सच्चा करते हैं जितनी चलने वाली चीज़ें आसमानों में हैं और जितनी ज़मीन में हैं और फ़रिश्ते भी और वो अपनी बड़ाई नहीं करते, वो डरते रहते हैं अपने रब से जो उनके ऊपर है और वो ही करते हैं जिनका उनको हुक्म मिलाता है। (नहल 49-50)

और अल्लाह ही के आगे झुकते रहते हैं (सब) जितने आसमानों में हैं और (जितने) ज़मीन में है (कोई) इच्छा से, तो कोई (बाध्य) और उनके साथे भी सुबहा व शाम के वक्ता। (राद 18)

सूरज और चाँद भी एक हिसाब के (पाबन्द) और सब्जियाँ और पेड़ दोनों (उसी को) सच्चा करते हैं। (रहमान 5-6)

अल्लाह वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और आसमानों से पानी उतारा, फिर उसी (पानी) से (भिन्न प्रकार के) फल तुम्हारे लिए रिजक के रूप में पैदा किये और तुम्हारे (फ़ायदे के लिए) नाव को (अपनी कुदरत से) काम में लगाया, ताकि उसके हुक्म से समुद्र में चले और नहरो को भी (अपनी कुदरत से) तुम्हें लाभ पहुँचाने के लिए लगा दिया और सूरज और चाँद को तुम्हारी सेवा में लगा दिया, जो बराबर चलते रहते हैं और रात और दिन को तुम्हारी सेवा में लगा दिया और हर उस चीज़ में से तुम्हें दिया जो तुमने माँगा और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिन्ने लगो तो गिन नहीं सकते। बेशक इन्सान बड़ा ही अन्यायी और नाशुक्रा है। (इब्राहीम 32-34)

ये जीव अपने रूप, रंगों और उपासना विधि में अन्तर के बाद भी एक ऐसी नमाज़, ईशस्तुति और जाप में लगे हैं जो उनके स्वभाव और कर्तव्य से मेल खाती है। जिसको केवल वो ही समझ सकता है जिसकी दृष्टि अल्लाह ने खोल दी हो और उस पर से पर्दा हटा दिया हो।

उसकी पाकी बयान करते हैं सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ उसमें है और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी न

बयान करती हो, बल्कि तुम ही उनकी तस्बीह को नहीं समझते, बेशक वो बड़ा सहनशील, बड़ा माफ करने वाला है। (बनी इस्राईल 44)

क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की तस्बीह (जाप) करते रहते हैं जो कोई भी आसमानों और ज़मीन में है और परिन्दे भी जो पर फैलाए हुए हैं। हर एक को मालूम है अपनी-अपनी दुआ और अपनी तस्बीह और अल्लाह खूब जानता है जो कुछ ये लोग करते रहते हैं। (नूर 41)

सृष्टि में इन्सान के महत्व और विशेषता दूसरों पर उसके श्रेष्ठता का रहस्य

इन्सान अपनी इन विशेषताओं, योग्यताओं, बुद्धि और मन के कारण अन्य जीवों की तुलना में इस बात का ज़्यादा हकदार था कि वो निरन्तर उपासना करता और अपना हर पल स्तुति, जाप और प्रार्थना में गुज़ारता। किसी भी समय उसका मन अल्लाह की याद से अलग न होता। अल्लाह की नेमतें इन्सान पर बारिश के समान बरसती रहती हैं। ये नेमतें अनगिनत हैं। इसका परिणाम ये होता की इन्सान एक पल को भी अल्लाह की उपासना न छोड़ता और हर समय नमाज़ में लगा रहता और फरिश्तों के समान हो जाता। इसका पवित्र कुर्आन में वर्णन है।

और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है और जो उसके पास हैं (फरिश्ते) वो उसकी इबादत से मुँह नहीं मोड़ते और न वो थकते हैं, रात-दिन तस्बीह करते रहते हैं, बन्द नहीं करते। (अमबिया 19-20)

क्योंकि इन्सान को अपना प्रतिनिधि बनाना था और बहुत कोमल पद्वी देनी थी। इसलिए उसको कुछ आवश्यकताओं के बन्धन में बाँधा गया और उसमें इच्छायें भी रखी गयीं। उसमें भावनायें भी हैं, प्रेम के दीप भी, पीड़ा का अनुभव भी, प्रशंसा भी, खोज और ज्ञान का वैभव भी है। वो पृथ्वी के खज़ानों से लाभ उठाने और उनको अपनी आवश्यकताओं में प्रयोग करने का पूरा सामर्थ्य रखता है। सृष्टि की व्यवस्था को समझने की जो विशेषता उसमें है, वो उसके अल्लाह के प्रतिनिधि होने का प्रमाण है। इस कोमल और विशेष पद्वी के दायित्व को पूरा करने और इसके जन्म के उद्देश्य को पूरा करने के लिए इसको आकाशीय पिण्ड समूह, पर्वत, पेड़-पौधो, और चिड़ियों के समान निरन्तर उपासना, जाप और स्तुति करने पर बाध्य नहीं किया गया। यदि इन्सान इसका प्रयास करेगा तो यह उसके असफल होने का प्रमाण होगा। ऐसा करके इन्सान उन फरिश्तों की आपत्ति को सही सिद्ध करेगा, जिन्होंने इसके स्थान पर स्वयं को इस पद्वी के लिए अर्पित किया था। इन फरिश्तों ने अपने आप को इस पद्वी के लिए योग्य समझा था क्योंकि वो हर समय उपासना, स्तुति और जाप में व्यस्त रहते हैं।

इन्सान के लिए निर्धारित उपासना नमाज़

इन सब बातों को ध्यान में रखकर इन्सान के लिए एक ऐसी उपासना और संविधान की आवश्यकता थी जो उसके स्वभाव, पदवी, विशेष स्थान और कर्तव्य को पूरा करे। जो अल्लाह के प्रतिनिधि होने के कारण उस पर डाली गयी है।

एक ओर उपासना उसके लिए आवश्यक भी थी इसलिए कि उसके स्वभाव, जन्म के उद्देश्य, अन्तरमन की आवाज, कुलीनता व श्रेष्ठता इन्सानियत की ज़रूरत और दिल और आत्मा की जान है। दूसरी ओर ये भी आवश्यक था कि ये उपासना उसके स्वभाव के अनुकूल हो। इस सृष्टि में उसके विशेष स्थान के अनुकूल हो। उस वस्त्र के समान हो जो मानव शरीर पर पूर्ण रूप से आये और सुन्दरता दे, न छोटा हो न बड़ा हो, न तंग हो और न ढीला हो।

नमाज़ इन्सान के व्यक्तित्व का वस्त्र

वास्तव में नमाज़ उस कपड़े के समान है जो इन्सान के शरीर पर अच्छी तरह आता है। इसमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है।

क्या उसे ही पता न होगा जिसने पैदा किया, वो तो बहुत सूक्ष्म चीज़ को भी देखने वाला और जानने वाला है। (मुल्क 14)

“हमने हर चीज़ को (एक खास) अन्दाज़ से पैदा किया है”।

ज़कात और सदके का महत्व

इस्लाम के 5 स्तम्भों में से दूसरा ज़कात और सदका देना है। यह गरीबों को दिया जाने वाला धन है। इसके द्वारा इन्सान अल्लाह के दिये धन-दौलत का धन्यवाद करता है। ज़कात देना उस समय अनिवार्य हो जाता है जब इन्सान के पास एक सीमा से अधिक धन हो जाये। इस धन की एक सीमा निर्धारित की गयी है और ज़कात भी बहुत थोड़ी मात्रा में निर्धारित की गयी है। यदि किसी मुसलमान के पास एक सीमा से अधिक धन हो जाये और वो एक साल तक रहे, तब उसको इस बड़े हुये धन का ४०वाँ भाग ज़कात के रूप में गरीबों को देना होगा। इसी प्रकार अलग-अलग सम्पत्ति पर ज़कात भी अलग-अलग है। ज़कात का देना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है।

ज़कात के अतिरिक्त जो धन अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए गरीबों को दिया जाता है, उसे 'सदका' कहते हैं। इसकी कोई सीमा निर्धारित नहीं की गयी है और न ही इसको अनिवार्य किया गया है। इस प्रकार ज़कात और सदका देकर इन्सान अल्लाह के भक्त होने के साथ-साथ अपने जैसे इन्सानों की कठिनाईयों में सहानुभूति प्रकट करता है और उनके दुख-दर्द को बाँटता है। ये बात अल्लाह को बहुत पसन्द है। इसलिए उसने अपनी उपासना करने के निर्देश देने में नमाज़ के बाद ज़कात का वर्णन किया है। ज़कात देने का परिणाम यह निकलता है कि इससे एक ओर तो दुख-दर्द बाँटने का वातावरण बनता है, दूसरी ओर समाज में लोगों में खुशहाली पैदा होती है। धन-दौलत में वृद्धि होती है और दिलों में मुहब्बत पैदा होती है। एक दूसरे पर विश्वास का वातावरण बनता है।

सूद-लेने देने के नुकसान

ज़कात के इन गुणों के विपरीत सूद को लेने-देने के परिणाम उल्टे हैं। सूद लेने-देने से एक ओर तो मेहनत करने वाले की आय में दूसरा व्यक्ति बिना मेहनत किये हिस्सेदार बनता चला जाता है। ये बात निरन्तर होती रहती है। इसके परिणाम स्वरूप मेहनत करने वाले के हिस्से में सिर्फ मेहनत आती है और उसकी मेहनत का एक हिस्सा लापरवाह लोगों को मिल जाता है। यदि ध्यान से देखा जाये तो दिखाई देगा कि सूदखोरी के परिणाम स्वरूप समाज में आपसी प्रेम में कमी

और स्वार्थी स्वभाव का जन्म होता है। इन्सान के दिल से सहानभूती निकल जाती है। गरीबों का आर्थिक शोषण और दो बिल्कुल विपरीत वर्गों का जन्म होता है। इनमें एक सिर्फ लेने और दूसरों की मेहनत को चूसने वाला है और दूसरा जानवरों के समान प्रयोग किया जाने वाला है। यही कारण है कि पवित्र कुर्आन में सूद की कड़ी निन्दा की गयी है। इमकी घृणित तस्वीर दिखाई गयी है। इसकी निन्दा में कठोर और दण्डनीय शब्दों का प्रयोग किया गया है। पवित्र कुर्आन और अल्लाह के नबी स० के उपदेशों में सूद की बहुत निन्दा की गयी है। अल्लाह की अप्रिय चीजों और बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में भी पवित्र कुर्आन की वो शैली नहीं है जो सूद के सम्बन्ध में कही है। ये वो उपदेश है जिनसे इन्सान के रोगटे खड़े हो जाते हैं और ऐसा लगता है कि दिल सीने से बाहर निकल आयेगा।

ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरो और जो कुछ सूद का बकाया है उसे छोड़ दो, अगर तुम ईमान वाले हो, लेकिन अगर तुमने ऐसा न किया तो खबरदार हो जाओ, जंग के लिए अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से और अगर तुम तौबा कर लोगे तो तुम्हारा माल तुम्हारा ही है, न तुम (किसी पर) जुल्म करोगे, न तुम पर (किसी का) जुल्म होगा। (अल-बकर 278-79)

इस आयत ने सूद खोर का जो चित्र बनाया है, उससे एक मुसलमान के दिल में सूद के प्रति घृणा पैदा होने लगती है।

जो लोग सूद (ब्याज) खाते रहते हैं, वो लोग खड़े न हो सकेंगे, सिवा उसके जैसे वो खड़ा होता है जिसे शैतान ने जुनूनी बना दिया हो। ये सज़ा इस लिए होगी कि वो कहते हैं कि व्यापार भी तो सूद कि तरह है जबकि अल्लाह ने व्यापार को हलाल किया है और सूद को हराम किया है, फिर जिस किसी को नसीहत उसके रब की ओर से पहुँच गयी और वो रुक गया तो जो कुछ पहले हो चुका, वो उसका हो चुका और उसका मामला अल्लाह के हवाले रहा और जो फिर यही काम करें, तो यही लोग नरक वाले हैं। इसमें वो हमेशा पड़े रहेंगे। (अल-बकर 275)

पवित्र कुर्आन ने सूद और सदके की तुलना कई जगह की है। इन दोनों के परिणाम और प्रभाव ऐसे चमत्कारी शब्दों से बताये हैं, जिनकी व्याख्या के लिए वास्तव में एक किताब की आवश्यकता है। इनकी सही से समझने के लिए आर्थिक ज्ञान, अर्थशास्त्र, सूद खाने वाले देशों की आर्थिक स्थिति और मानसिक अवस्था का निरीक्षण भी आवश्यक है।

अल्लाह सूद को मिटाता है और सदके को बढ़ाता है और अल्लाह किसी कुर्फ करने वाले पापी को दोस्त नहीं बनाता। (अल-बकर 276)

और जो कुछ तुम ब्याज पर देते हो, ताकि वह लोगों के माल में मिलकर बढ़ जाए, तो वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता, और तुम जो कुछ सदका दोगे

जिससे अल्लाह की खुशी चाहते हो, तो ऐसे ही लोग अपना माल बढ़ाते रहते हैं।
(रूम 39)

अल्लाह के नबी स० ने ज़कात और सद्के की प्रशंसा की है और मुसलमानों के माल में इसके कारण होने वाली बढ़ोत्तरी और वृद्धि का वर्णन किया है। इसी के साथ ज़कात न देने वालों को संसार में कठोर परीक्षा और सज़ा सुनाई है। बरीद रजि० कहते हैं की अल्लाह के रसूल स० ने बताया कि जब कोई जाति ज़कात देना छोड़ देती है तो वह सूखे, आर्थिक तंगी और भुखमरी में घिर जाती है। इस प्रकार सूद का कारोबार करने वालों को संसार और परलोक दोनों में कठोर दण्ड की सूचना दी।

ह० मुहम्मद स० ने बताया जब किसी जाति में सूद कि प्रथा आम हो जाती है तो वह अकाल में फँसा दी जाती है और जब किसी जाति में रिश्वत आम हो जाती है तो वह आतंक में गिरफ्तार हो जाती है।

ये भी कहा कि अल्लाह लानत भेजता है सूद लेने वाले, देने वाले, उसको लिखने वाले और उसकी गवाही देने वाले पर।

ह० अबु हुरैराह रजि० ने बताया कि अल्लाह के रसूल स० ने कहा जिस रात मुझे आसमानों पर ले जाया गया, मेरा गुज़र एक ऐसे समूह पर हुआ, जिनके पेट घड़े के समान थे और उनमें साँप थे जो बाहर से दिखाई देते थे। मैंने पूछा ऐ जिबराईल से कौन लोग हैं? उन्होंने कहा ये सूद खोर हैं।

ये भी कहा—जब अल्लाह किसी को तबाह करना चाहता है तो उसमें सूद को आम कर देता है।

अगर कोई इन्सान इस्लामी सभ्यता के इतिहास और इस्लामी संविधान का निरीक्षण करे और अल्लाह के आदेशों का पालन, उसमें भलाई, बढ़ोत्तरी, अमन-शान्ति, खुशहाली, उसके चरित्र और मुक्ति का निरीक्षण करे जो इस्लामी व्यवस्था के लागू होने से पैदा होती है। इसके साथ ही उस विवशता, कठिनाईयों और निर्धनता पर नज़र डाले जो इस्लामी व्यवस्था को छोड़ने और उसके आदेशों का पालन न करने के कारण पैदा हो गई। तो वह अल्लाह के नबी के उन उपदेशों को प्रमाणित करने पर मजबूर हो जायेगा जो ऊपर बताये गये हैं।

नेक कर्म जो कोई भी करेगा, मर्द हो या औरत, शर्त ये की ईमान वाला हो, तो हम उसे ज़रूर एक पाकिज़ा ज़िन्दगी देंगे और हम उन्हें उन के अच्छे कामों के बदले में ज़रूर अज़्र (इनाम) देंगे। (नहल 97)

जो कोई मेरी नसीहत से मुहँ मोड़ेगा, तो उसकी ज़िन्दगी तंगी में गुज़री और क़यामत के दिन हम उसको अँधा उठाएँगे। (ताहा 124)

रोज़ा (व्रत)

रोज़ा इस्लाम के 5 आधार स्तम्भों में से एक है। ये उन स्तम्भों में से है जिन पर इस्लाम धर्म की इमारत बनी हुई है। इनमें से प्रत्येक की सुरक्षा आवश्यक है जिससे इस्लाम की इमारत बनी रह सके। रोज़े की विशेषताओं और लाभों पर यदि इन्सान अपने स्वाभाविक ज्ञान से विचार करे तो उसे रोज़े में अपने जीवन के लिए कई रोशन पहलु नज़र आयेंगे। इसके मुख्य पहलु अल्लाह के आदेशों का पालन, उच्च चरित्र और कामनाओं एवं इच्छाओं को दबाना है। रोज़े के द्वारा एक ओर तो इन्सान अपने अन्तरमन की विशेषताओं को ग्रहण करने का प्रयास कराता है। दूसरी ओर अन्य लोगों की परेशानियों का अनुभव करके अपने अन्दर रहमदिली और हमदर्दी की भावना को स्थान देता है।

पवित्र कुर्आन ने इसकी महत्वपूर्णता और इसमें भलाई की भावना को वृद्धता से और हमदर्दी व कामनाओं को नियन्त्रण करने के उद्देश्य की ओर ध्यान दिलाया है। एक साल में एक महीना इसके अभ्यास के लिए निर्धारित किया गया है। इस महीने की ये विशेषता भी बताई है कि पवित्र कुर्आन का अवतरण इसी महीने में हुआ है।

ऐ ईमान वालों तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये, जैसे कि उन लोगों पर फर्ज़ किये गये जो तुमसे पहले गुज़रे चुके हैं, अजब नहीं कि तुम मुत्तकी (परहेज़गार) बन जाओ, गिनती के कुछ दिन ही, लेकिन तुमसे जो कोई बीमार हो या यात्रा कर रहा हो, तो वो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले और जो लोग इसे मुश्किल से सहन कर सकें उनके लिए फिदया है, कि वो एक गरीब का खाना है, जो कोई खुशी-खुशी नेकी करें, वो उसके लिए बेहतर है और अगर तुम इल्म रखते हो तो तुम्हारे लिए भी बेहतर है कि रोज़े रखो। रमज़ान का महीना वो है जिसमें कुर्आन उतारा गया, जो लोगों को हिदायत करने वाला है और सत्य और असत्य में अन्तर करने के प्रमाण हैं, तुमसे जो कोई इस महीने को पाए उसे चाहिए कि पूरे महीने रोज़े रखे, जो बीमार हो या मुसाफिर हो उसे दूसरे दिनों में ये गिनती पूरी करनी चाहिए, अल्लाह का इरादा तुम्हारे साथ आसानी का है, सख्ती का नहीं। वो चाहता है तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की दी हुई हिदायत पर उसकी बड़ाईयाँ बयान करो और उसका शुक्र अदा करो। (अल-बकर 183-185)

रोज़े की विधि ऐसी रखी गयी है कि इसमें फरिश्तों के समान जीवन व्यतीत होता है। फरिश्ते अल्लाह के बनाये वो जीव है, जो न खाते हैं और न पीते हैं और न ही उनको संसारिक वस्तुओं की आवश्यकता होती है। वो हर समय अल्लाह पर दृष्टि लगाये उसकी उपासना और आज्ञापालन करते रहते हैं। न वो कभी थकते हैं और न कभी नाफरमानी करते हैं। रोज़ेदार का जीवन भी ऐसा ही जीवन बन जाता है। इन्सान होने के कारण उसको अपनी मानविक और संसारिक आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता है। किन्तु दूसरी ऐच्छिक वस्तुओं में रोज़ेदार फरिश्तों के समान उपासना और आज्ञापालन में लगा रहता है। वो न खाता है, न पीता है और अल्लाह की आज्ञा पालन में लगा रहता है। जो रोज़ेदार इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने में सफल हो जाता है, वो स्वीकृत रोज़ेदार माना जाता है। जो इसमें कमी करता है वो उसी अनुपात में रोज़े के लाभ से वंचित हो जाता है। रोज़े का ये दौर क्योंकि सब मुसलमानों के लिए एक ही समय में आता है, इसलिए एक आम माहौल और वातावरण बन जाता है। ऐसा माहौल बनाने के निर्देश भी दिये गये हैं। यहाँ तक की यदि बीमारी या यात्रा के कारण कोई इन्सान रोज़ा न रख सके, तब भी उसे से निर्देश दिये गये हैं कि वो सबके सामने खान-पान न करे, जिससे रोज़े का माहौल प्रभावित न हो।

मुसलमानों को इस अत्मिक कर्म के द्वारा अपने जीवन का आत्म-निरीक्षण करने का अवसर मिलता है। उनके सामने फरिश्तों के जैसा कर्म होता है और उनको इसकी समानता करनी होती है। उनको ये देखना होता है कि वो इसके लिए कहाँ तक प्रतिज्ञा पूर्ण है। यदि उनसे कोई कमी हो रही है तो इसे दूर करने के क्या प्रयास करते हैं। वो अपने सम्पूर्ण जीवन में फरिश्ते तो नहीं बन सकते, तो कम से कम जो अवसर उनको फरिश्तों के जैसा कर्म करने का मिल रहा है, उसका अपनी क्षमता के अनुकूल लाभ उठाये। इस प्रकार अल्लाह की कृपा और स्वीकृति से मालामाल हो सके। महान ज्ञानी इब्नुल करीम रोज़े के उद्देश्यों और भेदों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं- 'रोज़ा वाह्य इन्द्रियों और आत्म बल की सुरक्षा में बड़ा लाभकारी है। मानव शरीर और रक्त में दूषित पदार्थों के जमा हो जाने से, इन्सान में जो खराबियाँ पैदा हो जाती हैं, रोज़ा उनसे इन्सान की सुरक्षा करता है। जो चीज़े स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, उनको शरीर से बाहर निकाल देता है। मानव शरीर में जो दूषित पदार्थ लोभ-लालच के कारण पैदा हो जाते हैं। वो रोज़ा रखने से दूर हो जाते हैं। रोज़ा स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है और एक धार्मिक जीवन व्यतीत करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है।

“ऐ ईमान वालों तुम पर रोज़े फर्ज किये गये, जैसे कि उन लोगों पर फर्ज किये गये जो तुमसे पहले गुज़रे हैं, अजब नही है की तुम मुत्तकी बन जाओ”।

ह० मुहम्मद स० ने फरमाया- “रोज़ा ढाल है”। इसलिए ऐसे इन्सान को जो शादी करना चाहता हो, पर धन न होने के कारण विवाह करने में सामर्थ्य न हो। उसे रोज़ा रखने के उपदेश दिये गये हैं। इसके लिए रोज़े को गुनाह से बचने का रास्ता कहा गया है। उद्देश्य यह है कि रोज़े के लाभ व प्रभाव क्योंकि इन्सान के स्वभाव और बुद्धि के अनुकूल थे। इसलिये अल्लाह ने अपने बन्दों की सुरक्षा के लिए अपनी कृपा और उपकार से इसको अनिवार्य कर दिया है। हमारा जीवन तो धार्मिक नुटियों और कर्मों की भूल से भरा रहता है। संसारिक सुख-सुविधाओं, आनन्द, लाभ और कामनाओं की चिन्ता में दूसरों के साथ अत्याचार, अधिकारों का हनन, चुगली और झूठ इन बातों से हमारा जीवन थोड़ा बहुत कलंकित रहता है। सारे साल में बस एक महीना हमें दिया गया है कि हम इन बुरे और अनुचित कर्मों से बचने का अभ्यास करें और प्रयास करें की हमारा जीवन जितना हो सके, इन बुराईयों से पवित्र हो। यदि इसमें सफलता मिलती है तो फरिश्तों के आसाधरण कर्मों से बढ़कर कार्य होगा। क्योंकि फरिश्ते ऐसा करने पर स्वाभाविक रूप से बाध्य हैं। किन्तु इन्सान पृथ्वी वासी होने के कारण बाध्य नहीं है। हम अपनी इच्छा और सोच-विचार से इसको चुनते हैं। इसलिए यदि इन्सान फरिश्तों के समान कर्म करे तो इसका स्थान फरिश्तों से बढ़ जाता है। पवित्र कुर्आन का इस महीने के साथ विशेष सम्बन्ध है। अल्लाह ने स्वयं इस महीने की ये विशेषता बताई है कि इस महीने में पवित्र कुर्आन अवतरित हुआ।

रमज़ान का ये महीना ऐसा है कि इसमें कुर्आन नाज़िल किया गया, जो लोगों के लिए भलाई की तरफ रहनुमाई करने वाला है और (इसमें) ह्रियत की रोशनी बताई है और सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने वाला है। (अल-बकर 185)

ह० मुजहिद अलफिस्सानी रह० अपने एक लेख में लिखते हैं। इस महीने का पवित्र कुर्आन के साथ विशेष सम्बन्ध है। पवित्र कुर्आन इस महीने में अवतरित किया गया। इस महीने में हर प्रकार की बड़ाई और बरकतें एकत्र हो जाती हैं। इन्सान को साल भर में जितनी बरकतें मिलती हैं, वो इस महीने के सामने इस प्रकार हैं, जिस प्रकार समुद्र में एक बूँद। इस महीने में मन की शुद्धता, पूरे साल अपने को शुद्ध रखने के लिए काफी है। इस महीने की व्याकुलता और व्यस्तता पूरे साल को अपनी लपेट में ले लेती है। धन्यवाद के पात्र है वो लोग जिनसे यह महीना प्रसन्न हो गया। असफल और दुर्भाग्यपूर्ण हैं, वो लोग जो इस महीने को अप्रसन्न करके इसकी सब भलाईयों और लाभों से वंचित हो गये।

एक दूसरे लेख में लिखते हैं :

यदि किसी इन्सान को इस महीने में सभ्य कर्म करने की प्रेरणा मिल जाये तो वो पूरे साल उसके साथ रहेगी। यदि यह महीना व्यस्तता और व्याकुलता के साथ बीतता है तो सारा साल इसी प्रकार व्यतीत होने का अनुमान है।

रोज़े के लाभ और महत्वपूर्णता का सबसे बड़ा प्रमाण है कि अल्लाह ने दूसरे कर्मों की तुलना में इससे अपनी सहमति स्पष्ट की है। हदीस में आता है—ह० अबुहुरैरा रजि० कहते हैं कि हुजूर स० ने रोज़े के महत्व और विशेषता को बताते हुए कहा आदमी के हर अच्छे कर्म को तो 10 गुने से 700 गुना बढ़ाया जाता है। परन्तु अल्लाह का इरशाद है 'रोज़ा इस आम कानून से अलग और बढ़कर है, वो बन्दे की ओर से खास मेरे लिए एक तोहफा है, और मैं ही (जिस प्रकार चाहूँगा) इसका बदला और इनाम दूँगा। मेरा बन्दा मेरी सहमति के लिए अपना खाना पीना और इच्छाओं को छोड़ देता है'। (बस में स्वयं अपनी इच्छा से इसके इस त्याग और इन्द्रिय दमन का बदला दूँगा)।

रमज़ान का ये महीना मुसलमानों की ऐसी धार्मिक धरोहर है जिससे उनको विभिन्न प्रकार के लाभ मिलते हैं। उपासना के साथ-साथ मुसलमानों के समाजिक जीवन के अलग-अलग विभाग सुधार के दौर से गुजरते हैं। आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना और सहयोग का ये एक सुनहरा अवसर होता है। इसलिए रमज़ान के महीने को सही रूप में व्यतीत करने के बाद एक मुसलमान श्रेष्ठ उपासना के साथ ही मतभेदों और विवादों की भावना से पवित्र हो जाता है। रमज़ान में एक महीने तक उन सब बातों से बचना होता है, जो इन्सान के स्वार्थी बनाती हैं और अच्छे चरित्र से दूर करती हैं। उसको एक ओर तो अपने रब के सामने उपासना करने का भरपूर अवसर मिलता है। दूसरी ओर इन्सानों के साथ सहानुभूति और सात्वना भी करनी होती है। ईश्वर भक्ति में अपने खुदा के आदेशों को मानने के साथ-साथ, अपनी इच्छाओं और आराम को त्यागना पड़ता है। अपनी शारीरिक इच्छाओं को भी समाप्त करना पड़ता है। शरीर की गतिविधियों में अन्तर लाया जाता है। खान-पान के समय को लम्बा कर दिया जाता है और उनके समय में भी अन्तर कर दिया जाता है। भोजन करने के समय में उसको रोक दिया जाता है और जिस समय खाने का समय नहीं होता है, उस समय खाने को कहा जाता है। इसके लिए सूर्य उदय से २ घन्टे पहले खाना खाने का समय बताया जाता है। दिन में भोजन के समय में उसको रोक दिया जाता है और सूर्यास्त के बाद खाना खाने की स्वीकृत दे दी जाती है। इस समय खाना खाने को पुण्य का काम कहा जाता है। ये क्रम पूरे एक महीने चलता है। इस क्रम में खाने के साथ पानी को भी शामिल कर लिया जाता है। इस प्रकार रोज़ा रखने वाले को अपने अल्लाह के आदेश से भूखा-प्यासा रहना होता

है। इसके बाद उसी के आदेश से खाना-पीना होता है। रोज़े के ये प्रतिबन्ध विशेष प्रकार के प्रतिबन्ध हैं।

ईद

रमज़ान के २६ या ३० दिन पवित्र माहौल में गुज़ारने के बाद ईद का दिन आता है। ये दिन आनन्द व उपासना, सुख-स्वीकृति दोनों को समेटे हुये है। इसमें सांसारिक और धार्मिक दोनों प्रकार से प्रसन्नता का सामान है। एक ओर तो इन्सान को अपनी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करने की स्वतन्त्रता मिलती है। दूसरी ओर एक महीने आज़ा पालन और उपासना का फल मिलता है। इन्सान को इनाम दिया जाता है। इसीलिए ईद की रात को 'लयलतुल जाइज़ा' यानि इनाम की रात कहा गया है। रमज़ान अपने कर्तव्य पालन करने वालों को ऐसी पवित्रता देता है। जो उसके लिए साल भर उपहार, कृपा और बरकत बन जाती है। एक साल पूरा होने पर फिर इस पवित्र कार्य को करने का अवसर दिया जाता है। इस प्रकार कुशलता और प्रसन्नता का अवसर मिलता है। रमज़ान का महीना इन्सान को इस बात का अनुभव कराता है कि इस पृथ्वी पर बसने वाले इन्सानों से उसका एक मानवीय सम्बन्ध है। उनको भूखा रहना पड़ता है और जिनके पास अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के साधन नहीं है, उनकी याद दिलाता है। रमज़ान ये बताता है कि हमें अपने आस-पास रहने वाले लोगों के दुख-दर्द को जानना चाहिए और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए। इसलिये मजबूरों की सहायता करना और भूखों को खाना खिलाना रमज़ान के प्रशंसनीय कार्यों में से है। जब इन्सान भूखा रहकर, भूख की पीड़ा को सहन करता है, तो उसको भूख की पीड़ा का अनुभव होता है। उसे पता चलता है कि भूख क्या चीज़ है और किसी भूखे की सहायता करना कितना उत्तम कार्य है। अलग-अलग हालात में जब वो खुद को बचाता है तो उसको उन कर्मों से बचने का अभ्यास होता है, जिनको मानव समाज बुरा कहता है। इस प्रकार उसका चरित्र एक पवित्र जीवन से मिल जाता है। इस प्रकार रमज़ान इन्सान को सभ्य और पवित्र बनाने की व्यवस्था लेकर आता है, जो इन्सान के लिए आवश्यक है। जिससे इन्सान एक पवित्र जीवन व्यतीत करने के साथ-साथ अल्लाह की प्रसन्नता को प्राप्त करता है। एक ओर उसको ईद के रूप में इनाम मिलता है और वास्तविक परिणाम अल्लाह की प्रसन्नता और उसकी विशेष कृपा मिलती है।

हज

इस्लाम की ४ आधार उपासनाओं में से एक 'हज' है। जो केवल उन मुसलमानों के लिए है जो यात्रा का खर्च सहन कर सकते हो और शारीरिक रूप से भी यात्रा करने में सक्षम हो। 'हज' मक्का शहर में होता है। इसमें केवल 5 दिन लगते हैं। इसमें इन्सान को एक मात्र अल्लाह के सामने आत्मसमर्पण और उसकी आज्ञा का पालन करना होता है। जिसका श्रेष्ठ उदाहरण अल्लाह के प्रिय नबी ह० इब्राहीम अलै० के द्वारा किये कर्मों को दोहरा कर किया जाता है। अल्लाह के प्रिय भक्त और नबी ह० इब्राहीम अलै० के आत्मसमर्पण का उदाहरण विश्वास करने वालों के लिए विशेष शिक्षा है। ईमान वालों को बताया गया कि वो अल्लाह का प्रेम और स्वीकृति पाने के लिए इस उदाहरण को सामने रखकर कर्म करें। इसको अल्लाह ने इब्राहीम अलै० के आज्ञा पालन और प्रेम का उदाहरण देकर बताया है। इसको कयामत तक इन्सानों के लिए एक मिसाल बना दिया है। इब्राहीम अलै० ने अल्लाह के लिए 3 अलग-अलग प्रकार की कुर्बानियाँ दी। जिनका उदाहरण सम्पूर्ण मानव इतिहास में कहीं नहीं मिलता। ह० इब्राहीम अलै० के समय में समाज बहुदेव वाद में डूबा हुआ था। वो लोग बहुत सारे खुदाओं को मानते थे। ह० इब्राहीम अलै० के पिता पुजारी थे और बहुदेववादी थे। ह० इब्राहीम अलै० की बुद्धि और स्वाभाव ने कभी घर और समाज की इन बहुदेववादी बातों को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपनी बुद्धि से इस बात को समझा कि बहुदेववाद में बुद्धिमान्नी नहीं है। उनकी जाति के लोग सितारों की पूजा किया करते थे। ह० इब्राहीम अलै० ने सितारों की वास्तविकता और सामर्थ्य पर विचार किया, फिर चाँद और सूरज के बारे में विचार किया। उन्होंने इन सब चीजों को किसी सर्वशक्तिमान के अधीन पाया। जब ये चीजें खुद किसी के अधीन हैं तो यह उसके बराबर कैसे हो सकती हैं। इस प्रकार उन्होंने ये निष्कर्ष निकाला कि सर्वशक्तिमान कोई और है। वो ही इन सबको नियन्त्रित करने वाला है। इस प्रकार वो सर्वशक्तिमान अल्लाह तक पहुँचे। पवित्र कुर्आन ने इसका वर्णन किया है-

(वो वक्त याद करो) जब इब्राहीम ने अपने बाप आजर से कहा! क्या तुम बुतों को उपास्य करार देते हो? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली हुई गुमराही में पड़ा देखता हूँ और इस तरह हम ने इब्राहीम को दिखा दी, आसमानों

और ज़मीन की हुकूमत ताकि वो पूरी तरह विश्वास करने वालों में से हो जाएँ। तो यूँ हुआ कि जब रात इब्राहीम पर छा गयी, उन्होंने एक तारे को देखा, तो कहने लगे, “यही मेरा रब है” जब वो गायब हो गया तो कहने लगे, “मैं गायब हो जाने वालों से मुहब्बत नहीं करता। फिर जब उन्होंने चाँद को चमकते हुए देखा तो बोले, “यही मेरा रब है” लेकिन जब वो छिप गया तो कहा, “अगर मेरा रब मुझे राह न दिखाता रहे तो मैं भी गुमराह लोगों में से हो जाता”। फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा तो बोले, “यही मेरा रब है” यही सबसे बड़ा है, लेकिन जब वो डूब गया तो बोले, “ऐ मेरी क़ौम के लोगों जिन चीज़ों को तुम साझीदार बनाते हो मैं उससे बेज़ार हूँ”। बेशक मैंने तो अपना रुख (चेहरा) एकत्र होकर उसकी ओर कर लिया है, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं हूँ और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी, वो बोले “क्या ये झगड़ा मुझसे अल्लाह के बारे में करते हो? जबकि उसने मुझको सीधा रास्ता दिखा दिया है। मैं उनसे नहीं डरता जिनको तुम (अल्लाह का) साझी ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वो पूरा हो करके रहता है और मेरा रब हर चीज़ को इल्म से बेरे हुए है, फिर क्या तुम याद नहीं करते और मैं उनसे क्यों डरने लगा जिनको तुमने साझी ठहरा रखा है। जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का साझीदार उस चीज़ को बनाया है, जिसकी उसने कोई सनद (प्रमाण) नाज़िल नहीं की? अब दोनों समूह में से कौन सा समूह अमन का ज्यादा हकदार है? अगर तुम जानते हो (तो बताओ)। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान में किसी जुल्म की मिलावट नहीं की, उनके लिए अमन है और वही हिदायत पाने वाले हैं और यह हमारी वह दलील है जिसे हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुकाबले में दिया था। हम जिसे चाहते हैं उच्च श्रेणी प्रदान करते हैं, बेशक तुम्हारा रब इल्म वाला, हिकमत वाला है और हमने उन्हें (इब्राहीम को) इस्त्हाक़ और याकूब दिये, हर एक को राह दिखाई और ‘जूह’ को हमने इससे पहले राह दिखाई थी और उसकी औलाद में दाऊद और सुलेमान और अय्यूब, यूसुफ और मूसा और हासन को भी और इसी तरह हम नेक लोगों को बदला दिया करते हैं। (अनआम 74-84)

इस प्रकार अल्लाह ने इब्राहीम अलै० को उच्च स्थान दिया और उनको अपना दोस्त बनाया। उनको ये सम्मान सबसे बड़े और सर्वशक्तिमान अल्लाह पर विश्वास करने और एक मात्र उसी की उपासना को आवश्यक समझने से प्राप्त हुआ। उन्होंने अपनी जाति के लोगों को भी इसकी ओर बुलाया। उनको इसमें विश्वास और धर्म की कठोर परीक्षा से गुज़रना पड़ा और बहुत सी चीज़ों को न्योछावर करना पड़ा। उन्होंने साहस और धैर्य से काम लिया।

पहला त्याग तो उन्होंने तब दिया जब अपनी मूर्ति पूजक जाति को एकेश्वरवाद की ओर बुलाया। उनकी जाति के लोगों ने यहाँ तक कि उनके पिता ने भी उनके साथ बहुत कठोर व्यवहार किया। उनको चेतावनी दी कि यदि वो एकेश्वरवाद की ओर लोगों को बुलाते रहेंगे तो उनको भड़कती हुयी आग में झोंक दिया जायेगा। ह० इब्राहीम इस कठोर परीक्षा को सहन करने के लिए भी तैयार हो गये किन्तु अपने एकेश्वरवाद के प्रचार से नहीं हटे। उनको आग में डाला गया और उन्होंने इस प्रकार अपने प्राण त्यागना स्वीकार किया। अल्लाह ने उनके इस साहस और त्याग को देखकर उनको अपनी कृपा से आग में जलने से बचा लिया। जब इब्राहीम अलै० आग में गये तब अल्लाह ने आग की जलाने की क्षमता को रोक दिया। इस प्रकार आग में डाले जाने के बाद भी इब्राहीम अलै० नहीं जले। इस प्रकार इब्राहीम अलै० ने अपनी परीक्षा दी। पवित्र कुर्आन ने इस घटना को ईस प्रकार बताया है-

और इससे पहले ही हमने इब्राहीम को हिदायत और समझ दी थी, और हम उनको खूब जानते थे, जब उन्होंने अपने बाप और अपनी कौम के लोगों से कहा, "यह मूर्तियाँ क्या हैं?" जिनसे तुम लगे बैठे हो? वे बोले, "हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं की पूजा करते हुए पाया है"। इब्राहीम ने कहा, "अगर तुम और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में रहें हों"। उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास हक लेकर आया है या तू ही खेल कर रहा है? कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है, उसी ने इनको पैदा किया और मैं इसका गवाह हूँ और अल्लाह की कसम मैं ज़ख़र तुम्हारे बुतों के साथ एक उपाय करूँगा, जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। तो उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डाला सिवाए एक बड़े के ताकि वो उसकी ओर ख़जूअ करें। वे कहने लगे किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? वह तो कोई ज़ालिम है। वे बोले हमने तो एक नौजवान को उनके बारे में कुछ कहते सुना है, जिसको इब्राहीम कहते हैं। उन्होंने कहा, "तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने कि वो गवाह रहें"। उन्होंने कहा, ऐ इब्राहीम "क्या तूने हमारे बुतों के साथ यह हरकत की है?" (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि उनके एक बड़े ने किया है तो उनसे पूछ लो, अगर यह बोलते हों। तो वे अपने मन में सोचने लगे फिर बोले, वास्तव में ज़ालिम तो तुम ही हो। फिर वो अपने सिरों के बल औंथें हो गये, "बोले तुम्हें मालूम है कि यह बोलते नहीं है।" (इब्राहीम ने कहा) क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो, जो तुमको न फायदा पहुँचा सकती है और न नुकसान? अफसोस है तुम पर जो तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? उन्होंने कहा, जला दो इसे और अपने माबूदों

की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना है। हमने कहा, ऐ आग तू ठंडी और सलामती हो जा, इब्राहीम पर और उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही थी, किन्तु हमने उन्हीं को घाटे में डाल दिया। (अमबिया ५१-७०)

ये इब्राहीम अलै० की आज्ञापालन और विश्वास के सम्बन्ध में पहली परीक्षा थी जिसमें उन्होंने सफलता प्राप्त की। इसके बाद कुछ समय बीतने पर अल्लाह ने उनके विश्वास और धैर्य की दुसरी परीक्षा ली। वो इस प्रकार की बहुत इन्तेज़ार और उम्र गुज़रने के बाद उनके यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ। जो बहुत सुन्दर बालक था। अपने माता-पिता की आँखों की ठंडक था। वो उसको हमेशा अपने पास रखते और देखकर प्रसन्न होते। अल्लाह का आदेश हुआ कि इस बच्चे को और उसकी माता को एक एकान्त स्थान पर छोड़ आये जहाँ न खाना है और न पानी, न पेड़ हैं और न कोई आदमी। ऐसे स्थान पर जो उनके घर से कई सौ मील दूर है। ह० इब्राहीम अलै० को जब अल्लाह की इस इच्छा का पता चला, तो वो इसके लिए भी तैयार हो गये। वो जितनी खाद्य सामग्री और पानी साथ ले जा सकते थे, लेकर अपनी पत्नी और दूध पीते बच्चे को लेकर चले और उनको एकान्त स्थान पर छोड़ आये। जिसको अल्लाह ने चुना था। इसी को मक्का शहर के नाम से जाना जाता है। जब वो वापस जाने लगे तो उनकी पत्नी ने पूछा की आप हमको किसके भरोसे छोड़कर जा रहें हैं। उन्होंने उत्तर दिया अल्लाह का यही आदेश है। मैं उसके भरोसे पर तुमको छोड़कर जा रहा हूँ। इस प्रकार उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चे को खतरे में छोड़ने का त्याग भी दे दिया। दूध पीते बच्चे और पत्नी का त्याग, अपने प्राणों के त्याग के समान है। ह० इब्राहीम अलै० ने यह त्याग दे दिया और अपनी पत्नी और बच्चे को ऐसे स्थान पर छोड़कर आ गये जो सूखाग्रस्त और जहाँ जीवित रहना कठिन था। उनका दिल टुकड़े-टुकड़े हो रहा था कि ये दूध पीते बच्चा जो बड़ी आशाओं के बाद पैदा हुआ है और ये पत्नी जिसके गर्भ से ये पैदा हुआ है। अब इन दोनों का क्या होगा? यहाँ न खाना है और न पानी, अपने अल्लाह की इच्छा पर सब कुछ त्याग दिया। अतः जो खाने का समान था और पानी कुछ दिनों में समाप्त हो गया। जब मासूम बच्चे को प्यास लगी और पानी न मिला तो उसकी जान पर बन आई। ये देखकर माता हाजरा परेशान होकर सफ़ा और मरवा नामक पहाड़ियों पर चढ़कर दूर-दूर तक देखती थी। कहीं पानी का कोई स्रोत दिखाई दे जाये। परन्तु वहाँ पानी कहाँ था, जो नज़र आता। इस प्रकार अल्लाह ने अपने नबी की पत्नी हाजरा की भी परीक्षा ली। जब वो अपने अल्लाह की इच्छा में खुश रही तो उनको इसमें सफलता प्राप्त हुयी। जब वो बहुत अधिक परेशान हुयी और इस हाल में भी अल्लाह से प्रसन्न रही तो अल्लाह की ओर से विशेष सहायता प्राप्त हुयी। अल्लाह के आदेश से जिब्राईल (फरिश्ते) आये उन्होंने बालक के पास, अपने पैरों से ठोकर

मारी और उससे पानी का एक झ्रोत बन गया, जो ज़मज़म कहलाया। पानी मिल जाने से उनके जीवित रहने की व्यवस्था हो गयी। फिर अल्लाह ने कृपा की और यमन का एक काफ़िला वहाँ से जा रहा था। उनको भी पानी की तलाश थी। उनके कुछ लोगों ने पक्षियों को उड़ता देखकर ये अन्दाज़ा लगाया कि पास ही पानी का कोई झ्रोत है। इसलिए पानी की खोज में वो वहाँ पहुँच गये और माता हाजरा से इजाज़त लेकर उन्होंने पानी पिया और उनकी स्वीकृति से वही ठहर गये। इस प्रकार वहाँ एक छोटी बस्ती बन गयी। बाद में जब ह० इब्राहीम के बेटे इस्माईल अलै० बड़े हुये तो इसी कबीले की एक महिला से उनका विवाह हुआ। यहाँ आबादी बढ़ गयी और उन लोगों ने अल्लाह की कृपा से खाने-पीने की अवश्यकताओं के लिए प्रयास आरम्भ कर दिये। पानी ज़मज़म से मिलता और खाने-पीने की चीज़ों के लिए आवश्यक कार्य किये जाते। ह० इब्राहीम अलै० की प्रार्थना भी थी। जिसके प्रभाव से अल्लाह की ओर से सहायता भी पहुँचती रही। ह० इब्राहीम अलै० उनको देखने के लिए समय-समय पर आते और इस छोटी बस्ती के बसे रहने और उनका अल्लाह के आदेशों का पालन करते रहने और उसी की उपासना करते रहने की दुआ करते रहते।

और (वो वक्त) याद करो जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब इस शहर को अमन वाला बना दीजिए और मुझको और मेरे सन्तान को, इससे बचा लीजिए कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ, मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया, तो जो कोई मेरे रास्ते पर चलेगा वह तो मेरा है ही और जिसने मेरा कहना न माना तो तू उसे बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को एक ऐसी घाटी में जहाँ खेती नहीं होती, तेरे सम्मानित घर (कअब) के पास बसाया है, ऐ हमारे रब! ताकि ये नमाज़ कायम करें, अतः लोगों के दिलों को झुका दीजिए और उन्हें फल खाने को दीजिए, ताकि वे शुक्र करें। (इब्राहीम 35-37)

धीरे-धीरे इस्माईल अलै० बड़े हुये और सभ्य व आज्ञाकारी बालक बने। अपने माता-पिता की सेवा और आज्ञापालन में उन्होंने विशेष स्थान प्राप्त किया। जब उनके माता पिता उनकी आज्ञापालन और सुन्दरता को देखते तो उनके प्रेम और बढ़ जाता। ह० इस्माईल अलै० जब बड़े हुये तब ह० इब्राहीम अलै० ने सपने में देखा कि वो अल्लाह की स्वीकृति के लिए अपने बेटे इस्माईल अलै० की कुर्बानी दे रहें हैं। ये सपना तीन बार देखा। वो जानते थे कि नबी का सपना सच होता है। इसलिए उसको अल्लाह का आदेश मानकर अपने दिल को इसको मानने के लिए तैयार किया। उन्होंने अपने बेटे इस्माईल को ये सपना बताया। वो अल्लाह के आदेश पर कुर्बान होने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने कहा पिताजी आप को जो आदेश दिया गया है, आप उसे पूरा करें मैं तैयार हूँ। ह० इब्राहीम

अलै० उनको लेकर गये, उनको लिटाकर अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी ली। जिससे ये दिल दहला देने वाली घटना अपनी आँखों से न देख सकें। कहीं ऐसा न हो की दिल मचल जायें और अल्लाह के आदेश को पूरा करने में त्रुटि हो जाये। वो बेटे की गर्दन पर छुरी चलाने लगे। अल्लाह ने बाप बेटे की इस अन्तिम सीमा तक आज्ञा पालन को स्वीकार कर लिया और जीब्राईल फरिश्तों को भेजा। जीब्राईल एक जानवर लेकर आये और ह० इस्माईल के स्थान पर उस जानवर को लिटा दिया। इस प्रकार ह० इब्राहीम के स्थान पर उस मेंढे की कुर्बानी हो गयी और ह० इस्माईल अलै० को बचा लिया गया। इन दोनों ने अपने मन और कर्म से कुर्बानी पूरी कर दी थी। अल्लाह को इब्राहीम अलै०, उनकी पत्नी हाजरा और उनके बेटे इस्माईल अलै० की कुर्बानियाँ इतनी पसन्द आई की उनको यादगार बना दिया। पवित्र कुर्आन ने ह० इब्राहीम की पुत्र प्राप्ति के लिए दुआ और फिर बेटा मिलने पर उसकी कुर्बानी की ओर संकेत करते हुए कहा है-

ऐ रब मुझे (औलाद) अता कर सआदतमन्दों में (भाग्यशाली) से, तो हमने उनको एक बड़े सहनशील लड़के की खुशखबरी दी, तो जब वह उनके पास चलने फिरने की उम्र को पहुँचा, तो उन्होंने कहा, "ऐ बेटा! मैं सपने में देखता हूँ कि मैं तुमको कुर्बान कर रहा हूँ, तो तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने कहा, "अब्बा जान! कर गुज़ारिए जिसका हुक्म आप को दिया जा रहा है, आप इन्शाअल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) मुझे सब्र करने वाला पाएँगे"। फिर जब दोनों ने अपने आप को रब के सामने झुका दिया और उन्होंने उसे (इस्माईल को) कनपटी के बल लिटा दिया और हमने उनको पुकारा, "ऐ इब्राहीम! आपने सपने को सच कर दिखाया, हम भले लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं"। बेशक यही खुली आजमाइश (परीक्षा) थी और हमने फिदया (मुक्तिप्रतिदान) दिया उनको, एक बड़ी कुर्बानी देकर और हमने छोड़ दिया उनका जिक्र पीछे आने वालों में। सलाम हो इब्राहीम पर। इसी तरह हम भले काम करने वालों को बदला दिया करते हैं। बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (साफ़क़त 100-111)

ये थी ह० इब्राहीम अलै० की अल्लाह के लिए तीन कुर्बानियाँ। आग में जाना स्वीकार किया, अपने बेटे और पत्नी को अल्लाह के आदेश पर एकान्त स्थान पर छोड़ा और अपने बेटे को अल्लाह के आदेश पर कुर्बान करने के लिए तैयार हो गये। इसके परिणाम स्वरूप अल्लाह ने उनकी इन कुर्बानियों को यादगार बना दिया। कयामत तक अल्लाह के आज्ञाकारी और ईमान रखने वाले इन्सान इन कुर्बानियों के वाह्य रूप की नकल करते रहेंगे।

इसलिए 'हज' पर जाने वाले लोग इन कुर्बानियों को दोहराते हैं। मक्का जो बक्का भी कहलाया, वो स्थान है जहाँ अल्लाह की उपासना के लिए सबसे

पहला घर बनाया गया। कअब्र के चारों ओर 7 चक्कर लगाये जाते हैं और सफ़ा-मरवा पहाड़ी के भी 7 चक्कर लगाये जाते हैं। जो माता हाजरा के अपने बेटे के लिए पानी की खोज को याद दिलाते हैं। ह० इब्राहीम की कुर्बानी की नकल में अपनी पसन्द के जानवर की कुर्बानी करना, ह० इब्राहीम की कुर्बानी की याद दिलाते हैं। कअब्र अल्लाह की उपासना का वो पहला घर है, जिसको अल्लाह ने आदम अलै० के पृथ्वी पर आने पर मक्के की ज़मीन पर बनाया था। जो एक समय के बाद ज़मीन में छुप गया था। इस्माईल अलै० के बड़े हो जाने के बाद अल्लाह के आदेश से इब्राहीम अलै० ने इस्माईल अलै० के साथ उसी नीव पर इस घर को बनाया। ये पवित्र घर और इसके साथ इब्राहीम अलै० के परिवार की कुर्बानियाँ। इनके आधार पर अल्लाह ने ये आदेश दिया कि हम इस स्थान को संसार का केन्द्र बनायेंगे और यहाँ रहने वालों को हर प्रकार के फल और मेवें देंगे। लोग यहाँ पैदल आयेंगे, सवारियों पर आयेंगे, समूह के समूह आयेंगे और संसार के कोने-कोने से आयेंगे। अल्लाह का आदेश लागू हुआ और उसी समय से सारी दुनिया से लोग परेशानियाँ उठाकर भी यहाँ आते हैं। अपनी इच्छा का त्याग करके अल्लाह की स्वीकृति प्राप्त करते हैं।

और (वो वक्त याद करो) जब हमने इब्राहीम को कअब्र (अल्लाह का घर) की जगह बता दी और (हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी को साझी न करना और मेरे घर को पाक रखना, तवाफ करने वालों के लिए। लोगों में हज का ऐलान कर दो, लोग तुम्हारे पास पैदल भी आएँगे और दुबली ऊँटनियों पर भी जो दूर-दूर के रास्तों से पहुँची होंगी, ताकि अपने फ़ायदे को देखें जो उनके लिए रखे गये और (कुर्बानी) निश्चित दिनों में, मवेशी-चौपायों पर अल्लाह का नाम लें, जो (अल्लाह ने) उन्हें दिया है फिर उसमें से खुद भी खाओ और तंगदस्त मोहताजों को भी खिलाओ। फिर उन्हें चाहिए कि लोग अपना मैल-कुचैल दूर करें, और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस प्राचीन घर का तवाफ (परिक्रमा) करें। यह और जो इन्सान अल्लाह की ठहरायी हुरमतों (अल्लाह की बाँधी हुई पाबंदियों) की इज़ाज़त करेगा, तो यह उसके रब के यहाँ उसके लिए बेहतर है और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल किये गये, सिवाए उनके जिनका हुक्म तुमको सुना दिया गया, तो मूर्तियों की उपासना से बचो और बचो झूठी बातों से। इस तरह कि अल्लाह ही की ओर के होकर उसके साथ किसी को साझीदार न ठहराओ और जो इन्सान अल्लाह के साथ साझीदार ठहराता है, तो मानो वह आसमान से गिर पड़ा, फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाए या हवा उसे किसी दूर जगह फेंक दे। यह (है हमारा हुक्म) और जो इन्सान अल्लाह के निश्चित किये हुए स्थानों का आदर करें, तो यह दिलों की परहेज़गारी की बात है। उनमें एक निश्चित समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, फिर उनको उस प्राचीन घर तक पहुँचाना

है और हमने हर उम्मत के लिए कुर्बानी का तरीका निश्चित किया है, ताकि वह उन जानवरों पर अल्लाह का नाम ले, जो उसने उन्हें दिये हैं तुम्हारा अल्लाह एक ही अकेला अल्लाह है। तो अपने को उसी के हवाले कर दो और नमी अपनाने वाले को खुशखबरी सुना दो। (हज 26-34)

हाजी वहाँ उपासना करते हैं और इन शब्दों में ऐलान करते हैं। ऐ अल्लाह हम हाज़िर हैं, ऐ अल्लाह हम हाज़िर हैं, तू अकेला है और तेरा कोई साझी नहीं है। ये हज (एक कर्तव्य) है। जो अल्लाह के प्रिय और आज्ञाकारी नबी ह० इब्राहीम अलै० की उपासना और आज्ञापालन की यादगार है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, हर मुसलमान के सामने ये बात होती है कि मक्का और कअब में अपनी पसन्द के कपड़ों को छोड़कर, कफन के समान कपड़ों में जाए। वहाँ जाकर कहे- ऐ अल्लाह सारे संसार के मालिक में हाज़िर हूँ, तेरा कोई साझी नहीं, सारी तारीफे तेरे ही लिए हैं और सब नेमतें और बादशाही तेरे ही लिए हैं और इसमें तेरा कोई साझी नहीं है। इस प्रकार ह० इब्राहीम अलै० की कुर्बानियों को दोहराया जाता है। ह० इब्राहीम अलै० की कुर्बानियों में अल्लाह की स्वीकृति को पाने की जो भावना थी, इस प्रकार इन्सान उसकी नकल कर सकता है। उन्होंने अपने दिल और जान से ऐसी कुर्बानियाँ दी, जो हर इन्सान के वश में नहीं है। उसका ऊपरी रूप अपने अन्तरमन, कामनाओं और जान-माल की कुर्बानी की यादगार है। जो हर साल मक्का में दोहराई जाती है। जीवन में एक बार 'हज' करने का आदेश अल्लाह की ओर से दिया गया है। इसको करने से आस्था और विश्वास में वृद्धि होती है। इसका उद्देश्य अल्लाह की स्वीकृति प्राप्त करना है, यही 'हज' का वास्तविक उद्देश्य है। यही 'हज' का संदेश है। जिससे कयामत तक मुसलमान अल्लाह के आदेश पर अपनी जान और माल को कुर्बान करने की भावना को प्रकट करते रहें। जिससे इब्राहीम अलै० की सुन्नत ज़िन्दा होती रहें।

आप कह दीजिए, "अल्लाह ने सच बात कह दी है, तो तुम सीधी राह वाले इब्राहीम के दीन की पैरवी (अनुसरण) करो और वह मुशिरकों में से न थे"। पहला घर (कअब) जो लोगों (की इबादत) के लिए बनाया गया था वही है जो मक्का में है। बरकत वाला और सारी दुनिया के लिए हिदायत है। इसमें खुली हुई निशानियाँ हैं, मक़ामे इब्राहीम (इब्राहीम अलै० के खड़े होने की जगह) और जो व्यक्ति इसमें दाखिल हुआ, वो अमन में हो गया और लोगों पर अल्लाह का हक (फ़र्ज) कि जो इस घर तक जाने की ताकत रखते हैं, वह इसका हज करें, और जो कोई इन्कार करे तो अल्लाह सारे संसार वालों से बेनियाज़ (निस्पृह) है। (आले इमरान 95-97)

ईदुल अज़हा (कुर्बानी की ईद)

कुर्बानी की ईद, हज की उपासना को करने की खुशी में धन्यवाद के रूप में मिली। ये मीठी ईद के 2 महीने 10 दिन बाद मनाई जाती है। जिस प्रकार मीठी ईद रमज़ान का महीना पूरा होने की खुशी में मनाई जाती है। जो अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिए खाने-पीने और कामनाओं पर नियन्त्रण करने का महीना है। कुर्बानी की ईद नबियों के पिता ह० इब्राहीम अलै० की कुर्बानी और आत्मसमर्पण को याद दिलाती है, जो उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिए दी। जो कुर्बानी और समर्पण का एक भव्य उदाहरण है। इन कुर्बानियों को अल्लाह ने स्वीकार किया और मुसलमानों को आदेश दिया गया कि वो इन कुर्बानियों को सदा याद रखें। अन्तिम नबी ह० मुहम्मद स० को आदेश दिया गया-

फिर हम ने आप के पास वाह्य (ईशवाणी) भेजी कि आप इब्राहीम के तरीके पर चलें, जोकि बिल्कुल एक तरफ के हो रहे थे और वो शिर्क करने वालों में से न थे। (नहल 123)

इन कुर्बानियों को उपासना बना दिया गया। जिससे आज्ञाकारी और विश्वास करने वाले हर साल इनको याद करें, इनका सम्मान करें और इसके समान कुर्बानी दें। इस प्रकार हर समय इन कुर्बानियों को याद करें। इस महान इन्सान से अपने सम्बन्ध और समर्पण पर अल्लाह को याद करें। इस प्रकार ये दिन अल्लाह के सामने अपनी भक्ति और दासता को प्रकट करके और उसमें अपनी सफलता पर प्रसन्न होने का दिन है।

पवित्र कुरआन में जिहाद की कल्पना

जिहाद का शब्द वास्तव में प्रयास करने के अर्थ से बना है। जिहाद जीवन के उस दौर में होता है जब शत्रु युद्ध करने पर उतारु हो, इसे पहले समझाने और मनाने का हर सम्भव प्रयास करने का आदेश दिया गया है। जैसा की इस्लाम के मक्की दौर में किया गया। जिहाद के नाम पर जो सशस्त्र कार्य करना पड़ा, उसमें सच्चाई के सहयोग के रास्ते में अपनी जान और माल दोनों को संकट में डालकर निश्छल और न्याय से कार्य करने के आदेश दिये गये हैं। 'जुहूद' के स्थान पर जिहाद का शब्द प्रयोग करके ताकत और युद्ध के स्थान पर अपने आराम को कुरबान करने और सत्य को स्थापित करने का प्रयास।

जो लोग ईमान लाए और अल्लाह के लिए उन्होंने वतन छोड़ा और अल्लाह के रास्ते में अपने जान और माल से कोशिश की, वो दर्जे में अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़े हैं और यही लोग पूरे कामयाब हैं। (तौबा 20)

मक्के में व्यतीत किये 13 साल के जीवन में शत्रुओं के अन्याय और अत्याचारों के बाद भी अल्लाह की ओर से आदेश दिया गया कि अपने हाथों को रोके रखो। जब मदीने आ गये और दुश्मनों ने बड़ी सेना के साथ हमला करके उनको तबाह करने का इरादा किया। तब ताकत का जवाब ताकत से देने की आज्ञा मिली।

अब लड़ने की उन लोगों को इजाज़त दे दी गई, जिनसे इन्कार करने वाले लड़ते हैं। क्योंकि उन पर जुल्म किया गया है और बिना शक अल्लाह उनकी मदद करने की पूरी ताकत रखता है, जो अपने घरों से बेवजह निकाले गये, बस इतनी बात पर कि वो कहते हैं, "हमारा रब अल्लाह है" अगर अल्लाह लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता, तो खानकाहें (मठ), गिरजाघर, यहूदी प्रार्थनाभवन और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का खूब नाम लिया जाता है, सब गिरा दिये जाते और अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा, जो अल्लाह के दीन की मदद करेगा, बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताकत वाला है। (हज 39-40)

और जब मक्के वाले शत्रु मदीने आकर युद्ध करने लगे तब कहा-

और तुम लड़ो अल्लाह के लिए उन लोगों के साथ, जो तुमसे लड़ने आएँ और हद से बाहर न निकलो बेशक अल्लाह हद के बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता। (अल-बकर 190)

और उनके साथ उस हद तक लड़ों की जुल्म बाकी न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए और अगर वो लोग (जुल्म से) बाज़ आ जाए, तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर सख्ती न करो। (अल-बकर 193)

ये वो समय था जब मुसलमानों को रक्तपात तो बड़ी चीज़ है, सख्त से सख्त पीड़ाओं को सहन करने के बाद भी, ताकत का प्रयोग करने की अनुमति नहीं दी गयी थी। इसके स्थान पर नमाज़ के द्वारा संतोष और साधना प्राप्त करने पर बल दिया गया। इस प्रकार पूर्ण रूप से अन्तरमन से जिहाद करवाया गया। इसके बाद के 10 सालों में जब मक्के के अधर्मियों की ओर से दिये जाने वाले कष्टों के कारण युद्ध की तैयारी की जाने लगी। उस समय युद्ध करने वाले शत्रुओं के अन्याय और उनके जुल्मों के मुकाबले में युद्ध की तैयारी करने की आज्ञा मिली। जिससे अपनी रक्षा की जा सके और सत्य के प्रचार-प्रसार की बाधाएँ दूर हों। इसमें मानव स्वभाव का ध्यान और सावधानियाँ रखी गयी। ये जिहाद भलाई की ऐसी कामना और स्वच्छ भावना से किया गया, जिसका कोई उदाहरण मानव इतिहास में नहीं मिलता। मुसलमानों को सच्चाई की सहायता और अल्लाह की आज्ञा पालन के लिए जो जीवन शैली दी गयी। वो सूरह 'अम्र' में पूर्ण रूप से स्पष्ट है।

ज़माने की कसम, बेशक इन्सान बड़े घाटे में है, मगर उन लोगों के सिवा जो ईमान लाये और भले काम करते रहे और एक-दूसरे को हक़ की नसीहत करते रहे और सब्र की ताकीद करते रहे। (अम्र)

इसमें ईमान यानी अपने जीवन को सच्चाई के अनुरूप बनाना और अच्छे कार्य करना, अच्छे स्वभाव को ग्रहण करना और दूसरो को भी इसके उपदेश देना और आपस में इसका प्रचार करना। इस कार्य में जो कठिनाईयाँ और दुख आये उनको सहन करना और धैर्य से काम लेना। ये कठिनाईयाँ अगर दूसरों की ओर से बल प्रयोग से हो, तो इनका सामना भी बल प्रयोग के द्वारा करना। इसका उद्देश्य यह हो कि पृथ्वी पर बुराई समाप्त हो और अच्छाई का प्रचार हो। इस बात को कहा गया है।

ये लोग ऐसे हैं कि यदि हम दुनिया में इनको हुक्मत दे दें तो ये लोग खुद भी नमाज़ की पाबन्दी करे और ज़कात दे और दूसरों को भी नेक काम करने को कहें और बुरे काम करने से मना करें और सब कामों का फल तो अल्लाह ही के बस में है। (हज 41)

इस्लाम में जिहाद का उद्देश्य, मात्र अपनी जाति को बढ़त दिलाना और संसारिक राज-पाठ का लोभ नहीं है। इसका उद्देश्य अल्लाह के द्वारा दिये गये संविधान को स्थापित करना है। इसलिए यदि बल प्रयोग के अतिरिक्त किसी और

रास्ते से यह कार्य हो सकता हो, तो पहले वो कार्य किया जायेगा। यदि अल्लाह की अपेक्षा, उपद्रव और बुराई का बल प्रयाग से प्रचार किया जा रहा हो और उसको रोकने में उपदेश और निर्देश प्रभावी न हो। इस पर शत्रु की ओर से बल प्रयोग हो, उस समय यदि बल प्रयोग से उसे रोका जा सकता हो तो बल प्रयोग किया जाये। ये कार्य मात्र अल्लाह की स्वीकृति के लिए किया जाये। इस प्रकार किया जाने वाला युद्ध इस्लामी युद्ध कहलायेगा। यदि ये भावना और उद्देश्य नहीं है, तो चाहे जो भी नाम रख लिया जाये वो युद्ध इस्लामी नहीं हो सकता।

इस्लामी युद्ध के इतिहास में निर्दोष और शान्ति प्रिय लोगों के साथ किसी भी प्रकार के अत्याचार और अन्याय की कोई घटना नहीं मिलती।

अध्याय दस

अन्तिम नबी का महत्व व कार्य

इस संसार में अल्लाह का ह० मुहम्मद स० को भेजने का मुख्य उद्देश्य, जिसका वर्णन पवित्र कुर्आन की बहुत सी आयतों में किया गया है। इस प्रकार है-

जिस तरह हमने तुम्हीं में से एक नबी भेजा हैं, जो तुमको हमारी आयते पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं, और तुम्हें पाक (पवित्र) बनाते हैं, और किताब (पवित्र कुर्आन) और दानाई (हिकमत और अखलाक की बातें) सिखाते हैं और ऐसी बातें बताते हैं जो तुम पहले नहीं जानते थे। (अल-बकर 151)

और कहा-

अल्लाह ने मोमिनों (धर्मियों) पर बड़ा एहसान किया, कि उनमें उन्हीं में से एक नबी (इत) भेजा, जो उनको खुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं, और उनको पवित्र करते हैं और खुदा की किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (आले इमरान 164)

और कहा-

वही तो है जिसने अनपढ़ों में, उन्हीं में से (मुहम्मद स० को) नबी बना कर भेजा, जो उनके सामने उसकी आयतें पढ़ते हैं और उनको पाक करते हैं और खुदा की किताब और दानाई सिखाते हैं और इससे पहले तो यह लोग खुली गुमराही में थे। (जुमुआ 2)

ह० मुहम्मद स० के आने का उद्देश्य आपकी शिक्षाओं में आचरण, संस्कृति और कामनाओं पर नियन्त्रण का मुख्य स्थान है। पवित्र कुर्आन से हमें पता चलता है कि हिकमत का अर्थ अच्छा आचरण और इस्लामी संस्कृति है। पवित्र कुर्आन में सुरह 'इसरा' में आचरण और संस्कृति के बुनियादी उसूलों को बताने के बाद इन्हें हिकमत से याद किया गया है और कहा है-

(ऐ पैगम्बर) ये उन (विदायतों) में से हैं जो खुदा ने हिकमत की बातें तुम्हारी ओर वतय (ईश्वारीय) की हैं। (इसरा)

और हमने लुकमान को हिकमत दी कि खुदा का शुक्र करो और जो शख्स शुक्र करता है तो अपने ही फायदे के लिए शुक्र करता है और जो नाशुकरी करता है, तो भी अल्लाह बेनियाज़ और तारीफ़ के लायक है। (लुकमान १२)

और सच्चाई की राह में एहसान जताए बिना खर्च करने, गरीबी और तंगी से न डरने और अल्लाह पर भरोसा और उम्मीद रखने कि वसीयत करने के बाद कहा-

वह जिसको चाहता है हिकमत अता करता है, और जिसको हिकमत मिल गई, बेशक उसे बड़ी नेमत मिल गई, और नसीहत तो वही कुबूल करते हैं, जो अवलमंद हैं। (अल-बकर 269)

खुद ह० मुहम्मद स० ने अपने भेजे जाने के उद्देश्य को बताते हुए कहा-
“मुझे इस लिए भेजा गया है कि मैं अच्छे आचरण को श्रेष्ठता तक पहुँचाऊँ”।

आप स० सभ्य आचरण का श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

पवित्र कुर्आन में आता है- और अख़लाक (आचरण) तुम्हारे बहुत आला (श्रेष्ठ) हैं।

ह० आयशा सिद्दीका रज़ि० से जब आप स० के आचरण के बारे में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया। “आप स० के अख़लाक मालूम करना हो तो कुर्आन देखो”

ह० मौलाना सलमान नदवी रह० ने हिकमत का अर्थ आचरण के लिए प्रयोग किया है और मौलाना अली मियाँ नदवी रह० ने भी इसी अर्थ को पसन्द किया है। ह० मुहम्मद स० की बताई बातों और अम्मा आयशा रज़ि० ने जो आपकी प्रशंसा की है उससे भी यही अर्थ निकलता है।

यही आचरण, इच्छाओं पर नियन्त्रण और ह० मुहम्मद स० के साथ रहने का परिणाम था कि आपकी देख-रेख में ऐसे लोग तैयार हुए, जो सभ्य आचरण वाले थे। बुरी आदतों, कामनाओं के जाल, अज्ञानता के प्रभाव और शैतान की चालों से बचे हुये थे। खुद पवित्र कुर्आन उनके आचरण, सभ्यता के उच्च स्थान और मन के पवित्र होने की गवाही देता है।

और जान लो कि तुममें खुदा के पैगम्बर हैं, अगर बहुत सी बातों में वो तुम्हारा कहना मान लिया करें, तो तुम मुश्किल में पड़ जाओ, लेकिन खुदा ने तुमको ईमान वाला बना दिया और इसको तुम्हारे दिलों में बसा दिया और कुफ़्र, गुनाह और नाफरमानी से तुमको बचा लिया। यही लोग सीधे रास्ते पर हैं। अल्लाह की कृपा और अहसान से, और अल्लाह जानने वाला और हिकमत वाला है। (हुजरात 7-8)

और नबी (ह० मुहम्मद स०) ने भी अपनी ज़बान से इस बात की गवाही दी है- “सबसे अच्छे लोग मेरे दौर के लोग हैं”।

अल्लाह के नबी के एक विशेष साथी ह० अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि० ने बड़ी खूबी के साथ नबी के सहाबा (साथियों) का परिचय कराया है और संक्षेप में उसको बताया है कि “सहाबा दिल के پاک, ज्ञान में गहरे और अच्छे स्वभाव के हैं”।

वो इस्लाम की वसंत की फसल, अल्लाह के नबी की दक्षता, मानव निर्माण, प्रशिक्षण और पवित्रता में एक चमत्कार थे।

अच्छे आचरण का महत्व

जब अल्लाह के नबी स० इस दुनिया से चले गये तो पवित्र कुर्आन, हदीसे (ह० मुहम्मद स० की कही बातें) और आप स० की जीवनी इस कमी को पूरा करते रहे, क्योंकि ये इन्सान के दिल को समझने, हिकमत, मन के रोगों, अन्तर आत्मा की बुराईयों, शैतान के छल के उपचार का एक स्थायी और विश्वव्यापी निदानशाला और मन की शान्ति के लिए महत्वपूर्ण था।

आत्मिक रोगों और कामनाओं का ईलाज- हम यहाँ कुछ आयतों और हदीसों को बताते हैं, जो अच्छे आचरण और मन की पवित्रता के लिए महत्व रखती हैं, कामनाओं की बुराईयाँ, शैतान की चाले और अन्तरआत्मा के रोगों का एक विशेष ईलाज है। अपने महत्व और प्रभाव में अद्वितीय हैं, क्योंकि ये सर्वश्रेष्ठ वैध व ज्ञानी और इस सारे संसार को एक दृष्टि में देखने वाले अल्लाह का कलाम है। जो इन्सानों का पैदा करने वाला है और उनके मन और अन्तरआत्मा को जानने वाला है। उसी के ये बताए हुए आदेश और नियम हैं। अल्लाह ने कहा है-

भला जिसने पैदा किया वो बेखबर है, वो तो छिपी बातों का जानने वाला, और हर चीज़ को जानता है। (मुल्क 14)

जो इन्सान भी इस ज्ञान और आदेशों का पालन करेगा अन्तरआत्मा, दृढ़ता, नेक नीयत के साथ उनका पालन करेगा, वो अच्छे स्वभाव और मन की शान्ति व पवित्रता को प्राप्त करेगा। अगर एक इन्सान इन नियमों का पालन करेगा तो पवित्रता और अन्तरआत्मा के गुणों को प्राप्त करेगा और अगर पूरा समाज इन नियमों का पालन करेगा और अल्लाह के आदेशों को मानेगा, तो वो एक आदर्श समाज कहलाएगा।

नेक नियती

और उनको हुक्म तो यह हुआ था कि इज़्ज़तासे अमल (नेक नीयत) के साथ अल्लाह की इबादत करें, एकाग्र होकर, और नमाज़ पढ़ें, और ज़कात दें, और यही सच्चा धर्म है। (बय्यिना 5)

देखो शुद्ध उपासना तो मात्र अल्लाह ही के लिए है। (जुमुर 3)
 हर जगह अल्लाह की उपस्थिति का ध्यान
 मोमिनों (धर्मियों) अल्लाह के आगे साफ दिल (अन्तरआत्मा) से तौबा करो
 (तहरीमा 8)

सहनशीलता और क्षमा-

और जो सब्र करे और कुसूर (गलती) माफ करे तो ये अज़म (हिम्मत)
 के काम हैं। (शूरा 43)

अल्लाह को हर जगह मानना-

और तुम जहाँ कहीं भी रहो वो तुम्हारे साथ है। (हदीद 4)
 वो आँखों की खयानत (चोरी) को जानता है और जो बातें सीनों में छिपी
 हैं उनको भी। (ग़ाफिर 19)

अल्लाह का डर

मोमिनों अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक है। (आले इमरान
 102)

मोमिनों अल्लाह से डरों और सीधी (सच्ची) बात कहा करो। (अहज़ाब 70)

विश्वास

और अल्लाह ही पर मोमिनों को बरोस्त रखना चाहिए। (इब्राहीम 11)
 और उस (अल्लाह) पर बरोसा रखो जो ज़िन्दा है और कभी नहीं मरेगा।
 (फ़ुर्कान 58)

दृढ़ता

(ऐ नबी) जैसा तुमको हुक्म होता है उस पर जमे रहो। (हूद 99)
 जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर वो उस पर जमे रहे,
 तो उनको न कुछ डर होगा, और न वो गमगीन (उदास) होंगे, यही जन्नत वाले
 हैं, जहाँ वो हमेशा रहेंगे यह बदला होगा, उन कर्मों का जो वो करते रहे।
 (अहकाफ 13-14)

पवित्र कुर्आन और ह० मुहम्मद स० की बातों को दृढ़ता से थामना

और अगर किसी बात में तुम्हारे बीच झगड़ा हो जाए, तो इसमें अल्लाह
 और उसके रसूल के हुक्म को मानो। (निसा 59)

तो जो चीज़ तुमको (नबी स०) दें उसे ले लो, और जिससे मना करें रुक
 जाओ। (हश 7)

अल्लाह और उसके नबी की मुहब्बत

लेकिन जो ईमान वाले हैं उनको तो सबसे बढ़कर अल्लाह ही से मुहब्बत होती है। (अल-बकर 125)

कह दीजिए अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, और तुम्हारी पत्नियाँ, और तुम्हारे रिश्तेदार, और माल जो तुमने कमाया हैं और तिजारत जिसके बन्द होने का डर है और घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह, उसके रसूल (नबी) और उसकी राह में कोशिश करने से ज्यादा प्यारी हैं, तो इन्तज़ार करो! यहाँ तक कि अल्लाह अपना फैसला ले आए और अल्लाह नाफरमानों को राह नहीं दिखाता। (तौबा 24)

तकवा और नेकी के कामों में मदद

और नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो, और अल्लाह से डरते रहो, कुछ शक नहीं कि अल्लाह का अज़ाब बहुत सख्त है। (मायदा 2)

मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं। (हुजरात 10)

इस्लामी भाईचारा

उन लोगों की बहुत सी काना फूसियाँ अच्छी नहीं, हाँ उसकी बात जो इन्सान भलाई या नेक बातों या लोगों में सुलह (मेल-मिलाप) कराने को कहे। (निसा 114)

तुम अल्लाह से डरो और आपस में सम्बन्धों को ठीक रखो। (अनफाल 1)

नम्रता और आदर सत्कार

और मोमिनों से आदर-सत्कार से पेश आया करो। (हिज्र 88)

तो तुम यतीम पर अत्याचार न करना और माँगने वाले को न झिड़कना। (जुहा 9,10)

अल्लाह के नबी के आदर्शों का पालन

(ऐ पैगम्बर लोगों से) कहो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी बात मानो, अल्लाह भी तुमको दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और अल्लाह माफ करने वाला मेहरबान है। (आले इमरान 31)

अल्लाह से उम्मीद और उसका डर

और मुझसे डरते रहो। (अल-बकर 40)

(ऐ पैगम्बर मेरी तरफ से लोगों से) कह दो, ऐ मेरे बन्दों जिन्होंने अपने आप पर ज्यादती की, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, अल्लाह सभी गुनाहों को माफ कर देता है, वह बड़ा माफ करने वाला मेहरबान है। (जुमुर 53)

अल्लाह की चाल (उपाय) से तो वही लोग नहीं डरते जो घाटे में पड़ने वाले हैं। (आराफ 99)

संसार की माया से मुक्त अल्लाह की रहमत से बेईमान लोग मायूस हुआ करते हैं। (यूसुफ 87)

माल और औलाद तो दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ीनत (सुन्दरता) हैं और बाकी रहने वाले अच्छे अमल हैं, जो तुम्हारे रब के नज़दीक बदले की दृष्टि से भी बेहतर हैं और उम्मीद की दृष्टि से भी। (कहफ 46)

और ये दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल और तमाशा है और हमेशा रहने वाला घर तो आखिरत का है, काश ये लोग समझते। (अनकबूत 64)

बलिदान और त्याग

और वो (दूसरे लोगों को) अपने मुकाबले में प्राथमिकता देते हैं, चाहें वह खुद ही ज़रूरतमन्द हो। (हश्र 9)

और जबकि वो लोग खुद खाने के ज़रूरतमन्द हैं फकीरों, यतीमों और कैदियों को खिलाते हैं। (दहर 8)

धमण्ड, अभिमान और दंगे की बुराई

वो जो आखिरत का घर है इसे मैंने उन लोगों के लिए तैयार कर रखा है जो मुल्क में जुल्म और फसाद नहीं करते और नेक अन्जाम तो परहेज़गारों ही का है। (कसस 83)

सुन्दर आचरण और इच्छाओं पर नियन्त्रण रखना

और गुस्से को रोकते और लोगों के कसूर माफ करते हैं और खुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है। (आले इमरान 134)

और माफी को अपनाइओ और भलाई का हुक्म देते रहो और नादानों से अलग हो जाओ। (आराफ 199)

नेक लोगों की संगत

और जो लोग सुबह और शाम अपने रब को पुकारते और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं, उनके साथ सब्र करते रहो। (कहफ 28)

ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरते रहो और सच्चाई के साथ रहो। (तौबा 119)

मुसलमान के मुसलमान पर हक

ऐ ईमान वालों कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक न उड़ाए, हो सकता है कि वे लोग उनसे बेहतर हो और न औरतें दूसरी औरतों का (मज़ाक उड़ाए) हो सकता है वे उनसे बेहतर हो और न आपस में ताने दो और न आपस में एक-दूसरे को बुरे लकब (उपाधियों) से पुकारो, ईमान लाने के बाद बुरा नाम (रखना) बुरा है और जो तौबा न करे वो ज़ालिम है। (हुजरात 11)

ऐ ईमान वालों बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान ग़लत होते हैं और न एक दूसरे की टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे बुराई करो। क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि कोई अपने मरे हुए भाई का माँस खाए? तुम्हें तो इससे बिन ही आएगी और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, रहम वाला है। (हुजरात 12)

और लोग मोमिन मर्दों और औरतों को (आरोप लगाकर) तकलीफ़ देते हो, जो उन्होंने न किये हो तो उन्होंने अपने सर एक बोहतान (मिथ्यारोपण) और खुले गुनाह का भार उठा लिया। (अहज़ाब 58)

जब तुमने वो बात सुनी थी, तो मोमिन मर्द और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया और (क्यों न) कहा कि यह तो खुली तोहमत (आरोप) है? (नूर 12)

सदाचार और मन की पवित्रता

पवित्र कुर्आन क्योंकि कयामत तक आने वाले इन्सानों की सम्पूर्ण आवश्यकतों और सत्य मार्ग को बताने के लिए उतारा गया है। जो इन्सानों के हर समुदाय का मार्ग दर्शन करता है इसीलिए इसे 'अल किताब' कहा गया।

उसने (ऐ मुहम्मद स०) तुम पर किताब उतारी, जो अपने से पहले की (किताबों की) तस्दीक (पुष्टि) करती है और उसी ने तौरात और इंजील उतारी, इससे पहले के लोगों की हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए फुर्कान (सत्य और असत्य में अन्तर करने वाली किताब) उतारी। (आले इमरान 3)

इससे ये पता चलता है कि सारे संसार को बनाने वाले अल्लाह ने अपनी श्रेष्ठ सृष्टि इन्सान के लिए आचरण व चरित्र को निर्धारित किया है। इन्सान की परीक्षा लेने के लिए उसको अपने आचरण व चरित्र को चुनने का अधिकार भी दिया है। इन्सान अपनी इच्छा से बुरे कामों को छोड़कर अच्छे काम करे तब ही उसके चरित्र का पता चलेगा। इसमें सबसे पहले अपने पैदा करने और पालने वाले अल्लाह का शुक्र अदा करना है कि उसने इन्सानों की जरूरत के लिए सारी चीजे बनाई, जिनका प्रयोग करके इन्सान राहत और आनन्द प्राप्त करता है। इसके साथ ही स्वास्थ्य के लिए डाक्टर और ईलाज की व्यवस्था की है। इन बातों का शुक्र अदा करने के लिए अपने कर्मों से उसका शुक्र अदा करने का प्रमाण दें और अपने दिलों-दिमाग से उसका अहसान मानें। उसका शुक्र अदा करने के तरीके पवित्र कुर्आन में जगह-जगह बताये गये हैं, उनका अनुसरण करें। इस प्रकार पवित्र कुर्आन इन्सानों के लिए सम्पूर्ण मार्ग दर्शन करने वाली किताब बन गयी।

ये किताब कि इसमें कोई सन्देह नहीं, हिदायत है अल्लाह से डरने वालों के लिए, जो गैब (परोक्ष) पर ईमान रखते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हमने उनको दे रखा है, उसमें से खर्च करते हैं और यकीन तो बस आखिरत ही पर रखते हैं, यही लोग अपने رب की तरफ से हिदायत पर हैं और पूरे कामयाब तो बस यही हैं। (अल-बकर 1-5)

बेशक ये कुर्आन ऐसे रास्तों की हिदायत करता है जो बिल्कुल सीधा है और ईमान वालों को जो नेक कर्म करते रहते हैं, खुश खबरी देता है कि उनके लिए बड़ा भारी अज़्र (ईनाम) है और ये भी बताता है कि जो लोग आखिरत पर

ईमान नहीं रखते, उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (बनी इस्राईल 9-10)

इन आयतों के द्वारा ये बात स्पष्ट हो जाती है कि इन्सान का दिल और दिमाग अल्लाह को मानने वाला और उसकी महानता को मानने वाला होना चाहिए। आचरण व चरित्र के लिए पवित्र कुर्आन में जो निर्देश दिये गए हैं उनका पालन करने वाला हो। इसके साथ ही आखिरत पर यकीन करने वाला हो और परलोक में कामयाबी इस जीवन में किये कर्मों के अनुसार होगी।

और तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ भलाई करते रहों, अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाए, तो उनको (किसी बात पर) उफ तक न कहो और न उनको छिड़कना और उनसे बात आदर के साथ करना और प्यार व विनम्रता से उनके साथ रहो, और उनके लिए दुआ करो कि ऐ मेरे रब जैसे इन्होंने बचपन में मुझे पाला है, तू भी इन पर रहम करा जो कुछ तुम्हारे दिलों में है तुम्हारा रब उसको अच्छी तरह जानता है, अगर तुम नेक होगे तो वह तौबा करने वालों को माफ करने वाला है और मुहताजों और रिश्तेदारों को उनका हक दे दो और फुजूल खर्ची में माल न उड़ाओ। कि फुजूल खर्ची करने वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुकरा है और अगर तुम अपने रब की रहमत के इन्तेज़ार में जिसकी तुम को उम्मीद है, इनकी (हकदारों) की ओर ध्यान न दे सको, तो उनसे नमी से बात कह दिया करो। और अपने हाथ को न तो अपनी गर्दन से बंधा हुआ (तंग) रखो और न बिलकुल खोल ही दो कि (सब देकर) फिटकारे हुए लाचार होकर बैठ जाओ। बेशक तुम्हारा रब जिसकी रोज़ी चाहता है फैला देता है और (जिसकी चाहता है) तंग कर देता है, वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला ख़ूब देखने वाला है और अपनी औलाद को निर्धनता के डर से कत्ल न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी, बेशक इनका कत्ल बहुत बड़े गुनाह की बात है और ज़िना (व्याभिचार) के करीब भी न जाना कि वह बेहयाई और बुरी राह है और किसी जीव को कत्ल न करो, जिसे मारना अल्लाह ने हराम ठहराया है, मगर हक के आधार पर और जिस इन्सान को लाचारी की हालत में कत्ल किया गया हो, तो हमने उसके वारिस को अधिकार दे दिया है (बदले का) तो उसको चाहिए कि कत्ल में ज्यादती न करे, कि वह मदद किया हुआ (कामयाब) है और यतीम के माल के करीब भी न जाओ, मगर उससे जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए और अहद (प्रतिज्ञा) को जरूर पूरा करो कि अहद के बारे में पूछा जायेगा और जब नाप कर देने लगे, तो नाप पूरी रखा करो, और ठीक तराजू से तोला करो, यह

बहुत अच्छी बात है और परिणाम के अनुसार भी बेहतर है और जिस बात का तुमको ज्ञान न हो, उसके पीछे न लगे बेशक कान और आँख और दिल इनमें से हर एक के बारे में ज़खर पूछा जायेगा और ज़मीन पर अकड़ कर न चलो, न तो तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो। इन सब चीज़ों की बुराई तुम्हारे रब के नज़दीक बहुत नापसन्द है। यह हिकमत की उन बातों में से है, जो तुम्हारे रब ने तुम पर वस्य (आदेश) की हैं और अल्लाह के साथ कोई और (माबूद) उपास्य न ठहराना, वरना नरक में डाल दिये जाओगे मलामत किये हुए और धुतकारे हुए। (बनी इस्राईल 23-39)

पवित्र कुर्आन में अकीदे (आस्था) को शुद्ध करने के साथ ही इन्सानों में पाई जाने वाली दूसरी बुराईयों का भी वर्णन किया है। जो पिछली कौमों में पाई जाती थी। जैसे कौम 'आद' में बहुदेववाद के साथ धमण्ड और अत्याचार, कौम 'समूद' में शिर्क के साथ अपनी हुनर पर धमण्ड, 'लूत' में शिर्क के साथ समलिंगी आचरण, कौम 'मदयन' में शिर्क के साथ नाप-तौल में कमी, फिरओन का खुद को खुदा कहना अपनी जाति के अतिरिक्त और लोगों को नीच समझना और उनको गुलाम बना लेना।

इन बातों के साथ ही पवित्र कुर्आन में भविष्य में आने वाली बुराईयों का भी वर्णन है। नबियों ने जो निर्देश दिये हैं उनका भी वर्णन है। आपस में हमदर्दी करना, धमण्ड से बचना, एक-दूसरे के अधिकारों के हनन से बचना, इन्सानों की सुरक्षा और दूसरा का सामान बिना आज्ञा के न लेना, नमी से बात करना मानवता के जो गुण हैं उनको ग्रहण करना। इसी प्रकार माँ-बाप की देख-भाल और बच्चों का ध्यान रखना। दूसरों के सुख-सुविधा का ध्यान रखना, रिश्तेदारों और पड़ोसियों का ध्यान रखना और अत्याचार को रोकने का प्रयास करना। इन बातों की आदत डालने को कहा गया है और इनके महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

और जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा, "ऐ मेरे बेटे! अल्लाह का साक्षी न ठहराना शिर्क तो बड़ा भारी जुल्म है" और हमने इन्सान को ताकीद की (निर्देश दिये) हैं, उसके माँ-बाप के बारे में, उसकी माँ ने तकलीफ पर तकलीफ उठाकर, उसे अपने पेट में रखा और दो साल उसके दूध छुड़ाने में लगे, कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ-बाप का भी, आखिरकार मेरी ही ओर लौट कर आना है और अगर वो तुम पर दवाब डाले कि तू किसी को मेरा साझीदार ठहरा कि जिसका तुझे इल्म नहीं है, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार रखना और पैरवी उसके रास्ते की करना जो इन्सान मेरी ओर खजूअ करे फिर मेरी ही ओर तुमको लौट कर आना है, उस समय मैं तुम्हें बताऊँगा जो कुछ तुम करते रहे। (लुकमान ने कहा), ऐ

मेरे बेटे! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो, फिर वह किसी चट्टान के बीच या आसमान में या ज़मीन में हो, अल्लाह उसको (कियामत) में निकाल लाएगा, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्म) की खबर रखने वाला है। ऐ मेरे बेटे! नमाज़ कायम कर और भली बात का हुक्म दे और बुरी बातों से रोक और जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र से काम ले, बेशक यह साहस के कामों में से है और लोगों से बेखुशी न कर और न ज़मीन में अकड़ कर चल, बेशक अल्लाह इतराने वाले, बड़ाई हॉकने वाले को पसन्द नहीं करता और अपनी चाल में दर्मियानी (सन्तुलित) चाल अपनाओं और अपनी आवाज़ नीची रखो, इसलिए कि सब से बुरी आवाज़ गधे की है। (लुक़मान 13-19)

ऐ ईमान वालों कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक न उड़ाए, हो सकता है कि वे लोग उनसे बेहतर हो, और न औरते दूसरी औरतों का (मज़ाक उड़ाए) हो सकता है वे उनसे बेहतर हो और न आपस में ताने दो और न आपस में एक-दूसरे को बुरे लकब (उपाधियों) से पुकारो, ईमान लाने के बाद बुरा नाम (रखना) बुरा है और जो तौबा न करे वो ज़ालिम है। (हुजरात 11)

ऐ ईमान वालों बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान ग़लत होते हैं और न एक दूसरे की दोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे बुराई करो। क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि कोई अपने मरे हुए भाई का माँस खाए? तुम्हें तो इससे घिन ही आएगी। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, रहम वाला है। (हुजरात 12)

ऐ लोगों! हमने तुमको एक ही मर्द और एक ही औरत से पैदा किया और तुम्हें कबीलों और बिरादरियों का रूप दिया, ताकि तुम एक दूसरे को पहचानों, अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे इज़्जत वाला वो है, जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो, बेशक अल्लाह जानने वाला, खबर रखने वाला है। (हुजरात 13)

यकीनन वो ईमान वाले कामयाब होंगे जो अपनी उपासना नमाज़ में खुश-खुश (पूर्णयता समर्पित मन व शरीर को समायोजित करने) वाले हैं और जो फुज़ूल बातों से दूर रहने वाले हैं और वो लोग जो ज़क़ात देने वाले हैं और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। हॉ बल्कि अपनी पत्नियों और बंदियों से नहीं, उन पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जो कोई इसके अलावा (अतिरिक्त) का तालिब होगा, सो ऐसे लोग तो हद से निकल जाने वाले हैं और जो अपनी अमानतों और अपने अहद का लिहाज़ रखने वाले हैं और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करने वाले हैं, बस यही लोग तो (जन्नत के) वारिस होंगे जो फिरदौस के वारिस होंगे और हमेशा-हमेशा उसमें रहेंगे। (मोमिन 1-11)

अध्याय ग्यारह

आचरण व चरित्र की सुन्दरता के लिए पवित्र कुर्आन की शिक्षाएँ

सामाजिक बुराईयाँ और उनका हल- सामाजिक बुराई संकल्प (इरादे) और बुद्धि में कमी का नाम है। जब इन्सान की इच्छा और बुद्धि में कमी आ जाती है, तो वह बुराई की ओर आकर्षित हो जाता है। जिससे समाज नष्ट हो जाता है और समाज को आर्थिक और आत्मिक हानि होती है। जब ये बुराई किसी जाति में आम हो जाती है, तो उस जाति और देश के विनाश का कारण बनती है।

इस्लाम क्योंकि जीवन विधान है, इसलिए पवित्र कुर्आन ने सामाजिक बुराईयों का विस्तार से वर्णन किया है और इसके साथ ही उनके उपचार को भी बताया है। पवित्र कुर्आन में कहा गया है-

अल्लाह एहसान और इन्साफ से काम करने और रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देता है, वो बेहयाई, नापसन्द बातों और सरकशी से रोकता है, तुम्हें वो नसीहत करता है, शायद कि तुम नसीहत पर आ जाओ। (नहल 90)

इस आयत में सामाजिक बुराईयों को तीन भागों में बाँटा गया है। जो इस प्रकार हैं-

(1) बेहयाई (निर्लज्जा) के काम (2) मुनकिरात - बुराईयाँ जिनका इन्कार किया जाए, जिससे सारे समाज का जीवन प्रभावित होता है (3) बागी (विद्रोही) जैसे चोरी, डाका, हत्या और देश व समाज से विश्वासघात।

ये वो बातें हैं जिनको हर धर्म और समाज ने एक साथ बुरा कहा है। वास्तव में ये सब बुराई के काम हैं और समाज और धर्म की दृष्टि में नापसन्द और पाप हैं। यदि इनको सही कहा जाए तो मानव अधिकारों से विश्वास उठ जायेगा और किसी की जान, माल व सम्मान सुरक्षित न रहेगा।

पवित्र कुर्आन ने इस विषय में आचरण की संतुलित व्यवस्था को बताया है। वो आचरण जो अल्लाह को पसन्द है इस प्रकार हैं

तकवा- (इन्दीयनिग्रह) अर्थात् पवित्रता, न्याय और समानता, क्षमा करना, सन्तुलन, परोपकार, नमी, अधिकारों का पालन व सन्धि कराना।

इन बातों के न होने से समाज में जो बुराईयाँ पैदा होती हैं वो ये हैं-

हठधर्मी, निर्लज्जता, फुजूलखर्ची, झूठ, रिश्वत, नाप-तोल में कमी, चुगलखोरी, मिथ्यारोपण, ऊँच-नीच, ये वो सामाजिक बुराईयाँ हैं जिनको पवित्र कुर्आन ने मुनकीरात कहा है। पवित्र कुर्आन ने इन बुराईयों का जो उपचार बताया है वो ये है-

बेशक नमाज़ बुरे कामों, बेहयाई और बुराई की बातों से रोकती है और अल्लाह कि याद बड़ी चीज़ है।

शर्म व हया (लज्जा)

निर्लज्जता (बेहयाई) का ईलाज लज्जा है। निर्लज्जता की बातों से बचना और सच्चाई को बताने में लज्जा को न छोड़ना, ये ही निर्लज्जता का कुर्आनी ईलाज है। लज्जा नाम है बुरी बातों (मुन्किरात) से बचने का। हया इन्सान को बुरी बातों से रोकती है, अगर ये न हो तो इन्सान जो चाहेगा करेगा। हया से भलाई फैलती है। नमाज़ हया का स्रोत है और ये ही बुराईयों से रोकती है।

न्याय व समानता

इसी प्रकार जीवन के हर मोड़ पर न्याय और समानता से काम लेने की आवश्यकता है। जब बुद्धि की क्षमता और भलाई का चिराग बुझ रहा होता हो, तो उस समय न्याय और समानता का सहारा लेना पड़ता है। कुछ बुराईयाँ ऐसी हैं कि जिनको करने से अल्लाह की कृपा छिन जाती है और कुछ बुराईयाँ ऐसी हैं, जो अल्लाह के प्रेम से वंचित कर देती हैं। फिर वो बुराईयाँ हैं जो अल्लाह की प्रसन्नता से खाली हैं। जैसे बहुदेववाद एक ऐसी सामाजिक बुराई है कि जिसको करने वाला अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकता। अल्लाह बहुदेववाद को माफ नहीं करता। बहुदेववादी अल्लाह की कृपा से सदा के लिए वंचित हो जाता है। इसलिए इस्लाम का कारनामा (असाधारण कार्य) है कि इसने झूठे खुदाओं को बाहर निकाल फेंका, झूठे खुदाओं की उपासना को समाप्त कर दिया और एकेश्वरवाद का ऐलान किया।

दरगुज़र (क्षमा)

पवित्र कुर्आन ने दूसरा ईलाज जो सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए बताया है वो इस प्रकार है-

और भलाई और बुराई बराबर नहीं, अगर कोई बुराई करे तो उसका जवाब अच्छाई से दो, क्योंकि बुराई दरगुज़र (क्षमा) करना और परोपकार करना नेकी (अच्छाई) है, अल्लाह परोपकार के बदले को व्यर्थ नहीं करता, हर अच्छाई

पुण्य का काम है। परोपकार और न्याय से बुराईयाँ दूर होती हैं, अच्छाई करने से समाज से बुराईयाँ समाप्त होती हैं। इसलिए क्षमा करना चाहिए, अच्छाई बुराई को धो देती है, भलाई करना एक ऐसा गुण है जिसमें हर नेकी शामिल है। भलाई करना बहुत सी बुराईयों का ईलाज है, बुराई के स्थान पर भलाई करना समाजिक खराबियों का सबसे बड़ा ईलाज है। (सच्चा)

बेशक नेकियाँ बुराई को दूर कर देती हैं। (हूद 114)

अच्छाई करने और जीवन में सभ्य कर्म करने का उदाहरण पवित्र कुर्आन में इस प्रकार दिया है

और अल्लाह के बन्दे तो वो हैं, जो ज़मीन पर आहिस्ता ये चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे (जाहिलाना) बातें करते हैं तो सलाम कहते हैं, और जो अपने रब के आगे सच्चा करके और (आदर सत्कार के साथ) खड़े रहकर रातें गुज़ारते हैं, और वो जो दुआ माँगते हैं कि ऐ रब दोजख के अज़ाब को हमसे दूर रखो कि उसका अज़ाब बहुत तकलीफ की चीज़ है और दोजख ठहरने और रहने कि बहुत बुरी जगह है, और जब वो खर्च करते हैं तो न बेज़ा खर्च करते हैं और न तंगी से काम लेते हैं बल्कि इसके बीच का रास्ता चुनते हैं, न ज़ख़रत से ज्यादा और न कम, और वो जो खुदा के साथ किसी और को नहीं पुकारते और जिस जानदार का मारना अल्लाह ने हARAM किया है, उसे नहीं ज़िबहा (काटते) मगर जायज़ तरीके से और बदकारी नहीं करते और जो ये काम करेगा सख़ा गुनाह में पड़ जाएगा। (फुर्कान 63-68)

इसके अतिरिक्त सामाजिक बुराईयाँ किस प्रकार दूर हो सकती हैं, उनको पवित्र कुर्आन ने विस्तार पूर्वक बताया है वो इस प्रकार है-

(1) तकवा- (इन्दीयनिग्रह), (2) इख़लास (निष्कपटता), (3) तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा करना) (4) सन्न व शुक्र (संयम)

तकवा नाम है मन की पवित्रता और सभ्य कर्म करने का, इख़लास (निष्कपटता) नाम है ईमानदारी का, तवक्कुल अल्लाह ही पर भरोसा करने को कहते हैं और सन्न सारी शैतानी ताकतों पर काबू पाने को कहते हैं। तकवे से इच्छाओं पर नियन्त्रण पैदा होता है और इन्सान का अन्तरमन जागता है। इसलिए इस्लाम में श्रेष्ठता का मानक तकवे को बताया गया है। इख़लास अल्लाह की प्रसन्नता और आज्ञापालन को कहते हैं। स्पष्ट है कि यदि इन्सान में तकवा और जीवन में निष्कलता पैदा हो जाए, तो सारा समाज बुराईयों से पवित्र हो सकता है क्योंकि जिसमें अल्लाह का डर होगा वो न तो किसी का हक मारेगा और न छल करेगा। उसकी 'कहनी और करनी' एक समान होगी और वो अपने दायित्व का पालन करेगा। इसी प्रकार तवक्कुल और सन्न कामयाबी की असल बुनियाद हैं। कठिनाईयों और परेशानियों को सहन करना और उनका दृढ़ता से सामना करना किसी जाति और देश की कामयाबी की सीढ़ियाँ हैं।

पवित्र कुर्आन में दिल के महत्व का वर्णन

दिल मानव शरीर का केन्द्र- पवित्र कुर्आन में दिल का वर्णन बहुत अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावी अंग के रूप में किया गया है। इसको ह० मुहम्मद स० ने भी बताया और कहा “ये जान लो कि शरीर के अन्दर एक अंग ऐसा है कि यदि वो ठीक हो तो सारा शरीर ठीक है और यदि ये खराब हो जाए तो सारा शरीर खराब हो जाएगा, वो अंग दिल है”। परन्तु आधुनिक विज्ञान दिल को महत्व नहीं देता और सारा महत्व दिमाग को देता है। दिल को बस खून पहुँचाने वाला अंग कहते हैं। लेकिन ये बात सोचने की है क्योंकि यूनानी ईलाज में दिल की घड़कन से बहुत से रोगों का पता लगाया जाता रहा है। नाड़ी (नब्ज़) देख कर हकीम को ये पता चल जाता था कि शरीर में पीड़ा कहाँ है और मरीज़ का स्वास्थ्य कैसा है? इससे ये पता चलता है कि दिल सारे शरीर पर प्रभाव डालता है या कम से कम शरीर की अवस्था से दिल ज़रूर प्रभावित होता है। वरना नाड़ी के चलन से शरीर के सब रोगों का पता कैसे लगाया जा सकता है? पश्चिमी सभ्यता को मानने वाले दिमाग को मुख्य मानते हैं।

भावनाओं का दिल से सम्बन्ध

पवित्र कुर्आन में इन्सानों के कर्म और भावनाओं को दिल के साथ जोड़ा गया है। कुछ संकेत भी दिये गये हैं जैसे- “हकीकत को देखना आँखों ही का काम नहीं है बल्कि सीनों के अन्दर जो दिल है वो ही अच्छे हो गये हैं”। ह० मूसा अलै० की माँ को उनके पैदा होने पर इस बात का डर था कि कहीं वो फिरओन की सेना के हाथ न लग जाए, इस बात का उनको ऐसा डर हुआ कि इसके सिवा सारी चिन्ताएं छट गयीं। उनके मन कि इस एकाग्रता को पवित्र कुर्आन ने इस प्रकार बताया “मूसा कि माता का दिल सब दूसरी चिन्ताओं से खाली हो गया”। यहाँ पर चिन्ता का सम्बन्ध दिल से बताया गया है, जिसको आम तौर पर दिमाग से बताया जाता है। पवित्र कुर्आन में जगह-जगह दिल को इच्छा, झुकाव और भावनाओं का स्रोत और केन्द्र कहा गया है और इस प्रकार दिल को ठीक रखने और सभ्य कर्म करने की ओर ध्यान दिलाया गया है। गलत विचारों के पैदा होने का सम्बन्ध भी दिल से बताया गया है। पवित्र कुर्आन ने

दिल का सम्बन्ध इन्सान के सही और गलत की ओर झुकाव होने को बताकर ये संकेत दिया है कि सारे इन्सान जिनको पवित्र कुर्आन सम्बोधित करता है, अपनी भावनाओं, रुचियों और विचारों का केन्द्र दिल ही को समझते हैं। इसलिए पवित्र कुर्आन ने इसकी बुनियाद ही पर दिल के शुद्धिकरण की ओर ध्यान दिलाया है और दिल को इसी के अनुसार महत्व दिया।

दिल और दिमाग का कार्य क्षेत्र

पवित्र कुर्आन ने दिमाग को इसके कार्य क्षेत्र के अनुसार अलग बताया है। इसका प्रयोग किसी बात को समझने में किया जाता है। भावना और इच्छा का सम्बन्ध दिल से बताया है। लेकिन इन्सान की सोच ये है कि बात को समझने और वास्तविकता को जान लेने के बाद भी वो अपनी इच्छा और झुकाव को वश में नहीं कर पाता। बल्कि उसकी पसन्द और कामनायें उस पर प्रभावी रहती हैं। वो किसी कर्म के नुकसान को अच्छी तरह जान लेने के बाद और समझ लेने के बाद भी ज़रूरी नहीं कि उससे रुक जाए। इस प्रकार दिमाग का सम्बन्ध किसी चीज़ के लाभ और महत्व को समझने में होता है। जबकि इन्सान का झुकाव और पसन्द इसके विपरीत भी हो सकते हैं। इस प्रकार कोई कर्म करना उसके दिल से सम्बन्ध रखता है। इसीलिए पवित्र कुर्आन में इन्सान को भलाई की ओर ध्यान दिलाने के लिए जगह-जगह दिल का वर्णन किया गया है और दिल के रास्ते से सत्य मार्ग को अपनाने की ओर ध्यान दिलाया गया है।

कुर्आन में हृदय के लिए कल्ब और फुआद शब्दों का प्रयोग

कुरआन में हृदय के लिए कहीं “कल्ब” और कहीं “फुआद” का प्रयोग मिलता है। कहीं इन शब्दों का एकवचन और कहीं बहुवचन लाया गया है। दोनों शब्दों के अर्थ में यह फर्क मिलता है कि कल्ब अधिकतर अपने अस्तित्व और शरीर के अस्तित्व के लिए और “फुआद” अपने कार्य और प्रभाव के लिहाज़ से प्रयोग किया गया है। ज्ञात होता है यह दोनों प्रयायवाची शब्द ऐसे ही हैं जैसे “ऐन” (आँख) और “बसर” या “इज़न” (कान) और “सम्अ” के वीच प्रयोग में फर्क रखा जाता है। हृदय का वर्णन चाहे “कल्ब” के शब्द से हो अथवा “फुआद” से उसका प्रयोग मनुष्य के प्रभावित होने उसकी भावना और दृढ़ता एवं इरादे को बताने हेतु किया गया है। यही वह विशेषताएं हैं जो इंसान को दूसरी प्राणियों से श्रेष्ठ करती हैं और मनुष्य के जीवन पर इन का विशेष प्रभाव पड़ता है। हृदय की उल्लेखित

दशाएं मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में आपस के सम्बंधों में और अपने पैदा करने वाले मालिक के साथ सम्बंधों में प्रकट होती है।

कर्मों का आधार मन की दशा

इन्सान के मन की दशा अल्लाह की कृपा को आकर्षित करती है। मन की दशा यदि सही नहीं है, उसमें खोट है तो इन्सान को अल्लाह की कृपा से दूर कर देती है। इसलिए कर्मों का आधार मन की दशा है। मन ही अल्लाह के प्रकाश का महल है। अल्लाह की कृपा मन ही की दशा के अनुसार आती है।

अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में उन लोगों के बारे में बताया है जिन पर अल्लाह की कृपा हुयी है। “ये वो लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने आजमा लिया है तकवा (अल्लाह से डरने) के लिए” (हुजरात-3)

और कहा है। “तो अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में है और उन पर सकीनत (रहमत) को उतार दिया” (फतह 18)

और कहा “ये वो लोग हैं जिनके दिलों में ईमान को डाल दिया है और अपनी ओर से उनकी सहायता की है”। (मुजादिला 22)

जब दिल गलत रास्ते पर चल पड़ता है तो फिर और कोई चीज़ काम नहीं आती। अल्लाह ने कहा है- “और रहे वो लोग जिनके दिलों में रोग (गुमराही) है तो उनको उनकी गन्दगियों में बढ़ा दिया गया है”। (तौबा 125)

और अल्लाह कहा है। “जब उन्होंने कजि (गुमराही) चुनी तो अल्लाह ने उनके दिलों को कज (गुमराह) कर दिया”। (सफ 5)

दिल की सख्ती लोगों की दूरी का भी कारण बन जाती है। अल्लाह ने अपने नबी ह० मुहम्मद स० से कहा “अगर आप सख्त और तंग दिल होते तो अपने आस-पास के लोगों से दूर हो जाते” (आले इमरान 159)

शुद्ध और पवित्र दिल की प्रशंसा अल्लाह ने इस प्रकार की है “(कयामत का दिन) वो दिन होगा जिस दिन माल और औलाद कोई काम नहीं देंगे, मगर वो इन्सान जो सच्चा और पवित्र मन लेकर आयेगा (शोअरा 88-89)

और कहा है “और बेशक अल्लाह के गिरोह में ह० इब्राहीम अलै० हैं जबकि वो अपने रब के पास आये पवित्र मन लेकर” (साफात 83,84)

और कहा है “जो अल्लाह के परोक्ष ज्ञान से डरता है और तौबा करने वाला मन लेकर आता है” (काफ 33)

और अल्लाह फरमाता है “बेशक इस किताब में नसीहत है उन लोगों के लिए जो (पवित्र) मन रखते हैं और वो सुनते भी हैं और वो देखते भी हैं” (काफ 73)

अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी ह० मुहम्मद स० के मन के बारे में कहा "ऐ नबी आप कह दीजिए जो कोई जिब्राईल का दुश्मन हो, उसने तो इस (कुर्आन) को आप के दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है।" (बकर 97)

और अल्लाह ने कहा "(पवित्र कुर्आन को) लेकर के उतरे रूहुल अमीन (ह० जिब्राईल अलै०) आप के दिल पर ताकि आप डराने वालों में से हो जाए"। (शोअरा 193, 194)

मन की पवित्रता और सुन्दरता के अनुकूल अल्लाह ने कहा "ये तुम्हारे दिलों के लिए और उन औरतों (नबी की पत्नियों) के दिल की पवित्रता के लिए ज्यादा पाकीजा है" (अहज़ाब 53)

और अल्लाह ने कहा है "अल्लाह ने इसको खुश खबरी देने वाला बनाया ताकि तुम्हारे दिल सन्तुष्ट हो" (अनफाल 10)

और अल्लाह ने इसको तुम्हारे लिए खुश खबरी देने वाला बनाया ताकि इससे तुम्हारे दिल सन्तुष्ट हों। (आले इमरान 126)

और कहा है "(ऐ लोगों) सुन लो अल्लाह के जिक्र (जाप) से दिल सन्तुष्ट होते हैं" (राद 48)

और कहा है "और लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को चुन लिया है और इससे तुम्हारे दिलों को सजाया है" (हुजरात 7)

और अल्लाह ने कहा है "और याद करो अपने ऊपर उस अल्लाह की नेमत (एहसान) को जब तुम आपस में दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया" (आले इमरान 123)

और दुआ (प्रार्थना) के रूप में कहा "ऐ हमारे रब तू हमारे दिलों को कज (गुमराह) मत करना, हिदायत के बाद और हमे अपनी ओर से रहमत दे और बेशक आप बहुत देने वाले हैं" (आले इमरान 8)

और कहा "और ईमान लाने वालों के लिए हमारे दिलों में तंग मत कर" (हश 10)

और कहा "और हमारे दिलों को उनके जैसा बना दे, जिन्होंने नर्मी प्रेम और रहमत को चुना है" (हदीद 27)

और कहा "वो अल्लाह जिसने मोमिनों के दिलों को शान्ति दी ताकि उनके ईमान में बढ़ोतरी हो" (फतह 4)

और कहा है "कहा! क्या तुम ईमान लाओगे? कहा! क्यों नहीं ताकि हमारा दिल सन्तुष्ट हो" (अल-बकर 207)

और कहा है "जो अल्लाह पर ईमान आता है तो उसके दिल को हिदायत (सीधा रास्ता) दिखाता है" (तगाबुन 11)

और दिल की सोच-विचार की ओर संकेत है “उनके पास दिल हैं लेकिन वो नहीं समझते” (आराफ १७६)

और कहा है “क्या वो लोग ज़मीन में नहीं चलते जिससे उसको दिल हासिल होता जिससे वो समझे” (हज ४०)

और कहा है “क्या ये लोग कुर्आन में गौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं” (मुहम्मद २४)

बुरे कामों पर अल्लाह की पकड़ होने के बारे में बताया “और लेकिन वो तुम्हें पकड़ लेगा उस पर जिसको तुम्हारे दिल किया करते थे” (अल-बकर २२५)

और कहा “और तुम पर कोई पकड़ (अज़ाब) नहीं उन पर जिन में तुम खता करो, लेकिन उन चीज़ों में जिनको तुम जान बूझ कर करो” (अहज़ाब ५)

मन की सच्चाई पर ईनाम देने पर कहा “बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है” (अनफ़ाल ७०) और दूसरे स्थान पर कहा

मोमिन और काफिर के दिल के अन्तर को मैं बताया है “बेशक मोमिनों के दिल रोशन हो जाते हैं जब उनके सामने अल्लाह का जिक्र किया जाता है” (अनफ़ाल २)

“और जब केवल एक अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो वो लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल कुढ़ने लगते हैं” (जुमर ४५)

दिल की सख्ती एवं उसकी कठोरता और अन्धकार को गुमराही एवं विद्रोह का मुख्य कारण बताया गया है। “बर्बादी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह को याद न करने से पत्थर हो गये” (जुमर २२)

और कहा “यही वो लोग है जिन पर अल्लाह ने मोहर लगा रखी है और ये अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं” (मुहम्मद १६)

और कहा “तुम समझते हो कि उनमें बड़ी एकता है जबकि उनके दिल फटे हुए हैं” (हज़ १४)

और कहा “तो उनके दिलों पर मोहर लगा दी गयी और वो कुछ नहीं समझते” (मुनाफ़िक्कून ३)

“और वो लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल इन्कार कर रहे हैं और वो अपने को बड़ा समझ रहे हैं” (नहल २२)

“हरगिज़ नहीं बल्कि उनके दिलों पर उनके बुरे कामों का जंग बैठ गया है (मुतफ़फ़ेहीन १४)

“तो उन पर एक ज़माना गुज़र गया, तो उनके दिल सख्त हो गये उनमें से अक्सर नाफरमान ही हैं” (हदीद १६)

“जब न मानने वालों ने अपने दिलों में हट (ज़िद) की और ज़िद भी पुरानी जाहिलीयत (अंधकारमय युग) की” (फ़तह 26)

“अगर आप खर्च कर देंगे जो कुछ ज़मीन में है तो भी उनके दिलों को आपस में न जोड़ सकते थे” (अनफ़ाल 23)

“और जब मुनाफ़िकीन और जिनके दिलों में रोग था कहने लगे की जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादे किये थे” (अहज़ाब 92)

“ताकि ये शैतान के डाले हुए बसबसों (भ्रमों) को उन लोगों को आजमाईश (परीक्षा) बना दे जिनके दिलों में रोग है” (हज 53)

इस तरह और भी आयतें हैं।

आत्मा मन के अधीन

दिल इन्सान के शरीर में मुख्य स्थान रखता है। इससे बात पता चलती है कि दिल अगर सही है तो आत्मा भी सही होगी। जैसे कहा गया है।

“ये (हे हमारा आदेश) और जो व्यक्ति अल्लाह के निश्चित किये हुए निशानों का आदर करे तो ये दिलों की परहेज़गारी की बात है” (हज 32)

“अगर हम उसका दिल मजबूत न कर दें तो करीब था कि वह इस गुस्से को ज़ाहिर कर देती” (कसस 10)

“वह उस दिन से डरते हैं जब दिल और आँखें उलट जायेंगी” (नूर 37)

“उस दिन लोगों के दिल काँप रहे होंगे और उनकी आँखें भय से झुकी हुई होंगी” (नाज़ियात 8)

“और जबकी आँखें उलट गयी थी और कलेजे मुँह को आ रहे थे और डराईये उनको जल्द आने वाली मुसीबत के दिन से जिस दिन कलेजे मुँह को आ रहें होंगे” (गाफिर 18)

“और गवाही को न छुपाओ क्योंकि जो उसको छुपाता है उसका दिल गुनाहगार होगा” (अल-बकर 283)

“और जान लो अल्लाह बन्दे और उसके दिल के बीच में आता है” (अनफ़ाल 28)

“मगर ये कि जिसको मजबूर कर दिया जाए और वो ईमान पर सन्तुष्ट हो” (नहल 106)

“अल्लाह ने किसी भी इन्सान के सीने में दो दिल नहीं बनाए” (अहज़ाब 4)

ज़बान और दिल के फर्क को बताया-

“वो अपने मुँह से वे बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं” (आले इमरान 167) दिल के डर को बताया

“बहुत जल्दी मैं इन्कार करने वालों के दिलों में रोब डाल दूँगा”

दिल की कठोरता को पत्थर के समान बताया "फिर इसके बाद उनके दिल कठोर हो गये, वो पत्थर के समान हो गये" (अल-बकर 74)

दिल की नमी के प्रभाव को बताया "अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा कर लो तो तुम्हारे दिल तो उसके सामने झुक ही चुके हैं" (तहरीमा 8)

दिल की मज़बूती के प्रभाव को बताया "ताकि वो मज़बूत कर दे तुम्हारे दिलों को और उसकी वजह से तुम्हारे कदमों को जमा दे" (अनफाल 11)

दिल की पवित्रता को अल्लाह का डर और ईमान के तकाज़ों को इस प्रकार बताया है।

"क्या ईमान वालों के लिए समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के जिक्र से और जो हक उसने अवतारित किया है उसके आगे झुक जाए" (हदीद 96)

"उनके दिल और उनकी खाल अल्लाह के जिक्र से नरम पड़ जाए" (जुमर 23)

दिल को जाँचने के सम्बन्ध में बताया "ताकि अल्लाह जाँच ले जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ कर दे" (आले इमरान 154)

"और (यहूदी) कहते हैं हमारे दिल परदे में (सुरक्षित) हैं (नहीं) बल्कि अल्लाह ने उन पर उनके कुफ्र के कारण लानत कर रखी है" (अल-बकर 87)

"और उनके यह कहने के कारण की हमारे दिल तो परदे में (सुरक्षित) हैं (नहीं) अल्लाह ने उन पर उनके कुफ्र के कारण मुहर लगा दी है।" (निसा 155)

"उन्होंने कहा कि हमने सुन लिया पर हम मानते नहीं और उनके दिलों में बछड़े का प्रेम भरा हुआ था" (अल-बकर 93)

कुर्आन में ऐसी भी आयतें हैं जिन में कल्ब (दिल) शब्द आया है। जहाँ तक फुआद के शब्द का सम्बन्ध है पवित्र कुर्आन में 70 जगह ऐसी मिलती हैं जहाँ कल्ब स्थान पर फुआद या अफइदह शब्द का प्रयोग है। एक जगह उसकी उत्तरदायित्वता एवं अल्लाह के यहाँ उसके जवाब देह होने का हाल बताया गया है। जिसमें दिल की निगरानी की ओर हकीमाना अन्दाज़ में ध्यान अकर्षित किया गया है।

"बेशक कान और आँख और दिल इनमें से हर एक के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा। (बनी इस्राईल 36)

एक और जगह दिल की हालत को इस प्रकार बताया गया है। "उसके दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई गलती नहीं की" (नज्म 11)

और- ह० मुसा अलै० की माँ की चिन्ता को बताने के लिए कहा गया "और मूसा की माँ का दिल बैचन हो गया" (कसस 10)

और कान आँख के जिन्न के साथ-साथ दिल को भी एक नेमत के रूप में बताया है और शुक्र अदा करने की ओर ध्यान दिलाया गया “उसने तुमको आँख कान और दिल दिये ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो” (नहल 78)

“मगर न उनके कान उनके काम आये, न उनकी आँखें, न उनके दिल” (काफ 26)

शरीर में दिल के महत्वपूर्ण रोल के रूप में दिल की हालत को इस प्रकार बताया गया के ह० इब्राहीम अलै० की दुआ को नकल किया। “तो लोगों के दिलों को झुका दीजिए और उन्हें फल खाने को दीजिए” (इब्राहीम 37)

और अपनी ओर संकेत करके अल्लाह कहता है “(ऐ मुहम्मद) रसूलों के जितने किस्से हम आपको सुनाते हैं उसके द्वारा हम आपके दिल को मजबूत करते हैं” (हूद 120)

“ऐसा इसलिए किया गया ताकि इसके द्वारा हम तुम्हारे दिल को मजबूत करें” (फुर्कान 32)

“और हमने उनको वह राज्य दिया था जो तुम लोगों को नहीं दिया” (अहकाफ 26)

“और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करने वाले बन जाओ”

और इसी को दूसरे रूप में बताया है “उसने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए, कितना कम तुम लोग शुक्र करते हो” और ध्यान दिलाया “आप कह दीजिए, वही है जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए” (मुत्क 23)

दिल की दूसरी दशाओं को इस प्रकार बताया “अपने सर उठाए दौड़ते होंगे उनकी निगाहें खुद उनकी ओर भी न फिरेगी, उनके दिल उड़ रहे होंगे” (इब्राहीम 43)

अल्लाह ने अपनी ओर संकेत करके स्पष्ट किया है। “और हम उनके दिलों को और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जिस तरह वो पहली बार ईमान नहीं आए थे” (अनआम 110)

और कहा है “वह अल्लाह की भड़काई हुई आग जो दिलों पर जा चढ़ेगी” (हुमज़ा 7)

विभिन्न स्थानों पर सद्र के शब्द को लाकर कल्ब की ओर संकेत किया गया है। जैसे सूरह ‘इनशिराह’ में अल्लाह ने अपने नबी ह० मुहम्मद स० को सम्बोधित करने हुए कहा है। “(ऐ मुहम्मद) क्या हमने आपके लिए आप का सीना नहीं खोल दिया”

इसी प्रकार एक और जगह एक नबी की दुआ को जिक्र करके कहा है
 “ऐ मेरे रब मेरा सीना खोल दीजिए” और खुद अपने सम्बन्ध में कहा है की
 “निसन्देह वो दिलों के भेदों को जानने वाला है”।

दिल और दिमाग का कार्य

दिल और दिमाग इन्सान के शरीर के दो मुख्य अंग हैं। जिनके द्वारा इन्सान अपने जीवन, आस-पास के माहौल और हालात को समझता है। इनको समझकर अपनी इच्छा से कर्म करता है। इनमें ज्ञान की बातों का सम्बन्ध दिमाग से समझा जाता है और भावनाओं का सम्बन्ध दिल से जाना जाता है। इस प्रकार दिल और दिमाग के द्वारा इन्सान को अपनी श्रेष्ठता दिखाने का अवसर मिलता है। जहाँ तक दिमाग और ज्ञान का सम्बन्ध है, तो वो इन्सान को कर्म पर विवश नहीं कर पाते, ये केवल इन्सान के ज्ञान में वृद्धि कर पाते हैं। लेकिन दिल और भावनायें इन्सान को कुछ करने, और कर गुज़रने पर विवश कर देते हैं। ये इन्सान को अन्य प्राणियों की तुलना में विशेष और लाभदायक कार्य करने पर उकसाते हैं।

पवित्र कुर्आन में बीती बातों को बताने की शैली

बीती बातों में साहित्य और उद्देश्य

साहित्य में पिछली घटनाओं के वर्णन में आकर्षक शैली को अपना कर इसमें अच्छे उदाहरण देने की प्रथा इस दौर में आम हो गयी है। ये प्रथा साहित्य का मुख्य और प्रसिद्ध भाग समझा जाने लगा। पवित्र कुर्आन इन्सानों के साहित्य के समान नहीं है कि उसके मोहक साहित्य से लोगों का शोक पूरा हो या भाषा शैली मात्र प्रभावित करने के लिए प्रयोग की जाए। पवित्र कुर्आन अपनी भाषा शैली, प्रभाव और उद्देश्य में भिन्न है। वास्तव में ये इन्सानों के मार्ग दर्शन की आवश्यकता को पूरा करता है। इसमें वो गुण रखे गये हैं कि इन्सान ऐसा प्रभाव ले, जो उसके सुधार के लिए आवश्यक हो। इसलिए इसमें बहुत प्रभावी और आकर्षक भाषा शैली का प्रयोग किया गया है। जहाँ जैसे हालात हैं वह उसके अनुकूल बहुत प्रभावी शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें जो घटनायें बताई गयी हैं, उनका वर्णन और भाषा शैली मुख्य स्थान रखते है। ये इन्सानों की मानसिकता और भावनाओं पर ऐसा प्रभाव डालते हैं कि कहने वाला कहता जाए और सुनने वाला मोहित होकर सुनता जाए। जैसे की सूरह 'आदियात' पहले आ चुकी है।

इसमें अरब वासियों में युद्ध कौशल और वीरता की जो भावना रही है, उसको सामने रखते हुए लड़ाई के मैदान में घोड़ों के तेज़ी से दौड़ने और पथरों पर उनकी ठोकरों से चिंगारियाँ निकलने और मुहँ में राल भर जाने का वर्णन किया। फिर इन घोड़ों पर तेज़ी के साथ आगे बढ़ते हुए दुश्मन की सेना में घुस जाने का वर्णन है। इससे अरबों के युद्ध कौशल में रुचि होने के कारण कान खड़े हो जाते है। उनके मन में जोश आ जाता है और वो कहने वाले की ओर अकर्षित हो जाते हैं और बहुत ध्यान से उसकी बात सुनते हैं। फिर ऐसा होते ही उनसे असल बात बताई जाती है। वो बात इन्सानों की मानसिकता को बताते हुए शुरू की जाती है कि अल्लाह ने तो इन्सान को ऐसी मन-मोहक चीज़ें उपलब्ध कराई और इन्सान अपने रब का नाशुक्रा बना हुआ बैठा है। इन्सान अपने इस हाल को अच्छी तरह जानता है। इन्सान अपने लाभ का बहुत शौक रखता है।

क्या वो ये नहीं जानता कि जब कब्रों से मुर्दों को निकाला जायेगा और फिर उनके मन में जो पाप और पुण्य कर्म हैं उनको बता दिया जायेगा। इस समय अल्लाह उनसे अपने ज्ञान के अनुसार व्यवहार करेगा।

इस प्रकार पहले सुनने वालों को उनके पसन्द की बात सुनाई गयी और इस प्रकार सुनाई गयी कि वो आकर्षित हो जाए, फिर उनको झटका दिया गया कि ये जीवन केवल अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए नहीं है। बल्कि इन्सानों के लिए जो उत्तम चरित्र निर्धारित किया गया है, उसके अनुसार कर्म करने के लिए हैं। ये कर्म केवल दिखावे के लिए नहीं हैं, जैसा कर्म किया होगा वैसा ही फल मिलेगा।

पवित्र कुर्आन में बीती बातों को बताने का उद्देश्य

पवित्र कुर्आन की इस शैली का अध्ययन किया जाए तो बहुत से उदाहरण जो अपना अलग-अलग अन्दाज़ रखते हैं, देखने को मिलेंगे। मानव साहित्य में किये गये प्रयासों में किसी काल्पनिक घटना को लोगों तक पहुँचने का माध्यम बनाया जाता है। इस साहित्य में कहानी को इस प्रकार बताया जाता है कि जीवन से जुड़ी घटनाओं का चित्र सामने आ जाता है। इनका उद्देश्य किसी घटना के ऊपरी रूप को प्रकट करना होता है। लेकिन पवित्र कुर्आन में इस सम्बन्ध में जिन बीती बातों को बताया गया है वो सब किसी उद्देश्य के लिए हैं। इनमें कई तरह के पहलु होते हैं। इनमें एक पहलु यह मिलता है कि इन बातों को बताने में स्थान, समय या हालात की कोई कड़ी छोड़ दी जाती है, लेकिन वो इस प्रकार छोड़ी जाती है कि इसके छोड़ने से उस घटना के वर्णन पर कोई फर्क नहीं पड़ता। उस बात को समझने में कोई मुश्किल नहीं होती और इन्सानों को इस सम्बन्ध में किसी कमी का अहसास भी नहीं होता। ये इस प्रकार होता है जैसे दो इन्सानों की आमने सामने की बातों में कुछ चीज़ें ऐसी छोड़ दी जाती हैं जिनके छोड़ने से इन्सान को अर्थ समझने में कोई परेशानी नहीं होती।

ह० यूसुफ अलै० की कथा

ह० यूसुफ अलै० की कथा में जब राजा ने अपने सपने के बारे में बताया और उसका अर्थ अपने दरबारियों से पूछा तो उन्होंने कहा वो आसमर्थ हैं। तब वो आदमी जो ह० यूसुफ अलै० के साथ जेल में रहा था और उसने अपने सपनों का अर्थ उनसे पूछा था, उसने दरबारियों को सलाह दी कि एक आदमी है जिससे अर्थ पूछा जा सकता है। उसने कहा “मुझे भेजो” पवित्र कुर्आन ने उसके शब्दों को बताते हुए ये बात कही “ऐ सच्चे और अच्छे यूसुफ! हमें बताओ”। इन दोनों वाक्यों के बीच की कड़ी को छुपा दिया गया। वो कड़ी से हो सकती थी कि उसने जब दरबारियों से कहा की मैं तुमको इसका अर्थ बताऊँगा मुझे भेजो।

उसके यह कहने पर दरबारियों ने यूसुफ अलै० के पास उसको भेजा, इस प्रकार वो ह० यूसुफ अलै० से जेल में जाकर मिला और आवश्यक बातों के बाद ये कहा "ऐ अच्छे और सच्चे यूसुफ हमको सपने का अर्थ बताओ"। बीच की कड़ी को छोड़ दिया गया क्योंकि बीच की कड़ियाँ खुद समझ में आ जाती हैं और ये आमने सामने हो रही बातों में बीच में छोड़ी जा सकती हैं।

अवसर और हालात का लिहाज़- पवित्र कुर्आन में जो बातें बताई गयी हैं उनमें अवसर परिस्थितियों और उद्देश्य का पूरा ध्यान रखा गया है। ह० मूसा अलै० से सम्बन्धित जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है, उनमें उद्देश्य स्पष्ट है।

ह० मूसा अलै० से जुड़ी घटनाओं में ह० मुहम्मद स० के लिए सात्वना (तसल्ली) है कि कैसे खतरों से गुज़र कर वो मज़बूत बने, नबी की ज़िम्मेदारी मिलने पर उसका हक अदा किया और अपने दुश्मन के साथ ऐसा बर्ताव किया कि उसको पराजित कर दिया। इसी प्रकार ह० यूसुफ अलै० से जुड़ी घटनाओं को इस प्रकार बताया गया है कि उसमें भाषा शैली की श्रेष्ठता के साथ-साथ मानव जीवन के उन पहलुओं को बताया गया है जिनमें सगे-सम्बन्धियों द्वारा विश्वासघात के उदाहरण हैं। इनमें असहाय और विवशता से निकलकर सम्मान और आदर के स्थान तक पहुँचने का उदाहरण सामने आता है। इस प्रकार ह० मुहम्मद स० को अपने खानदान वालों से जो कष्ट और दुश्मनी मिल रही थी, उसमें सात्वना दी गयी। पवित्र कुर्आन ने लोगों को ये बताया है कि हालात के बाह्य रूप को न देखो अल्लाह के द्वारा मुश्किलों को आसानी में बदल दिया जाता है। सत्य पर चलने और सहन करने वाले को सफलता मिलती है। इस बात को ह० यूसुफ अलै० ने सम्मान और सफलता मिलने पर प्रकट किया है। "बेशक जो अल्लाह से डरता है और सन्न करता है तो बेशक अल्लाह एहसान करने वालों के पुण्य को व्यर्थ नहीं करता"

इन दोनों नबियों से जुड़ी घटनाओं में उन हालात से समानता थी, जिनसे ह० मुहम्मद स० का सामना होने वाला था। इन घटनाओं को कहानी के रूप में बताना आप स० की सात्वना (तसल्ली) का माध्यम बना। इसी प्रकार ह० इब्राहीम अलै० के जीवन की घटनाओं को भी कहानी के रूप में बताया गया है जिससे अल्लाह के आदेशों को स्वीकार करने और उनका पालन करने के उच्च उदाहरण ईमान वालों के सामने आये। इसलिए सूरह यूसुफ में कहा गया है "बेशक इन घटनाओं में नसीहत है बुद्धिमानों के लिए" और इन घटनाओं के पूरी तरह प्रमाणित होने के बारे में कहा गया "ये बातें गढ़ी हुई नहीं हैं और लेकिन प्रमाण हैं उन चीज़ों का जो पेश आई और हर चीज़ की व्याख्या है और मार्ग दर्शन है

और कृपा है धर्मियों के लिए" और इस घटना के आरम्भ में कहा गया है "हम आप को सुनायेंगे एक सम्पूर्ण कहानी जो कि हमने आप की ओर भेजी है इस कुर्आन के माध्यम से" और ह० मूसा अलै० के बारे में बताते हुए सूरह किसस में कहा गया "तुम मदन वालो में बेकार नहीं हो तुम उनको हमारी निशानियाँ पढ़कर सुनाते हो और लेकिन हम ही इस चीज़ को भेजने वाले हैं" । इस प्रकार इन घटनाओं को बताकर इनको आप स० और आपके अनुयाईयों के लिए कयामत तक मार्ग दर्शन का माध्यम बना दिया। इनको ईमान और आस्था की भावना और कर्म में दृढ़ता देने वाला बना दिया। इनको बहुत प्रभावी शैली में कहा गया। पवित्र कुर्आन में इन घटनाओं के वर्णन की शैली बहुत प्रभावी और सम्मानजनक है। इस पर जितनी गहरी नज़र डाली जाए उतने ही अनमोल मोती निकाले जा सकते हैं।

तकरार की शैली

पवित्र कुर्आन की एक और विशेषता ये है कि इसमें एक ही घटना को अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग अन्दाज़ में सुनाया गया है और इसके बार-बार आने का एहसास भी नहीं होता। पवित्र कुर्आन में एक घटना बार बार आती है लेकिन वो इस प्रकार नहीं लगती जैसे की पहले आ चुकी हो। क्योंकि हालात और तत्व अलग-अलग जगह पर अलग-अलग होते हैं। एक जगह हालात कुछ होते हैं तो दूसरी जगह कुछ और। इस प्रकार घटना अलग महसूस होती है बल्कि इस तरह से बातें कई रंगों में की जा सकती हैं। ह० मूसा अलै० की घटना को अलग-अलग स्थानों पर बताया गया है। कहीं बहुत संक्षेप में तो कहीं विस्तार से, इसमें ऐसा लगता है कि ये घटना दोबारा आई है लेकिन फिर भी बहुत अन्तर प्रतीत होता है। कुछ विशेषतायें किसी एक स्थान पर मिलती है तो कुछ दूसरे स्थान पर देखी जा सकती हैं।

ह० मूसा अलै० की कहानी की शैली

पवित्र कुर्आन में घटनाओं को बताने की एक मुख्य विशेषता ये भी है कि एक स्थान पर किसी विषय को विस्तार से बताता है और दूसरे स्थान पर संक्षेप में। जैसे की जब ह० मूसा को नबी बनाया गया तो उनको इसकी सूचना देने से पहले अल्लाह ने उनको सम्बोधित किया है "ऐ मूसा तेरे दाएँ हाथ में क्या है"? जवाब दिया कि ये मेरी लाठी है, जिस पर मैं टेक लगाता हूँ और जिससे मैं अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ। सवाल छोटा सा था पर जवाब विस्तार से दिया गया, बात एक पूछी गयी थी पर जवाब देने वाला इतना खुश हुआ की इस का जवाब ही नहीं दिया बल्कि इससे जुड़ी बातों को बताने लगा। पवित्र कुर्आन में ह०

मूसा की कहानी बताने वाली आयतों में बहुत विस्तार और स्पष्ट रूप है। इसके उदाहरण देखकर दूसरे उदाहरणों का भी अन्दाज़ा किया जा सकता है।

ह० मूसा अलै० के जन्म के बाद अल्लाह की ओर से ऐसी व्यवस्था हुई की उन्हें राजा के महल में पहुँचा दिया गया। जबकि वो राजा ह० मूसा अलै० की कौम के साथ दुश्मनी और षड़यन्त्र कर रहा था। लेकिन उनको मासूम बच्चा समझकर अपने महल में रख लिया। इस प्रकार उनको एक सूचक का स्थान मिला। बड़े होकर जब शहर में गये तो एक आदमी को जो अत्याचार कर रहा था उन्होंने मारा और वो मर गया। इसके बाद उनको सलाह दी गयी है कि वो राज्य की सीमा से बाहर चले जाए, वरना बहुत मुसीबत में पड़ जायेंगे और हो सकता है मारे जाए। इस पर मूसा अलै० को मानव स्वभाव के अनुसार डर लगा और वो देश छोड़कर चले गये। वहाँ परदेस में जो बेबसी की हालत होती है उसको बताया गया। फिर वहाँ भी अल्लाह की मदद से काम मिला। इसके बाद वो एक समय तक वहाँ रहे और एक सज्जन इन्सान के साथ रहे और उनकी बेटी से शादी भी की। लम्बा समय बिताने के बाद अपनी पत्नी के साथ वापस अपने देश आने का अवसर मिला। वापस आते समय अल्लाह की ओर से नुबुवत मिली और नुबुवत के आधार पर अल्लाह की ओर से रौब और सम्मान के साथ अपने देश पहुँचे और फिरओन से मिले और दृढ़ता के साथ बात की। इसको सूरह 'किसस' की आयतों में प्रभावी रूप में बताया गया है। उन आयतों में इस समय में जो मानसिक और प्रकृतिक परिस्थियाँ आई उनका भी उल्लेख मिलता है।

और जब मूसा अपनी जवानी को पहुँच गये और उनमें गम्भीरता आ गई, तो हमने उनको हिकमत और इल्म दिया, और हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। और वह शहर में ऐसे समय दाखिल हुए जबकि वहाँ के रहने वाले बेखबर थे, तो देखा कि दो व्यक्ति लड़ रहे हैं, एक उनके अपने गिरोह का था और दूसरा उनके दुश्मन के गिरोह का था। जो व्यक्ति उनके गिरोह का था उसने उस व्यक्ति के मुकाबले में, जो दुश्मन के गिरोह से सम्बन्ध रखता था, उनको मदद के लिए पुकारा, तो मूसा ने उसे धूँसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया, कहने लगे, "यह शैतान की हरकत है, बेशक वह खुला गुमराह करने वाला दुश्मन है"। बोले, "ऐ रब! मैंने अपने आप पर जुल्म किया है, अतः आप मुझे माफ कर दें, तो अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया, बेशक वह माफ करने वाला, रहम वाला है। उन्होंने कहा, "ऐ रब! तेरे इस एहसान के बाद जो तूने मुझ पर किया है, मैं कभी अपराधियों का मददगार न बनूँ। फिर दूसरे दिन वह शहर में डरते, घबराते हुए दाखिल हुए तो क्या देखते हैं, कि वही

व्यक्ति जिसने कल मदद के लिए उनको पुकारा था, आज फिर उन्हें पुकार रहा है, मूसा ने कहा, “बेशक तू तो खुली हुई गुमराही में है”। तो जब मूसा ने अपने और उसके दुश्मन को पकड़ने का इरादा किया, तो वह व्यक्ति (जिसकी मूसा ने कल मदद की थी) पुकार उठा, “ऐ मूसा, क्या तुम मुझे उसी तरह कत्ल करना चाहते हो, जिस तरह कल तुमने उस व्यक्ति को कत्ल कर दिया था? तुम ज़मीन में अत्याचारी बनकर रहना चाहते हो, और सुधार करने वाला नहीं बनना चाहते”। और शहर के अन्तिम कोने से एक आदमी चौड़ता हुआ आया और कहने लगा, “मूसा हुकूमत के जिम्मेदार तुम्हें कत्ल करने के लिए सलाह कर रहे हैं, तो तुम यहाँ से निकल जाओ, मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ। तो वहाँ से मूसा निकल गये डरते हुए कि देखे क्या होता है और कहा, “ऐ रब मुझे ज़ालिम क़ौम से छुटकारा दिला”। और जब मद्यन का रुख किया, कहने लगे, “उम्मीद है कि मेरे रब मुझे सीधे रास्ते पर डाल दें” और जब मद्यन में एक पानी की जगह पर पहुँचे, तो वहाँ देखा की लोगों का एक समूह वहाँ पानी पिला रहा है, और उनसे हट कर दो औरतें अपनी बकरियों को रोके हुए थीं, उन्होंने कहा, तुम्हारा क्या मामला है? कहा, “हम उस समय तक पानी नहीं पिलाते, जब तक ये चरवाहे नहीं चले जाते और हमारे अब्बा बहुत बूढ़े और कमज़ोर हैं”। फिर मूसा ने उनके जानवरों को पानी पिलाया। फिर छाया में आकर खड़े हो गये और कहा, “ऐ मेरे रब जो भलाई भी तू मुझ पर नाज़िल करे, मैं उसका मुहताज हूँ” फिर उन दो औरतों में से एक उनके पास शर्माती हुई आई, उसने कहा, “मेरे पिता आप को बुला रहे हैं, ताकि आप ने जो हमारे जानवरों को पानी पिलाया है, उसका बदला आप को दें”। फिर जब वह उनके पास पहुँचे और उन्हें सारा किस्सा सुनाया, तो उन्होंने कहा, “डरो नहीं ज़ालिम क़ौमों से तुम्हें छुटकारा मिल गया।” उन दो औरतों में से एक ने कहा, “ऐ अब्बा जान! इनको मज़दूरी पर रख लीजिए, अच्छा आदमी जिनको आप मज़दूरी पर रखें वही हो जो मज़बूत और अमानतदार हो। (मूसा से) कहा, “मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ साल तक मेरे यहाँ नौकरी करोगे, और अगर दस साल पूरा करो, तो यह तुम्हारी मर्जी पर होगा, मैं तुम्हें कठिनाई में डालना नहीं चाहता, अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक लोगों में पाओगे” (मूसा ने) कहा, “यह बात हमारे और आप के बीच तय हो गयी है, इन दोनों में से जो मुद्दत मैं पूरी कर दूँ तो मुझ पर कोई ज्यादाती न होगी, और जो समझौता हम कर रहे हैं, अल्लाह गवाह है”। जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर वालों को लेकर चले तो ‘तूर’ की ओर एक आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहा, “उहरो, मुझे आग नज़र

आयी है, शायद मैं वहाँ से कोई खबर ले आऊँ या आग का कोई अंगारा ताकि तुम ताप सको, जब वह उसके पास पहुँचे मुबारक क्षेत्र में घाटी के दाईं ओर के एक वृक्ष (पेड़) से आवाज़ आयी, “ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब!” और यह कि “आप अपनी लाठी डाल दें”। फिर जब उसे देखा कि वो साँप की तरह हरकत कर रही है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़कर भी नहीं देखा, ऐ मूसा! आगे आइए और डरिए नहीं, आप बिल्कुल सुरक्षित हैं। (कसस 14.31)

इसी प्रकार देखें कि अल्लाह के आदेश पर जब ह० मूसा फिरओन के दरबार में पहुँचे और एकेश्वरवाद का निमन्त्रण दिया तो मूसा ने उनको उलझाने के लिए सवाल किया कि पिछली कौमों का क्या हुआ?

(फिरओन ने) कहा, “तो कौन है, तुम्हारा रब! ऐ मूसा?” (मूसा ने) कहा, “हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी शक्त सूरत दी, फिर राह दिखाई”। (फिरओन ने) कहा, “अच्छा तो उन नस्लों का क्या हुआ, जो पहले थीं?” (मूसा ने) कहा, “उसका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है, मेरा रब न भटक सकता है न भूल सकता है”। वह वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बना दिया, और तुम्हारे लिए उसमें रास्ते बना दिये, और आसमान से पानी बरसाता है, फिर उस बरसात से हम तरह-तरह की चीज़ें पैदा करते हैं, खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ, बेशक इसमें निशानियाँ हैं अवल वालों के लिए। (ताहा 49-54)

इस विषय के अध्ययन से जो परिस्थितियों सामने आई वो बहुत अच्छे अन्दाज़ में पूरी हुई और उसमें उस घटना की छवि मिलती है जो ऊपरी चीज़ों को देखने से ज्यादा प्रभावी और ज्यादा सम्पूर्ण स्थान रखती हैं। और फिर ये बात है यह छवि सिर्फ एक दृश्य दिखाने पर समाप्त नहीं होती जो आम कहानियों में देखने को मिलती है। बल्कि वो एक विशेष उद्देश्य को बताती है, इसमें बीच-बीच में उपदेशों, प्रोत्साहन और बुरे परिणाम से डराने वाले वाक्य का भी प्रयोग किया गया है और ये विशेष उल्लेख सिर्फ सूचना पर समाप्त नहीं हो जाता बल्कि इन्सान की भावनाओं को एक सही दिशा और इन्सानी उद्देश्यों को समझने और स्वीकार करने पर प्रोत्साहित करता है।

प्रचार-प्रसार पवित्र कुर्आन की रोशनी में

प्रचार के लाभ - प्रचार के लाभ ये है कि इससे मानव जीवन के लिए लाभकारी चीज़ों का ज्ञान होता है। जिससे जीवन को उत्तम बनाने, गलत बातों से बचने और अच्छी बातों को अपनाने की ओर ध्यान दिलाया जा सके। इससे साथ-साथ मानव जीवन के लिए सन्तोष प्राप्त करने का सामान उपलब्ध कराने का लाभ भी प्राप्त करना है। लेकिन इन्सान कई बार इस सम्बन्ध में अपनी इच्छाओं को पूरा करने को ही उद्देश्य बनाकर असभ्य आचरण को अपना लेता है। इससे उसकी इच्छायें तो पूरी हो जाती है लेकिन उसका परिणाम नकारात्मक और हानिकारक होते हैं। जैसा की आज-कल के उन्नति प्राप्त समाज में अधिक होने लगा है। सभ्य और पूर्ण रूप से पहुँचाने के प्रभावी उदाहरण हमें पवित्र कुर्आन और हदीसों में विशेषकर मिलते हैं।

एक उद्देश्य पूर्ण प्रचार

पिछली कौमों और उनमें आए नबियों के किस्से पवित्र कुर्आन में जिस प्रकार बताये गये हैं। वो प्रचार के उच्च उद्देश्य को पूर्णरूप से करने के उत्तम उदाहरण हैं। मुख्य रूप से यूसुफ अलै० का किस्सा, जिसमें इन्सान की विनाशकारी छवि उनके भाईयों के कर्मों के वर्णन में मिलती है। जीवन में कठिनाईयों के बीच में धैर्य और सावधानी के रास्तों से गुज़रने और अपने चरित्र और इज्ज़त को पवित्र रखने के असाधारण और श्रेष्ठ उदाहरण उनके भाई ह० यूसुफ अलै० के जीवन में मिलते हैं। इन्होंने कैद में रहने के बाद भी अपनी समझ और अपने ज्ञान से राजा की प्रियता को प्राप्त किया और यहाँ तक की राजा के सलाहकार का पद प्राप्त किया। अपनी इस सफलता को खुद उन्होंने अपने रब का धन्यवाद करते हुए इस प्रकार कहा “बेशक जो सावधानी का जीवन चुने और धैर्य और सहनशीलता से कार्य करे तो अल्लाह ऐसे अच्छे स्वभाव वाले के पुण्य को व्यर्थ नहीं करता”। ह० यूसुफ अलै० के हालात का ये सब वर्णन पवित्र कुर्आन में ह० मुहम्मद स० को सात्वना और ढाढस के लिए और सारे धर्मियों को पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करने का रास्ता दिखाने के लिए बताए गये है।

व्यक्तिगत कार्य का उदाहरण

ये एक व्यक्तिगत कार्य से सम्बन्धित उदाहरण है लेकिन सामाजिक जीवन की परिस्थितियों से भी कुछ सम्बन्धित है और वो इस प्रकार की ह० यूसुफ अलै० को जब अपमानित किया गया और सामाजिक जीवन में भी उनको गिराने के प्रयास किये गये। तो उन्होंने उसके उत्तर में अपने रब से प्रार्थना का रास्ता चुनते हुए परिस्थितियों में सहनशीलता का प्रदर्शन किया और जो कुछ हुआ उस पर धैर्य से काम लिया।

सामाजिक कार्यों का उदाहरण

सामाजिक कार्यों और प्रयासों का एक महत्वपूर्ण उदाहरण पवित्र कुर्आन में ह० मूसा अलै० के कथन में मिलता है कि देश का क्रूर शासक अपने देश की अधिकतर प्रजा पर राज्य करने वाला अपनी पूरी क्रूरता से अल्पसंख्यक प्रजा पर जुल्म ढा रहा था। अल्पसंख्यक प्रजा उसकी क्रूरता को सहन कर रही थी और उसके विरुद्ध कुछ करने में समर्थ नहीं थी, बल्कि खतरे बढ़ते जा रहे थे। लेकिन इस प्रजा के एक नवजात शिशु को कुदरत की ओर से उस क्रूर शासक के घर में पहुँचा दिया गया। वो उसके साधारण समझकर उसका पालन-पोषण करता रहा और जब वो बच्चा बड़ा हुआ तो उसके साहस और सामर्थ्य को देखकर उसके विरुद्ध सख्त कार्यवाही काने का अवसर आया। वो नव युवक उसके राज्य की सीमा से गुप्त रूप से बाहर चला गया और अन्जान समाज और परदेस में असहाय बनकर अपने भविष्य के बारे में सोचने लगा और अपने रब की कृपा और रहम की आशा में आगे बढ़ता रहा। फिर हालात सुधरते गये और वो नव युवक बड़ा होकर एक शक्तिशाली और गुणवान व्यक्ति बनकर लौटा तो फिर अल्लाह की ओर से उसको नबी व समाज सुधारक बनाकर उस क्रूर शासक के पास भेजा गया और फिर उस राजा से उसकी जो वार्ता हुई उसमें उसने उस राजा को निरुत्तर कर दिया। जिससे वो परेशान होकर रह गया और उसका कुछ ना बिगाड़ सका। वो अल्लाह का नबी उस राजा (फिरओन) को निरन्तर समझाता रहा और अपने सुधार की ओर बुलाता रहा और अल्पसंख्यको पर जुल्म से रोकता रहा। वर्षों तक वो इस कार्य को करते रहे लेकिन राजा ने अपने सुधार के विषय में न सोचा। नबी और उनकी कौम ने धैर्य से काम लिया अन्त में अल्लाह की ओर से उसको सज़ा देने का फैसला लिया गया और उस राजा को अपनी सेना सहित नष्ट कर दिया और अल्पसंख्यको को उससे मुक्ति मिली बल्कि अल्पसंख्यको को फिरओन का उत्तराधिकारी बना दिया गया। ये ह० मूसा अलै० और फिरओन का किस्सा था जो पवित्र कुर्आन में उसके अलग-अलग पहलुओं को दर्शाते हुए बताया गया है। जिससे इस समय के अल्पसंख्यक जो

बहुसंख्यक के जुल्म का शिकार हो रहे हैं उनको तसल्ली (सात्वना) मिले। तानाशाह बन जाने पर ये ज़रूरी नहीं कि वो जो चाहे करें। पवित्र कुर्आन में ये हालात इस तरह बताये गये हैं कि इससे इन्सानों की मानसिकता का पता चलता है और कठिनाईयों का हल भी सामने आता है।

कौमों के सबक सिखाने वाले किस्से प्रचार के सकारात्मक नियमों के उदाहरण हैं

पवित्र कुर्आन में विभिन्न कौमों के चरित्र के विभिन्न और रंग-रंग के हालात को बताया गया है कि जिससे इन्सान को अपने जीवन की कठिनाईयों में मार्गदर्शन मिले। मानव जीवन के हालात का सामना करने में सहायता मिले। इसलिए कि इन्सान अपने जीवन को दूसरे इन्सानों के जीवन के उदाहरणों से संवारता और बनाता है और अच्छे-बुरे के अन्तर को पहचानने में मदद लेता है। ऐसी उदाहरणों को बुद्धिमान दूसरे के ज्ञान से लाभ उठाने के लिए बताता है और उनके प्रचार का काम करता है। इस सम्बन्ध में पवित्र कुर्आन में आने वाले विषयों से बहुत से उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनमें सामाजिक और व्यक्तिगत लाभ की बातें जगह-जगह बताई गयी हैं। जिनसे बुद्धिमानों के ज्ञान में वृद्धि होती है और बुरी हालतों से बचने का रास्ता मिलता है। जैसे सूरह 'तकासुर' में यह इन्सानी हाल बताया गया है कि इन्सानों पर धन वृद्धि की इच्छा इतनी बढ़ जाती है की वो अपनी तमाम चीज़ों को छोड़कर उसी में डूब जाता है और फिर उसका परिणाम ये होता है कि सब कुछ छोड़कर आखिरत में खाली हाथ हो जाता है जहाँ उसका धन कुछ भी काम नहीं आयेगा।

अमेरिका के एक वक्ता ने भी सूरह 'तकासुर' के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं।

इसी प्रकार सूरह 'मुतफ्फ़ीन' में भी इन्सान के अत्याचार और अन्याय का उल्लेख मिला है, कि धन का लोभी व्यापारी नाप-तोल में बहुत अन्याय से काम लेता है। इसके अतिरिक्त मानव जीवन से सम्बन्धित मानसिक बातों का वर्णन भी हमें पवित्र कुर्आन में जगह-जगह मिलता है। उनमें उसकी ओर ध्यान दिलाया गया है कि इन्सान उनकी रोशनी में अपने जीवन के लिए शिक्षा प्राप्त करे। ये मानव समाज में पेश आने वाले वाक्यात और कौमों के शिक्षा से भरपूर हालात और इससे सम्बन्धित नबियों के प्रयासों को पवित्र कुर्आन में बताया गया है और ये उदाहरण उनको प्रचार के विषय में बड़ा प्रकाश और मार्गदर्शन देती हैं। ये सब प्रचार के बुनियादी और उद्देश्य को पूरा करने के सम्पूर्ण उदाहरण हैं।

अल्लाह की उपासना और प्रार्थना कुर्आन की रोशनी में

पवित्र कुर्आन में कई स्थानों पर अलग-अलग अन्दाज़ में ये बात साफ़ कर दी गयी है कि इस सृष्टि में जो कुछ है वो अल्लाह का बनाया हुआ है। वो ही सबका स्वामी और एक मात्र वो ही उपासना के योग्य है। कोई उसका साझी नहीं और जो कुछ होता है वो अल्लाह के द्वारा निर्धारित किया हुआ है। ये सब उसकी इच्छा से ही हुआ है। कोई भी छोटी या बड़ी चीज़ ऐसी नहीं जो खुद हो जाती हो। पवित्र कुर्आन ने ये भी बताया है कि अल्लाह ने इस सृष्टि को बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया है। इसमें हर चीज़ के पीछे एक उद्देश्य है। इन्सान को ये आदेश दिया गया है की वो इस उद्देश्य को समझे और इसके अनुसार कर्म करे। इन्सान पर ये ज़िम्मेदारी डाली गयी कि वो इस संसार में अल्लाह की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करे और अल्लाह का प्रतिनिधि बनकर कार्य करे। इस कार्य को करने के लिए इन्सान को जिस ज्ञान की आवश्यकता थी वो उसको दिया गया।

इस कार्य के लिए इन्सान को दो प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता थी। एक तो वो ज्ञान जो ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए आवश्यक है। इसको इन्सान अपने अनुभव, खोज-बीन और सोच-विचार से प्राप्त कर सकता है। इस ज्ञान को इन्सान के प्रयासों पर छोड़ दिया गया है। इसको प्राप्त करने के लिए बुद्धि और क्षमता इन्सान को दी गयी है। दूसरा वो ज्ञान है जो इन्सान की क्षमता से बाहर है। इसको परोक्ष ज्ञान कहते हैं। ये इन्सानों के ज्ञान की सीमा में नहीं आता। इसको ईशवाणी के द्वारा इन्सान को बताया गया है। ये अल्लाह की ओर से अवतरित किताबों में और नबियों को ईशवाणी के रूप में मिला। इनमें इन्सानों के जीवन का उद्देश्य और उनके पैदा करने वाले की कृपा और महानता को समझने और उसका शुक्र अदा करने का तरीका बताया गया है। ये बात भी बता दी गयी है कि अल्लाह के आदेशों का पालन करने पर इनाम दिये जायेंगे और इसके विपरीत करने वाले को सज़ा दी जायेगी। क्योंकि अल्लाह की इतनी कृपा के बाद भी उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया।

किन्तु ये इनाम और सज़ा इस छोटे से जीवन में नहीं दी जायेंगी। इस जीवन में जिसने जैसे कर्म किये होंगे मृत्यु के बाद परलोक में दोबारा जीवन देकर

कर्मों के अनुसार सज़ा या ईनाम दिया जायेगा। इस बात को मानने और उसके अनुसार कर्म करने का आदेश दिया गया है। पवित्र कुर्आन में है—

बड़ी बरकत वाला है, जिसके हाथ में सारी बादशाही है, और वह हर चीज़ पर कादिर है, जिसने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि तुम्हें आजमाए, कि तुम में से कौन अच्छा अमल करने वाला है? और वह बड़ी ताकत वाला, माफ करने वाला है। (मुल्क 1-2)

इसलिए इन्सान के लिए आवश्यक है कि उसके कर्मों में अल्लाह की बड़ाई को मानने का प्रभाव दिखाई दे। क्योंकि सृष्टि में सब कुछ उसी के आदेश से होता है और हर चीज़ उसी के वश में है। इसलिए अपने जीवन में सफलता के लिए उससे विनती भी करते रहना चाहिए। ये विनती ही दुआ कहलाती है। पवित्र कुर्आन में इसके उदाहरण भी दिये गये हैं और इनसे लाभ उठाने का अवसर भी दिया गया है। इसका सबसे पहला उदाहरण पवित्र कुर्आन की पहली सूरह 'फातिहा' है। जो बहुत छोटी होते हुए भी बृद्ध है।

"हर प्रकार की तारीफ अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम आलमों (सृष्टियों) का रब (पालने वाला) है, बड़ा मेहरबान (दयावान), निहायत रहम वाला (कृपालु) है, न्याय के दिन का मालिक है, हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं, हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनज़ाम फरमाया, न कि उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ, और न उनके रास्ते पर जो राह से भटके हुए हैं।" (सूरह-फातिहा)

अल्लाह ने इन्सानों के मार्ग दर्शन के लिए जो नबी भेजे उनके जीवन के हालात और विधि को बहुत प्रभावी रूप से बताया। ह० आदम पहले इन्सान और पहले नबी थे, उनका वर्णन कई जगह किया गया। जिससे इन्सान को जो महत्व दिया गया है, उसका पता चले। ह० आदम से एक भूल हो गयी थी जिसके लिए उन्होंने अल्लाह से माफी माँगी। अल्लाह ने इस बात को पवित्र कुर्आन में बताया है

और, "ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो बसो, फिर जहाँ से चाहो खाओ, और इस पेड़ के पास न जाना वरना ज़ालिमों में से हो जाओगे।" तो शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को, जो उन दोनों से छिपी थी, उन दोनों के सामने खोल दें, और उस (इब्लीस) ने कहा, तुम्हारे रब ने तुम दोनों को जो इस पेड़ से रोका है, तो केवल इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि तुम फरिश्ते हो जाओ, या कहीं ऐसा न हो कि तुम हमेशा ज़िन्दा रहने वालों में से हो जाओ" और उसने उन दोनों के आगे कसमें खाई, "मैं ही तुम दोनों का भला चाहने वाला हूँ, इस तरह थोखा देकर उसने उन दोनों को झुका लिया, जब उन्होंने उस पेड़ (के फल) को चखा, तो उनकी शर्मगाहें

एक-दूसरे के सामने खुल गयी और वह अपने ऊपर बाग के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे, तब उनके रब ने उनको पुकारा, क्या मैंने तुम दोनों को इस पेड़ से रोका न था और तुमसे कहा न था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? दोनों बोले हमारे रब हमने अपने आप पर जुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ न किया और हम पर रहम न किया, तो फिर हम घाटा उठाने वालों में से होंगे। फरमाया, “उतर जाओ! तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए एक वक्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (जिन्दगी का) सामान है”। फरमाया, “उसी में तुम्हें जीना और उसी में तुम्हें मरना है और उसी में से तुमको निकाला जाएगा।” (आराफ 19-25)

फिर उनके बाद आने वाली नस्लों में नूह अलै० नबी हुए। उन्होंने अल्लाह के सन्देश को बहुत अच्छी तरह इन्सानों तक पहुँचाया। एक बार उन्होंने अपने नालायक और दुष्ट बेटे की अल्लाह से सिफारिश कर दी, कि उसको माफ कर दिया जाए। अल्लाह ने उनको बताया कि बुरे बेटे को बेटा समझना ही सही नहीं है। ह० नूह अलै० ने अपनी गलती मानी और माफी माँगी। इसका वर्णन भी पवित्र कुर्आन में है-

और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा, “ऐ मेरे रब! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों ही में है और तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बेहतर हाकिम है। अल्लाह ने कहा, “ऐ नूह! वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं, क्योंकि उस के कर्म बुरे थे, तो मुझसे ऐसी चीज़ों का सवाल न करो जिसकी तुम्हें खबर न हो, मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि तुम नादानों में से न हो”। (नूह) बोले, ऐ मेरे रब! मैं तुझसे तेरी पनाह माँगता हूँ कि तुझसे उस चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे कोई इल्म न हो, अब अगर तू ने मुझे माफ न किया और मुझ पर दया न की, तो मैं घाटे में पड़ कर रहूँगा। (हूद 45, 47)

ह० इब्राहीम अलै० अल्लाह के प्रिय नबी थे और उनको अल्लाह ने दूसरे नबियों पर बढ़त दी। उनको जितने काम दिये गये उन्होंने उनमें अल्लाह की आज्ञा पालन के उदाहरण दिये।

और (वो वक्त) याद करो जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब इस शहर को अमन वाला बना दीजिए, और मुझको और मेरी सन्तान को, इससे बचा लीजिए कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ, मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया, तो जो कोई मेरे रास्ते पर चलेगा वह तो मेरा है ही, और जिसने मेरा कहना न माना तो तू उसे बड़ा माफ करने वाला, रहम वाला है। ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को एक ऐसी घाटी में जहाँ खेती नहीं होती, तेरे सम्मानित घर (कअब) के पास बसाया है, ऐ हमारे रब! ताकि ये नमाज़ कायम करें, अतः

लोगों के दिलों को झुका दीजिए, और उन्हें फल खाने को दीजिए, ताकि वे शुक्र करें। हमारे रब आप तो जानते हैं जो कुछ हम अपने दिल में छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, और जो कुछ दिखा कर करते हैं, और अल्लाह से कोई भी चीज़ छिपी हुई नहीं है न ज़मीन में और न आसमान में। तमाम तारीफ अल्लाह के लिए हैं, जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ (दो बेटे) दिये, बेशक मेरा रब दुआ ज़रूर सुनता है, ऐ रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ कायम करने वाला बना दीजिए, ऐ रब! और हमारी दुआ को कुबूल कर लीजिए। ऐ रब! मुझे और मेरे माँ बाप को और ईमान वालों को उस दिन माफ़ कर दीजिएगा, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा। (इब्राहीम 35-41)

इसी प्रकार ह० मूसा अलै० जो बड़े नबी थे उनसे भी एक गलती हो हुई थी। एक दुष्ट आदमी को जो बहुत बुरा था जोश में आकर कत्ल कर दिया। इस पर उन्होंने माफी माँगी और दुआ की।

बोले, "ऐ रब! मैंने अपने आप पर जुल्म किया है, अतः आप मुझे माफ़ कर दें" तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक वह माफ़ करने वाला, रहम वाला है। उन्होंने कहा, "ऐ रब! तेरे इस एहसान के बाद जो तूने मुझ पर किया है, मैं कभी अपराधियों का मददगार न बनूँ। (कसस 16, 17)

फिर उनको अपने देश से निकलकर परदेस में जाना पड़ा। वो उनकी असहाय हालत थी जिसको उन्होंने दुआ के द्वारा प्रकट किया।

(फिर मूसा ने) दुआ की! ऐ मेरे रब (इस वक्त) जो नेमतें भी आप मुझ पर भेज दें, मैं उसक (बहुत) ज़रूरतमन्द हूँ। (कसस 24)

इसी प्रकार जब फिरओन के दरबार में जाने का आदेश मिला तो ये दुआ की (मूसा ने) कहा, "ऐ मेरे रब! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दीजिए। और मेरा काम आसान कर दीजिए, और मेरी ज़बान से हकलाहट (कमज़ोरी) दूर कर दीजिए, ताकि वह मेरी बात समझ लें, और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा सहायक नियुक्त का दीजिए, (अर्थात्) मेरे भाई हासुन को, उसके ज़रिये मेरी कमर (ताकत) को मज़बूत कर दीजिए, और उसे मेरे काम में शरीक कर दीजिए, ताकि हम खूब तेरी तस्बीह ब्यान करें, और तेरा खूब जिक्र करें, बेशक तू हमें देख रहा है। (ताहा 25-35)

अल्लाह के एक नबी ह० युनूस अलै० थे जो अल्लाह का वादा पूरा होने में देरी होने से परेशान हो गये और अपने इलाके से दूर चले गये, इस पर अल्लाह ने कहा-

और मछली वाले नबी यानि युनुस का वर्णन कीजिए जब वो अपनी कौम से, उनके ईमान न लाने पर रुठ कर चल दिये और उन्होंने यह समझा कि हम उन पर इस प्रकार जाने में कोई पूछताछ न करेंगे।

फिर उन्होंने माफी माँगी और दुआ की-

फिर उन्होंने अन्धेरो में पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं (उपास्य) नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ही दोषी हूँ तो हमने उनकी दुआ कुबूल की, और उन्हें उस तंगी से छुटकारा दिया, और इसी तरह हम ईमान वालों को छुटकारा दिया करते हैं। (अम्बिया 87,88)

अल्लाह ने उनको माफी दी और उनको नबी बनाया-

अल्लाह के नबियों में एक नबी ह० सुलेमान अलै० थे उनको न बुब्वत के साथ-साथ बादशाह भी बनाया गया। उनके सम्बन्ध में भी कई दुआयें हैं-

कहा, “ऐ रब! मुझे माफ कर दे और मुझे वह राज्य दे, जो मेरे बाद किसी को मुनासिब (उपयुक्त) न हो बेशक, तू ही बड़ा दाता है। (साद 35)

और इससे पहले नूह को भी, जब उन्होंने हमें पुकारा तो हमने उनकी दुआ कुबूल की, तो हमने उनको और उनके घरवालों (साथियों) को बड़ी मुसीबत से बचा लिया। (अम्बिया 76)

(और कीजिए) अय्यूब को जब उन्होंने अपने अल्लाह को पुकारा कि मुझको तकलीफ पहुँची है और आप सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान हैं, हमने उनकी दुआ कुबूल की और उनको जो तकलीफ थी उसको दूर कर दिया। (अम्बिया ७३)

और ज़कारीया (को याद करो) जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा, “ऐ मेरे रब, मुझे अकेला न छोड़, और तू सबसे अच्छा वारिस है।” तो हमने उनकी दुआ कुबूल की और उसे ‘यहया’ को दिया, और उसकी पत्नी को उनके लिए ठीक (औलाद के क़ाबिल) कर दिया। (अम्बिया 89,90)

ये दुआएँ और इसके अतिरिक्त और भी नबियों की दुआएँ पवित्र कुर्आन में बताई गयी हैं। इस प्रकार ये बताया गया है कि सारी बातें अल्लाह ही के करने से होती हैं। जब ज़रूरत पड़े तो उसी से माँगें और उसी से प्रार्थना करो। लेकिन माँगने में जिन बातों की ज़रूरत है उनका पूरा ध्यान रखें। उसकी शान और अपनी बेबसी को सामने रखें और ऐसा सोचों की तुमसे अन्जाने में कोई ऐसा काम हो गया है जो उसकी शान के खिलाफ है। इस पर अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में वादा किया है कि “हम बन्दों की दुआ सुनते हैं और पूरी भी करते

हैं। ये भी ब्रह्मा है कि मेरे नाम और गुणों में से जिस गुण और नाम का वास्ता देकर पुकारोगे तुम्हारा वो काम बन जायेगा।

और अल्लाह के सब ही नाम अच्छे हैं, तो उसको उसके नामों से पुकारा करो। (आराफ 180)

ऐ हमारे रब अगर हमसे भूल-चूक हो जाए तो हमारी पकड़ न करा ऐ हमारे रब हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा कि तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब हमसे वह बोझ न उठवा जिसकी हममें ताकत नहीं, और हमें माफ कर, और हमको बख्श दे, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा संरक्षक (काम बनाने वाला) है, अतः इन्कारियों पर हमारी मदद करा (अल-बकर: 286)

ऐ हमारे रब हम ईमान ले आए, सो हमारे गुनाह माफ कर दे, और हमें दोषख की आग से बचा लीजिए। (आले इमरान 15)

(ऐ) हमारे रब तू हमारे दिलों में देह पैदा न कर, इसके बाद के आप हमको हिदायत दे चुके हैं और हमें अपने पास से रहमत अदा कर बेशक तू ही बड़ा दाता है। (आले इमरान 8)

इसके साथ ही ह० मुहम्मद स० के द्वारा बताई गयी दुआएँ भी मिलती हैं। इन दुआओं में असर है और ये सब ईमान वालों के लिए उदाहरण हैं। जिस पर जैसे हालात हों वो उसके अनुसार अल्लाह से दुआ करें। इस प्रकार दुआ करने पर स्वीकार करने का वादा अल्लाह की ओर से किया गया है। एक दुआ वो है जो बहुत दुखी और असहाय होने पर ह० मुहम्मद स० ने की-

अल्लाह मैं तेरे ही सामने अपनी कमज़ोरी, बेबसी और लोगों की ओर से बुरा व्यवहार किये जाने से परेशानी को बताता हूँ। तू सब रहम करने वालों से ज्यादा रहम करने वाला है असहायों और कमज़ोरों का मालिक तू ही है और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किन के हवाले कर रहा है? क्या किसी ऐसे बेगाने के जो मुझे सख्त बात कहे या किसी ऐसे दुश्मन के जिसको मुझ पर पूरा काबू मिल गया हो। लेकिन यदि तू मुझसे नाराज़ नहीं तो फिर मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं लेकिन तेरी ओर से मुझको पनाह मिले तो मेरे लिए ज्यादा आसानी है। मैं तेरी ज्ञात के उस नूर की पनाह में रहना चाहता हूँ जिससे सारे अँधेरे रोशन हो जाते हैं और जिससे दीन व दुनिया के काम ठीक हो जाते हैं। इस बात के मुकाबले में कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तू मुझसे नाराज़ हो। मुझे तो तेरी ही स्वीकृति प्राप्त करने की बराबर चिन्ता करते रहना है जब तक कि तू राज़ी हो। इसके लिए कोशिश करता हूँ सारी हिफ़ाज़त (सुरक्षा) और ताकत तेरे ही पास है।

दूसरी दुआ हज के विशेष अवसर पर माँगी थी। इसमें आप स० ने जिस श्रद्धा और लगन से दुआ माँगी है उससे बेहतर अन्दाज़ नहीं हो सकता।

अल्लाह तू ही मेरी बात सुनता है, मेरे हाल को देखता है, मेरे अन्दर और बाहर को जानता है, तुझसे मेरी कोई बात छुपी हुई नहीं है, मैं असहाय तुझसे सहायता चाहता हूँ, तुझसे डरने वाला और गुनाहों को मानने वाला हूँ, तुझसे भिखारी की तरह माँगता हूँ, बेबस और पापी के समान विनती करता हूँ, डरने वाले की तरह तुझे पुकारता हूँ, जिसकी गर्दन तेरे सामने झुकी है, आँखें बह रही हैं, जिस्म झुका हुआ है और नाक ज़मीन पर रखी हुई है, मुझे दुआ के बाद वंचित न कर और मेरे साथ रहम और सहानुभूति कर, ऐ सर्वश्रेष्ठ और महान जिससे अपनी ज़रूरतों को माँगा जाता है और जो सबसे बेहतर देने वाला है।